कार्यक्षेत्र के लिए कालातीत सिद्धांत

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2026

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org
बाइबल-विश्वासियों की व्याख्या: believersbiblecommentary.com

(Hindi–Timeless Principles for the Workplace)

“कार्यक्षेत्र के लिए कालातीत सिद्धांत” सेमिनार

यदि आप अपनी संस्था, व्यवसाय, शैक्षणिक संस्थान, या अपने पेशेवर समुदाय के लिए **“कार्यक्षेत्र के लिए कालातीत सिद्धांत”** (Timeless Principles for the Workplace) सेमिनार को आयोजित करना चाहते हैं, तो ऑल पीपल्स चर्च (All Peoples Church) इस सेमिनार को संचालित करने के लिए पेशेवरों की एक टीम भेज सकता है। समय की उपलब्धता और पसंदीदा विषयों के आधार पर, हमारी टीम पूरे सेमिनार को पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर सकती है, या फिर केवल चुने हुए विषयों पर सत्र ले सकती है।

अपने संगठन, व्यवसाय, संस्थान या समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप **“कार्यक्षेत्र के लिए कालातीत सिद्धांत”** सेमिनार को निर्धारित और नियोजित करने के लिए, कृपया हमें **contact@apcwo.org** पर ईमेल करें।

जीवन एक मिशन है जिसे पूरा करना है,
न कि केवल पूरा कर लेने वाला कोई काम।

जीवन आनंद से जीया जाने वाला एक रोमांचक सफर है,
न कि नीरस कार्यों की एक लंबी श्रृंखला।

जीवन अनंत परमेश्वर की आराधना के लिए है,
न कि केवल सांसारिक व्यस्तताओं में उलझे रहने के लिए।

जीवन कई पड़ावों से होकर गुजरने वाली यात्रा है,
न कि किसी एक मंज़िल पर रुक जाने का नाम ।

जीवन का अर्थ है उस महान सृष्टिकर्ता को जानना,
न कि केवल परमेश्वर की सृष्टि के बारे में जानकारी इकट्ठा करना।

जीवन का अर्थ है जो हमारे पास है उसे दूसरों के साथ बांटना,
न कि स्वयं को बड़ा दिखाने की दौड़।

जीवन का अर्थ है की विश्वासयोग्य भण्डारी बनकर
जो हमें सौंपा गया है, उसकी देखभाल करना;
न कि क्षणिक सुख-विलास में उसे बरबाद करना।

जीवन अपने आस-पास के लोगों के साथ सच्ची मित्रता है,
न कि केवल 'मैं', 'मुझे' और 'मेरा' की स्वार्थी खोज ।

जीवन का अर्थ है ठहरकर हर पल का आनंद लेना,
न कि शिखर तक पहुँचने की अंधी दौड़।

जीवन जीने के लिए है—अच्छी तरह जीने के लिए,
तथा परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए जीना है ।

कार्यक्षेत्र के लिए कालातीत सिद्धांत

विषयसूची

परिचय

भाग एक: व्यक्तिगत तैयारी **1**

1. व्यक्तिगत दर्शन तथा उद्देश्य 3

2. करियर संबंधी योजना 15

3. कार्यस्थल पर सही रवैया 33

भाग दो: कार्यस्थल में **61**

4. कॉर्पोरेट दर्शन, मिशन, मूल्य और संस्कृति 63

5. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ तथा रणनीति 79

6. संगठनात्मक संरचना और प्रारूप 92

7. नए अविष्कार तथा रचनात्मकता 106

8. लोग, प्रक्रियाएँ, प्रदर्शन और पुरस्कार 117

9. कार्यक्षेत्र पर आपसी संबंध 135

10. योजना बनाना तथा क्रियान्वयन करना 157

11. लाभप्रदता और कॉर्पोरेट वित्त 165

12. रणनीतिक साझेदारियाँ 185

13. नेतृत्व 194

14. मार्केटिंग, ब्रांड निर्माण और बिक्री 212

15. ग्राहक संबंध 224

16. चुनौतियाँ और मुश्किल दौर 229
17. भण्डारीपन 244
भाग तीन: कार्यक्षेत्र और आप 253
18. करियर में प्रगति 255
19. काम और निजी जीवन का संतुलन 265
20. बचत, निवेश, सेवानिवृत्ति और उसके बाद 288
भाग चार: परमेश्वर का राज्य और आप 297
21. उद्यमिता 299
22. कार्यक्षेत्र का रूपांतरण 310

परिचय

हम अपनी ज़िंदगी का ज़्यादातर हिस्सा काम की जगह पर, बिज़नेस या दूसरी पेशेवर गतिविधियों में बिताते हैं। हममें से कई लोग अपने कार्यक्षेत्र पर बेहतर प्रदर्शन के लिए अपनी शिक्षा, पेशेवर अनुभव, सेमिनार, कॉन्फ्रेंस और ट्रेनिंग के दूसरे मौकों के ज़रिए लगातार खुद को तैयार और काबिल बनाते रहते हैं। प्रबंधन, संगठनात्मक विकास, उद्यमिता, नेतृत्व, कर्मचारी प्रेरणा और कार्यस्थल से जुड़े अनेक क्षेत्रों से संबंधित अवधारणाएँ, सिद्धांत और विचार लगातार विकसित होते रहते हैं। यह वाकई ज़रूरी है, क्योंकि बाज़ार लगातार बदल रहा है।

इस निरंतर बदलते माहौल के बीच, कुछ चीज़ें हमेशा स्थिर रहती हैं। कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जो समय, स्थान, लोगों और संस्कृति की सीमाओं से परे होते हैं। हम इन्हें **"कालातीत सिद्धांत"** कहते हैं। "कब," "कहाँ," "क्या," और "क्यों"—जैसे सवालों के जवाब चाहे कुछ भी हों, ये सिद्धांत हर परिस्थिति में सही साबित होते हैं। बाइबल हमें ऐसे कई शाश्वत सिद्धांत बताती है जो कार्यक्षेत्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। हमने इस पुस्तक में, इन सिद्धांतों को एक सरल तथा आसानी से पढ़े जा सकने वाले रूप में इकट्ठा करने की कोशिश की है। हमारा मकसद यह है कि, इन शाश्वत सिद्धांतों को अपनाकर, आपको अपनी पेशेवर ज़िंदगी में व्यक्तिगत रूप से लाभान्वित होने में सक्षम बनाना है। आपका कार्य क्षेत्र चाहे जो भी हो—चाहे आप छोटे व्यवसाय में हों या किसी बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी में; चाहे आप शिक्षा, सरकार, मीडिया, मनोरंजन, या किसी भी अन्य उद्योग से जुड़े हों—आपको ये शाश्वत सिद्धांत हमेशा प्रासंगिक और उपयोगी लगेंगे।

कोई भी संगठन उसके लोगों से ही बनता है। किसी संगठन के बदलाव के लिए, हमें उसके लोगों में बदलाव लाना होगा। इन शाश्वत सिद्धांतों को खोजना, समझना और उन्हें लागू करना, ठीक यही काम करता है। संगठन तब परिवर्तित होते हैं, जब उनके लोग इन शाश्वत सिद्धांतों को आत्मसात करते हैं और उन्हें व्यवहार में लाते हैं।

कार्यक्षेत्र पर, हमें कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है—बिक्री (सेल्स) की भ्रष्ट प्रक्रियाएँ, लेखा-जोखा (अकाउंटिंग) में गड़बड़ियाँ, बेईमान अधिकारी, विज्ञापन के संदिग्ध तरीके, नौकरी से निकाला जाना, परिवार के लिए समय निकालने की चुनौती, कार्य और निजी जीवन में तालमेल बिठाने की जद्दोजहद, तथा और भी कई दूसरी स्थितियाँ। हमें कुछ ऐसे बुनियादी सिद्धांतों की ज़रूरत होती है, जो हमारे पेशेवर कामकाज और हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को सही दिशा दिखा सकें। ऐसे सिद्धांत, जिनका इस्तेमाल हम हमेशा और हर स्थिति में कर सकें!

"घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है। ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती हैं" (नीतिवचन 24:3,4) । बुद्धि निर्माण करती है, समझ उसे मज़बूत बनाती है, और ज्ञान उसे समृद्ध करता है। हमें इन तीनों की ही आवश्यकता है। यह पुस्तक पवित्र शास्त्र बाइबिल में हमें दी गई उस बुद्धि और समझ को प्रस्तुत करने का प्रयास करती है, ताकि वह हमारे पास मौजूद पेशेवर ज्ञान को एक मजबूत आधार दे सके।

बुद्धिमानी और समझ के साथ-साथ, हमें अपने कार्यक्षेत्र पर अलौकिक अनुभवों के लिए भी तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर उस बगीचे में मौजूद हैं, और जब हम अपना कार्य करते हैं, तब वह वहीं उपस्थित होकर हमें सामर्थ्य, बुद्धि, अंतर्दृष्टि, समाधान, नए विचार, रचनात्मकता, कृपा और अपनी अद्‌त शक्ति प्रदान करता है। आपके

कार्यक्षेत्र पर, आपके द्वारा उसकी महिमा प्रकट हो!

"तेरे सेवक देख सकें कि तू अपने काम में किस तरह सबसे बेहतर हैं-यानी जिस तरह से आप अपने बच्चों पर राज करते हो और उन्हें आशीष देते हो। और हमारे प्रभु, हमारे परमेश्वर की मनोहरता हम पर बनी रहे, और तू हमारे कामों को दृढ़ करें। हाँ, हमारे सब कामों को दृढ़ करें !" (भजन संहिता 90:16,17, 'द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर

भाग एकः

व्यक्तिगत तैयारी

1
व्यक्तिगत दर्शन तथा उद्देश्य

परमेश्वर ने आपको एक खास मकसद के लिए बनाया है।
उस मकसद के साकार होने की प्रक्रिया में
आपका कार्यस्थल भी शामिल हो सकता है।
इसलिए, आप कौन हैं और आप अपने कार्यस्थल पर
क्या करते हैं—ये दोनों ही बातें महत्वपूर्ण हैं।
आप कार्यक्षेत्र पर कैसे व्यक्ति बनते हो और क्या उपलब्धियाँ
हासिल करते हो, इस पर आपके व्यक्तिगत दर्शन
और उद्देश्य का गहरा प्रभाव पड़ता है।

व्यक्तिगत तैयारी के पहलुओं पर विचार करके **"कार्यक्षेत्र के लिए कालातीत सिद्धांत"** की खोज में हम अपनी यात्रा शुरू करते हैं। हममें से कुछ लोग स्कूल या कॉलेज में होंगे और जल्द ही कार्यक्षेत्र में जाने की सोच रहे होंगे। हममें से कुछ लोग शायद कई सालों से अपने कार्यक्षेत्र में हैं। बहरहाल, हम अपनी पेशेवर यात्रा में कहीं भी हो, व्यक्तिगत दर्शन तथा उद्देश्य से जुड़े कुछ बुनियादी सिद्धांत यहाँ दिए गए हैं, जिन पर हमें लगातार विचार करना और समय-समय पर उनकी समीक्षा करते रहना आवश्यक है।

आपको एक उद्देश्य के लिए बनाया गया है; उसे खोजें! उसे जिए!

इफिसियों 2:10 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित) "हम उसके (परमेश्वर के) बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।"

परमेश्वर ने हममें से हर एक को एक विशेष उद्देश्य के लिए बनाया है। परमेश्वर का एक सर्वसामान्य उद्देश्य है, जिसके तहत हर इंसान को इसलिए बनाया गया है ताकि वह परमेश्वर को व्यक्तिगत तौर पर जान सके, उनकी आराधना करे, उनके सामने आदरयुक्त भय से चले, उनकी सेवा करे और उनके लिए जिए। इसके अलावा, हममें से हर एक के लिए परमेश्वर के कुछ विशेष उद्देश्य भी हैं, जिसके अनुसार चलने की योजना उसने हमारे लिए बनाई है। परमेश्वर के इन विशेष उद्देश्यों में यह भी शामिल है कि हम क्या बनते हैं और पेशेवर तौर पर हम क्या काम करते हैं।

भजन संहिता 139:15,16 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
15 जब मैं गुप्त में बनाया जाता,
और पृथ्वी के नीचे स्थानों में
रचा जाता था,
तब मेरी हड्डियाँ तुझ से छिपी न थीं।
16 तेरी आँखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा;
और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते
जाते थे वे रचे जाने से पहले
तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

हमारा काम-काज, परमेश्वर के हमारे जीवन के विशेष उद्देश्य से अलग नहीं है, बल्कि उसका एक ज़रूरी हिस्सा है। हमारे पेशेवर जीवन की शुरुआत में, और उसके बाद हर कदम पर, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने पेशेवर जीवन को इस दैवीय उद्देश्य की भावना के साथ जानबूझकर और अर्थपूर्ण ढंग से जीएँ।

अगर आप “क्यों” जानते हैं, तो “क्या” और “कैसे” अपने आप पता चल जायेगा। “क्यों” हमारे उद्देश्य को बताता है—कि हम जो कर रहे हैं या जिस चीज़ के पीछे भाग रहे हैं, उसे करने की हमारी वजह क्या है। एक बार जब आपको अपने मकसद का एहसास हो जाता है, तो फिर यह तय करना कि उसे कैसे पूरा करना है और वहाँ

तक पहुँचने के लिए आपको किन चीज़ों की ज़रूरत होगी, यह सब अपने आप समझ में आ जाता है ।

नींव–आप जिस बात पर निर्माण करते हैं, वह मायने रखता है

मत्ती 7:24-27

24 "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।
25 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर से टकराईं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।
26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया।
27 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर से टकराईं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।"

आप जिस पर निर्माण करते हैं—यानी आपकी नींव—वह बहुत मायने रखती है। आपकी आत्मिक नींव का मज़बूत होना बेहद ज़रूरी है। जो बातें प्रभु यीशु ने हमें सिखाई हैं, हमें उन बातों को सुनना तथा उन पर अमल करना चाहिए। ठीक इसी तरह, आपके पेशेवर जीवन के लिए भी एक मज़बूत नींव का होना बेहद ज़रूरी है। अपने पेशेवर जीवन की नींव को मज़बूत बनाने के लिए, समय और मेहनत का निवेश ज़रूर करें। जीवन के हर पड़ाव पर—जब आप एक दौर से निकलकर दूसरे दौर में कदम रखते हैं—तो आने वाले दौर के लिए पहले से तैयारी करें और एक मज़बूत नींव रखें, ताकि आप उस पर एक बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ सकें।

नीतिवचन 24:27

अपना बाहर का काम–काज ठीक करना, और खेत का काम तैयार कर लेना; उसके बाद अपना घर बनाना।

पहले ज़रूरी काम करें, और उसके बाद ही सुख-सुविधाओं के बारे में सोचें। जब आप अपने व्यक्तिगत दर्शन तथा उद्देश्यों को पूरा

करने की तैयारी कर रहे हों, तो यह सुनिश्चित करें कि पेशेवर तौर पर आप एक मज़बूत नींव को रखें। कुछ ऐसी पेशेवर कुशलताएँ होती हैं, जो कार्य के किसी भी क्षेत्र में जाने पर भी प्रासंगिक और उपयोगी रहती हैं। इनमें संवाद करने का तरीका (शाब्दिक तथा सांकेतिक), पेशेवर लेखन, अपनी व्यक्तिगत उत्पादकता बढ़ाने के लिए समय का सही इस्तेमाल, समस्या का समाधान करना तथा निर्णय लेने की काबिलियत शामिल हैं। इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में फाइनेंस और अकाउंटिंग की बुनियादी समझ, बातचीत करने की कुशलता (नेगोसियेशन स्किल्स) तथा योजना बनाना, आयोजन करना व नेतृत्व से जुड़े प्रबंधन कौशल भी काम आते हैं।

आपकी व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ बुनियादी हैं

मरकुस 12:30

'और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखन।'

एक अच्छी आत्मिक और पेशेवर नींव रखने के अलावा, यह भी याद रखें कि व्यक्तिगत चरित्र, मूल्य और दृष्टिकोण भी बहुत महत्वपूर्ण हैं । अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को जानना और उन्हें स्थापित करना ज़रूरी है। ये बुनियादी बातें हैं तथा आप पेशेवर रूप से क्या करना चाहते हैं यह तय करने में ये आपकी मदद करेंगी । यदि परमेश्वर से प्रेम करना, उसकी आराधना करना और उसकी सेवा करना आपकी प्राथमिकताएँ हैं, तो आप इन्हें केंद्र में रखकर अपनी पेशेवर गतिविधियों को इन्हीं प्राथमिकताओं के इर्द-गिर्द ढालने की कोशिश करेंगे। यदि परिवार महत्वपूर्ण है, तो आप ऐसे निर्णय लेंगे जिनमें परिवार को प्राथमिकता दी जाएगी, बजाय उन अवसरों के जो आपका समय परिवार से दूर ले जा सकते हैं। आपको यह जानना होगा कि आपके लिए क्या ज़रूरी है और अपनी प्राथमिकताओं की सूची को लेकर स्पष्ट रहना होगा।

उन बातों को लेकर स्पष्ट रहें, जिन पर आप कोई समझौता नहीं करेंगे

लूका 9:62

यीशु ने उस से कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्‍वर के राज्य के योग्य नहीं।"

कुछ ऐसी बातें होती हैं जिनके साथ आप अधिक पैसे या दूसरे पेशेवर फ़ायदों के लिए समझौता नहीं कर सकते। आपके लिए ये बातें क्या मायने रखती हैं, इसके बारे में बिल्कुल स्पष्ट रहें। ये वे क्षेत्र हैं जहाँ आपने परमेश्वर के राज्य के लिए हल पर हाथ रखा है और आप पीछे नहीं हटेंगे। ये आपकी ऐसी बातें हैं जिन पर कोई समझौता नहीं हो सकता। आपकी ज़िंदगी के इन क्षेत्रों में मोल-भाव या समझौते की कोई गुंजाइश नहीं है। इनमें ईमानदारी, सच्चाई, सबके साथ सही बर्ताव करना, अपने पैसे से परमेश्वर का आदर करना तथा लोगों के साथ इज़्ज़त से पेश आना जैसी बातें शामिल हैं। आपने शायद पहले भी यह कहावत सुनी होगी, "यदि आप किसी चीज़ के लिए खड़े नहीं होते, तो आप किसी भी चीज़ के लिए गिर जाएँगे।" इसलिए, इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट रहें कि आपके लिए कौन सी बातें ऐसी हैं जिन पर कोई समझौता नहीं हो सकता। बिना किसी समझौते के, उन बातों पर मज़बूती से टिके रहें।

जैसे-जैसे आप अपने कार्यक्षेत्र पर आगे बढ़ेंगे, आपकी व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ और आपके ऐसे सिद्धांत जिन पर आप कोई समझौता नहीं करते, दोनों ही चुनौतियों का सामना ज़रूर करेंगे। आपको यह जानना होगा कि आपके लिए क्या ज़रूरी है और अपनी प्राथमिकताओं की सूची को लेकर स्पष्ट रहना होग, आपको मुश्किल फैसले लेने पड़ सकते हैं—जिनके कभी-कभी बड़े महत्वपूर्ण नतीजे भी हो सकते हैं, तथा ऐसी ही और कई छोटी-बड़ी स्थितियाँ आएँगी जहाँ आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन यहीं पर आपको अपनी

मज़बूत आत्मिक नींव से ताकत लेनी होगी ताकि आप दबाव झेल सकें और जिन सिद्धांतों पर आप अपना जीवन जीते हैं, उनपर अडिग रह सकें।

जीवन-योजना बनाएँ; उसकी समीक्षा लगातार करते रहें

नीतिवचन 21:5

काम–काजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटी होती है।

एक बार जब आपको अपने जीवन के दर्शन और उद्देश्य का एक सामान्य अंदाज़ा हो जाए, और आप अपनी प्राथमिकताओं तथा उन बातों को समझ लें जिन पर कोई समझौता नहीं हो सकता, तो आप एक '**जीवन-योजना**' (लाइफ प्लान) बना सकते हैं। **जीवन-योजना** एक व्यापक दृष्टिकोण है कि आपको क्या लगता है कि परमेश्वर आपसे जीवन में क्या करवाना चाहते हैं, और आप वहाँ तक कैसे पहुँचाना चाहते हैं। यह इस बात की बड़ी तस्वीर है जो आपको महसूस कराता है कि आप अपनी ज़िंदगी में क्या करने जा रहे हैं। जिस परमेश्वर ने आपको बनाया है, वह आपको आपके जीवन का उद्देश्य भी बताएगा, जब आप उसे खोजेंगे। परमेश्वर ने वादा किया है, *"मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी–बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता"* (यिर्मयाह 33:3,'द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)। आपके पास सभी बारीकियाँ या विवरण शायद न हों, परन्तु आपको दिशा का अंदाज़ा ज़रूर होगा। यह आपको एक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक जीवन जीने में सहायता करता है।

जीवन-योजना बनाते समय, आपको तीन प्रमुख पहलुओं पर विचार करना चाहिए।

- **वह व्यक्ति, जिसके बारे में आप विश्वास करते हैं कि आप बनेंगे।** परमेश्वर आपको किस प्रकार का व्यक्ति बनाना चाहता

है—इसकी बड़ी तस्वीर क्या है? आप जो व्यक्ति बनते हैं, वह आपके अनुग्रह और कौशलों से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके भीतर सिखाने का जुनून है, और आप देखते हैं कि आपने उससे संबंधित कुछ कौशलों को पहचाना और विकसित किया है, तो आप स्वयं को एक शिक्षक या शिक्षाविद् के रूप में देख सकते हैं।

- **वह जगह जहाँ आपको लगता है कि आपको खुद को स्थापित करना चाहिए और रहना चाहिए।** वह कौन सी जगह (या जगहें) है जहाँ परमेश्वर चाहता है कि आप रहें? ये भौगोलिक, पेशेवर, सामाजिक, आदि हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, आप खुद को किसी विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर के रूप में देखते हैं, जो दुनिया भर के छात्रों के साथ संवाद कर रहा है।
- **वह उद्देश्य जो आपके जीवन के माध्यम से प्रकट होगा।** वह उद्देश्य क्या है जिसे परमेश्वर आपके जीवन के द्वारा प्रकट करना चाहता हैं, ताकि दूसरों को आशीष मिले और पृथ्वी पर उसके राज्य का विस्तार हो सकें? आप स्वयं को एक ऐसे प्रोफेसर के रूप में देखते हैं, जो कठिन विषयों को भी रोचक बनाकर विद्यार्थियों में सीखने का जुनून पैदा करता है, और उन्हें वैज्ञानिक अनुसंधान तथा खोज के कार्यों में आगे बढ़ाता है। आप उनके साथ सार्थक रूप से जुड़ते हैं और उनके जीवन पर न केवल शिक्षा के क्षेत्र में, बल्कि उन्हें 'अनंत महत्व' की बातों की ओर निर्देशित करके भी गहरा प्रभाव डाल सकते हैं।

आपकी **जीवन-योजना** उस **व्यक्ति** से जुड़ी है, जैसा परमेश्वर चाहता है की आप बनें; उस **जगह** से, जहाँ वह आपको स्थापित करना चाहता हैं; और उस **उद्देश्य** से, जिसे वह आपके माध्यम से पूरा करना चाहता हैं।

आइए, अब्राहम को एक उदाहरण के तौर पर देखें।

उत्पत्ति 12:1-3
1 यहोवा ने अब्राम से कहा,
"अपने देश,
और अपने कुटुम्बियों,
और अपने पिता के घर को छोड़कर
उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।
2 और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा,
और तुझे आशीष दूँगा,
और तेरा नाम महान् करूँगा,
और तू आशीष का मूल होगा।
3 जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा;
और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा;
और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।"

परमेश्वर ने अब्राहम से जो वादा किया था, उससे हम निम्नलिखित बातें पहचान सकते हैं:

अब्राहम	
व्यक्ति	तू एक महान राष्ट्र का पिता होगा ।
जगह	तुझे एक ऐसी जगह विरासत में मिलेगी, जो मैं तुझे दिखाऊँगा और तुझे तथा तेरे वंशजों को दूँगा।
उद्देश्य	तू आशीष का मूल होगा। भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।

जब अब्राहम ने यह यात्रा आरंभ की, तो उसे उस **व्यक्ति, जगह और उद्देश्य** का अंदाज़ा तो था जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया

था, फिर भी उसे सारी बातें पता नहीं थीं। उसे विश्वास के साथ इस यात्रा पर जाना पड़ा।

इब्रानियों 11:8
विश्‍वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था; और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ, तौभी निकल गया।

इसी प्रकार, **जीवन-योजना** आपको उस **व्यक्ति, जगह** और **उद्देश्य** का एहसास कराता है जिसके लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है। विकास की प्रक्रिया के माध्यम से आप इस **व्यक्ति** को खोजते और विकसित करते हैं। आप इस **जगह** (या जगहों) तक कई बदलावों से गुज़रते हुए पहुँचते हैं। जैसे-जैसे समय के साथ आप आगे बढ़ते हैं, आप धीरे-धीरे उस **उद्देश्य** को पूरा करने की दिशा में और अधिक सक्षम होते जाते हैं।

साल में कम से कम एक बार अपने **जीवन-योजना** की समीक्षा करते रहें, और जैसे-जैसे चीज़ें स्पष्ट होती जाएं, उसे बेहतर बनाते रहें।

मुख्य सिद्धांत

1) आपको एक उद्देश्य के लिए बनाया गया है । उसे खोजें! उसे जिएँ!

2) नींव–आप जिस बात पर निर्माण करते हैं, वह मायने रखता है।

3) आपकी व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ बुनियादी हैं।

4) उन बातों को लेकर स्पष्ट रहें, जिन पर आप कोई समझौता नहीं करेंगे।

5) **जीवन-योजना** बनाएँ; उसकी समीक्षा लगातार करते रहें।

चिंतन

1) इस अध्याय में साझा किए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित विषयों पर चिंतन (चर्चा) करें:

- ऐसी कौन सी बातें हैं जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से अपनी प्राथमिकताएँ और 'समझौता न हो सकने वाली' (नॉन नेगोशिएबल्स) बातें मानेंगे?
- अपनी वर्तमान समझ के आधार पर, **जीवन योजना** के तीन प्रमुख पहलुओं में से प्रत्येक को एक या दो वाक्यों में बताने का प्रयास करें ।

मैं स्वयं	
व्यक्ति परमेश्वर आपको जिस तरह का व्यक्ति बनाना चाहते हैं, उसकी पूरी तस्वीर क्या है? आप जिस तरह के व्यक्ति बनते हैं, वह आपके अनुग्रह और आपके कौशलों से जुड़ा होता है। **विकास की एक प्रक्रिया के माध्यम से आप इस व्यक्ति को खोजते हैं और उस रूप में विकसित होते हैं ।**	
जगह परमेश्वर आपको किस जगह (जगहों) पर स्थापित करना चाहते हैं? ये भौगोलिक, पेशेवर, सामाजिक आदि हो सकते हैं। **कई बदलावों की एक श्रृंखला के माध्यम से आप इस जगह (या जगहों) तक पहुँचते हैं।**	
उद्देश्य परमेश्वर आपके जीवन के माध्यम से ऐसी कौन-सी चीज़ प्रकट करना चाहता हैं, जिससे दूसरों को आशीष मिले तथा पृथ्वी पर उसके राज्य का विस्तार हो सकें? **जैसे-जैसे समय बीतता है और आप आगे बढ़ते हैं, आप इस उद्देश्य को पूरा करने में धीरे-धीरे और अधिक सक्षम होते जाते हैं।**	

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

2
करियर संबंधी योजना

जीवन के कई क्षेत्रों में, हम पहले अपनी मंज़िल तय करते हैं और फिर यात्रा शुरू करते हैं। किसी इमारत के बनने से पहले कोई न कोई उसका ब्लूप्रिंट बनाता है। कोई भी प्रोडक्ट बनने से पहले, कोई न कोई उसके डिज़ाइन के बारे में सोचता है। ठीक इसी तरह, कार्यक्षेत्र पर हमारी पेशेवर यात्रा में भी, मन में एक योजना बनाकर शुरुआत करना अच्छा रहता है।
रास्ते में कई मोड़ आ सकते हैं, अच्छी या बुरी अप्रत्याशित स्थितियाँ सामने आ सकती हैं,
जो आपकी यात्रा की दिशा बदल सकती हैं और इस वजह से, योजना में बदलाव करने पड़ सकते हैं।
लेकिन कुल मिलाकर, योजना बनाकर के यात्रा की शुरुआत करना बिना किसी योजना के शुरू करने से कहीं बेहतर है।

जीवन-योजना का होना एक शुरुआती कदम है। आपकी **जीवन-योजना**, आपके जीवन की पूरी तस्वीर होती है। अब आपको एक पेशेवर रोडमैप या अपने करियर की योजना बनाना होगा कि आप कैसे उस **व्यक्ति** के रूप में विकसित होंगे, उस **जगह** (या जगहों) पर पहुँचेंगे, और उस **उद्देश्य** को तेज़ी से पूरा करेंगे जो परमेश्वर ने आपके लिए निर्धारित किया है।

आपकी **जीवन-योजना** में जीवन के कई क्षेत्र शामिल हैं— आध्यात्मिक जीवन, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, शिक्षा, पेशा, परिवार, वित्त तथा सेवा कार्य। वास्तव में, जैसे-जैसे मैं अपने जीवन-योजना की समीक्षा

करता रहता हूँ, मैं इनमें से प्रत्येक क्षेत्र को इस नज़रिए से देखता हूँ कि परमेश्वर मुझसे क्या करवाना चाहता हैं। पेशेवर जीवन इन्हीं क्षेत्रों में से एक है और हम इस अध्याय में इसी पर चर्चा करेंगे।

अपने जीवन के अनुग्रह, वरदानों तथा कौशलों को पहचानें

रोमियों 12:6-8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल)

6 जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्‍वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे;
7 यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे; यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे;
8 जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे; जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।

परमेश्वर ने हम सब पर अपना अनुग्रह बरसाया है और हमें वरदान दिए हैं। **अनुग्रह** हमारे जीवन में परमेश्वर की सामर्थ है जो अक्सर दैवीय प्रवृत्ति तथा उत्साह के माध्यम से खुद को व्यक्त करती है, और हमें कुछ सार्थक और प्रभावशाली करने के लिए प्रेरित करती है। **वरदान** वे क्षमताएँ हैं जिन्हें हम तब पहचानते हैं, जब हम कुछ विशेष कार्य सहजता से और लगभग स्वाभाविक रूप से कर पाते हैं। **कौशल** वे क्षमताएँ और ज्ञान हैं, जिन्हें हम सीखने, प्रशिक्षण, अनुशासन और अभ्यास के माध्यम से विकसित या अर्जित करते हैं। हमारे जीवन के अनुग्रह, वरदान तथा कौशल (ज्ञान और क्षमताएँ) ये सभी मिलकर हमारी मुख्य दक्षताओं या ताकतों का निर्माण करते हैं।

जैसे-जैसे हम अपने जीवन के अनुग्रह के क्षेत्रों में पूरी निष्ठा से कार्य करते हैं और अपने वरदानों तथा कौशलों का इस्तेमाल करते हैं, हम इनमें और अधिक निखरते जाते हैं। हमारे जीवन पर अनुग्रह बढ़ सकता है। वरदानों में हम परिपक्व हो सकते हैं। हमारे कौशल विकसित हो सकते हैं।

समय के साथ, हम अनुग्रह, वरदानों और कौशलों के नए क्षेत्रों को खोजेंगे तथा उन्हें विकसित करेंगे। यह व्यक्तिगत विकास और उन्नति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज मैं	
अनुग्रह: ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जिनकी ओर आप आकर्षित होते हैं, जिनकी ओर आपका झुकाव है, और जिनके प्रति आपमें उत्साह है?	
वरदान: ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जिन्हें आप अच्छी तरह से कर पाते हैं?	
कौशल: ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जिनका आपको अधिक ज्ञान है?	

अवसरों की तलाश करें; सुझाव लें; एक योजना तैयार करें

नीतिवचन 11:14

जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।

अब आप उन अवसरों को तलाशना शुरू करते हैं जो आपकी **जीवन-योजना** (**व्यक्ति, जगह, उद्देश्य**) के अनुरूप हैं, और जहाँ आप अपने **अनुग्रह, वरदानों** तथा **कौशलों** का सदुपयोग कर सकते हैं।

निश्चय ही, ये सभी बातें आपको आर्थिक लाभ नहीं देंगी। इसलिए कुछ काम आप शौक के रूप में, मनोरंजन के लिए, या किसी अच्छे उद्देश्य में योगदान देने के लिए स्वैच्छिक सेवा के रूप में कर सकते

हैं। साथ ही, आप ऐसा क्षेत्र भी चुनते हैं जो आपको आर्थिक लाभ देता है और आपकी **जीवन-योजना** को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करता है। यही क्षेत्र प्रायः आपका पेशेवर करियर बन जाता है।

अपने पेशेवर करियर के शुरुआती दौर में, या इसे शुरू करने से पहले भी, अवसरों को तलाशना हमेशा अच्छा रहता है। पता लगाएँ कि आपके लिए क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं। आप यह काम पढ़ने, ऑनलाइन रिसर्च करने, अनुभवी लोगों से बात करने, और यहाँ तक कि विभिन्न संगठनों में स्वयंसेवक या इंटर्न के तौर पर काम करके भी कर सकते हैं।

उस प्रोत्साहन पर विचार करें जो पवित्र शास्त्र हमें लोगों से सलाह प्राप्त करने या सुझाव लेने के लिए देता है।

नीतिवचन 15:22
बिना सम्मति की कल्पनाएँ निष्फल हुआ करती हैं,
परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।

नीतिवचन 19:20
सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर,
कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे।

नीतिवचन 24:6
इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना,
विजय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।

अपने बारे में और अपने आस-पास मौजूद अवसरों के बारे में इस प्राप्त जानकारी के साथ, अब आप अपने करियर की एक योजना तैयार कर सकते हैं। भले ही आप उन सभी चरणों और बदलावों की पहचान न कर पाएं जिनसे आप गुज़रेंगे, लेकिन आपको कम-से-कम अपने मौजूदा

चरण और उसके बाद आने वाले चरण की पहचान तो कर ही लेनी चाहिए।

जीवन अलग-अलग मौसमों (या चरणों) में जिया जाता है, जिनमें होने वाले बदलाव आपको एक मौसम से दूसरे मौसम में जाने में सहायता प्रदान करते हैं। आपको यह पहचानना होगा कि आप किस मौसम में हैं, उस मौसम में क्या करना है, और अगले मौसम के लिए तैयारी करनी होगी। सही समय आने पर, आपको अगले मौसम में कदम रखना होगा।

चाहे आप अभी-अभी अपनी पेशेवर यात्रा की शुरुआत कर रहे हों, या इस यात्रा में काफ़ी आगे बढ़ चुके हों, यह सोचना हमेशा फ़ायदेमंद होता है कि आप अभी कहाँ हैं, और अपनी **जीवन-योजना** (व्यक्ति, जगह, उद्देश्य) तथा आपकी मुख्य क्षमताओं (अनुग्रह, वरदान, कौशल) के संदर्भ में भविष्य में आगे क्या हो सकता है।

पेशेवर करियर की योजना			
	व्यक्ति	**जगह**	**उद्देश्य**
वर्तमान चरण	आप किस अनुग्रह, वरदान और कौशल (ज्ञान और क्षमताएँ) विकसित कर रहे हैं तथा उनका उपयोग कर रहे हैं?	आप किस उद्योग में हैं और आपकी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ क्या हैं?	आप अपने संगठन में किस तरह से योगदान दे रहे हैं, परमेश्वर के राज्य की सेवा कर रहे हैं, और उससे आपको क्या व्यक्तिगत लाभ मिलते हैं?

	व्यक्ति	**जगह**	**उद्देश्य**
बदलाव	अगले चरण में जाने के लिए आपको क्या सीखना होगा और कौन से कौशल विकसित करने होंगे?	आप किस उद्योग में होंगे और उसमे आपकी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ क्या होंगी?	आप किन तरीकों से अपने संगठन में योगदान दे सकते हैं, परमेश्वर के राज्य की सेवा कर सकते हैं, और उससे आपको कौन से व्यक्तिगत लाभ मिलेंगे?
अगला चरण	आप किस अनुग्रह, वरदान और कौशल (ज्ञान और क्षमताएँ) विकसित कर रहे हैं तथा उनका उपयोग कर रहे हैं?	आप किस उद्योग में हैं और आपकी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ क्या हैं?	आप अपने संगठन में किस तरह से योगदान दे रहे हैं, परमेश्वर के राज्य की सेवा कर रहे हैं, और उससे आपको क्या व्यक्तिगत लाभ मिलते हैं?
बदलाव	अगले चरण में जाने के लिए आपको क्या सीखना होगा और कौन से कौशल विकसित करने होंगे?	आप किस उद्योग में होंगे और उसमे आपकी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ क्या होंगी?	आप किन तरीकों से अपने संगठन में योगदान दे सकते हैं, परमेश्वर के राज्य की सेवा कर सकते हैं, और उससे आपको कौन से व्यक्तिगत लाभ मिलेंगे?
अगला चरण			

शुरुआत करें—प्रार्थना करें, सुनें, आगे बढ़ें!

नीतिवचन 13:4

आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु काम–काजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।

कभी-कभी, हम प्रार्थना करने, परमेश्वर की सुनने और योजना बनाने का सारा शुरुआती काम तो कर लेते हैं, लेकिन कभी शुरुआत ही नहीं करते। यदि आप सिर्फ़ इच्छा करते हैं, योजना बनाते हैं और सपने देखते हैं, लेकिन उन पर अमल नहीं करते, तो आप कुछ भी हासिल नहीं कर पाएँगे। आपको योजना के अनुसार आगे बढ़ना होगा, काम करना होगा और परिश्रम करना होगा। उन कौशलों को सीखना और विकसित करना शुरू करें जिनकी आपको ज़रूरत है। फिर उस **जगह** में, जहाँ आपको जाना चाहिए, प्रवेश पाने के लिए खटखटाना शुरू करें । प्रार्थना करें, परमेश्वर की सुनें, और फिर आगे बढ़ें!

दरवाज़े खोले जाने के लिए दस्तक दें

नीतिवचन 16:1

मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुँह से कहना यहोवा की ओर से होता है।

चाहे आप पहली बार कार्यक्षेत्र में कदम रख रहे हों या कोई बदलाव कर रहे हों, अक्सर आपको दरवाज़े खुलने के लिए दस्तक देनी पड़ेगी। यदि कोई अवसर बिना आपकी दस्तक के ही आपके दरवाज़े पर आ जाए, तो यह बहुत अच्छी बात है। बस यह याद रखें, ऐसा हर बार नहीं होगा।

कार्यक्षेत्र के संदर्भ में, “दस्तक देने” का मतलब यह हो सकता है कि आप उन संस्थाओं को अपना बायोडाटा (रिज्यूमे) भेजें जहाँ आप अवसर तलाश रहे हैं, इंटरव्यू दें, तथा भर्ती और नियुक्ति की प्रक्रिया से गुज़रें। “दस्तक देने” की इस प्रक्रिया से जब आप गुज़रे, तो अपनी

तैयारी पूरी करें। तैयारी करना मनुष्य का काम है और यह हमारी ज़िम्मेदारी है। शांत रहे, तथा असल घटनाओं और नतीजों को परमेश्वर पर छोड़ दें। हम अपना काम करते हैं — योजना बनाना, तैयारी करना और दस्तक देना, लेकिन परिणाम प्रभु की ओर से ही होता है।

आप जिस पहले दरवाज़े पर दस्तक देते हैं, यदि वह पूरी तरह से नहीं खुलता है, तो निराश न हों। यह विश्वास रखें कि आपके सामने आने वाला हर बंद दरवाज़ा आपको उस **जगह** ले जा रहा है जहाँ आप वह **व्यक्ति** बन सकते हैं और उस **उद्देश्य** को पूरा कर सकते हैं जो परमेश्वर ने आपके लिए रखा है।

मत्ती 7:7,8
7 "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
8 क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।"

असामान्य कृपा की अपेक्षा करें

उत्पत्ति 39:21
'पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा और उस पर करुणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई।'

पवित्रशास्त्र बाइबिल ऐसे लोगों की कहानियों से भरा है जिन्होंने अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा का अनुभव किया, और असंभव को संभव होते देखा। दैवीय कृपा परमेश्वर का एक ऐसा वरदान है जो किसी व्यक्ति पर उँड़ेला जाता है, और यह उस व्यक्ति को प्रभाव, तथा लोगों, स्थानों या चीज़ों तक पहुँच, असाधारण अवसर, मान-सम्मान और दैवीय हस्तक्षेप प्रदान करता है। जब आप अपनी पेशेवर यात्रा पर आगे बढ़ते हैं, तो कृपा पाना और अनुभव करना एक बहुत बड़ी आशीष है।

जब आप अवसरों के द्वार खटखटाते हैं, चाहे अपनी पहली नौकरी के लिए, या अपने करियर के एक चरण से अगले चरण की ओर बढ़ते समय, तो दैवीय कृपा की अपेक्षा रखें। दैवीय कृपा के कारण अद्‌त बातें घटित होती हैं।

कृपा ऐसी चीज़ है जिसकी उम्मीद हमें न केवल कोई अवसर तलाशते समय करनी चाहिए, बल्कि अपनी पूरी पेशेवर यात्रा के दौरान भी करनी चाहिए। संगठन के भीतर अपने काम में, अन्य पेशेवरों के साथ अपनी बातचीत में, अपनी सेल्स कॉल्स पर, अपने प्रस्तुतीकरण के दौरान, और जो कुछ भी आप करते हैं, उन सभी में दैवीय कृपा की अपेक्षा करें। स्मरण रखें, दैवीय कृपा का अनुभव करने के लिए, हमें खुद को सही स्थिति में रखना होगा और समझदारी से चलना होगा। अगुवा और अधिकारी एक समझदार कर्मचारी को ही पसंद करते हैं।

नीतिवचन 14:35
जो कर्मचारी बुद्धि से काम करता है, उस पर राजा (अगुवा) प्रसन्न होता है, परन्तु जो लज्जा के काम करता, उस पर वह रोष करता है।

आप तभी निर्माण कर सकते हैं जब आप स्थिर हो जाएँ; इधर-उधर भटकना बंद करें

नीतिवचन 27:8
स्थान छोड़कर घूमनेवाला मनुष्य उस चिड़िया के समान है, जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है।

हालांकि हमने अलग-अलग चरणों और बदलावों के महत्व पर ज़ोर दिया है, लेकिन कृपया यह ध्यान रखें कि बदलाव सही समय पर ही किए जाने चाहिए। आम तौर पर, आप हर चरण में काफी समय बिताते हैं। हालांकि इसकी कोई तय समय-सीमा नहीं है, लेकिन आमतौर पर आप बदलाव करने से पहले हर चरण में तीन से चार साल बिता सकते हैं। इससे आपको स्थिर होने, सीखने, खुद

को बेहतर बनाने, आगे बढ़ने और अपनी संस्था में कोई सार्थक योगदान देने के लिए काफी समय मिल जाता है। आप एक 'लुढ़कते पत्थर' या जैसा कि नीतिवचन में कहा गया है, एक 'चंचल चिड़िया' जैसा नहीं बनना चाहेंगे। चंचल चिड़ियां न तो घोंसला बनाती हैं, न ही अंडे देती हैं, और न ही उनके बच्चे होते हैं। वे खुद को स्थापित नहीं करते, उत्पादक नहीं हो पाते, तथा गुणा और वृद्धि नहीं कर सकते। इसलिए, सिर्फ़ पैसों के फ़ायदे के लिए एक नौकरी से दूसरी नौकरी में यूं ही कूदते रहने के लालच से बचें। आप अपनी **जीवन-योजना** के मुताबिक जी रहे हैं, न कि किसी 'चूहा-दौड़' में भाग रहे हैं।

अपनी धार पैनी करो—अपने अनुग्रह, वरदान और कौशलों को

सभोपदेशक 10:10

यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे,तो अधिक बल लगाना पड़ेगा; परन्तु सफल होने के लिये बुद्धि से लाभ होता है।

कुल्हाड़ी के फल को तेज़ करने और उसे हमेशा तेज़ रखने से ही सबसे अच्छे नतीजे मिलते हैं। इसी तरह, आपके प्रोफ़ेशनल करियर में, आपका अनुग्रह, वरदान और कौशल ही आपकी कुल्हाड़ी का फल, यानि की आपकी धार हैं। सफलता पाने के लिए इन्हें लगातार बेहतर बनाना होगा। अगर आप अपनी धार को तेज़ नहीं रखेंगे, तो पेशेवर तौर पर आगे बढ़ने के लिए आपको कहीं ज़्यादा समय, मेहनत और ऊर्जा लगानी पड़ेगी। इसलिए, समझदारी इसी में है कि आप अपनी धार को लगातार तेज़ करते रहें। हर दौर में, अपनी ताक़त को बढ़ाएँ। अपने कौशल का विस्तार करें। नए कौशल सीखें। नई-नई चीज़ें सीखें। इससे आपको आगे बढ़ने में मदद मिलेगी और आप अपनी **जीवन-योजना** को पूरा करने की दिशा में बढ़ पाओगे।

चीज़ों का बार-बार जायज़ा लें—समीक्षा करें, सुधार करें, बेहतर करें

नीतिवचन 4:26

अपने पाँव रखने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें।

आप जो कदम उठा रहे हैं और आप कहाँ जा रहे हैं, उसके बारे में सोचें। समय-समय पर अपनी स्थिति का जायज़ा लेते रहें। रुकें। इस बात पर विचार करें कि आपके पेशेवर जीवन में चीज़ें कैसी चल रही हैं। ध्यान से सुनिए कि प्रभु आपसे उस **व्यक्ति** के बारे में क्या कह रहे हैं जैसा वह आपको बनाना चाहता हैं; वह **जगह (जगहें)** जहाँ वह चाहता है कि आप कदम रखें, और वह **उद्देश्य** जिसे वह चाहता है कि आप पूरा करें। प्रभु चीज़ें स्पष्ट करते जाएगा, आपको नए रास्ते दिखाएगा, और जैसे-जैसे आप अपनी यात्रा में आगे बढ़ेंगे, वह नई चीज़ें सामने लाएगा। जब वह ऐसा करें, तो समीक्षा करें कि आप कहाँ हैं; और ज़रूरत के हिसाब से अपनी योजनाओं में सुधार करें और बेहतरी लायें। चीज़ों को ठीक करें ताकि आप वह कर सकें जो प्रभु आपको दिखा रहे हैं। जैसे-जैसे आप प्रभु के मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, हो सकता है कि आप अपने जीवन में उसके अनुग्रह के नए-नए क्षेत्रों को अनुभव करें; आपमें नए वरदान उभरकर सामने आ सकते हैं, और आप नए कौशल विकसित कर सकते हैं या अपने मौजूदा कौशलों को और अधिक मज़बूत बना सकते हैं। नए अवसर खुल सकते हैं। इन सबके बीच, आप जो रास्ता अपना रहे हैं, उस पर सोचें। आपका हर कदम मज़बूत और भली-भांति सोच-समझकर उठाया गया होना चाहिए।

आगे बढ़ने के लिए, आपको बदलना होगा

1 कुरिन्थियों 13:11

जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं।

विकास बदलाव की प्रक्रिया से होता है। आध्यात्मिक रूप से, हम महिमा से महिमा में बदलते जाते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)। परिपक्वता, जो कि बस बड़ा होना है, बदलाव के ज़रिए ही आती है। इसी तरह, अपनी **जीवन-योजना** में आगे बढ़ने के लिए, आपको अपनी पेशेवर यात्रा में कुछ बदलाव करने पड़ सकते हैं। इनमें से कुछ बदलाव सरल और आसान हो सकते हैं—अपनी ताकत पर और निर्माण करने जितना सरल। कभी-कभी, ये बदलाव काफ़ी महत्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि बहुत ज़्यादा प्रचंड भी हो सकते हैं। इनमें से कुछ बदलाव ऐसे हो सकते हैं जिनका आपने पहले से अंदाज़ा लगा लिया था और जिनके बारे में सुविचारित भी थे। कुछ बदलाव अचानक से अनपेक्षित रीती से आपके सामने आ सकते हैं। याद रखें, बदलाव एक ऐसी चीज़ है जो ज़रूर होगी। वास्तविकता में, विकास के लिए इसका होना ज़रूरी है। बदलावों को सहजता से स्वीकार करना सीखें। बदलाव के दौर का भी उतना ही आनंद लें, जितना आप स्थिरता और निश्चितता के दौर का लेते हैं। जब तक बदलाव आपको आपकी **जीवन योजना** में आगे बढ़ा रहा है, तब तक उसके साथ आगे बढ़ते रहे। उसका आनंद लें!

अपनी यात्रा जारी रखते हुए, स्पष्टता की तलाश करें

नीतिवचन 4:18

परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।

कई बार ऐसा होता है जब चीज़ें काफ़ी अस्पष्ट लग सकती हैं। हो सकता है कि आपके पास "क्या," "क्यों," "कब," और "कैसे" जैसे सवालों के सभी जवाब न हों। ऐसा समय भी आ सकता है जब आपको लगे कि आप किसी "एकतरफा बेजान नौकरी" में फँस गए हैं, या फिर आप जो काम पेशेवर तौर पर करते हैं, वह आपको बिलकुल भी दिलचस्प न लगे और उसका आपकी मंज़िल से कोई लेना-देना न हो। लेकिन जैसे-जैसे आप अपनी इस यात्रा को जारी रखेंगे, प्रार्थना करते

रहेंगे और परमेश्वर को खोजते रहेंगे, चीज़ें स्पष्ट होती जाएंगी।

‘गधे और घोड़े’ वाले रवैये से बचें

भजन संहिता 32:8,9

8 मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा।
9 तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते, उनकी उमंग लगाम और रास से रोकनी पड़ती है, नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने के।

परमेश्वर ने जीवन की यात्रा में हमें निर्देश देने, सिखाने, मार्गदर्शन करने और हमारी देखभाल करने का वादा किया है। इसमें वह सब भी शामिल है जो हम अपने पेशे के तौर पर करते हैं। जब हम अपने कार्यक्षेत्र की यात्रा में आगे बढ़ते रहेंगे, तो वह हमें निर्देश देगा, सिखाएगा और हमारा मार्गदर्शन करेगा। हालाँकि, परमेश्वर हमसे कहता हैं कि हम गधे या घोड़े जैसे न बनें। गधा जिद्दी, हिचकिचाने वाला या हिलने से मना करने वाला भी हो सकता है। दूसरी ओर, घोड़ा हमेशा आगे की ओर भागना चाहता है, इधर-उधर बेतरतीब ढंग से दौड़ता रहता है, और उसे काबू में रखने के लिए लगाम कसने की ज़रूरत पड़ती है। इसलिए, अपनी पेशेवर यात्रा में, हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि हम परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर और उनके समय के अनुसार ही आगे बढ़ें। गधे के समान मत बनो, जो परमेश्वर के नेतृत्व में चलने को तैयार नहीं है। घोड़े के समान मत बनो, जो परमेश्वर से आगे निकलकर उस दिशा में भागता है, जिस ओर वह नहीं चाहता कि तुम जाओ।

भजन संहिता 25:12

वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है चलाएगा।

तुम्हारे कदम परमेश्वर द्वारा निर्धारित हैं

भजन संहिता 37:23,24

23 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;

24 चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।

एक मज़बूत सच्चाई जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं, वह यह है कि आप जिस राह पर चल रहे हैं, उसमें परमेश्वर आनंदित होता है, या वह उसमें स्वयं पूरी तरह से शामिल होता है। वह बड़ी कुशलता से आपका मार्गदर्शन करता है। आपके हर कदम को वही दिशा देता है। अगर आप कोई गलती करते हैं और आपका पतन हो जाता हैं, तो भी वह आपको संभालता है। यदि आपको लगता है कि आपने गलत रास्ता चुना है, और आप फंस गए हैं, तो भी वह बाहर निकलने का रास्ता बना सकता है।

भजन संहिता 25:15

मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल में से छुड़ाएगा।

प्रभु पर भरोसा रखें, आप हर चीज़ को पूरी तरह समझ नहीं सकते

नीतिवचन 3:5,6 (‘द मैसेज अंग्रेजी बाइबल’ से उद्धरित)

5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।

6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

हम चाहे कितनी भी तैयारी और योजना बना लें, हमें यह समझना होगा कि जो कुछ भी होता है, हम उसे पूरी तरह से नियंत्रित नहीं कर सकते। अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती ही हैं। इसीलिए जीवन एक बड़े रोमांच की तरह है। इस यात्रा में कई आश्चर्य सामने आते हैं।

कभी-कभी, बदलाव अचानक हो जाते हैं। किसी संगठन में विभिन्न कारणों से चीज़ें अप्रत्याशित रूप से बदल जाती हैं, और इसका आप पर किसी न किसी तरह से असर पड़ सकता है। इसीलिए, हमारी तमाम योजनाओं के बावजूद, हमें हमेशा प्रभु पर भरोसा रखना चाहिए और निरंतर विश्वास के साथ चलना चाहिए। हमारी योजना और तैयारी, परमेश्वर के प्रति हमारे भण्डारीपन (स्टूअर्डशिप) की ही एक अभिव्यक्ति है। हमें जो बातें सौंपी गई है, उसके प्रति हम आभार और ईमानदारी से प्रतिक्रिया दे रहे हैं। और फिर भी, हमारी आँखें हमेशा प्रभु पर ही केन्द्रित रहती हैं। हम भरोसा बनाए रखते हैं। हम उसकी सुनते रहते हैं। और जब हम ऐसा करते हैं, तो हम जानते हैं कि वह हमें सही राह पर बनाए रखेगा ।

नीतिवचन 21:31
युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।

भजन संहिता 37:4,5
4 यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।
5 अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।

आप जो कुछ भी करते हैं और जो भी कदम उठाते हैं, उन सभी मामलों को प्रभु को सौंप दें; उस पर भरोसा रखें, और वह आपके लिए अपनी सर्वोत्तम और श्रेष्ठ योजना को साकार करेगा।

अपने पहाड़ की ओर कदम बढ़ाएँ

यहोशू 14:12
इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उसमें अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूँ।

आम तौर पर, समाज के सात क्षेत्र या 'पहाड़' होते हैं, जो किसी भी समाज के स्तंभ होते हैं। ये सात पहाड़ इस प्रकार हैं:

1) **परिवार**: परमेश्वर द्वारा स्थापित संस्था

2) **धर्म**: कलीसिया (चर्च), यानी परमेश्वर के लोग

3) **शिक्षा**: स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण, या शिक्षा।

4) **मीडिया**: सार्वजनिक संचार के सभी माध्यम—प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक, जैसे समाचार पत्र, टीवी, इंटरनेट।

5) **कला और मनोरंजन (उत्सव)**: कला, मनोरंजन और खेल, ये सभी किसी भी संस्कृति के भीतर उत्सव के विभिन्न रूप हैं।

6) **व्यवसाय (अर्थव्यवस्था)**: विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई खोज; इसमें सभी प्रकार के व्यावसायिक लेन-देन और गतिविधियाँ शामिल हैं।

7) **सरकार:** इसकी तीनों शाखाएँ—न्यायपालिका (न्याय व्यवस्था), विधायिका (कानून निर्माण), और कार्यपालिका (सरकारी तंत्र का संचालन)

ऊपर बताए गए सातों बड़े क्षेत्रों में, हज़ारों-हज़ारों उप-समूह हैं।

पता लगाएँ कि इन पहाड़ों में से किस पर परमेश्वर चाहते हैं कि आप स्थित हों। हर पहाड़ पर "विशालकाय बाधाएँ" होती हैं। चुनौतियाँ होती हैं। सिर्फ चुनौतियों की वजह से किसी भी पहाड़ों से पीछे मत हटो। आप खुद को उन पहाड़ों पर, जहाँ आप स्थित होंगे, बदलाव और परिवर्तन लाने के लिए तैयार करें। प्रभु आपके साथ रहेगा और आप बदलाव लाने में सक्षम होंगे।

मुख्य सिद्धांत

1) अपने जीवन के अनुग्रह, वरदानों तथा कौशलों को पहचानें।
2) अवसरों की तलाश करें; सुझाव लें; एक योजना तैयार करें।
3) शुरुआत करें—प्रार्थना करें, सुनें, आगे बढ़ें!
4) दरवाज़े खोले जाने के लिए दस्तक दें।
5) असामान्य कृपा की अपेक्षा करें।
6) आप तभी निर्माण कर सकते हैं जब आप स्थिर हो जाएँ। इधर-उधर भटकना बंद करें।
7) अपनी धार पैनी करो—अपने अनुग्रह, वरदान और कौशलों को।
8) चीज़ों का बार-बार जायज़ा लें—समीक्षा करें, सुधार करें, बेहतर करें।
9) आगे बढ़ने के लिए, आपको बदलना होगा।
10) अपनी यात्रा जारी रखते हुए, स्पष्टता की तलाश करें।
11) 'गधे और घोड़े' वाले रवैय्ये से बचें।
12) तुम्हारे कदम परमेश्वर द्वारा निर्धारित हैं।
13) प्रभु पर भरोसा रखें, आप हर चीज़ को पूरी तरह समझ नहीं सकते।
14) अपने पहाड़ की ओर कदम बढ़ाएँ।

चिंतन

इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

1) प्रार्थना करने, चिंतन करने और प्रभु की वाणी सुनने के लिए कुछ

समय निकालें; फिर अपने अनुग्रह, अपने वरदानों तथा अपने कौशलों के बारे में लिखें।

2) प्रार्थना करने, चिंतन करने और प्रभु की वाणी सुनने के लिए कुछ समय निकालें; फिर, आप अभी जिस स्थिति में हैं तथा भविष्य के अगले चरण (या अगले कुछ चरणों) में आप जो बदलाव ला सकते हैं, उन्हें ध्यान में रखते हुए, अपने पेशेवर करियर की एक योजना तैयार करें।

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

3
कार्यस्थल पर सही रवैया

रवैया वह तरीका है जिससे हम बातों को देखते हैं। यह हमारी पसंद, कामों, व्यवहार और आदतों को प्रभावित करता है। हमारा रवैया बताता है कि हम कौन हैं और काफी हद तक यह तय करता है कि हम क्या बनेंगे। हमारा आह्वान है कि अपने कार्यक्षेत्र पर बाइबिल के अनुसार रवैया बनाए रखें।

सभी कार्यक्षेत्रों का माहौल एक जैसे नहीं होता। कुछ काम करने की जगहें बहुत ही दोस्ताना, सेहतमंद, मददगार और मज़ेदार होती हैं। वहाँ पर काम करना आपको बहुत पसंद आएगा! फिर ऐसे काम के माहौल भी हैं जो बहुत खराब होते हैं, जहाँ लोग एक-दूसरे को कम आंकने और एक-दूसरे से ज़्यादा होशियार बनने की कोशिश करते रहते हैं। हर छोटी-छोटी बात पर वहाँ गपशप, ऑफिस पॉलिटिक्स और हाई ड्रामा होता है। ऐसी काम करने की जगहें किसी सज़ा से कम नहीं होतीं। काम करना एक बोझ बन जाता है। हर दिन के आखिर में आप मानसिक और शारीरिक, दोनों ही तरह से पूरी तरह से थक जाते हैं।

आपकी प्रोफेशनल यात्रा आपको काम के अलग-अलग माहौल से गुज़ार सकती है। एक चीज़ जो आपको चाहिए होगी, वह है आपके आस-पास जो कुछ भी हो रहा है, उसके बावजूद अच्छा रवैया बनाए रखने की क्षमता। एक अच्छा रवैया हमेशा जीत दिलाता है। यह आपको हमेशा आपके आस-पास आने वाले तूफानों से बचाए रखेगा। रवैया एक चुनाव है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप चीज़ों को किस नज़रिए से देखने का फ़ैसला करते हैं। यह इस बात पर निर्भर

करता है कि आप कैसे काम करने और प्रतिक्रिया देने का फ़ैसला करते हैं। यह एक ऐसा चुनाव है जो आप सकारात्मक, खुशमिज़ाज, दयालु, प्यार करने वाला और हौसला बढ़ाने वाला बने रहने के लिए करते हैं। रवैया संक्रामक होता है। आप अपने अच्छे रवैये से अपने आस-पास के लोगों को प्रभावित करना शुरू कर सकते हैं। लोग सकारात्मक लोगों के साथ रहना पसंद करते हैं। इसलिए, जब आप काम पर जाएं, तो अच्छे रवैय्ये के साथ जाएं। हर दिन, कार्यक्षेत्र पर सही रवैये के साथ अपना काम करें।

कार्यस्थल पर व्यक्तियों का रवैया पूरे संगठन को प्रभावित करता है। कर्मचारियों का रवैया काम के माहौल को आकार देता है, जिसका असर कर्मचारियों के मनोबल, आपसी सहयोग, कार्य-प्रदर्शन और उत्पादकता पर पड़ता है। कार्यक्षेत्र पर सही रवैया अपनाकर, आप अपने संगठन में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं।

आपका रवैया लगभग हमेशा ही आपकी ऊँचाई तय करता है

दानिय्येल 6:3

जब यह देखा गया कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन् राजा यह भी सोचता था कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराए।

दानिय्येल *"अपने अन्दर एक उत्तम आत्मा"* के कारण दूसरों से अलग था। वह अपने काम में अच्छा था और वह उसे बड़े जोश या रवैये के साथ करता था। दानिय्येल ने तीन विश्व साम्राज्यों की सरकारों में सेवा की—पहले बाबुल, फिर मादी, और उसके बाद फ़ारसी। ये ऐसे माहौल थे जहाँ रहना काफ़ी मुश्किल था। काम की जगह पर उसके ऐसे सहकर्मी भी थे जिन्होंने उसे पद से हटाने की कोशिश की। फिर भी, वे दानिय्येल के काम और उसके काम करने के तरीके के कारण उसके कोई दोष नहीं ढूंढ पाए। असल में, जहाँ एक तरफ़ उसके शत्रु उसे हटाने के तरीके ढूँढ़ रहे थे, वहीं दूसरी तरफ़ राजा उसे

पदोन्नति देने पर विचार कर रहा था।

कार्यक्षेत्र पर आप जो अनुग्रह, वरदान और कौशल लाते हैं, उनके अलावा आपका रवैया आपको दूसरों से अलग बनाता है। यह आपके वरिष्ठों का ध्यान आकर्षित करता है। इसकी वजह से लोग आपके आस-पास रहना पसंद करते हैं। इससे ऐसे अवसर प्राप्त होते है जो शायद आपको दूसरे तरीके से न मिलते। लोग आपको अपनी टीम में शामिल करना चाहेंगे यही अच्छा रवैया और आपके चेहरे पर मुस्कान ही कई मौकों पर आपको और आपकी टीम को पूरा दिन अच्छे से बिताने में मदद करेगी।

नीतिवचन 15:13 ('द मैसेज' अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है, परन्तु दुखी मन के साथ दिन गुजारना मुश्किल हो जाता है।

सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें

1 कुरिन्थियों 10:31
इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्‍वर की महिमा के लिये करो।

प्रेरणा ज़रूरी है। हमारी प्रेरणा ही हमें आगे बढ़ाती है। हमारी प्रेरणा हमें प्रेरित करती है, हमें जगाती है, और जब हालात मुश्किल होते हैं, तब भी हमें आगे बढ़ने की हिम्मत देती है; प्रतिदिन यह हमें उत्साह और ऊर्जा से भर देती है। हालाँकि, हमें प्रेरित करने वाली कई चीज़ें हो सकती हैं, जैसे कि हमारे पेशेवर करियर में आगे बढ़ते हुए या कार्यक्षेत्र पर काम करते हुए मिलने वाले पेशेवर प्रोत्साहन; लेकिन सबसे बुनियादी बात यह है कि हमें अपने हर काम के ज़रिए परमेश्वर की महिमा करने के लिए प्रेरित होना चाहिए। यदि आपने कभी अपने जीवन को सिर्फ़ इसी एक बात से प्रेरित होकर जीने की कोशिश की है—**कि आप जो भी करेंगे, वो सिर्फ परमेश्वर की महिमा के लिए**

करेंगे —तो आप पाएँगे कि यह एक बहुत ही शक्तिशाली प्रेरणा है। आपको उसका (परमेश्वर का) नाम धारण करने, उसका प्रतिनिधित्व करने और अपने काम के माध्यम से उसकी बुद्धि, श्रेष्ठता, सद्‌ण और महानता को प्रदर्शित करने का अधिकार प्राप्त है। आप अपने काम को एक माध्यम के रूप में तथा उसकी बड़ाई करने, महिमा करने, उसका गुणानुवाद करने और उसके लिए बोलने के तरीके के तौर पर देखते हैं। जब आप इसे अपनी मुख्य प्रेरणा बनाकर काम करते हैं, तो सब कुछ बदल जाता है। आपको अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता क्यों है, आप दबाव की परिस्थिति में शांत क्यों रहते हैं, आप अपने मांग करने वाले ग्राहकों की सेवा मुस्कुराते हुए क्यों करते हैं, जब दूसरे आपके साथ असभ्य व्यवहार करते हैं तो आप विनम्र क्यों होते हैं, आप उत्कृष्टता पर जोर क्यों देते हैं, इन सब के पीछे एक अलग ही वजह आ जाती है। ये सब कुछ आप परमेश्वर की महिमा के लिए कर रहे हैं।

यिर्मयाह 9:23,24
23 यहोवा यों कहता है: "बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे;
24 परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूँ जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूँ।"

अपनी अभिलाषा को परमेश्वर के राज्य पर केंद्रित रखें

मत्ती 6:33
इसलिये पहले तुम परमेश्‌वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।

सबसे पहले, सबसे ज़रूरी बात। प्रभु यीशु ने कहा कि हमें परमेश्वर के राज्य और सही कार्य करने को अपनी सबसे पहली प्राथमिकता बनाना चाहिए; तब इस धरती पर हमारे जीवन से जुड़ी बाकी सभी

चीज़ों का ध्यान अपने आप रखा जाएगा। परमेश्वर के राज्य की तलाश करना, राजा के शासन और अधिकार को अपनी जीवन में और उसके ज़रिए बढ़ाने की इच्छा करना और उसका स्वागत करना है। परमेश्वर की धार्मिकता की खोज करने का अर्थ है कि हम वह करने का प्रयास करें जो उसकी दृष्टि में सही है। इस तरह, प्रभु यीशु का यह निर्देश ही कार्यक्षेत्र पर हमारी अभिलाषा का मूल बन जाता है। यही हमारे सपनों, लक्ष्यों तथा उन प्रयासों का केंद्र बन जाता है, जिनके द्वारा हम पेशेवर रूप से कुछ बनना और हासिल करना चाहते हैं। हम जो कुछ भी करते हैं और बनते हैं, उसमें हम अपने जीवन में और उसके द्वारा परमेश्वर के शासन, राज्य तथा धार्मिकता की इच्छा करते हैं, उसका स्वागत करते हैं और उसे बढ़ाते हैं।

हमेशा याद रखें, जीवन में पैसे कमाने के अलावा भी बहुत कुछ है

नीतिवचन 11:28

जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं।

एक बुनियादी बात जो हमें हमेशा याद रखनी चाहिए, वह यह है कि पैसा, दौलत और धन-संपत्ति ही जीवन में सब कुछ नहीं होते। जीवन में धन-दौलत इकठ्ठा करने के अलावा भी बहुत कुछ है। आपकी पेशेवर ज़िंदगी सिर्फ़ पैसा कमाने और कॉर्पोरेट जगत की ऊँचाइयों पर पहुँचने से कही बढ़कर है। हालाँकि ये चीज़ें अपने आप में बुरी नहीं हैं, लेकिन इन्हें हमारी ज़िंदगी का एकमात्र और सबसे बड़ा मकसद नहीं बनना चाहिए। कई ऐसी चीज़ें हैं जो दिखाई नहीं देतीं, जैसे अच्छे रिश्ते, लोगों की सेवा करना, समस्याओं को सुलझाना, परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना और उसकी महिमा करना, जो इस बात का पूरा मतलब बताती हैं कि हम कार्यक्षेत्र पर जो करते हैं, वह क्यों करते हैं।

स्मरण रखें, परमेश्वर आपके स्वामी हैं, और पैसा आपका गुलाम है। आप परमेश्वर की सेवा करते हैं; आप पैसे का उपयोग करते हैं। *"कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता : क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"* (लूका 16:13)

नीतिवचन 23:4,5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
4 इतने समझदार बनो कि धनी होने की कोशिश में खुद को न थकाओ।
5 आपका पैसा एक झटके में गायब हो सकता है, जैसे कि उसे पंख लग गए हों और वह उकाब पक्षी के समान उड़ गया हो।

अगर ज़्यादा पैसा कमाना ही एकमात्र उद्देश्य बन जाए, तो लोग सिर्फ़ ज़्यादा पैसा कमाने के लिए नियम तोड़ने लगते हैं, गलत तरीके अपनाते हैं, और दूसरों को चोट भी पहुँचाते हैं। परमेश्वर हमें अपने इरादे सही रखने के लिए कहता है।

नीतिवचन 16:2 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित) (नीतिवचन 21:2 भी देखें)
आप सोच सकते हैं कि आप जो कुछ भी करते हैं वह सही है, परन्तु यहोवा मन को तौलता है।

मीका 6:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
नहीं, प्रभु हमें बता चुका है कि अच्छा क्या है; वह हमसे यही चाहता है: कि हम न्याय से काम करे, निरंतर प्रीति दिखाएँ, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले।

सदैव प्रभु के भय में चलें

नीतिवचन 15:16
घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से, यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है।

"परमेश्वर के भय" में चलना, हमारे प्रभु परमेश्वर के प्रति सम्मान और आदर में चलना है। इसका मतलब है कि हम हर पल इस बात के प्रति सचेत रहें कि प्रभु कौन हैं, वह हमसे क्या करवाना चाहता हैं, और हम खुद को इस तरह ढालें कि उसकी नज़र में जो सही है, वही करें। कार्यक्षेत्र पर, दबाव, लालच और ध्यान भटकाने वाली कई चीज़ें होंगी, जिनकी वजह से हम परमेश्वर के भय से और नेकी के रास्ते से भटक सकते हैं। इसलिए, हमें जान-बूझकर प्रभु के भय में चलना चाहिए। छोटी-छोटी बातों में भी परमेश्वर का आदर करना सीखें। अपने पेशेवर फैसलों में, अपनी बातचीत में, लोगों से मिलने-जुलने के तरीके में, और अपनी सभी पेशेवर गतिविधियों में—एक पल रुककर अपने भीतर झाँकें और अपने आप को जाँचे। स्वयं से पूछें, "क्या इससे परमेश्वर का आदर होता है? क्या इससे मेरे परमेश्वर के प्रति मेरा आदर प्रगट होता है? क्या उसकी नज़र में यह सही है?"

"यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, और परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है।" (नीतिवचन 9:10; भजन संहिता 111:10 भी देखें)। जब हम यहोवा के भय में चलते हैं, तभी हमें दैवीय बुद्धि और समझ प्राप्त होती है। यही वह शुरुआती बिंदु है, ऊपर से आनेवाली बुद्धि (कुशल जीवन) में प्रवेश का द्वार है। यही वह कुंजी है जो दैवीय बुद्धि और समझ के द्वार को खोलती है। वह कुंजी है—परमेश्वर के भय में चलना।

"यहोवा का भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से पहले नम्रता आती है।" (नीतिवचन 15:33)। यहोवा का भय केवल बुद्धि की शुरुआत ही नहीं है, बल्कि बुद्धि में शिक्षा पाने का मार्ग भी है। जैसे-जैसे हम प्रभु के भय में चलते हैं, हमें ज्ञान के मार्गों में निर्देश (शिक्षा, सीख) मिलता है। अब हम अपने पेशेवर और दैनिक जीवन की स्थितियों में परमेश्वर की बुद्धि के अनुसार चलने में सक्षम हो जाते हैं। दैवीय बुद्धि और समझ हमें समस्याओं के उचित समाधान

खोजने में, रचनात्मकता को जन्म देने में, अंतर्दृष्टि और दूरदर्शिता प्रदान करने में, तथा सही तरीका निर्धारित करने की क्षमता देने में सहायता करती है।

"जो सीधाई से चलता वह यहोवा का भय माननेवाला है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता वह उसको तुच्छ जाननेवाला ठहरता है।" (नीतिवचन 14:2)। ईमानदारी से चलना इस बात का सबूत है कि हम परमेश्वर के भय में चल रहे हैं। जो सही, न्यायसंगत, निष्पक्ष और समानता पर आधारित है, उसे करने का चुनाव करना ही हमारे हृदय में परमेश्वर के भय की अभिव्यक्ति है।

"यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है; और उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है; उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की।" (नीतिवचन 19:23)। परमेश्वर के प्रति आदर और सम्मान के साथ जीवन जीना ही वास्तविक जीवन का मार्ग है, एक ऐसा जीवन जो सच्ची संतुष्टि और पूर्णता लाता है, और हमें उस बुराई से बचाता है जो आखिर में गलत कामों के साथ आती है।

नीतिवचन 22:4
नम्रता और यहोवा के भय मानने का फलधन, महिमा और जीवन होता है ।

सभोपदेशक 12:13,14
13 सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।
14 क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।

पवित्र आत्मा का फल एक विजयी रवैया है; पवित्र आत्मा के अनुसार चलें

गलातियों 5:22,23 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास,

[23] नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य हमारे अस्तित्व में—हमारे चरित्र, हमारे दृष्टिकोण और हमारे पूरे व्यक्तित्व में—एक परिवर्तन लाती हैं। वह हमारे अंदर आत्मा का फल उत्पन्न करता है—जो हमारे अंदर वास करने वाली उसकी उपस्थिति और कार्य के उत्पाद या परिणाम हैं। जब हम उनके प्रति समर्पित होकर चलते हैं (यानी आत्मा में चलते हैं), तो हम अपने जीवन में इन फलों को पा सकते हैं। इन नौ गुणों पर विचार करें। इनमें से प्रत्येक गुण का विस्तार से वर्णन किया गया है, और साथ ही 'द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से संबंधित वाक्यांश को भी इसमें शामिल किया गया है।

1) **प्रेम—**दूसरों के प्रति करुणा, देखभाल, चिंता और स्नेह दिखाना
2) **आनंद—**जीवन के प्रति एक सकारात्मक, प्रसन्न, जोशीला, उत्साहपूर्ण और उमंग भरा भाव
3) **शांति—**मन की स्थिरता, संतुलन, संयम और प्रशांति का अनुभव
4) **धीरज—**दृढ़ सहनशक्ति, प्रतिबद्धता और किसी भी काम पर टिके रहने की इच्छाशक्ति
5) **कृपा—**शब्दों तथा कार्यों में कोमलता, और हृदय में करुणा / तरस का भाव
6) **भलाई—**परोपकार और उदारता का प्रदर्शन करना
7) **विश्वास—**ईमानदार और भरोसेमंद होना, वफादारी से अपनी प्रतिबद्धता निभाना
8) **नम्रता—**कोमलता, जीवन में अपनी बात या इच्छा को ज़बरदस्ती थोपने की ज़रूरत न महसूस करना

9) **संयम—**स्वयं पर शासन करने की क्षमता, अपनी ऊर्जा को समझदारी से व्यवस्थित और सही दिशा में लगाने की योग्यता

सोचिए कि आप इन नौ ताकतवर खूबियों या रवैये वाले व्यक्ति हैं। ये आपको ऐसा व्यक्ति बना देंगे जिसकी दूसरे लोग आसानी से तारीफ़ करेंगे और आपसे बातचीत करना चाहेंगे। ये एक विजयी रवैया हैं। कार्यक्षेत्र पर भी आत्मा के अनुसार चलें।

अपना काम आज्ञाकारी होकर, ईमानदारी से, स्वेच्छा से और खुशी-खुशी करें

इफिसियों 6:5-8

[5] हे दासों, जो लोग इस संसार में तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते और काँपते हुए, जैसे मसीह की वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो।
[6] मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह के दासों के समान मन से परमेश्‍वर की इच्छा पर चलो,
[7] और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु की जानकर सच्‍चे हृदय से करो।
[8] क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा।

बाइबल के समय में, "दास" और "स्वामी" हुआ करते थे। यह "कृषि युग" की बात है। आज हमारे पास कर्मचारी, मैनेजर, प्रेसिडेंट, सी.ई.ओ. और दूसरे ऐसे पद हैं जो हम काम की जगह पर अलग-अलग पदों और भूमिकाओं में काम करने वाले लोगों को देते हैं। जो व्यक्ति किसी दूसरे के लिए या उसके अधीन काम करता है, उसके लिए कुछ खास निर्देश दिए गए हैं। हम इन बातों पर ध्यान देते हैं—आज्ञा मानना, ईमानदार होना, पूरे दिल से या अपनी स्वेच्छा से काम करना, और खुशी-खुशी काम करना। परमेश्वर हमें कार्यक्षेत्र पर इन्हीं रवैयों के साथ काम करने का निर्देश देता है।

- "आज्ञा मानना" का अर्थ है, निर्देशों का पालन पुरे आदर और

समर्पित हृदय से करना। आपसे जो करने को कहा गया है, उसके अनुरूप ही चलें।

- “ईमानदार रहे” का अर्थ है, किसी काम को पूरी सच्ची दिलचस्पी के साथ करना, भले ही कोई आपको देख न रहा हो।
- जो भी काम आप कर रहे हैं, उसे अपनी पूरी स्वेच्छा से और पूरे दिल से करें।
- हर काम को खुशी और प्रसन्नता के साथ, पूरे उत्साह से और बिना किसी हिचकिचाहट के करें। हर बात में, मसीह के सेवक के रूप में काम करें, यह सोचकर कि आप यह काम उसी के लिए और उसी की सेवा में कर रहे हैं, और अपने प्रतिफल के लिए उसी की ओर देख रहे हैं।

फिलिप्पियों 2:14,15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
14 सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो,
15 ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो

वफ़ादारी ज़रूरी है; निष्ठावान रहें

नीतिवचन 3:3,4 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ; वरन् उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।
4 यदि तू ऐसा करें तो परमेश्वर और मनुष्य दोनों तुझसे खुश होंगे।

वफ़ादार या निष्ठावान होने का मतलब है कि आप जिस संगठन या टीम में काम करते हैं, उसके दर्शन तथा उद्देश्य को पूरा करने के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं । जब तक आप संगठन का हिस्सा हैं, आप संगठन के हितों के लिए काम करते हैं, उसके मिशन, मूल्यों और संस्कृति से जुड़े रहते हैं, तथा संगठन के विकास और उसकी तरक्की

चाहते हैं। हालाँकि आपके पेशेवर लक्ष्य और निजी ज़रूरतें महत्वपूर्ण हैं, फिर भी आप अपने निजी हितों की खातिर किसी भी तरह से संगठन को नुकसान नहीं पहुँचाते। आप भरोसेमंद और विश्वसनीय हैं। आप पर भरोसा किया जा सकता है और यह उम्मीद की जा सकती है कि आप संगठन के लिए जो सबसे अच्छा है, वही करेंगे।

तितुस 2:9,10 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
9 दासों (कर्मचारियों) को ऐसे वफ़ादार कर्मचारी बनने के लिए प्रेरित करें जो अपने स्वामियों के लिए फ़ायदेमंद हों- वे न तो उलटकर जवाब दें;
10 और न ही चोरी चालाकी करें। तब उनका अच्छा चरित्र उनके कामों से चमकेगा, जिससे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ेगी।

आजकल वफ़ादारी आसानी से नहीं मिलती। ज़्यादातर लोग संगठन और उसके हितधारकों के नाम, विकास और भलाई से पहले अपने फायदे को प्राथमिकता देते हैं। इससे अक्सर लोग हर तरह के गलत कामों में पड़ जाते हैं, जैसे रिश्वत लेना, कमीशन खाना और दूसरी गलत गतिविधियाँ करना, जिनसे उनका अपना फायदा तो होता है परन्तु संगठन खतरे में पड़ जाता हैं।

प्रभु यीशु ने एक गैर-ज़िम्मेदार भण्डारी (मैनेजर) की कहानी सुनाई, जिसने अपने गलत व्यवहारों की वजह से अपने मालिक के बिज़नेस को घाटे में डाल दिया। प्रभु यीशु ने अंत में यह कहा, *"जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। इसलिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा? और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?"* (लूका 16:10-12, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

वफ़ादारी और निष्ठा से जुड़े कुछ मुख्य सिद्धांत हैं:

- छोटी-छोटी बातों में वफ़ादारी यह दर्शाती है कि आप बड़ी बातों

में भी वफ़ादार रह सकते हैं।

- पैसे के लेन-देन में वफ़ादारी (वित्तीय ईमानदारी) आपको इस काबिल बनाती है कि आपको दूसरी चीज़ों को संभालने का ज़िम्मा सौंपा जा सके।
- किसी और की चीज़ों के प्रति वफ़ादारी आपको इस स्थिति में ले आती है कि आप अपनी खुद की चीज़ों के मालिक बन सकें।

"सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते रहते हैं, परन्तु जो धनी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता।" (नीतिवचन 28:20)। आपकी वफ़ादारी का आपको इनाम ज़रूर मिलेगा। जो इंसान अपने स्वार्थी हितों को सबसे पहले रखता है, और संगठन को खतरे में डालकर जल्दबाज़ी में अपनी तरक्की चाहता है, उसे इसके बुरे नतीजे भुगतने पड़ेंगे।

इसका मतलब यह नहीं है कि एक बार किसी संगठन में शामिल होने के बाद आप रिटायर होने तक उसी में बने रहेंगे। ऐसे कई कारण हो सकते हैं जिनकी वजह से आपको कोई संगठन छोड़कर दूसरे में शामिल होना पड़े, लेकिन जब तक आप किसी संगठन में कार्यरत होते हैं, तब तक आप उसके प्रति वफ़ादार और निष्ठावान बने रहते हैं।

हर समय जवाबदेह बनें, तब भी जब आपसे ऐसा करने के लिए न कहा गया हो

लूका 12:42-48 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

42 प्रभु ने जवाब दिया, "तो फिर, वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है? वह वही है जिसे उसका स्वामी अधिकार सौंपता है, ताकि वह घर चला सके और दूसरे दासों को समय पर भोजन सामग्री दे सके।

43 क्या ही धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी घर लौटकर उसे ऐसा करते हुए पाता है!

44 मैं तुम से सच कहता हूँ, वह स्वामी उस दास को अपनी सब सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा।

45 परन्तु यदि वह दास मन ही मन में सोचने लगे कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने–पीटने लगे, को पीटने लगे, और खाने-पीने और पियक्कड़ हो जाए,
46 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन, जब वह उसकी बाट जोहता न रहे, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो, आएगा और उसे वैसा ही दंड देगा जैसा आज्ञा न मानने वालों को मिलता है।
47 वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, उसे बुरी तरह कोड़े मारे जाएँगे।
48 लेकिन जो नौकर यह नहीं जानता कि उसका मालिक क्या चाहता है, और फिर भी ऐसा कुछ करता है जिसके लिए उसे कोड़े मारे जाने चाहिए, उसे हल्के कोड़े मारे जाएंगे। इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा; और जिसे उससे भी कहीं अधिक दिया गया है, उससे और भी ज़्यादा की अपेक्षा की जाती है।

जब आप काम पर जाते हैं, तो आप संगठन की सेवा करने के लिए अपने अनुग्रह, अपने वरदान और अपने कौशल साथ लाते हैं। एक तय समय-सीमा के भीतर, एक निश्चित और मापने योग्य स्तर पर कुछ काम पूरे करने के लिए संगठन आपको संसाधन (समय, उपकरण, प्रशिक्षण, लोग, पैसा, बुनियादी ढाँचा, आदि) उपलब्ध कराता है। आपसे यह भी उम्मीद की जाती है कि आप संगठन के हिस्से के तौर पर दूसरों के साथ मिलकर काम करेंगे ताकि उम्मीद के मुताबिक नतीजे मिल सकें। जवाबदेहीता का अर्थ है आपको सौंपे गए सभी संसाधनों का ज़िम्मेदारी से उपयोग करना, ताकि आप उन कार्यों को पूरा कर सकें जो आपको सौंपे गए हैं। आप हमेशा इस बात का जवाब देने के लिए तैयार रहते हैं कि आप अपने सौंपे गए संसाधनों का उपयोग किस प्रकार कर रहे हैं। हमेशा जवाबदेही की भावना के साथ काम करें और अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए संसाधनों का लाभप्रद तरीके से उपयोग करें। जो चीज़ें संगठन की हैं, उन्हें बर्बाद न करें। हमेशा स्वयं से पूछें कि क्या आपके पास उपलब्ध संसाधनों का यह सबसे अच्छा उपयोग है। भले ही आपसे स्पष्ट रूप से ऐसा करने के लिए न कहा गया हो, फिर भी जवाबदेह बनें। अंततः, अपने असली

मालिक, स्वयं परमेश्वर के प्रति, जो हर समय आपको देख रहा हैं, जवाबदेह बनें ।

कुलुस्सियों 3:22-25 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
22 हे सेवकों (कर्मचारियों), जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो। केवल तब नहीं जब वे तुम्हें देख रहे हों, क्योंकि तुम उनसे स्वीकृति पाना चाहते हो; परन्तु मन की सीधाई से ऐसा करो क्योंकि तुम प्रभु का आदर करते हो।
23 जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो;
24 याद रखो कि यहोवा तुम्हें इनाम के तौर पर वही देगा जो उसने अपने लोगों के लिए रखा है। क्योंकि मसीह ही वह असली स्वामी हैं जिसकी तुम सेवा करते हो।
25 क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा, क्योंकि परमेश्वर सभी को एक ही पैमाने से आंकता है।

जूनून रखो; यदि आपका दिल काम में नहीं लग रहा है, तो या तो दिल लगाएं या काम छोड़ दें

नीतिवचन 11:18 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
बुरे काम का भुगतान बुरी कमाई होता है; परन्तु भले काम का भुगतान निश्चय फलप्राप्ति होता है।

यह बताना बहुत आसान होता है कि कोई व्यक्ति कोई काम सिर्फ़ इसलिए कर रहा है क्योंकि वह एक "नौकरी" है और उसका दिल उस काम में नहीं लगा है। देर-सवेर, उसके काम में जुनून की कमी साफ़ नज़र आ ही जाती है। किसी भी मालिक के लिए इससे ज़्यादा तकलीफ़देह या किसी संगठन के लिए इससे ज़्यादा बेकार बात और कोई नहीं हो सकती कि कोई व्यक्ति सिर्फ़ कर्मचारियों की सूची में अपना नाम दर्ज करवा ले, हर महीने वेतन लेता रहे, लेकिन वह काम करके न दे जिसकी उससे उम्मीद की जाती है।

अपने काम के प्रति जुनूनी बनें। *"जो काम तुझे मिले उसे अपनी*

शक्ति भर करना" (सभोपदेशक 9:10)। हमेशा अपना सर्वोत्तम दें। जब ज़रूरत हो, तो अपनी तरफ़ से कुछ ज़्यादा करने के लिए भी तैयार रहें।

अगर आप अपने काम को लेकर जुनूनी नहीं हैं, तो आपको या तो अपने रवैये में बदलाव लाकर 100% जुट जाना होगा या फिर काम छोड़कर कुछ और ढूंढ लेना चाहिए। अपनी टीम, मैनेजर या संगठन पर बोझ न बनें, ताकि वे आपको सिर्फ़ इसलिए साथ न ढोते रहें, क्योंकि आप जो कर रहे हैं, उसे लेकर आपका मन "आधा-अधूरा" है। अगर आपके उत्साह की कमी की वजह काम का माहौल, अधिकारी या सहकर्मियों का बुरा बर्ताव, ऑफ़िस की राजनीति, या काम से जुड़ी कोई और बात है, तो सबसे अच्छा यही होगा कि आप इस बारे में अपने सुपरवाइज़र से बात करें। गलतफ़हमियाँ दूर करें और देखें कि क्या चीज़ें सुलझ सकती हैं, ताकि आप पूरे जुनून के साथ अपना काम कर सकें।

सभी बातों में हमेशा ईमानदारी और सच्चाई बनाए रखें

नीतिवचन 10:9

जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है।

बाइबल में ईमानदारी और सच्चाई से चलने के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। ईमानदारी का मतलब है वह करना जो सही है—नैतिक, सैद्धांतिक और कानूनी तौर पर। अपने पेशेवर काम में, सच बोलें, सही बातें बताएं और वही करें जो सही है। बड़े-बड़े नेता गिर गए और बड़ी-बड़ी संस्थाएं ढह गईं, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि उनमें ईमानदारी की कमी थी। चाहे आप कोई सेल्स प्रेजेंटेशन दे रहे हों, किसी प्रोजेक्ट पर रिपोर्ट बना रहे हों, या फिर पैसों से जुड़े मामलों पर काम कर रहे हों—हमेशा वही करें जो सही है।

नीतिवचन 4:24
टेढ़ी बात अपने मुँह से मत बोल, और चालबाज़ी की बातें कहना तुझ से दूर रहे।

नीतिवचन 12:22
झूठों से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो विश्‍वास से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है।

नीतिवचन 11:3
सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं, परन्तु विश्‍वासघाती अपने कपट से नष्‍ट होते हैं।

नीतिवचन 11:5
खरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधा होता है, परन्तु दुष्‍ट अपनी दुष्‍टता के कारण गिर जाता है।

नीतिवचन 28:20 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
ईमानदार लोग पूरी और खुशहाल ज़िंदगी जिएंगे। परन्तु यदि आप धनी बनने की जल्दी में हैं, तो आपको सज़ा मिलेगी।

कड़ी मेहनत करो; परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, और आलस्य के लिए कोई जगह नहीं है

नीतिवचन 10:4
जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु काम–काजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं।

परिश्रम का अर्थ है पूरी तरह से, बारीकी से, सावधानी से और ध्यान देकर काम करना। इसमें कड़ी मेहनत करना, कर्मठ होना, अपनी क्षमता से बढ़कर काम करना और काम को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना शामिल है।

"काम–काजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े

जाते हैं" (नीतिवचन 12:24)। अधिकारी उन लोगों को पहचानते हैं जो कड़ी मेहनत करते हैं और परिश्रमी होते हैं। परिश्रम आपको पदोन्नति और नेतृत्व की भूमिकाएँ सौंपे जाने के लिए तैयार करता है।

"मेहनती लोगों का हाथ शासन करेगा, परन्तु आलसी व्यक्ति को जबरन मज़दूरी करनी पड़ेगी।" (नीतिवचन 12:27, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)। आलस काम को टालता है। आलस्य आधा रास्ता तो तय कर लेता है, लेकिन काम को पूरा नहीं करता; जबकि परिश्रम के कारण मनुष्य को अपनी मेहनत का पूरा-पूरा फल मिलता है।

"आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु काम–काजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं" (नीतिवचन 13:4)। लालसा करना अच्छी बात है, लेकिन आप जिस चीज़ को पाना चाहते हैं, उसे हासिल करने के लिए लालसा के साथ-साथ कड़ी मेहनत भी ज़रूरी है।

"आलसी मनुष्य कब तक सोता रहेगा? वह नींद से कब उठेगा? वह कहता है, 'बस कुछ देर सो लूँ; थोड़ा और छाती पर हाथ रखकर आराम कर लूँ।' परन्तु जब वह सो रहा होगा, तब कंगालपन उस पर किसी हथियारबंद लुटेरे के समान आ पड़ेगा" (नीतिवचन 6:9-11, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)। आलस्य वही चुनता है जो आसान, सुविधाजनक और आरामदायक हो। आलस आपको अपनी सीमाओं से आगे बढ़ने, ज्यादा मेहनत करने और अपनी सुविधा के दायरे से बाहर निकलने से रोकता है। आलस्य गरीबी को आकर्षित करता है।

"एक आलसी व्यक्ति उतना ही बुरा होता है जितना कि कोई विनाशकारी व्यक्ति" (नीतिवचन 18:9, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)। जो लोग कड़ी मेहनत नहीं करते, वे फिजूलखर्ची

करने वाले होते हैं, और संगठन पर बोझ होते हैं तथा उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं।

"आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु अपने मुँह तक कौर नहीं उठाता" (नीतिवचन 19:24) । आलस्य खुद को नुकसान पहुँचाने वाला है। यहाँ तक कि जब संसाधन आपके हाथों में होते हैं, तब भी आलस आपको उनका पूरा-पूरा लाभ उठाने से रोकता है।

1 थिस्सलोनिकियों 4:11,12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
11 और जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी है, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना–अपना काम–काज करने और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो;
12 इस तरह तुम उन लोगों का भी आदर जीतोगे जो विश्वास नहीं करते, और तुम्हें अपनी ज़रूरतों के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

2 थिस्सलोनिकियों 3:10-12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
10 क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।
11 हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं।
12 प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हम इन लोगों को आज्ञा देते हैं और चेतावनी देते हैं कि वे व्यवस्थित जीवन जिएं और अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए काम करें।

सिर्फ व्यस्त मत रहो, उत्पादक बनो; परमेश्वर भी इसकी खोज करता है

यूहन्ना 15:1,2,8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
1 "सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है।
2 जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; और जो फलती है, उसकी वह छंटाई करता हैं ताकि वह साफ़ हो तथा और ज़्यादा फल दें।
8 तुम्हारे बहुत सा फल लाने से मेरे पिता की महिमा होती है, और इस तरह तुम मेरे चेले बनते हो।"

यूहन्ना 15 में प्रभु यीशु, उसमें हमारे जीवन का ज़िक्र कर रहा हैं। एक बात जो साफ़ तौर पर कही गई है, वह यह है कि सिर्फ़ उनसे जुड़े रहना काफ़ी नहीं है, बल्कि हमें उत्पादक होना चाहिए और फल भी लाना चाहिए। अगर हम फलदायक नहीं हैं, तो हमारे अलग किए जाने का खतरा रहता है। अगर हम फलदायक हैं, तो वह हमारी उत्पादकता बढ़ाने के लिए जो ज़रूरी है, उसे करता है। और हमारी फलदायकता—यानी बहुत ज़्यादा फल लाने के ज़रिए ही, परमेश्वर की महिमा हमारे द्वारा, उसके शिष्यों के रूप में, प्रकट होती है।

हमारा पेशेवर जीवन हमारे विश्वास की यात्रा का एक अभिन्न अंग है और उससे अलग नहीं है। हम काम पर जो करते हैं, वह परमेश्वर के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि हम चर्च में या प्रार्थना कक्ष में करते हैं, क्योंकि हम जो कुछ भी करते हैं, वह सब उसी के लिए करते हैं। इसलिए, हमारे लिए यह निष्कर्ष निकालना बिल्कुल सही है कि परमेश्वर यही चाहता है कि हम अपने पेशेवर काम में भी फलदायक हों।

यह सोचना गलत है कि काम पर आना और खुद को व्यस्त रखने के लिए कुछ करते रहना ही कार्यक्षेत्र पर ज़रूरी है। आपका लक्ष्य सिर्फ़ व्यस्त रहना नहीं, बल्कि उत्पादक बनना, नतीजे देना, काम समय पर पूरा करना और संगठन को बनाने के लिए काम करना है।

परमेश्वर ने हमारे हर काम को आशीष देने का वादा किया है, ताकि हम उत्पादक बन सकें। *"वे बहती नालियों के किनारे उगने वाले पेड़ों के समान हैं, जो सही समय पर फलते हैं, और जिनके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। वे जो भी काम करते हैं, उसमें सफल होते हैं"* (भजन संहिता 1:3, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)। तो यह हम पर है कि हम परमेश्वर के साथ मिलकर वैसे बनें जैसा उसने वादा किया है।

जब हम फलदायी होते हैं, तो हमारे काम के द्वारा परमेश्वर की सुंदरता और उसकी स्वीकृति दिखाई देती है। *"और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर बनी रहें, और हमारे कामों को सफल बनाए। हाँ, हमारे कामों को सफल बनाए!"* (भजन संहिता 90:17, द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)।

आप अपने समय का क्या करते हैं, यह आप पर निर्भर है; इसे बर्बाद न करें

नीतिवचन 28:19 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
मेहनती किसान के पास खाने-पीने की कोई कमी नहीं होती। परन्तु जो लोग समय बर्बाद करते हैं, वे हमेशा कंगाल ही रहते हैं।

एक अच्छे और मेहनती कर्मचारी होने का एक हिस्सा यह भी है कि आप अपने समय का पूरा-पूरा सदुपयोग करें। अपने समय के प्रबंधन, अपनी कार्य-कुशलता और उत्पादकता को बेहतर बनाने के कौशल सीखें। अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करें। काम के समय के दौरान अनावश्यक कार्यों या उन चीज़ों को हटाकर समय की बर्बादी रोकें जिनका काम से कोई लेना-देना नहीं है।

यही बात हमारे मसीही जीवन पर भी लागू होती है। हमें चौकस और सावधान रहने के लिए बुलाया गया है, और हमें अपने पास उपलब्ध समय का सदुपयोग करना चाहिए। हमें यही नियम अपने काम के समय पर भी लागू करना चाहिए। *"इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो: निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं"* (इफिसियों 5:15,16)।

उत्कृष्टता का जुनून रखें

नीतिवचन 22:29 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
ऐसे लोगों को देखें जो अपने काम में निपुण हैं-कुशल कामगारों की हमेशा

मांग रहती है और उनकी प्रशंसा होती है; वे किसी से पीछे नहीं रहते।

अपने काम में उत्कृष्ट बनने का जुनून पैदा करें। आप जो भी काम करते हैं, उसमें माहिर बनें। उत्कृष्ट बनने के लिए हुनर और कड़ी मेहनत, दोनों की ज़रूरत होती है। अपने हुनर को इतना निखारें कि आपका काम अच्छा और बेहतरीन हो। कड़ी मेहनत करें, सब्र रखें और बेहतरीन बनने की ओर बढ़ते रहें। औसत दर्जे से संतुष्ट न हों। "बस काम चला लेने" का रवैया आपसे उत्कृष्टता का नज़रिया छीन लेगा। किसी काम को अच्छे से पूरा करने में खुशी होती है, यह जानते हुए कि आपने उसमें अपना सर्वोत्तम दिया है। और सबसे बढ़कर, आपने प्रभु के लिए और उसकी महिमा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है।

जब आप अपने काम में कुशल होंगे, तो बेहतरीन काम की वजह से आपकी मांग बढ़ेगी। लोग चाहेंगे कि आप उनकी टीम का हिस्सा बनें। आपकी तारीफ़ होगी। आपको तरक्की निश्चित प्राप्त होगी।

सीखना कभी बंद न करें! कभी नहीं!

नीतिवचन 1:5

कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए, और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए

काम की दुनिया में कदम रखने का मतलब यह नहीं है कि आपकी पढ़ाई खत्म हो गई है। असल में, आपकी असली सीख तो अभी शुरू हुई है! प्रतिदिन आप काम करते हुए कुछ न कुछ सीखते हैं। अपने ज्ञान और कौशल को लगातार बढ़ाते रहें। नए हुनर सीखें। लोगों से सुनें। पढ़ें। जो भी ट्रेनिंग उपलब्ध हो, उसे ज़रूर प्राप्त करें। जिन क्षेत्रों में आप कमज़ोर हैं, वहाँ अपनी सीख और कौशल को बढ़ाएँ।

खूब सारे सवाल पूछें और फिर सीखने की सच्ची चाहत के साथ ध्यान से सुनें। सिर्फ़ "स्मार्ट" या "जिज्ञासु" दिखने का दिखावा करने के लिए सवाल न पूछें। सीखने की सच्ची इच्छा रखें। प्रतिक्रिया को खुले मन से स्वीकार करें, विशेष रूप से उस प्रतिक्रिया को, जो आपको बताती है कि आपको कहाँ सुधार करने की आवश्यकता है। नई चुनौतियाँ स्वीकार करें। प्रयोग करें। हम करके सीखते हैं। अपनी गलतियों से जल्दी सीखें।

दूसरों को देखें। गौर करें। वे जो कर रहे हैं, उससे सीखें। उनकी सफलताओं के साथ-साथ उनकी गलतियों से भी सीखें।

नीतिवचन 15:14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
समझदार लोग सीखना चाहते हैं, परन्तु मूर्ख लोग अज्ञानता में ही संतुष्ट रहते हैं।

नीतिवचन 18:15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
समझदार लोग हमेशा सीखने के लिए उत्सुक और तैयार रहते हैं।

नीतिवचन 19:27 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
मेरे पुत्र, जब तुम सीखना बंद कर दोगे, तो तुम जल्द ही उस चीज़ को नज़रअंदाज़ कर दोगे जो तुम पहले से जानते हो।

जब कुछ अप्रत्याशित हो जाए, तो स्थिर और एकाग्र रहे

नीतिवचन 3:25,26 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
25 अचानक होने वाली घटनाओं, चेतावनियों या दुनिया के खत्म होने की भविष्यवाणियों से घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है;
26 क्योंकि परमेश्वर हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा; वह तुम्हारी सुरक्षा करेगा और तुम्हे सलामत रखेगा।

आपको जो खूबियां बढ़ानी हैं, उनमें से एक है अपनी भावनाओं को संभालने तथा अप्रत्याशित स्थितियों में स्थिर रहने की क्षमता। आप

जिस इंडस्ट्री में काम करते हैं और जिस तरह का काम करते हैं, उसके आधार पर अप्रत्याशित घटनाएँ अक्सर हो सकती हैं। खतरे की घंटियाँ, हैरान करने वाली बातें और बुरी खबरें कभी भी और कहीं से भी आ सकती हैं। हर स्थिति में, हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ठीक उस पल में हमारे साथ हैं। हमें इन मुश्किलों से निकालने के लिए वह हमारे साथ हैं।

"यदि आपका शासक (बॉस) आपसे नाराज़ हो जाए, तो अपना इस्तीफ़ा न दें; अगर आप धीरज धरे रहेंगे, तो गंभीर गलतियों को भी माफ़ किया जा सकता है" (सभोपदेशक 10:4, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित, "बॉस" शब्द जोड़ा गया है)। जब हालात बिगड़ें और आपका बॉस आपसे नाराज़ हो जाए, तो अत्यधिक प्रतिक्रिया न दें। शांत रहें। मामलों को शांति से और निष्पक्ष तरीके से सुलझाएं।

बुरा समाचार मिलने पर भी, परमेश्वर में अपना भरोसा बनाए रखें। *"उसे बुरे समाचार से डर नहीं लगता; उसका विश्वास स्थिर है और वह प्रभु पर भरोसा रखता है"* (भजन संहिता 112:7, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)। परमेश्वर पर आपके भरोसे और शक्ति पर आधारित इस तरह की भावनात्मक स्थिरता आपको चीज़ों को स्पष्ट रूप से देखने, समाधान की दिशा में आगे बढ़ने, बढ़ रहे तनाव को कम करने, अपनी टीम के सदस्यों में आत्मविश्वास जगाने और कुल मिलाकर, चीज़ों को सकारात्मक ढंग से आगे बढ़ते हुए देखने में मदद करेगी।

भजन संहिता 46:1-3 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट के समय मदद के लिए हमेशा तैयार रहता है।
2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएँ;

[3] चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से काँप उठे।

यिर्मयाह 17:7,8
[7] "धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्‍वर को अपना आधार माना हो।
[8] वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के किनारे लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब धूप होगी तब उसको न लगेगी, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।

मुख्य सिद्धांत

1) आपका रवैया लगभग हमेशा ही आपकी ऊँचाई तय करता है।
2) सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें।
3) अपनी अभिलाषा को परमेश्वर के राज्य पर केंद्रित रखें।
4) हमेशा याद रखें, जीवन में पैसे कमाने के अलावा भी बहुत कुछ है।
5) सदैव प्रभु के भय में चलें ।
6) पवित्र आत्मा का फल एक विजयी रवैया है; पवित्र आत्मा के अनुसार चलें।
7) अपना काम आज्ञाकारी होकर, ईमानदारी से, स्वेच्छा से और खुशी-खुशी करें ।
8) वफ़ादारी ज़रूरी है; निष्ठावान रहें।
9) हर समय जवाबदेह बनें, तब भी जब आपसे ऐसा करने के लिए न कहा गया हो।
10) जूनून रखो; यदि आपका दिल काम में नहीं लग रहा है, तो या तो दिल लगाएं या काम छोड़ दें।

11) सभी बातों में हमेशा ईमानदारी और सच्चाई बनाए रखें ।

12) कड़ी मेहनत करो; परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, और आलस्य के लिए कोई जगह नहीं है।

13) सिर्फ व्यस्त मत रहो, उत्पादक बनो; परमेश्वर भी इसकी खोज करता है।

14) आप अपने समय का क्या करते हैं, यह आप पर निर्भर है; इसे बर्बाद न करें।

15) उत्कृष्टता का जुनून रखें।

16) सीखना कभी बंद न करें! कभी नहीं!

17) जब कुछ अप्रत्याशित हो जाए, तो स्थिर और एकाग्र रहे।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- यदि आप अपनी टीम में अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो कार्यक्षेत्र पर सही रवैया बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं, और आपको अपने आस-पास हर तरफ नकारात्मकता महसूस होती है, तो आप इन बाइबिल-आधारित रवैयों को कैसे बनाए रखेंगे? और आप इन्हें अपनी टीम के बाकी सदस्यों को सिखा सकते हैं?
- कार्यक्षेत्र पर अपनाए जाने वाले कुछ ऐसे सही रवैयों की सूची बनाएँ, जिनमें आपको लगता है कि आपको सुधार करने की ज़रूरत है, और यह भी लिखें कि आप उन्हें कैसे विकसित कर सकते हैं।

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

भाग दोः

कार्यस्थल में

4

कॉर्पोरेट दर्शन, मिशन, मूल्य और संस्कृति

लोगों को किसी संगठन में सिर्फ़ पेशेवर तरक्की और वेतन के लिए ही काम नहीं करना चाहिए हालाँकि ये चीज़ें ज़रूरी हैं। लोगों को संगठन के दर्शन में विश्वास रखना चाहिए, उसके मिशन में शामिल होना चाहिए, उसके मूल्यों को अपनाना चाहिए, और संगठन की संस्कृति का निर्माण करने में मदद करनी चाहिए और उसका आनंद लेना चाहिए। दर्शन, मिशन, मूल्य और संस्कृति ही मिलकर संगठन को वह बनाते हैं, जो वह असल में है।

"कॉर्पोरेट दर्शन" बताता है कि आप एक संगठन के तौर पर क्या बनना चाहते हैं, और इसमें यह भी शामिल हो सकता है कि आप ऐसा क्यों बनना चाहते हैं। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे समय के साथ हासिल करने की कोशिश की जाती है। "मिशन" यह बताता है कि "कैसे" काम किया जाएगा, अर्थात् विशिष्ट चीजें जो दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए पूरी की जाएंगी। "मूल्य" बताते हैं कि संगठन किन सिद्धांतों पर चलता है, और वह किन नैतिक मानकों को अपनाता है और बनाए रखता है। "संस्कृति" काम के माहौल के उस हिस्से को बताती है जिसे छुआ नहीं जा सकता (अमूर्त हिस्सा), और यह बताती है कि संगठन के भीतर लोग विज़न को पूरा करने और मिशन को अंजाम देने के लिए एक-दूसरे के साथ मिलकर कैसे काम करते हैं, और ऐसा करते समय वे संगठन के मूल्यों का पालन कैसे करते हैं।

आम तौर पर, लोग सिर्फ़ ऐसी नौकरी नहीं चाहते जिससे उन्हें

तनख्वाह मिले। लोग ऐसे संगठनों की तलाश में रहते हैं जिनका कोई सार्थक, प्रेरणादायक और चुनौतीपूर्ण दर्शन हो, और सबसे ज़रूरी बात, जो उनके लिए मायने रखने वाली किसी चीज़ से जुड़ा हो। इसके अलावा, लोग मूल्यों में तालमेल भी चाहते हैं—यानी, जहाँ संस्था के मूल्य उनके अपने निजी मूल्यों से मेल खाते हों। वे ऐसी संस्था की तलाश में रहते हैं जिसका वर्क कल्चर (काम करने का माहौल) ऐसा हो कि उन्हें उसका हिस्सा बनकर सचमुच खुशी मिले। आखिर, यही वह माहौल होगा जहाँ वे अपने पूरे हफ़्ते का एक-चौथाई हिस्सा और अपने जागने के समय का एक बड़ा हिस्सा बिताएँगे। असल में, लोग ऐसे संगठन में और उसके लिए काम करना चाहते हैं जिस पर वे गर्व कर सकें—जो भरोसेमंद हो, मददगार हो और जहाँ काम करना उन्हें अच्छा लगे।

आपका दर्शन उत्पादकता को प्रभावित करता है

नीतिवचन 29:18

जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।

"दर्शन" (प्रकटीकरण) शब्द का मतलब है कोई प्रेरित स्वप्न या विज़न। जहाँ कोई प्रेरित स्वप्न या दर्शन नहीं होता, वहाँ लोगों के पास ऐसा कुछ नहीं होता जो उन्हें किसी काम को करने के लिए प्रेरित करे। वे बिना किसी लक्ष्य के इधर-उधर भटकते रहते हैं और अंत में कुछ भी उत्पादक नहीं कर पाते; लेकिन एक प्रभावशाली दर्शन कल्पना को जगाता है, दिल को छू लेता है, जुनून पैदा करता है और काम करने के लिए प्रेरित करता है। यह भविष्य का वर्णन करता है। यह ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। यह नयी अवधारणाओं को जन्म देता है। यह सोच को प्रभावित करता है। सही फ़ैसलों को लेने में मदद करता है। यह मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह लोगों को एक साथ लाता है। इन सभी चीज़ों का परिणाम एक उत्पादक संगठन के

रूप में सामने आता है।

चुनौती है इस दर्शन को समझना और लोगों तक पहुंचाना। ऐसा अक्सर **दर्शन वक्तव्य** के द्वारा किया जाता है। दर्शन वाक्य आमतौर पर एक ही वाक्य का होता है, जो प्रभावशाली, प्रेरणादायक और दर्शन का वर्णन करने वाला होता है। इसके अलावा, हम दर्शन को समझाने के लिए तस्वीरों, चित्रों, लोगो या किसी शब्द-वाक्यांशों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसलिए, आपका कॉर्पोरेट दर्शन वक्तव्य बहुत महत्वपूर्ण होता है।

दर्शन—इसे लिखें, इसे दोहराएँ, और बार-बार दोहराते रहें।

हबक्कूक 2:2,3

2 यहोवा ने मुझ से कहा, "दर्शन की बातें लिख दे; वरन् पटियाओं पर साफ़ साफ़ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएँ।
3 क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन् इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्‍चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी।

काम-काज की रोज़मर्रा की भाग-दौड़ और बाकी कामों में, कॉर्पोरेट विज़न (दर्शन) आसानी से भुलाया जा सकता है। अगर इसे बार-बार दोहराया न जाए, तो यह दर्शन ओझल हो सकता है । इसलिए, ऐसे तरीके और साधन ढूँढ़ना ज़रूरी है जिनसे लोगों के मन में दर्शन हमेशा ताज़ा बना रहे। इसे लिखें, इसके बारे में बात करें, इसे प्रदर्शित करें, और कई दूसरे तरीकों से, दर्शन को लोगों के सामने रखें। "अभी" और उस समय के बीच जब दर्शन आकार लेता है और पूरा होता है, दर्शन की लगातार याद दिलाते रहने से लोग प्रेरित रहेंगे और काम करने के लिए उत्साहित रहेंगे। जैसे-जैसे दर्शन पूरा होकर सामने आने लगता है, दर्शन को लगातार दोहराने से लोगों में उत्साह भर जाता है कि अब उनका सपना सच होने लगा है। यह लोगों में और

आगे बढ़ने की ऊर्जा भरता है, ताकि वे दर्शन को बड़े पैमाने पर पूरा होते देख सकें।

अगर आप चाहते हैं कि लोग दर्शन के साथ आगे बढ़ते रहें, तो इसे दोहराएँ और बार-बार दोहराते रहें।

समझौते से भरा हुआ दर्शन लोगों को भ्रमित कर देता है

मत्ती 6:22,23

22 "शरीर का दीया आँख है: इसलिये यदि तेरी आँख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।

23 परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा!

आपके पास एक स्पष्ट दर्शन है, तो आपके पास प्रकाश है। आप यह जानते हुए आगे बढ़ सकते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं। धुंधला (अस्पष्ट) दर्शन मनुष्य को अंधेरे में छोड़ देता है। जब दर्शन स्पष्ट नहीं होता या उसमे किसी तरह से समझौता किया जाता है, तो लोगों को सच में पता नहीं होता कि कौन सा रास्ता अपनाना है। वे लड़खड़ाते हैं। वे गलत दिशा में जा सकते हैं। वे एक ही जगह पर ठहरे रह सकते हैं, यह जाने बिना कि अगला कदम कैसे, कब या कहाँ बढ़ाना है।

यदि लोग असल में दर्शन को नहीं समझते और अपनी कल्पना में उसे देख नहीं पाते, तो वह दर्शन धुंधला है।

यदि संगठन को ऐसी दिशा में ले जाया जाता है जो उस दर्शन से मेल नहीं खाता, तो दर्शन एक समझौता बन जाता है।

यदि अगुवे ऐसी बातें कहते है, काम करते है, या ऐसे फ़ैसले लेते है जो दर्शन के मुताबिक नहीं हैं, तो दर्शन भी एक समझौता बन जाता है।

धुंधली या कमज़ोर दर्शन लोगों को भ्रमित कर देता है, और हो सकता है कि वे निराश हो जाएं, उनका ध्यान भटक जाए और उनका जोश ठंडा पड़ जाए। उत्पादकता कम हो जाती है। संगठन पर इसका असर पड़ता है। इसका कारण है दर्शन में समझौता। इसका उपाय है कि मूल दर्शन को फिर से बताया जाए, स्पष्ट किया जाए और फिर से बनाया जाए।

अपने मिशन को दृढ़ता एवं स्पष्टता से बताएं

लूका 4:18,19 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

18 "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ,
19 और घोषणा करूँ कि वह समय आ गया है जब प्रभु अपने लोगों को बचाएगा।"

प्रभु यीशु संसार को पाप, शैतान, बीमारी और अनन्तकालिक मृत्यु से बचाने के लिए उद्धारकर्ता बनकर इस पृथ्वी पर आए। वह यह काम कैसे करने वाला था? जब उसने पृथ्वी पर अपनी सेवा शुरू की, तो उसने दृढ़ता से, निर्भयता के साथ और स्पष्ट तौर पर कुछ बातें बताईं जो वह करने वाला था और यह भी की वह उन्हें कैसे करेगा। वह जो करने वाले था, उसमें कोई अस्पष्टता नहीं थी। उसका मिशन निडरता और स्पष्ट तरीके से बताया गया था। तब से लोगों ने उसे वही काम करते देखा जो उसने कहा था कि वह करेगा। उसने अपने मिशन पर काम किया। उसके 12 शिष्यों ने उनका अनुसरण किया, और भीड़ ने भी। यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि यदि आप सुसमाचार सुनना चाहते थे, यदि आप आज़ादी का अनुभव करना चाहते थे, आत्मिक और शारीरिक दृष्टि पाना चाहते थे, और उत्पीड़न से मुक्त होना चाहते थे, तो आपको बस यीशु के पास जाना था। उसने जो मिशन बताया और उसके बाद जो काम किया, उससे वो जहाँ भी गया, वहाँ बड़ी भीड़

उसके पीछे चलने लगी।

अपने मिशन को दृढ़ता एवं स्पष्टता से बताएं। उसके अनुरूप कार्यों के साथ उसे पूरा करें।

मूल्य—आप वास्तव में किन मूल्यों के पक्ष में खड़े हैं उसे स्पष्ट करें

1 कुरिन्थियों 14:8
और यदि तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लड़ाई के लिये तैयारी करेगा?

प्राचीन काल में, तुरही की आवाज़ युद्ध का बुलावा होती थी। यह लोगों को एक बड़े जोखिम वाले काम में उतरने के लिए तैयार करती थी, और उन्हें हिम्मत व निडरता से काम करने के लिए प्रेरित करती थी। लेकिन, अगर तुरही की आवाज़ साफ़ सुनाई न दे, तो लड़ाई का बुलावा पक्का नहीं होता, और लोगों को पता नहीं चलता कि उन्हें लड़ाई के लिए बुलाया गया है या नहीं।

इसी तरह, संगठनों को भी लोगों को कुछ खास मूल्यों के लिए खड़े होने का बुलावा देना चाहिए। ये वे मूल्य होते हैं जिन्हें संगठन ने अपनाया है, और इसलिए, संगठन में काम करने वाला हर व्यक्ति भी उन्हें अपनाता है। इन मूल्यों को स्पष्ट से समझा जाना चाहिए, और लोगों को यह पता होना चाहिए कि इन मूल्यों को अपने पेशेवर कामों में कैसे लागू करना है।

हालाँकि हमारे आस-पास बहुत सी चीज़ें बदलती रहती हैं, लेकिन संगठन की मूल्य-प्रणाली (वैल्यू सिस्टम) एक जैसी ही रहती है। हालाँकि समय के साथ संगठन बढ़ता है, फैलता है और कई परिवर्तन भी आते है, परन्तु उसके मूल मूल्य नहीं बदलते। चाहे कोई संगठन खुले तौर पर खुद को 'मूल्य-आधारित संगठन' कहे या न कहे, उसके पास कुछ ऐसे मूल मूल्य ज़रूर होने चाहिए जो उसके

कामों को दिशा दें। इन मूल्यों को परिभाषित किया जाना चाहिए, हर किसी द्वारा समझा जाना चाहिए, और संगठन के हर स्तर पर तथा हर तरह के काम में लागू किया जाना चाहिए। चाहे कहा जाए या न कहा जाए, सभी अच्छी लीडरशिप किसी न किसी रूप में "मूल्य-आधारित लीडरशिप" ही होती है, जिसके मूल में ईमानदारी, समानता और सामाजिक ज़िम्मेदारी जैसे सिद्धांत या मूल्य होते हैं।

जब कोई संगठन लगातार अपनी मूल्य-प्रणाली के अनुसार काम करता है, तो संगठन के मूल मूल्य उसके लिए एक मज़बूत प्रतिस्पर्धी लाभ (कॉम्पिटेटिव एडवांटेज) का काम कर सकते हैं।

मूल्य सिर्फ़ प्रचार सामग्री या भर्ती प्रक्रिया के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले अच्छे नारे नहीं होने चाहिए। मूल मूल्य "मूल" होते हैं—यानी वे संगठन क्या है इसके लिए केंद्रीय होते हैं। कर्मचारियों को इन मूल मूल्यों को व्यक्तिगत रूप से जानना, समझना और लागू करना चाहिए। संगठन के साथ उसके ग्राहक का अनुभव, संगठन के घोषित मूल्यों से मेल खाना चाहिए।

यहाँ कुछ मूल मूल्यों के उदाहरण दिए गए हैं।

हमारे मूल मूल्य

ईमानदारी

हम मुनाफ़े से ज़्यादा ईमानदारी को महत्व देते हैं। हम ईमानदारी से समझौता करके मुनाफ़ा कमाने से साफ़ इनकार करते हैं।

उत्कृष्टता

हम जो भी काम करते हैं, उसमें उत्कृष्टता पाने का हमारा जुनून है। हम यहाँ जीतने के लिए हैं।

लोग

हम नीतियों से ज़्यादा लोगों को महत्व देते हैं।
हम लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने की पूरी कोशिश करते हैं।

रचनात्मकता

हम हर काम में रचनात्मकता को अपनाते हैं, बिना किसी दिनचर्या (रूटीन) में बंधे।

एकता

हम मिलकर जो हासिल करते हैं, वह व्यक्तिगत उपलब्धियों से अधिक महत्वपूर्ण है।

एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करें जो आपके दर्शन, मिशन और मूल्यों के अनुरूप हो।

नहेम्याह 2:20

तब मैं ने उनको उत्तर देकर उनसे कहा, "स्वर्ग का परमेश्‍वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिये हम उसके दास कमर बाँधकर बनाएँगे; परन्तु यरूशलेम में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक़, और न स्मारक है।"

यरूशलेम शहर को ईसा पूर्व 587 में बेबीलोनियों ने नष्ट कर दिया था। लगभग ईसा पूर्व 445 में, नहेम्याह, जो उस समय फ़ारस के राजा के दरबार में सेवा कर रहा था, उसके मन में वह यरूशलेम शहर की दीवारों को फिर से बनाने के कार्य के प्रति गहरे बोझ से भर गया। उसने शहर की दीवारों के पुनर्निर्माण के लिए यरूशलेम लौटने हेतु फ़ारस के राजा से अनुमति और सहयोग प्राप्त किया। नहेम्याह एक ऐसा व्यक्ति था जिसका दर्शन बहुत बड़ा था, परन्तु वह यह काम अकेले नहीं कर सकता था। तो, उसने यह किया।

दर्शन: नहेम्याह ने यरूशलेम के लोगों के साथ अपना दर्शन साझा किया। उसने बताया कि कैसे परमेश्वर ने उसे अब तक चलाया है, और उसे फ़ारस के राजा से कृपा और सहयोग दिलवाया है। यह दर्शन अत्यंत प्रभावशाली था। लोग इस दर्शन में शामिल होने के लिए प्रेरित हुए।

मिशन: इसके बाद नहेम्याह ने योजना बनाई कि पुनर्निर्माण का कार्य किस प्रकार किया जाएगा। इस कार्य को यरूशलेम शहर के 10 द्वारों के अनुसार विभाजित किया गया, और लोगों के प्रत्येक समूह को दीवार के उस हिस्से पर काम करने का दायित्व सौंपा गया जो उनके अपने घरों के सबसे निकट था, ताकि वे इस कार्य में व्यक्तिगत रूप से शामिल हो सकें।

मूल्य: सबसे पहले, हर किसी का यह विश्वास था कि *"स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा"* (नहेम्याह 2:20)। परमेश्वर हमारे साथ था। यह बहुत शक्तिशाली बात थी। दूसरा, हर किसी का यह मानना था कि उन्हें अपना-अपना काम करना होगा। *"हम उसके दास कमर बाँधकर बनाएँगे"* (नहेम्याह 2:20)। तीसरा, वे जानते थे कि विरोध या रुकावटें आएंगी, लेकिन सबने ठान लिया था कि कोई भी चीज़ उन्हें रोक नहीं पाएगी। वे सब इस बात पर एकमत थे कि वे अपने शहर के लिए जो कुछ भी कर रहे थे, उसमें शत्रु का कोई अधिकार या दखल नहीं होगा।

तीन शक्तिशाली मूल्य (मान्यताएँ):

1) परमेश्वर हमारे साथ है।

2) हम सब मिलकर काम करेंगे।

3) कोई भी चीज़ हमें रोक नहीं सकती।

संस्कृति: नहेम्याह के नेतृत्व में, लोगों ने एक मज़बूत समुदाय के रूप में मिलकर काम किया। नहेम्याह ने अपने निजी उदाहरण के द्वारा से कार्य, आपसी सहयोग, उदारता और विनम्रता की एक मज़बूत संस्कृति की नींव रखी, उसे आकार दिया और उसे सुरक्षित रखा।

- **सभी ने काम किया।** हर पेशे, हर उम्र के लोग, पुरुष और महिलाएँ, दीवारों को फिर से बनाने के लिए काम कर रहे थे। सभी लोगों ने—याजकों, सुनारों, इत्र बनाने वालों, ज़िले के नेताओं, लेवियों, दरबानों, व्यापारियों और आम लोगों ने—अपना हिस्सा निभाया।

- **उन्होंने पूरे दिल और दिमाग से कड़ी मेहनत की।** *"हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊँचाई तक जुड़ गई। क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा"* (नहेम्याह 4:6) ।
- **उन्होंने एक-दूसरे का साथ दिया।** यह जानते हुए कि उन्हें दुश्मन से खतरा है, कुछ लोग काम करते रहे और बाकी लोग पहरा देते रहे। *"उस दिन से मेरे आधे सेवक तो उस काम में लगे रहे और आधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और झिलमों को धारण किए रहते थे; और यहूदा के सारे घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे"* (नहेम्याह 4:16) ।
- **शासकों से उदार बनने का आग्रह किया गया।** नहेम्याह ने ज़रूरतमंदों को देकर उदारता का उदाहरण पेश किया। इसके बाद उन्होंने दूसरों से अपील की कि वे उन आम लोगों का कर्ज़ माफ़ कर दें जिन्होंने उनसे कर्ज़ लिया था। नहेम्याह ने कहा, *"मैंने लोगों को पैसे और अनाज उधार दिए हैं, तथा मेरे साथियों और मेरे लिए काम करने वालों ने भी ऐसा ही किया है। अब आओ, हम उनसे पैसे या सामान वापस लेने का अपना दावा छोड़ दें। उनका जो भी कर्ज़ है—चाहे वह पैसा हो, अनाज हो, दाखमधु हो*

या जैतून का तेल—उसे माफ़ कर दें। और उनके खेत, दाख, और जैतून की बारियाँ और घर उन्हें अभी वापस कर दें!" हकीमों ने जवाब दिया, "जैसा तू कहता है, वैसा ही हम करेंगे। हम उनकी संपत्ति वापस कर देंगे और कर्ज़ वसूलने की कोशिश नहीं करेंगे।" तब मैं ने याजकों को बुलाकर उन लोगों को यह शपथ खिलाई कि वे इसी वचन के अनुसार करेंगे जो उन्होंने अभी-अभी किया था" (नहेम्याह 5:10-12a गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित) ।

- **नहेम्याह ने स्वयं एक मिसाल बनकर नेतृत्व किया।** अपने जीवन की मिसाल के ज़रिए, नहेम्याह ने समुदाय की संस्कृति को जन्म दिया और उसे बढ़ावा दिया। उसने स्वयं काम किया। एक नेता के तौर पर मिलने वाले अधिकारों और फ़ायदों को लेने से उसने मना कर दिया। नहेमायाह ने कहा, *"जब मैं यहूदा देश का अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के शासन के बीसवें वर्ष से लेकर बत्तीसवें वर्ष तक, मैं और मेरे भाईयों ने अधिपति के हक़ का भोजन नहीं खाया। परन्तु पिछले अधिपति जो मुझ से पहले थे, वे प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इसके साथ चालीस शेकेल चाँदी लेते थे। यहाँ तक कि उनके सेवकों ने भी लोगों पर ज़ुल्म किया था। परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। मैंने अपनी पूरी ताकत शहरपनाह को फिर से बनाने में लगा दी और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न ली। मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहाँ इकट्ठे रहते थे"* (नहेम्याह 5:14-16,गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित) ।
- **लोगों ने बड़ी सफलता देखी।** *"एलूल महीने के पच्चीसवें दिन को अर्थात् बावन दिन के भीतर शहरपनाह बनकर तैयार हो गई। जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारों ओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और बहुत लज्जित हुए; क्योंकि हर कोई*

जानता था कि यह काम हमारे परमेश्वर की सहायता से हुआ था" (नहेम्याह 6:15,16, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)।

संस्कृति का वर्णन करने वाले कुछ उदाहरण यहाँ दिए गए हैं। अपनी संस्था-संगठन में आप जिस तरह की संस्कृति बनाना चाहते हैं, उसके बारे में गहराई से सोचना और चर्चा करना एक अच्छी बात है। फिर, स्वयं उसका पालन करें। दूसरों को भी उसका पालन करने के लिए प्रोत्साहित करें। संस्कृति महज़ एक विचार नहीं है। यह वह है जो आप करते हैं। यह वह है जिसे आप जीते हैं। यह वह है जिसे लोग संस्था के भीतर मिलकर बनाते हैं और अनुभव करते हैं। इस तरह, आपकी संस्कृति एक 'मानक' बन जाती है—संगठन के भीतर जीवन जीने का एक तरीका।

हमारी संस्कृति

नेतृत्व और नए अविष्कार की संस्कृति

हम मार्ग तैयार करते हैं, हम वह करते हैं जो पहले कभी नहीं किया गया, हम ज़िम्मेदारी लेते हैं।

जुड़ाव, सहयोग और मिलकर काम करने की संस्कृति

हम एक टीम हैं और हम एक टीम की तरह ही काम करते हैं। जब हम जीतते हैं, तो ये हम सबकी जीत होती हैं।

पारदर्शिता और ईमानदारी की संस्कृति

हम जानकारी, राय, विचार और सीख साझा करने में पारदर्शी और ईमानदार रहते हैं।

समानता और सम्मान की संस्कृति

परमेश्वर ने हम सभी को समान बनाया है, इसलिए हम भी एक-

दूसरे के साथ उसी तरह का व्यवहार करते हैं, और हर व्यक्ति का सम्मान करते है।

साझा करने और देखभाल करने की संस्कृति

काम सिर्फ़ एक नौकरी से कहीं बढ़कर है।
हम एक-दूसरे के जीवन में शामिल होते हैं।

आनंद और हँसी-मज़ाक की संस्कृति

हमारा मानना है कि काम आनंददायक होना चाहिए।
हम ऐसी चीज़ें ढूँढ़ते हैं जिन पर हम सब मिलकर हँस सकें।

आप जिस संस्कृति का निर्माण करेंगे, वह आपके संगठन की कई विशेषताओं को निर्धारित करने में सहायक होगी—जैसे रचनात्मकता, स्वामित्व की भावना, फुर्ती, तत्परता और सामुदायिक भावना। जैसे-जैसे संगठन बदलती परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालता है, वैसे-वैसे संस्कृति के तौर-तरीके भी समय के साथ बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब संगठन में लगभग 20 लोग होते हैं, तो उनमें समुदाय की एक मज़बूत भावना होती है, जहाँ हर कोई एक-दूसरे को जानता है और हर किसी का जन्मदिन मनाने के लिए एक साथ इकट्ठा होता है। हालाँकि, जब संगठन बढ़कर 200 लोगों का हो जाता है, तो हो सकता है कि हर कोई एक-दूसरे को न जानता हो, और हर जन्मदिन के लिए 200 लोगों को एक साथ इकट्ठा करना अव्यावहारिक होगा। इसके बजाय, समुदाय की यह भावना उन छोटी-छोटी टीमों के भीतर बनी रह सकती है जिनका लोग हिस्सा होते हैं। इन टीमों के लोग एक-दूसरे का जन्मदिन मनाते हैं। और समुदाय की यही भावना तब भी बनी रहेगी, जब संगठन के भीतर दो ऐसे लोग, जो एक-दूसरे को नहीं जानते, ज़रूरत पड़ने पर आपस में मिलते हैं और बातचीत करते हैं।

इतिहास महत्वपूर्ण है—इसे सहेजें, इसे दोहराएँ

न्यायियों 2:7-11

7 और यहोशू के जीवन भर, और उन वृद्ध लोगों के जीवन भर जो यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे बड़े काम किए हैं, इस्राएली लोग यहोवा की सेवा करते रहे।
8 तब यहोवा का दास नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया।
9 और उसको तिम्नथेरेस में जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नामक पहाड़ के उत्तरी ओर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई।
10 और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने अपने पितरों में मिल गए; तब उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उसने इस्राएल के लिये किया था।
11 इसलिये इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और बाल नामक देवताओं की उपासना करने लगे;

हालांकि हम अतीत में नहीं जीते, लेकिन हमें अतीत को नहीं भूलना चाहिए। हमने जो सबक सीखे हैं, जिन अनुभवों से हम गुज़रे हैं, हमारी सफलताएँ और असफलताएँ, ये सभी बहुत कीमती हैं। इतिहास महत्वपूर्ण है। वर्तमान को समझने तथा भविष्य के लिए निर्णय लेने के लिए हमें इतिहास जानना जरूरी है। पिछली गलतियों को दोहराना और गोल-गोल घूमना बेवकूफी होगी। इतिहास हमें यह देखने में भी मदद करता है कि हमने कितनी प्रगति की है (या नहीं की है)। हर छोटी सफलता हमें और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यदि हमारी प्रगति नहीं हो रही है, तो हमें रुककर अपना मूल्यांकन करना चाहिए, अपनी स्थिति की जाँच करनी चाहिए और विकास के लिए ज़रूरी बदलावों की रणनीति बनानी चाहिए।

सही मौकों पर, प्रासंगिक कहानियाँ सुनाएँ। अतीत की कहानियाँ सुनाएँ। अतीत में की गई गलतियों पर हँसें। हालाँकि, यह बात हमेशा याद रखें कि कहानियाँ सकारात्मक ढंग से ही सुनाएँ। कहानियों को कभी भी लोगों को नीचा दिखाने, उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाने, या उनके बारे में गपशप करने के लिए न दोहराएँ। कहानियों को

सिखाने वाले उदाहरणों के तौर पर इस्तेमाल करें।

लेकिन, इतिहास को जोखिम उठाने या नई चीज़ें आज़माने में रुकावट नहीं बनना चाहिए। सिर्फ़ इसलिए कि हमने अतीत में नई चीज़ें आज़माईं और असफल रहे, इसका मतलब यह नहीं है कि हमें फिर से नई चीज़ें नहीं आज़मानी चाहिए। इसी तरह, हम अतीत की उपलब्धियों के सहारे नहीं जी सकते। जो बात मायने रखती है, वह यह है कि हम आज कहाँ हैं और किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। पिछली सफलताओं को पीछे छोड़ देना चाहिए। इसलिए, हमें यह समझना होगा कि इतिहास का सही इस्तेमाल कैसे किया जाए। इसका इस्तेमाल सीखने के लिए करें। इसका इस्तेमाल काम करने की प्रेरणा लेने के लिए करें। लेकिन, कभी भी अतीत को खुद पर हावी न होने दें।

सफलता की कहानियाँ उत्साहवर्धक होती हैं; उन्हें साझा करें

नीतिवचन 25:25
जैसा थके मांदे के प्राणों के लिये ठण्डा पानी होता है, वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार भी होता है।

जब संगठन को सफलता मिलती है, तो इन कहानियों को साझा करें। लोगों का जश्न मनाएँ। टीमों का जश्न मनाएँ। लोगों और टीमों को बताएं कि उनके योगदान के लिए उन्हें पहचाना और सराहा गया है। ऐसा करने से संगठन को प्रेरणा और नई ऊर्जा मिलेगी

मुख्य सिद्धांत

1) आपका दर्शन उत्पादकता को प्रभावित करता है।
2) दर्शन—इसे लिखें, इसे दोहराएँ, और बार-बार दोहराते रहें।
3) समझौते से भरा हुआ दर्शन लोगों को भ्रमित कर देता है।

4) अपने मिशन को तीव्रता एवं स्पष्टता से बताएं।
5) मूल्य—आप वास्तव में किन मूल्यों के पक्ष में खड़े हैं उसे स्पष्ट करें।
6) अपने दर्शन, मिशन और मूल्यों के अनुरूप संस्कृति बनाएं।
7) इतिहास महत्वपूर्ण है—इसे सहेजें, इसे दोहराएँ।
8) सफलता की कहानियाँ उत्साहवर्धक होती हैं; उन्हें साझा करें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- आप जिस संगठन में काम करते हैं, वह किन मूल्यों को अपनाता है? क्या उन मूल्यों को स्पष्ट रूप से बताया गया हैं? क्या कर्मचारियों को इन मूल्यों की जानकारी है, और क्या संगठन में होने वाली सभी पेशेवर गतिविधियों में इन मूल्यों का पालन किया जाता है?
- इस बात पर विचार करें कि किसी संगठन के भीतर का माहौल व्यक्तिगत स्तर पर और संगठनात्मक स्तर पर प्रदर्शन और परिणामों को किस प्रकार प्रभावित करता है। क्या एक स्वस्थ और सहायक संगठनात्मक संस्कृति का होना ज़रूरी है?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

5

प्रतिस्पर्धात्मक लाभ तथा रणनीति

आपका संगठन उन दूसरे संगठनों से अलग और बेहतर कैसे है, जो बिल्कुल वैसा ही काम कर रहे हैं? अपने खास अंतरों को जानें जो आपको उसी इंडस्ट्री में दूसरों के मुकाबले लगातार प्रतिस्पर्धात्मक लाभ देते हैं । याद रखें कि कई बार, यह दैवीय कृपा, अलौकिक हस्तक्षेप, विश्वास या ज्ञान की कोई बात ही होती है, जो आपको तब भी सबसे अलग खड़ा कर देती है,
जब आपके चारों ओर बड़े-बड़े दिग्गज मौजूद हों।

प्रतिस्पर्धात्मक लाभ वह चीज़ है जो आपके उत्पाद, सेवा या पेशकश को प्रतिस्पर्धियों से अलग या बेहतर बनाती है। आम अंतरों में गति (तेज़), अधिक मूल्य, सस्ता (कम लागत), अधिक लाभ, बेहतर उत्पाद (विशेषताएं, टिकाऊपन, विश्वसनीयता, डिज़ाइन, आदि), स्थान, उच्च कौशल, कच्चे माल या श्रम का स्रोत (स्थानीय बनाम आयातित), सामाजिक उद्देश्य (उदाहरण के लिए, वंचित लोगों को शामिल करना), और अन्य कारक इसमें शामिल हैं। इनमें से कुछ चीजें नए अविष्कार, रचनात्मकता और परिचालन दक्षता के माध्यम से हासिल की जाती हैं। फिर आप प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए एक प्रतिस्पर्धी रणनीति तैयार करते हैं। विशिष्ट प्रतिस्पर्धी रणनीतियों में लागत नेतृत्व रणनीति, विभेदन रणनीति, नवाचार रणनीति और परिचालन प्रभावशीलता रणनीति शामिल हैं। प्रतिस्पर्धा और बाज़ार की स्थितियाँ कभी भी स्थिर नहीं रहतीं। वे तेज़ी से बदलती रहती हैं। इसलिए, संगठनों को प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए चुस्त रहना और परिस्थितियों के अनुसार खुद को

ढालना ज़रूरी है।

इस अध्याय में, हम उन बाइबिल-संबंधी सिद्धांतों पर नज़र डालेंगे जो प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और रणनीति के हमारे पेशेवर ज्ञान और अभ्यास को आधार प्रदान कर सकते हैं।

जानें कि आप किसके विरुद्ध हैं

लूका 14:28-33 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजीबाइबल से उद्धरित)
28 "यदि तुम में से कोई गढ़ बनाने की योजना बना रहा है, तो पहले बैठकर सोचो कि इसमें कितना खर्च आएगा, ताकि देख सको कि काम पूरा करने के लिए तुम्हारे पास काफी पैसे हैं या नहीं।
29 यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो नींव रखने के बाद तुम गढ़ पूरा नहीं कर पाओगे; और सब देखनेवाले, वह तुम्हारा मज़ाक उडाएंगे।
30 वे कहेंगे, 'तुमने बनाना तो शुरू कर दिया, लेकिन काम पूरा नहीं कर सके!'
31 यदि कोई राजा दस हज़ार पुरुषों के साथ दूसरे राजा से लड़ने जाता है जो बीस हज़ार पुरुष लेकर उसके खिलाफ चढ़ा आता है, तो वह पहले बैठकर विचार करेगा कि क्या वह उस दूसरे राजा का सामना करने के लिए काफी ताकतवर है, या नहीं।
32 अगर वह नहीं है, तो वह दूसरा राजा दूर रहते ही, उस से मिलने के लिए दूत भेजकर सुलह करना चाहेगा।
33 अंततः, यीशु ने कहा, "इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"

चाहे वह यीशु मसीह का अनुसरण करना हो या रोज़मर्रा की ज़िंदगी के दूसरे मामले हों, हर काम में एक कीमत चुकानी पड़ती है। हर लड़ाई में जान दांव पर लगी होती है। इसी तरह, किसी संगठन के दर्शन को पूरा करने में भी कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिए, यह साफ़ तौर पर समझना ज़रूरी है कि उस दर्शन को पूरा करने के लिए क्या करना होगा। क्या आपके पास उस दर्शन की पूर्ति के लिए ज़रूरी अंदरूनी और बाहरी संसाधन मौजूद हैं? ज़्यादातर मामलों में, आप उन प्रतिस्पर्धियों पर भी विचार करेंगे जो ठीक वैसा ही काम कर रहे हैं। यह तय करना ज़रूरी है कि आपका संगठन, उन प्रतिस्पर्धियों से,

जो चीजों को पहले से कर रहे है, उनसे बेहतर या अलग तरीके से कैसे कर सकता है।

साफ-सुथरे और निष्पक्ष तरीके से मुकाबला करें

2 तीमुथियुस 2:5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
दौड़ में भाग लेने वाला कोई भी खिलाड़ी, जब तक वह नियमों का पालन न करे, तब तक इनाम नहीं जीत सकता।

सिर्फ़ अंतिम रेखा (फिनिश लाइन) को सबसे पहले पार करना ही काफ़ी नहीं है; बल्कि यह भी उतना ही ज़रूरी है कि आपने नियमों का पालन किया या नहीं। इसी प्रकार, जो व्यवसाय और संगठन निष्पक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा नहीं करते, उन्हें देर-सवेर इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं। समय ने यह साबित कर दिया है कि कई कॉर्पोरेट नुकसान और गिरावट की वजह कुप्रबंधन, पैसों का गलत इस्तेमाल, धोखेवाले अविष्कार, ग्राहकों के साथ धोखाधड़ी, वित्तीय जालसाज़ी वगैरह थे। कुछ समय के लिए तो सब कुछ ठीक-ठाक लगा, लेकिन जब सच्चाई सामने आई, तो सब कुछ ताश के पत्तों की तरह ढह गया। अपनी सफलता अपने उत्पाद (प्रोडक्ट) या सर्विस की क्वालिटी, नए अविष्कारों तथा दूसरे ज़रूरी पैमानों के आधार पर हासिल करें, न कि कभी भी गलत कारोबारी तरीकों से। हमेशा साफ़-सुथरे और निष्पक्ष तरीके से मुकाबला करें। ज़ोरदार तरीके से मुकाबला करें, लेकिन निष्पक्षता से। कोई भी दूसरा तरीका निश्चित रूप से असफलता की ओर ले जाएगा। हर बाज़ार में लागू प्रतिस्पर्धा कानूनों (जिन्हें "एंटीट्रस्ट" कानून भी कहा जाता है; उदाहरण के लिए, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग- **cci.gov.in** देखें) का पालन करें। इन कानूनों का उद्देश्य स्वतंत्र और खुली प्रतिस्पर्धा को बनाए रखना तथा एक प्रतिस्पर्धी बाज़ार को बढ़ावा देना है। जब बाज़ार स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, तो उपभोक्ताओं को उचित कीमतों पर उच्च-गुणवत्ता वाले सामान और सेवाओं का लाभ मिलता है।

यिर्मयाह 17:11 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जो व्यक्ति अन्याय से धन बटोरता है, वह उस पक्षी के समान है जो उन अंडों को सेता है जिन्हें उसने नहीं दिया। जीवन के चरम काल में वह अपनी संपत्ति खो देगा, और अंत में वह केवल एक मूर्ख ही रह जाएगा।

जीतने की रणनीति बनाएं

नीतिवचन 24:5,6 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
5 बलवान होने से बुद्धिमान होना बेहतर है; बुद्धि हमेशा शारीरिक बल से ऊपर होती है।
6 युद्ध में रणनीतिक योजना बनाना सबसे ज़रूरी है; विजय प्राप्त करने के लिए आपको अच्छी सलाह की ज़रूरत होती है।

"रणनीति" (स्ट्रैटेजी) एक सैन्य शब्द है जिसका अनिवार्य रूप से अर्थ युद्ध की कला है, जिसमें सैनिकों और जहाजों को अनुकूल स्थितियों में ले जाने की योजना बनाना शामिल है; या फिर बिज़नेस या राजनीति में काम करने का तरीका या नीति (ऑक्सफोर्ड शब्दकोश से अनुकूलित)। विजयी होने के लिए, आपको एक रणनीति की ज़रूरत होती है—अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए एक अच्छी तरह से सोची-समझी योजना। एक विजयी रणनीति बनाने पर काम करते समय, बहुत सारे अच्छे सुझाव लें। यदि हो सके, तो अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों से बात करें। बाज़ार का जायज़ा लें। ग्राहकों से बात करें।

नीतिवचन 20:18 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
अच्छी सलाह लें और आप सफल होंगे; बिना किसी योजना के युद्ध में न कूदें।

आपका असली शत्रु गोलियात नहीं है, बल्कि डर है

1 शमूएल 17:10,11,24
10 फिर वह पलिश्ती बोला, "मैं आज के दिन इस्राएली पाँतियों को ललकारता हूँ, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।"
11 उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।

24 उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके सामने से भागे।

प्रशिक्षित सैनिकों की पूरी सेना गोलियात को देखकर एकदम सुन्न पड़ गई। डर ने उनसे लड़ने की हिम्मत छीन ली। आपकी प्रतिस्पर्धी रणनीति का एक हिस्सा यह है कि कभी भी डर को अपने विचारों को अमल में लाने से न रोकें। असफलता का डर। अनजान चीज़ों का डर। ये सभी हमें निष्क्रिय बना सकते हैं। आपका असली शत्रु आपका प्रतिस्पर्धी नहीं है। एक अच्छा विचार आपको विजेता बना सकता है। आपका असली शत्रु वह डर है जो आपको उस विचार पर आगे बढ़ने से रोकता है। डर पर विजय पाओ। विश्वास के साथ आगे बढ़ो।

गोलियात का सामना करने के लिए, सिंह और भालु के साथ वाले अपने अनुभव का इस्तेमाल करें

1 शमूएल 17:32-37 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

32 दाऊद ने शाऊल से कहा, "महाराज, इस पलिश्ती से किसी को डरने की ज़रूरत नहीं है! मैं जाकर उससे लड़ूँगा।"

33 "नहीं," शाऊल ने उत्तर दिया। "तुम उससे कैसे लड़ सकते हो? तुम तो बस एक लड़के हो, और वह लड़कपन ही से योद्धा है।"

34 "महाराज," दाऊद ने कहा, "मैं अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराता हूँ। और जब कोई सिंह या भालू झुण्ड में से मेम्ना उठा ले जाता है,

35 तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मेम्ने को उसके मुँह से छुड़ा लेता हूँ। और यदि सिंह या भालू मुझ पर हमला करता है, तो मैं उसके केश को पकड़कर उसे पीट-पीटकर मार डालता हूँ।

36 मैंने सिंहों और भालुओं को मारा है, और मैं इस खतनारहित पलिश्ती के साथ भी ऐसा ही करूँगा, जिसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।

37 यहोवा ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है; वह मुझे इस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।" "ठीक है," शाऊल ने उत्तर दिया। "जाओ, और यहोवा तुम्हारे साथ रहे।"

जब दाऊद ने गोलियात से लड़ने की पेशकश की, तो हालात पूरी

तरह से उसके खिलाफ थे। एक चरवाहे का मुकाबला एक प्रशिक्षित सैनिक से था। कोई भी "समझदार" व्यक्ति ऐसी बात सोचने की हिम्मत भी नहीं करता, लेकिन दाऊद ने परमेश्वर के साथ अपने ऐतिहासिक अनुभवों से प्रेरणा ली। उसने अपनी उन छोटी-छोटी सफलताओं को याद किया, जो उसे अपने पिता की भेड़ों की देखभाल करने के रोज़ाना के काम के दौरान मिली थीं। उसने सिंह और भालु को मारा था। जहाँ तक दाऊद का सवाल था, गोलियात भी उससे अलग नहीं था। उसके पास एक ऐसा 'प्रतिस्पर्धात्मक लाभ' था जिसे दूसरे लोग देख नहीं सकते थे, लेकिन फिर भी वह पूरी तरह से वास्तविक और मान्य था।

आपकी हर छोटी सफलता आपके प्रतिस्पर्धात्मक लाभ को बढ़ाती है। हर छोटी सफलता पर आगे बढ़ें।

कभी-कभी, बस एक छोटा-सा पत्थर ही काफ़ी होता है

1 शमूएल 17:40,49,50 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
40 उसने अपनी चरवाहे वाली लाठी हाथ में ली, और फिर नाले में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर उन्हें अपनी थैली में रखें। और अपना गोफन हाथ में लेकर, वह गोलियत का सामना करने के लिए आगे बढ़ा।
49 उसने अपनी थैली में हाथ डालकर उसमें से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर गोलियत की ओर फेंका। पत्थर उसके माथे पर लगा और उसकी खोपड़ी टूट गई, और गोलियत भूमि पर मुँह के बल पर गिर पड़ा।
50 और इस तरह, बिना किसी तलवार के, दाऊद ने गोफन और एक ही पत्थर से गोलियत को हरा दिया और मार डाला!

गोलियात के खिलाफ दाऊद की रणनीति सीधी-सादी थी। डेविड ने अपनी उस खूबी का इस्तेमाल किया जिसमें वह माहिर था। दाऊद के पास गोफन और पत्थर चलाने का एक ऐसा हुनर और सटीकता थी, जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। यह एक अनोखा तरीका था। यह बिल्कुल वैसा नहीं था, जैसी कि उसके प्रतिद्वंद्वी को उम्मीद थी।

जो चीज़ देखने में एक कमज़ोरी लग रही थी, असल में वही

दाऊद का सबसे बड़ा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ साबित हुई। और सबसे बढ़कर, दाऊद परमेश्वर से प्राप्त विश्वास के साथ आगे बढ़ा।

तो फिर, प्रतिस्पर्धात्मक रणनीति का मतलब है—अपनी मुख्य क्षमताओं का सही इस्तेमाल करना और उस काम को करना जिसमें आप सचमुच माहिर हैं, ताकि आप अपने प्रतिद्वंद्वियों से आगे निकल सकें। बेहतर बनने के लिए आपका 'बड़ा' होना ज़रूरी नहीं है; यदि आप कौशल, फुर्ती, नए प्रयोग (इनोवेशन), कार्यकुशलता, बेहतर सेवा आदि जैसे दूसरे क्षेत्रों में अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ सकते हैं, तो आप निश्चित रूप से उनसे आगे निकल जाएँगे।

भजन संहिता 20:7
किसी को रथों का, और किसी को घोड़ों का भरोसा है, परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे।

प्रभु का परामर्श प्राप्त करें—यह आपके प्रतिस्पर्धात्मक लाभ तथा रणनीति की कुंजी है

2 शमूएल 5:22-25 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
22 फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नामक तराई में गएऔर उस पर फिर से कब्ज़ा कर लिया।
23 एक बार फिर दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उसने कहा, "यहां से उन पर चढ़ाई न कर, बल्कि उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के सामने से उन पर हमला करने के लिए तैयार हो जाओ।
24 और जब तूत वृक्षों की चोटियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब हमला करना क्योंकि मैं पलिश्तियों की सेना को हराने के लिए तुम्हारे आगे-आगे चलूंगा।"
25 दाऊद ने वही किया जो यहोवा ने कहा था, और वह पलिश्तियों को गेबा से गेजेर तक पीछे खदेड़ने में कामयाब रहा।

प्रभु का परामर्श प्राप्त करें। उसकी सलाह लें। कई बार ऐसा होता है कि परमेश्वर हमें विशेष बातें बताता हैं कि हम अपने काम

को, जो पहले से हो रहा है, उसे और अलग और बेहतर तरीके से कैसे करें। हम जो भी काम करते हैं, उसमें प्रभु हमारे साथ सहभागी होता हैं।

पुराने नियम में याकूब की कहानी में परमेश्वर के याकूब के कामकाजी जीवन में एक अनोखे तरीके से दखल देने का ज़िक्र है। याकूब अपने मामा लाबान के लिए काम करता था। उसके मामा ने उसके साथ धोखा किया और उसकी मज़दूरी 10 बार बदल दी, लेकिन परमेश्वर ने एक सपने में याकूब से बात की। परमेश्वर ने याकूब को बताया कि वह क्या करने वाला है, और याकूब ने एक ऐसी रणनीति बनाई जिससे उसका काम, परमेश्वर के बताए हुए वचन के मुताबिक हो जाए। याकूब बहुत समृद्ध हुआ।

उत्पत्ति 31:6-12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
6 तुम दोनों जानती हो कि मैंने तुम्हारे पिता के लिए पूरी शक्ति से काम किया है।
7 फिर भी उसने मुझे से छल करके मेरी मज़दूरी दस बार बदली। परन्तु परमेश्‌वर ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया।
8 जब भी लाबान ने कहा, 'चित्तीदार बकरियां तुम्हारी मज़दूरी होंगी,' तब सब भेड़–बकरियाँ चित्तीवाले ही जनने लगीं। जब उसने कहा, 'धारीदार बकरियां तुम्हारी मज़दूरी ठहरेंगे,' तब सब भेड़–बकरियाँ धारीवाले जनने लगीं।
9 इस रीति से परमेश्‌वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिए।
10 "भेड़–बकरियों के गाभिन होने के समय मैंने एक स्वप्न देखा, और मैंने देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, वे धारीदार, धब्बेदार और चित्तीवाले थे।"
11 तब परमेश्‌वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा, 'हे याक़ूब,' मैं ने कहा, 'क्या आज्ञा।'
12 'देख,' उसने आगे कहा, 'उन सब बकरों को जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं, वे धारीदार, धब्बेदार और चित्तीवाले हैं। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि जो कुछ लाबान तुम्हारे साथ कर रहा है, वह मैं ने देखा है।"

परमेश्वर हमसे बात कर सकता हैं और हमें बता सकता हैं कि वह क्या करने वाला हैं, या अर्थव्यवस्था में क्या होने वाला है। वह हमें हमारे

व्यवसाय के लिए खास निर्देश और उन्हें लागू करने की रणनीतियाँ दे सकता हैं। उन पर अमल करें और परिणाम देखें।

अनोखी रणनीतियों को अपनाने के लिए तैयार रहें

यहोशू 6:1-5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

1 यरीहो के सब फाटक बंद रखे गए थे और उन पर पहरा बिठाया गया था ताकि इस्राएली अंदर न आ सकें। कोई भी शहर में आ-जा नहीं सकता था।
2 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, "सुन, मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूँ।
3 तुम्हें और तुम्हारे योद्धाओं को छः दिनों तक रोज़ाना एक बार नगर के चारों ओर घूमना है।
4 सात याजकों को, जिनके हाथों में नरसिंगे होंगे, वाचा के संदूक के आगे-आगे चलना है। सातवें दिन तुम्हें और तुम्हारे योद्धाओं को नगर के चारों ओर सात बार घूमना है, जबकि याजक नरसिंगे फूँकते रहेंगे।
5 फिर वे नरसिंगे देर तक फूँकेंगे। तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें; और तब नगर की शहरपनाह गिर जाएँगी। तब पूरी सेना सीधे नगर के भीतर चढ़ जाएगी।"

कई बार ऐसा होता है जब परमेश्वर आपको कुछ अनोखी रणनीतियाँ देता हैं। उसने अतीत में भी ऐसा किया है, और जब लोगों ने उन पर अमल किया, तो उन्हें असाधारण सफलता मिली। भला कौन ऐसा सोचेगा कि शहर की दीवारों को गिराने के लिए उनके चारों ओर घूमने की रणनीति बनाई जाए? परन्तु यही वह रणनीति थी जिसे परमेश्वर ने यरीहो को जीतने के लिए यहोशू को दी थी। युद्ध में सेना के आगे उपासकों का समूह भेजने के बारे में किसने सोचा होगा? लेकिन परमेश्वर ने यहोशापात को यही करने का निर्देश दिया था, और उन्होंने एक असाधारण विजय देखी (2 इतिहास 20:21,22)। ये अनोखी रणनीतियाँ आज्ञा मानने और भरोसा करने का एक न्योता हैं। जब आप इन अनोखी रणनीतियों पर काम करते हैं, तो परमेश्वर आपकी ओर से आगे बढ़कर आपको अनोखी जीत दिलाता है। हालाँकि, जब आप परमेश्वर से किसी असाधारण रणनीति की उम्मीद कर रहे हों,

तो प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के लिए सोचने, योजना बनाने और रणनीतियों को लागू करने जैसे सामान्य कार्यों को करना न भूलें। आम तौर पर, आपके पास असामान्य चीज़ों की तुलना में सामान्य चीज़ें ज़्यादा होंगी। सामान्य और असामान्य—दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

निराश हुए, पर हारे नहीं; एक नई रणनीति के साथ वापसी करें

अक्सर जब आप किसी संगठन के दर्शन या किसी खास लक्ष्य को पाने की कोशिश कर रहे होते हैं, तो पहली ही कोशिश में आपको सफलता नहीं मिलती। हर बार एक नई रणनीति के साथ आपको कोशिश करते रहना होगा। न्यायियों 20 में, इस्राएली सैनिकों को एक गोत्र, बिन्यामीन के गोत्र के खिलाफ जाते समय लगातार दो दिनों तक हार का सामना करना पड़ा। वे निराश हो गए थे, लेकिन प्रभु ने उन्हें तीसरी बार फिर से युद्ध में जाने का निर्देश दिया। तीसरे दिन, वे फिर से युद्ध में उतरे, लेकिन इस बार उनके पास एक ऐसी रणनीति थी जिसने दुश्मन को पूरी तरह से हरा दिया। वे जीते, और उन्होंने निर्णायक जीत हासिल की। युद्ध समाप्त हो गया। जब आप निराश और हताश महसूस कर रहे हों, तो हार न मानें। अपनी रणनीति पर काम करें। कभी-कभी हम इसलिए असफल हो जाते हैं, क्योंकि हम काम तो कर रहे होते हैं, परन्तु रणनीतिक तरीके से नहीं। एक जीतने वाली रणनीति ही सारा फ़र्क पैदा कर सकती है। एक जीतने वाली रणनीति तैयार करो। उठो और फिर से कोशिश करो।

समय और संयोग घटित होते हैं—सतर्क रहें, तेज़ी से कदम उठाएँ, और उस पल को थाम लें

सभोपदेशक 9:11

फिर मैं ने धरती पर देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेवाले और न युद्ध में शूरवीर जीतते; न बुद्धिमान लोग रोटी पाते न समझवाले धन, और न प्रवीणों पर अनुग्रह होता है; वे सब समय और संयोग के वश में हैं।

यह समझें कि समय और परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण होती हैं। अच्छा समय और अच्छे हालात, बुरा समय और बुरे हालात सभी के जीवन में आते हैं। व्यापार में आपको ये दोनों चीज़ें देखने को मिलेंगी। दोनों को संभालने के लिए समझदारी की ज़रूरत है। सही समय और परिस्थितियों को पहचानें, और उस अवसर को लपक लें। तुरंत कदम उठाएँ।

सभोपदेशक 8:5b,6
5 और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है।
6 क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दु:ख उसके लिये बहुत भारी होता है।

1 इतिहास 12:32a
इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे कि इस्राएल को क्या करना उचित है

एक ऐसी प्रतिस्पर्धात्मक रणनीति तैयार करें, जो आपके सामने मौजूद समय और अवसरों का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाए। उस पल को, यानी आपके सामने मौजूद अवसर को, पहचानने की आपकी क्षमता, और फिर तुरंत सही रणनीति बनाने की आपकी काबिलियत कि क्या करना है, आपको बहुत बड़ा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ देगी। सतर्क रहो!

मुख्य सिद्धांत

1) जानें कि आप किसके विरुद्ध हैं।

2) साफ-सुथरे और निष्पक्ष तरीके से मुकाबला करें।

3) जीतने की रणनीति बनाएं।

4) आपका असली शत्रु गोलियात नहीं है, बल्कि डर है।

5) गोलियात का सामना करने के लिए, सिंह और भालु के साथ वाले अपने अनुभव का इस्तेमाल करें।

6) कभी-कभी, बस एक छोटा-सा पत्थर ही काफ़ी होता है।

7) प्रभु का परामर्श प्राप्त करें—यह आपके प्रतिस्पर्धात्मक लाभ तथा रणनीति की कुंजी है।

8) अनोखी रणनीतियों को अपनाने के लिए तैयार रहें।

9) निराश हुए, पर हारे नहीं; एक नई रणनीति के साथ वापसी करें।

10) समय और संयोग घटित होते हैं—सतर्क रहें, तेज़ी से कदम उठाएँ, और उस पल को थाम लें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार vपर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- वे कौन से "सिंह और भालू" यानी अतीत की छोटी-छोटी सफलताएँ है, जिनका लाभ उठाकर आप अपनी संस्था को, उसके भीतर किए जा रहे कार्यों में, एक प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त दिला सकते हैं?
- आप सतर्क रहने के लिए क्या कर सकते हैं...

a) उस पल को पहचानें—जो अवसर आपके सामने है, और फिर

b) क्या करना है, इस पर तुरंत एक सही रणनीति बनाएं ?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

6
संगठनात्मक संरचना और प्रारूप

किसी संगठन के प्रबंधन और संचालन को आमतौर पर विशेषज्ञता की कई उप-विभाजित इकाइयों में बांटा जाता है। इन व्यावसायिक इकाइयों को आपस में एकीकृत भी किया जाता है ताकि तालमेल (सिनर्जी) सुनिश्चित हो सके और संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त किया ज सके। हालांकि, विभिन्न प्रकार की सामान्य संगठनात्मक संरचनाएं मौजूद हैं, फिर भी अधिकांश संगठन ऐसी संरचना का इस्तेमाल करते हैं जो उनकी वर्तमान रणनीति और विकास के चरण के लिए सबसे उपयुक्त हो, ताकि अधिकतम कार्य-प्रदर्शन सुनिश्चित हो सके, और साथ ही संगठन भविष्य में होने वाले बदलावों के लिए भी तैयार रहे। जैसे-जैसे आंतरिक और बाहरी कारक बदलते हैं और विकास की दिशा में प्रयास किए जाते हैं, संगठनात्मक संरचना की लगातार पुनर्रचना की जा सकती है। परमेश्वर व्यवस्था, संरचना और डिज़ाइन का परमेश्वर हैं। हमारे आस-पास की दुनिया और विशाल ब्रह्मांड इसी बात को बयां करते हैं।

दूसरी अन्य बातों के साथ-साथ, संगठन की सफलता के लिए प्रतिस्पर्धात्मक रणनीति, संगठनात्मक ढाँचा और प्रारूप, संगठनात्मक संस्कृति, और संगठन के लक्ष्यों का क्रियान्वयन करना भी ज़रूरी है। संगठनात्मक ढाँचा और डिज़ाइन ऐसा होना चाहिए जो संगठन को बाज़ार की बदलती परिस्थितियों पर तेज़ी से प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाए। संगठन के भीतर की संरचनाएँ, प्रणालियाँ और प्रक्रियाएँ बाधाओं को दूर करने वाली होनी चाहिए; वे काम करने के माहौल

को आसान बनाएँ, सभी इकाइयों के बीच सहयोग और तालमेल को बढ़ावा दें, और ज्ञान, विचारों तथा सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करें। निस्संदेह, संगठनात्मक ढाँचा और डिज़ाइन उतना ही प्रभावी होता है, जितने उसमें कार्यरत लोग सक्षम और कुशल हों। सही ढाँचा और डिज़ाइन तथा सही लोगों को सही पदों पर नियुक्त करें, और आपके पास एक ऐसा संगठन होगा जो सफलता के शिखर को छूने के लिए पूरी तरह तैयार है!

संरचना, व्यवस्था और डिज़ाइन दैवीय गुण हैं

1 कुरिन्थियों 14:33,40
33 क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है।
40 पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ।

परमेश्वर संरचना, व्यवस्था, तथा डिज़ाइन का परमेश्वर हैं। हम यह बात उसकी सारी सृष्टि में देखते हैं। सृष्टि में डिज़ाइन, संरचना तथा व्यवस्था मौजूद है। परमेश्वर ने कलीसिया की स्थापना की। उसने विवाह और परिवार की भी स्थापना की। इन दोनों संस्थाओं में, परमेश्वर ने एक व्यवस्था स्थापित की है और हमें इस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बुलाया है। जब हम उसकी संरचना तथा व्यवस्था को बनाए रखते हैं, तब शांति और तालमेल बना रहता है, और उस संस्था का उद्देश्य पूरा होता है।

संरचना, व्यवस्था और डिज़ाइन, बुद्धिमत्ता की अभिव्यक्ति हैं। जहाँ सही संरचना, व्यवस्था और डिज़ाइन होता है, वहाँ हम जानते हैं कि उसे बनाने में बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल हुआ है। यह सब यूँ ही अचानक नहीं हुआ। यह जान-बूझकर सुविचारित रूप से किया गया था। इसीलिए हमें संगठन की संरचना और डिज़ाइन पर बहुत सोच-विचार करना चाहिए।

संरचना, व्यवस्था और डिज़ाइन, उद्देश्यों को पूरा करने में

सहायक होते हैं। हम कोई संगठनात्मक संरचना सिर्फ़ इसलिए नहीं बनाते क्योंकि हमें ऐसा करना चाहिए। जो भी संगठनात्मक संरचना बनाई जाती है, उसे संगठन के मक़सदों को पूरा करने के लिए ही डिज़ाइन किया जाना चाहिए।

संगठनात्मक संरचना को रणनीति के अनुरूप बनाएँ

गिनती 1:52 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
बाकी इस्राएली अपना अपना डेरा अपनी अपनी छावनी में और अपने अपने झण्डे के पास खड़ा किया करें;

गिनती 2:34 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
इस प्रकार इस्राएलियों ने वही सब किया जिसकी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी। उन्होंने अपने अपने कुल के अनुसार, अपने अपने झण्डे के पास डेरा डाला और अपने-अपने कुल के साथ आगे बढ़े।

गिनती 10:13,14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
13 उनका प्रस्थान यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी आरम्भ हुआ।
14 और हर बार जब वे आगे बढ़े, तो वे उसी क्रम में थे। और सबसे पहले यहूदा के गोत्र के नेतृत्व वाली टुकड़ियों की छावनी के झंडे का प्रस्थान हुआ, और वे दल बाँधकर चले; और उन का सेनापति अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था।

यह देखना दिलचस्प है कि परमेश्वर ने मूसा को 600,000 लोगों को वादा किए गए देश की यात्रा में जंगल में सही तरीके से ले जाने के निर्देश दिए थे। 12 गोत्रों में से हर एक का एक अगुवा था जो सीधे मूसा को रिपोर्ट करता था। जब वे डेरा डालते थे, तो मिलाप वाला तम्बू (टैबरनैकल) के चारों ओर, हर तरफ तीन-तीन गोत्र डेरा डालते थे। तंबू के किस तरफ कौन सा गोत्र और किस क्रम में रहेगा, इस बारे में निर्देश बिल्कुल स्पष्ट दिए गए थे। जब वे प्रस्थान करते, तो उनके चलने का भी एक उचित क्रम होता था—एक कुल के बाद दूसरा कुल, और इसी क्रम में वे अपनी यात्रा में आगे बढ़ते जाते थे। उनके पास विभिन्न

प्रकार की तुरही की ध्वनियाँ भी थीं—नेताओं को इकट्ठा करने के लिए एक प्रकार की तुरही की ध्वनि, पूरे समुदाय को इकट्ठा करने के लिए दूसरी तरह की तुरही की ध्वनि, और तीसरी तरह की ध्वनि डेरे को आगे कूच करने के लिए। यह पूरी संगठनात्मक व्यवस्था एक स्पष्ट रणनीति के अनुरूप थी कि इस यात्रा को कैसे किया जाए तथा 'वाचा के देश' में प्रवेश करने के दर्शन को कैसे पूरा किया जाए।

संगठनात्मक संरचना और डिज़ाइन जो यह निर्धारित करते हैं कि लोग कहाँ तैनात किये जाने हैं, अधिकार की श्रृंखला, प्रणालियाँ, प्रक्रियाएँ, संचार की रेखाएँ और माध्यम, इन सभी को संगठनात्मक रणनीति के साथ संरेखित (अलाइन्ड) होना चाहिए।

संगठनात्मक रचना रणनीतिक क्षमता और स्थिरता को प्रभावित करता है

1 इतिहास 16:4,37 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

4 फिर दाऊद ने कई लेवियों को परमेश्वर के संदूक के सामने आराधना की अगुवाई करने के लिए नियुक्त किया - ताकि वे प्रार्थना-मध्यस्थी करें, धन्यवाद दें और इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति किया करें।

37 दाऊद ने परमेश्वर के वाचा के संदूक के साथ आसाप और उसके साथियों को छोड़ दिया, और आराधना के काम की ज़िम्मेदारी सौंपी; आराधना से जुड़ी हर ज़रूरत को चौबीसों घंटे पूरा करने की ज़िम्मेदारी उन्हीं की थी।

राजा बनने के बाद, दाऊद ने वाचा के सन्दक को, जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है, लेकर आया और उसे यरूशलेम में एक तंबू में रख दिया। उसकी यह इच्छा थी कि इस तंबू में निरंतर आराधना होती रहे। इसलिए, दाऊद ने 4000 लोगों को मिलाप वाला तम्बू (टैबरनैकल) की सेवा टहल के लिए, और चार हज़ार वाद्ययन्त्रों से यहोवा की स्तुति करने के लिये संगीतकारों तथा 288 नबूवत करने वाले गवैयों को तम्बू में सेवा करने के लिए नियुक्त किया। उन्हें 24 छोटी-छोटी इकाइयों, समूहों या टीमों में संगठित किया गया था; इन

संगीतकारों और गवैयों के लिए एक दैनिक कार्यक्रम तय था जिसका उन्हें पालन करना होता था। हर काम में व्यवस्था बनाए रखने के लिए अगुवों को नियुक्त किया गया था। सभी संगीतकार और गवैये अत्यधिक कुशल थे, ताकि जो कुछ भी किया जाए, उसमें उत्कृष्टता हो। सबसे कमाल की बात यह थी कि इस संगठनात्मक संरचना ने रणनीतिक क्षमता और निरंतरता प्रदान की। दाऊद के इस तम्बू में आराधना लगभग 33 वर्षों तक, दिन-रात (24x7) चलती रही। यह ऐसा कुछ था, जो पहले कभी नहीं किया गया था!

योग्य संगठनात्मक संरचना और डिज़ाइन न केवल प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करता हैं, बल्कि रणनीतिक क्षमता और निरंतरता भी प्रदान करता हैं।

सही टीमों को सही जगह पर रखें

1 इतिहास 12:17,18,21,22 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
17 दाऊद उनसे मिलने गया और उनसे कहा, “अगर तुम मित्र बनकर मेरी मदद करने आ रहे हो, तो तुम्हारा यहाँ स्वागत है। हमारे साथ आओ! परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने आए हो, तो हमारे पितरों का परमेश्‍वर इस पर दृष्टि करेगा और तुम्हें सज़ा देगा, क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ।”
18 तब परमेश्वर का आत्मा अमासै में समाया, जो बाद में “तीस” (योद्धाओं के समूह) का मुख्य बना, और उसने पुकारकर कहा,
“हे यिशै के पुत्र दाऊद, हम तेरे हैं! तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो, परमेश्‍वर तुम्हारे साथ है।” इसलिये दाऊद ने उनको रख लिया, और उन्हें अपने दल के मुखिया ठहरा दिए।
21 उन्होंने दाऊद की सेना में प्रधानों के तौर पर काम किया, क्योंकि वे सभी शूरवीर थे। बाद में वे इस्राएली सेना में प्रधान बने।
22 लगभग हर दिन नए लोग दाऊद की सहायता करने को उसके पास आते रहे, जिससे उसकी सेना जल्द ही बहुत बड़ी हो गई।

दाऊद राजनीतिक, प्रशासनिक, सैन्य और आध्यात्मिक रूप से इज़राइल का सबसे सफल राजा था। उसके शासनकाल में देश हर

तरह से तरक्की कर रहा था। एक बात जो हम दाऊद को करता हुए देखते है वह यह है कि वह सही टीमें बनाता, उनकी क्षमता बढ़ाता तथा उन्हें मज़बूत इकाइयों में संगठित करता था। जब दाऊद ने अपनी सेना बनाई, तो उसने अपनी सेना का नेतृत्व करने के लिए बेहतरीन सैनिकों को इकट्ठा किया। दाऊद के पास 37 योद्धाओं का एक खास समूह था जो उसकी सेना की देखरेख करता था। इनमें से, "मुख्य तीस" और "वे तीन" थे, जो दाऊद के सैनिकों में सबसे वीर थे (2 शमूएल 23)।

संगठनात्मक संरचना और डिज़ाइन के हिस्से के तौर पर, आपको सही जगहों पर लोगों की सही टीमों की भी ज़रूरत होती है। जिस टीम में ऐसे लोग हों जो अपने काम में माहिर हों और यह जानते हों कि एक-दूसरे के साथ मिलकर कैसे काम करना है, वह आखिरकार ज़रूर सफल होगी।

सही लोगों को चुनना और सही टीमें बनाना कोई आसान काम नहीं है। इसमें समय लगता है। इस सफ़र में कुछ उतार-चढ़ाव आ सकते हैं, लेकिन आखिर में, आपको सही लोग सही जगह पर मिलेंगे और सही टीमें मिलेंगी जो वही काम कर रही होंगी जिसके लिए आपकी संस्था-संगठन की हर इकाई को बनाया गया था।

कभी-कभी, आपकी सबसे बेहतरीन टीम अप्रत्याशित लोगों से बनती है

1 शमूएल 22:1,2 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

[1] दाऊद गत शहर से भागकर अदुल्लाम शहर के पास एक गुफ़ा में पहुँच गया। जब उसके भाइयों और परिवार के बाकी लोगों को पता चला कि वह वहाँ है, तो वे भी उसके पास आ गए।

[2] और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास आए, कुल मिलाकर लगभग चार सौ लोग, और वह उनका प्रधान हुआ।

शुरुआत में, दाऊद अपने जीवन के सफर में एक बहुत ही मुश्किल दौर से गुज़र रहा था। हालांकि उसका राजा बनना तय था, लेकिन इस समय वह एक बेघर भगोड़ा था जो भटक रहा था और गुफाओं में रह रहा था। इस समय, 400 लोगों ने उसके साथ जुड़ने और उसके नेतृत्व में आने का फैसला किया। वे दाऊद की काबिलियत को अच्छी तरह जानते थे। दाऊद ने उनका स्वागत किया। यहीं से दाऊद की शक्तिशाली सेना की शुरूआत हुई—उसके जीवन के एक अप्रत्याशित क्षण में, एक अप्रत्याशित स्थान पर, कुछ अप्रत्याशित व्यक्तियों के साथ शुरूआत हुई।

अपने पेशेवर यात्रा में, चाहे आप कोई टीम बना रहे हों, या किसी संगठन के लिए कोई रणनीतिक व्यावसायिक इकाई, आपको हमेशा हर चीज़ को एकदम सही स्थिति में शुरू करने का अवसर नहीं मिल पाता। कभी-कभी, बेहतरीन बनने का आपका सफ़र किसी ऐसे ही अप्रत्याशित पल में, किसी अप्रत्याशित जगह पर और किसी ऐसी ही अप्रत्याशित टीम के साथ शुरू होता है।

अपनी टीम पर भरोसा रखें; उनके मौजूदा संघर्षों से आगे देखें

मरकुस 16:9-15

9 सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहले–पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया।
10 उसने जाकर यीशु के साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया।
11 उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, प्रतीति न की।
12 इसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया।
13 उन्होंने भी जाकर दूसरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनकी भी प्रतीति न की।
14 पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी।

15 और उसने उनसे कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।

यह जानना काफी दिलचस्प है कि पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के दौरान उनके सबसे करीबी 11 लोगों को शुरू में यह विश्वास नहीं था कि वह मरे हुओं में से जी उठे हैं। ठीक तीन दिन पहले ही, उन्होंने यीशु को सूली पर चढ़ते हुए और उसके मृत शरीर को एक सुरक्षित और बंद कब्र में रखे जाते हुए देखा था। इससे पहले, यीशु ने अक्सर उनसे कहा था कि वह मरे हुओं में से जी उठेगा। फिर भी, सूली पर चढ़ाए जाने के तीन दिन बाद भी, उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं था। उनके मन में, यीशु मर चुका था और हमेशा के लिए चला गया था, और अब वह कभी भी दोबारा जीवित नहीं हो सकता था। जिन लोगों ने यीशु को जीवित देखा था, उनकी तरफ़ से आई शुरुआती ख़बरों पर भी उन्होंने विश्वास नहीं किया। फिर भी, ये वही चुने हुए शिष्य थे। ये वही लोग थे जो यीशु के सबसे करीब थे, और जिन्हें यीशु ने स्वयं प्रशिक्षित किया था। ये उसकी अपनी टीम थी।

आश्चर्य की बात यह है कि प्रभु यीशु उन्हीं 11 लोगों के सामने प्रकट हुए जिन्होंने विश्वास नहीं किया था, उन्होंने उनके अविश्वास के लिए उन्हें सुधारा, और फिर उन्हीं को महान आज्ञा दी, अर्थात् यह बड़ा दर्शन कि वे सारे संसार में जाएँ और यह सुनिश्चित करें कि हर व्यक्ति यीशु मसीह का सुसमाचार सुने। यीशु को अपनी टीम पर पूरा भरोसा था। उसने उनके मौजूदा संघर्षों से आगे देखा। वो इस बात को जानता था की इस दौर से गुजर जाने के बाद, जब वे पूरी तरह से तैयार और सशक्त हो जाएँगे, तो अपने उस दर्शन और लक्ष्य के लिए, जिसे वह उनके सामने रख रहा था, अपनी जान भी दे देंगे। वह उन पर पूरी तरह से भरोसा कर सकता था।

अपनी टीम पर भरोसा रखें। आपने उनमें निवेश किया है। आपने उन्हें सही जगह पर नियुक्त किया है। उनका साथ न छोड़ें। उनके

मौजूदा संघर्षों के आगे देखें। उन पर आपका विश्वास उन्हें उठ खड़े होने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

सही लोगों के साथ, आप हर मुश्किल पर जीत हासिल कर सकते हैं

न्यायियों 7:7 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
परमेश्वर ने गिदोन से कहा: "मैं उन तीन सौ आदमियों का इस्तेमाल करूँगा जिन्होंने नदी से चपड़ चपड़ करके पानी पिया था, ताकि तुम्हें छुड़ा सकूँ और मिद्यानियों को तुम्हारे हाथ में कर सकूँ। अन्य सब लोग अपने अपने स्थान को लौट जाएँ।"

गिदोन की सेना के हिस्से के रूप में लड़ने के लिए निकले 32,000 पुरुषों में से 22,000 भयभीत और डरे हुए थे। परमेश्वर ने गिदोन से इन लोगों को घर भेजने को कहा। बाकी बचे 10,000 पुरुषों में से, परमेश्वर ने 300 लोगों को चुना और बाकी को घर भेज दिया। इन 300 लोगों को एक परिक्षण के आधार पर चुना गया था कि वे नदी पर पानी कैसे पीते हैं। इन 300 लोगों ने अपने हाथों की अंजुली बनाकर पानी पिया; उनका यह अंदाज़ उनकी चौकसी और ज़रूरत पड़ने पर तुरंत कार्रवाई के लिए तैयार रहने की भावना को दर्शाता था। गिदोन सिर्फ़ इन 300 पुरुषों के साथ लड़ाई में गया। परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और गिदोन तथा उसके 300 साथियों ने मिद्यानियों की विशाल सेना को बुरी तरह हरा दिया, और इस्राएल देश में 40 वर्षों तक शांति बनाए रखी।

प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के लिए आपको लोगों की किसी विशाल "सेना" की ज़रूरत नहीं होती। सही लोगों के साथ मिलकर, आप हर मुश्किल को पार कर सकते हैं और अपने दर्शन को पूरा कर सकते हैं। इसलिए, सही लोगों को अपने साथ जोड़ें।

अधिकतम कार्यक्षमता और प्रदर्शन के लिए रचना करें

1 कुरिन्थियों 12:18,20,25 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
[18] असल में, हम देखते हैं कि परमेश्‍वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।
[20] हमारे पास एक शरीर है जिसके कई अंग हैं, और हर अंग अपने सही आकार और सही स्थान पर है। कोई भी अंग अपने-आप में महत्वपूर्ण नहीं है।
[25] जिस तरह से परमेश्वर ने हमारे शरीर की रचना की है, वह एक कलीसिया के तौर पर हमारे साथ मिलकर जीने को समझने का एक नमूना है: हर अंग दूसरे अंग पर निर्भर है—चाहे हम उन अंगों का ज़िक्र करें या न करें।

परमेश्वर द्वारा स्थापित संस्थाओं में से एक है कलीसिया (चर्च)। मानव शरीर इस बात का एक उदाहरण है कि परमेश्वर ने इस संस्था को किस तरह से व्यवस्थित और संचालित करने की योजना बनाई थी।

ठीक से काम करने के लिए हर इकाई सही साइज़ की बनायीं गयी है। हर यूनिट को उसकी सही जगह पर रखा गया है।

हर इकाई का उद्देश्य दूसरी इकाइयों के साथ मिलकर काम करना होता है।

संगठनात्मक ढाँचे को ज़्यादा से ज़्यादा कार्यक्षमता और प्रदर्शन के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए।

सही डिज़ाइन करें।

- सही आकार—बहुत बड़ा नहीं।
- सही कार्य—वह कार्य करना जिसके लिए वे सबसे उपयुक्त हैं।
- सही स्थिति—सबसे उपयुक्त स्थान पर रखना।
- सही सहयोग—जिसमें हर कोई अपना-अपना काम करे और योगदान दे, साझा करें और मिलकर काम करे।

इसे केवल आवश्यक स्तरों तक ही विभाजित करें; संरचना को सरल और कम स्तरों वाली बनाए रखें

निर्गमन 18:13-26 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

13 दूसरे दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा, और भोर से साँझ तक काम में व्यस्त रहा।

14 जब यित्रो ने देखा कि मूसा लोगों के लिये क्या–क्या करता है, तो उसने पूछा, "यह क्या काम है जो तुम लोगों के लिये करते हो? तुम यह सब अकेले क्यों कर रहे हो, जबकि लोग भोर से सांझ तक तुमसे सलाह लेने के लिए यहाँ खड़े रहते हैं?"

15 मूसा ने उत्तर दिया, "मुझे यह करना ही होगा क्योंकि लोग मेरे पास परमेश्वर की इच्छा जानने आते हैं।

16 जब दो लोगों के बीच कोई मुक़द्दमा होता है, तब वे मेरे पास आते हैं, और मैं उनके बीच न्याय करता कि उनमें से कौन सही है, और उन्हें परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें समझाता हूँ।"

17 तब यित्रो ने कहा, "तुम यह काम सही नहीं कर रहे हो।

18 इससे तू क्या, वरन् ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय थक जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता।

19 अब मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह देता हूँ, और परमेश्वर तेरे संग रहे! तेरे लिए यह सही है कि तू परमेश्वर के सम्मुख इन लोगों के लिए जाया कर, और इनके मुक़द्दमों को उसके सामने ला।

20 इन्हें परमेश्वर की विधि और व्यवस्था सीखा करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम इन्हें करना हो, वह इनको समझा दिया कर।

21 इसके अलावा, तुम्हें कुछ काबिल पुरुषों को चुनना चाहिए और उनको हज़ार–हज़ार, सौ–सौ, पचास–पचास, और दस–दस मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त करना चाहिए। वे परमेश्वर का भय मानने वाले लोग होने चाहिए जिन पर भरोसा किया जा सके और जिन्हें रिश्वत न दी जा सके।

22 उन्हें पुरे समय लोगों का न्याय करने का काम करने दो। वे सभी मुश्किल मुक़द्दमों तुम्हारे पास ले आया करें, परन्तु छोटे-मोटे मुक़द्दमों का न्याय वे आप ही कर सकते हैं। इससे तुम्हारा काम आसान हो जाएगा, क्योंकि इस बोझ को वे भी तुम्हारे साथ उठाएँगे।

23 यदि तुम यह उपाय करो, जैसा परमेश्वर ने तुम्हे आज्ञा दी है, तो तुम थकोगे नहीं और ये सभी लोग अपने मुक़द्दमे सुलझाकर घर को कुशल से जा सकेंगे।"

24 मूसा ने यित्रो की सलाह मानी

25 और सभी इस्राएलियों में से गुणी पुरुषों को चुना। उसने उन्हें हज़ारों,

सैकड़ों, पचास और दस लोगों के समूहों के ऊपर प्रधान ठहराया। [26] वे हमेशा सब लोगों के लिए न्याय करने का काम करने लगे; जो मुक़द्दमा कठिन होता उसे वे मूसा के पास ले आते थे, और सब छोटे मुक़द्दमों का न्याय वे आप ही किया करते थे।

मूसा के सामने एक चुनौती थी। उसे लगभग 6,00,000 लोगों की आबादी में से हर एक व्यक्ति तक परमेश्वर के आदेश पहुँचाने थे। उसे यह भी सुनिश्चित करना था कि विवादों का निपटारा शांतिपूर्ण ढंग से और परमेश्वर के नियमों के अनुसार हो। इसके अलावा, मूसा को लोगों के लिए प्रार्थना करने हेतु परमेश्वर के समक्ष भी जाना पड़ता था। ऐसे में, सबसे सही कदम यह था कि एक ऐसा संगठनात्मक ढाँचा तैयार किया जाए जिसमें काम सौंपने (डेलीगेशन) की सही व्यवस्था हो और काम सही लोगों को सौंपा जाए, ताकि सभी लक्ष्य पूरे किए जा सकें। मूसा ने अपना ध्यान उन कार्यों पर केंद्रित किया जो करना उसके लिए सबसे ज़रूरी थे। जिन अगुवों को काम सौंपा गया था, ज़रूरत पड़ने पर—खासकर महत्त्वपूर्ण मामलों में, वे मूसा से सीधे संपर्क कर सकते थे।

जैसे-जैसे समय बीतता गया और ज़रूरत के दूसरे क्षेत्रों पर भी ध्यान देना ज़रूरी हो गया, तो दूसरे प्रधानों को नियुक्त किया गया। आखिरकार, हम मूसा के नेतृत्व में यह निचे दिया गया संगठनात्मक ढाँचा देखते हैं:

- **न्यायिक प्रक्रिया:** हज़ारों, सैकड़ों, पचास और दस लोगों के प्रधान (निर्गमन 18)।
- **यात्रा का समन्वय:** 12 प्रधान, प्रत्येक गोत्र पर एक प्रधान (गिनती 1)।
- **शासन:** दैनिक ज़रूरतों को पूरा करने और शासन करने के लिए 70 प्राचीन नियुक्त किए गए (गिनती 11)।

- **विशेष कार्य बल:** 12 प्रधान, हर गोत्र से एक, जिन्हें कनान देश की जासूसी करने और वहाँ प्रवेश की योजना बनाने के लिए भेजा गया (गिनती 13)।
- **याजक:** मिलापवाला तंबू में धार्मिक उपासना और सेवाओं के लिए ज़िम्मेदार।
- **लेवी:** तंबू में सेवाओं में याजकों की सहायता करते थे।

सबसे अच्छा संगठनात्मक ढाँचा और डिज़ाइन बनाने का एक हिस्सा यह भी है कि काम को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँट दिया जाए, ताकि काम ज़्यादा कुशलता, उत्पादकता और बेहतरीन तरीके से हो सके। लोगों को काम सौंपें और उन्हें स्वायत्तता के लिए सशक्त बनाएँ। ढाँचे को जितना हो सके उतना सरल और सीधा रखें, ताकि लोगों, ज्ञान और जानकारी तक पहुँच आसानी से हो सके।

मुख्य सिद्धांत

1) संरचना, व्यवस्था और डिज़ाइन दैवीय गुण हैं।
2) संगठनात्मक संरचना को रणनीति के अनुरूप बनाएँ।
3) संगठनात्मक रचना रणनीतिक क्षमता और स्थिरता को प्रभावित करता है।
4) सही टीमों को सही जगह पर रखें।
5) कभी-कभी, आपकी सबसे बेहतरीन टीम अप्रत्याशित लोगों से बनती है ।
6) अपनी टीम पर भरोसा रखें; उनके मौजूदा संघर्षों से आगे देखें।
7) सही लोगों के साथ, आप हर मुश्किल पर जीत हासिल कर सकते हैं।

8) अधिकतम कार्यक्षमता और प्रदर्शन के लिए रचना करें।

9) इसे केवल आवश्यक स्तरों तक ही विभाजित करें; संरचना को सरल और कम स्तरों वाली बनाए

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- क्या आपकी टीम, यूनिट या संस्था-संगठन को पुनर्रचना की ज़रूरत है? यदि आपको चीज़ों के बारे में दोबारा से सोचना और उनकी पुनर्रचना करना हो, तो आप क्या करेंगे?
- *"कभी-कभी, आपकी सबसे बेहतरीन टीम की शुरुआत सबसे अप्रत्याशित लोगों से होती है"*— क्या आपने कभी ऐसा अनुभव किया है? आपने इस अनुभव का सामना कैसे किया और इसका क्या नतीजा निकला?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

7
नए अविष्कार तथा रचनात्मकता

खोज करना, आविष्कार करना, सृजन करना, समस्याओं को सुलझाना और नए विचार उत्पन्न करना -ये ही वे तत्व हैं जो संगठनों द्वारा पेश किए जाने वाले नए उत्पादों और सेवाओं को गति प्रदान करते हैं । हालाँकि लोगों को नई खोज तथा रचनात्मकता का प्रशिक्षण देने के लिए कई सोचे-समझे तरीके मौजूद हैं, फिर भी अंततः हम यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर ही महान सृष्टिकर्ता है। वही समस्त सृष्टि का मूल स्रोत और उद्गम है। शुद्ध ज्ञान उसी से प्रवाहित होता है, जो हमारे भीतर देखने की उस क्षमता को जागृत करता है जिससे हम वह देख पाते हैं जो उसने पहले से ही सृष्टि में स्थापित कर रखा है। उसने इसे हमारे खोजे जाने के लिए छिपा रखा है; उसने हमें आविष्कार करने, अन्वेषण करने, शोध करने और सृजन करने की क्षमता से विभूषित किया है, और इस प्रकार, अनेक रूपों में, इस तथ्य को कि, हमारा सृजन उसी के स्वरूप में हुआ है, अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है ।

कार्यक्षेत्र पर, हम नए अविष्कार तथा रचनात्मकता की ज़रूरत को समझते हैं। चाहे किसी समस्या का समाधान करना हो, या कोई बड़ा परिवर्तन लाने वाला नया और प्रभावशाली विचार प्रस्तुत करना हो, हम नवाचार (खोज) करने के लिए नए तरीके और उपाय खोजते हैं। हम प्रेरणा कैसे पाते हैं या उसे कैसे खोजते हैं? जब हम "अटक जाते हैं," जब ऐसा लगता है कि दिमाग़ पूरी तरह से बंद हो गया है और आइडिया बिल्कुल नहीं आ रहे हैं, तो हम क्या करते हैं? हम

खुद को प्रेरित कैसे रखें ताकि आइडिया लगातार आते रहें? ऐसे कई प्रयोगात्मक तरीके हैं जिन्हें हम सीखकर इस्तेमाल कर सकते हैं (जैसे-कसरत करना, आराम करना, कुछ अलग करना, पढ़ना, अलग-अलग तरह की संस्कृतियों के संपर्क में आना, घूमना-फिरना, सोचना-विचारना, सुनना, ध्यान से देखना, जिज्ञासु बने रहना, और भी बहुत कुछ)। इसके लिए औपचारिक प्रशिक्षण और रुपरेखा भी उपलब्ध हैं। इस अध्याय में, हम नई खोज और रचनात्मकता से जुड़ी बाइबिल की कुछ ऐसी संभावनाओं पर गौर करेंगे, जिनका हम लाभ उठा सकते हैं।

परमेश्वर प्रकट करता है, निर्देश देता है, और सिखाता है; इसलिए उससे पूछो

यशायाह 28:23-29 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
23 मेरी बात कान लगाकर सुनो; मैं जो कह रहा हूँ, उस पर ध्यान दो।
24 किसान अपने खेतों में लगातार हल नहीं चलाते और उन्हें बीज बोने के लिए तैयार नहीं करते।
25 मिट्टी तैयार करने के बाद, वे सौंफ और जीरे जैसी जड़ी-बूटियों के बीज बोते हैं। वे गेहूँ और जौ की कतारें लगाते हैं, और अपने खेतों के किनारों पर दूसरे अनाज उगाते हैं।
26 वे अपना काम करना जानते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें सिखाया है।
27 वे सौंफ या जीरे के बीजों को निकालने के लिए भारी डंडे का इस्तेमाल नहीं करते; बल्कि वे सही परिमाण की हल्की छड़ियों का इस्तेमाल करते हैं।
28 वे गेहूँ को बार-बार कूटकर बर्बाद नहीं करते, और वे जानते हैं कि गेहूँ को बिना कुचले उस पर गाड़ी चलाकर कैसे कूटना है।
29 यह सारी समझ सर्वशक्तिमान प्रभु से आती है। परमेश्वर की बनाई योजनाएँ बुद्धिमानी भरी होती हैं, और वे हमेशा सफल होती हैं।

मनुष्य प्रकृति को खोजने, यह समझने कि वह कैसे काम करती है, और उसे उपयोग में लाने की प्रक्रिया से गुजरता है। इस संदर्भ में, विशेष रूप से किसान जब खेती को समझता और सीखता है, तो पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि यह बुद्धि परमेश्वर की ओर से आती है,

क्योंकि परमेश्वर ने ही किसान को सिखाया है। परमेश्वर अपनी सृष्टि के बारे में सबकुछ जानता है—कब, क्यों, कैसे और कहाँ—और इसी खोज की प्रक्रिया में वह लोगों पर बातों को प्रकट करता है, उन्हें शिक्षा देता है और उनका मार्गदर्शन करता है।

ज़ाहिर है, यदि परमेश्वर ने अतीत में कृषि के क्षेत्र में ऐसा किया है, तो वह अन्य क्षेत्रों में भी लोगों की खोज-प्रक्रिया में उन्हें ज्ञान प्रदान कर सकता हैं, उन्हें निर्देश दे सकता हैं तथा उनका मार्गदर्शन कर सकता हैं।

दानिय्येल 2:20-22 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
20 "परमेश्वर बुद्धिमान और पराक्रमी है! युगानुयुग उसकी स्तुति करो।
21 समयों और ऋतुओं को वही नियंत्रित करता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; वही बुद्धि और समझ देता है।
22 वही गहरी और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अंधेरे में क्या छिपा है, और वह स्वयं प्रकाश से घिरा हुआ है।

परमेश्वर गहरी, गुप्त और छिपी हुई बातों को प्रकट करने वाला है। वह हर चीज़ के बारे में सब कुछ जानता है। उससे पूछो।

बुद्धि सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है

नीतिवचन 4:5-9 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
5 बुद्धि और समझ को प्राप्त करो! मैं जो कहता हूँ उसे भूलना या नज़रअंदाज़ मत करना।
6 बुद्धि को मत छोड़ो, और वह तुम्हारी रक्षा करेगी; उससे प्यार करो, और वह तुम्हें सुरक्षित रखेगी।
7 बुद्धि प्राप्त करना सबसे महत्वपूर्ण काम है जो आप कर सकते हैं। जो कुछ भी तुमको मिले, उसके साथ समझ की प्राप्ति करो।
8 बुद्धि से प्रेम करो, और वह तुम्हें बढ़ाएगी। उसे गले लगाओ, और वह तुम्हें सम्मान दिलाएगी।
9 वह तुम्हारा शोभायमान मुकुट होगी।"

'बुद्धि' का अर्थ है चीज़ों की असली प्रकृति को गहराई से समझना और यह तय करने की क्षमता रखना कि उनका सबसे अच्छा उपयोग कैसे किया जाए। ऐसी स्थितियों में जहाँ निर्णय लेने होते है या समस्याओं को सुलझाना होता है, बुद्धि ही व्यक्ति को सही कदम उठाने में सक्षम बनाती है। 'बुद्धि' का अर्थ दूरदर्शिता भी है—यह पहले से देख पाना कि भविष्य में चीज़ें कैसी हो सकती हैं, और यह तय करना कि भविष्य में सर्वोत्तम परिणाम पाने के लिए वर्तमान में क्या करने की आवश्यकता है।

नीतिवचन 8:11-31 एक ऐसा शास्त्रभाग है जो बुद्धि को एक बुनियादी आधार के रूप में प्रस्तुत करता है। यह परमेश्वर की ओर से मिलनेवाली 'बुद्धि' ही है जो बल प्रदान करती है, सही मार्गदर्शन करती है, समझ और कुशल नेतृत्व प्रदान करती है, कानून को निष्पक्ष बनाती है, तथा धन व महिमा लाती है।

खोज किसी चीज़ को पहली बार ढूँढ़ने या उसके बारे में जानने की क्रिया है। **रचनात्मकता** नई चीज़ें बनाने या नए विचारों के बारे में सोचने की क्षमता है। नए **अविष्कार** कोई नए विचार, उपकरण या तरीका है; अथवा नए विचारों, उपकरणों या तरीकों को प्रस्तुत करने की क्रिया या प्रक्रिया है। (मेरियम-वेबस्टर शब्दकोश से अनुकूलित) परमेश्वर से प्राप्त बुद्धि ही खोज, रचनात्मकता और नए अविष्कार को प्रेरित करता है।

याकूब 1:5,6 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
5 पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की कमी हो, तो वह परमेश्वर से प्रार्थना करे, वह तुम्हें देगा; क्योंकि परमेश्वर सभी को उदारता और अनुग्रह के साथ देता है।
6 लेकिन जब तुम प्रार्थना करो, तो विश्वास करो और बिल्कुल भी सन्देह मत करो। जो सन्देह करता है, वह समुद्र की लहर की तरह है, जो हवा से बहती और उछलती रहती है।

बुद्धि के आत्मा का स्वागत करें, ताकि वह आपको अभिषिक्त करे

यशायाह 11:2

यहोवा का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा उस पर ठहरा रहेगा।

पवित्र आत्मा बुद्धि, समझ और ज्ञान का आत्मा है। पवित्र आत्मा हमें प्रभु का मन प्रदान करती है। पवित्र आत्मा उन बातों को प्रकट करता है जिन्हें आँखों ने नहीं देखा, कानों ने नहीं सुना, और और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं (1 कुरिन्थियों 2:9,10,16)। इसलिए, अपने जीवन में कार्य करने के लिए उसका स्वागत करें। उससे बातें करें। उसका मार्गदर्शन माँगें। उससे बुद्धि की याचना करें। पवित्र आत्मा से जुड़ें। सुनो कि परमेश्वर का आत्मा आपकी आत्मा में क्या प्रकट कर रहा है। *"क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं"* (नीतिवचन 2:6)।

कलात्मक और रचनात्मक कौशलों के लिए एक विशेष अभिषेक होता है

निर्गमन 31:1-6

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2 "सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूँ।
3 और मैं उसको परमेश्‍वर के आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाला आत्मा है, परिपूर्ण करता हूँ,
4 जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भाँति की बनावट में, अर्थात् सोने, चाँदी, और पीतल में,
5 और जड़ने के लिये मणि काटने में, और लकड़ी पर नक्‍काशी का काम करे।
6 और सुन, मैं दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को उसके संग कर देता हूँ; वरन् जितने बुद्धिमान हैं उन सभों के हृदय में मैं बुद्धि देता हूँ, जिससे जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभों को वे बनाएँ;

यहाँ पवित्र आत्मा द्वारा दी गई उस बुद्धि का एक उदाहरण है, जिसके परिणामस्वरूप रचनात्मक और कलात्मक कौशलों में समझ और ज्ञान प्राप्त होता है। इन लोगों को परमेश्वर ने एक विशेष उद्देश्य के लिए चुना था, जिसके लिए कलात्मक कार्यों और शिल्पकारी में बुद्धि, समझ, ज्ञान और कौशल की आवश्यकता थी। परमेश्वर के आत्मा ने उन्हें वह सब प्रदान किया, जिसकी उन्हें अपने सौंपे गए कार्यों को पूरा करने के लिए ज़रूरत थी। हालाँकि, यह बात ध्यान में रखें कि, पवित्र आत्मा से यह वरदान प्राप्त करने के बाद भी, उन्हें कड़ी मेहनत करके अपने कलात्मक और शिल्पकारी के कार्यों को आगे बढ़ाना पड़ा।

आप जिस भी क्षेत्र में कार्यरत हैं, उसमें आप पवित्र आत्मा से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह आपको समस्याओं का समाधान करने और अपने काम में नवाचार तथा रचनात्मकता लाने के लिए आवश्यक बुद्धि, समझ, ज्ञान और कौशल प्रदान करें। और इसके बाद, पूरी लगन से अपना कार्य करें।

केवल समस्या की पहचान न करें–बल्कि उसका समाधान भी निकालें

उत्पत्ति 41:29-40 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
29 सारे मिस्र देश में सात वर्ष तक बहुत ज़्यादा अनाज पैदा होगा।
30 उसके बाद सात वर्ष का अकाल पड़ेगा और अच्छे वर्षों की सारी बातें भुला दी जाएँगी, क्योंकि अकाल से देश का नाश होगा।
31 और सुकाल (बहुतायत की उपज) का समय पूरी तरह भुला दिया जाएगा, क्योंकि उसके बाद पड़ने वाला अकाल अत्यन्त भयंकर होगा।
32 आपके स्वप्न का बार-बार आना यह बताता है कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा।
33 "अब आपको किसी समझदार और बुद्धिमान पुरुष को चुनकर उसे देश पर प्रधान मंत्री ठहराया जाना चाहिए।
34 तुम्हें दूसरे अधिकारी भी नियुक्त करने चाहिए और भरपूर पैदावार वाले सात वर्षों के दौरान फसल का पाँचवाँ हिस्सा लेना चाहिए
35 उन्हें आदेश दें कि आने वाले अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तु इकट्ठा

करें, और उन्हें नगर नगर में अनाज जमा करने और उसकी रखवाली करने का अधिकार दें।
36 मिस्र में आने वाले सात साल के अकाल के दौरान यह भोजनवस्तु देश के लिए आरक्षित आपूर्ति का काम करेगा। इस तरह लोग भूखे नहीं मरेंगे।"
37 राजा और उसके सारे अधिकारियों ने इस योजना को मंज़ूरी दे दी,
38 और उसने उनसे कहा, "हमें यूसुफ से बेहतर पुरुष, जिसमें परमेश्वर की आत्मा रहता है, कभी नहीं मिलेगा।"
39 राजा ने यूसुफ से कहा, "परमेश्वर ने तुम्हें यह सब दिखाया है, इसलिए यह साफ़ है कि तुममें किसी भी दूसरे व्यक्ति से ज़्यादा समझदारी और बुद्धिमानी है।
40 मैं तुम्हें अपने देश का अधिकारी बनाऊँगा, और तुम्हारी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी। अधिकार के विषय मैं तुम से बड़ा ठहरूँगा।

यूसुफ ने न केवल उस स्वप्न का अर्थ बताया जिसमें बताया गया था कि अगले 14 वर्षों में मिस्र में क्या होने वाला है, बल्कि उसने राजा को यह सलाह भी दी कि आने वाले सात वर्षों के अकाल की तैयारी के लिए उन्हें क्या करना चाहिए।

परमेश्वर का आत्मा हमें समस्याओं के असली स्वरूप को समझने और बूझने की बुद्धि प्रदान करता है। वह हमें हालात का पहले से अंदाज़ा लगाने और योजना बनाने की काबिलियत प्रदान करता है। वह हमें समाधानों के विषय में तथा भविष्य की तैयारी के लिए सही कदम उठाने की समझ देता हैं। परमेश्वर के आत्मा के कार्य का लाभ उठाएँ।

किसी अनजान क्षेत्र पर सोच-विचार तथा कार्य करने के लिए आगे बढ़ें

1 इतिहास 28:10-12,19 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
10 चौकस रहो! परमेश्वर ने तुम्हें अपना पवित्र भवन बनाने के लिए चुन लिया है। हिम्मत रखो, दृढ़ हो जाओ! और इस काम में लग जाओ!"
11 तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों,

अटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित के ढकने के स्थान के लिए नमूने दिए।
12 उसने आँगनों, कमरों की व्यवस्था, और पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों के सभी नमूने जो परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे सब दे दिए।
19 दाऊद ने कहा, "ये पूरी परियोजना की रूपरेखा है, जैसा कि परमेश्वर ने मुझे समझने के लिए दिया था।"

हमें कुछ नया करने से रोकने वाली चीज़ों में से एक है, किसी अनजान क्षेत्र में कदम रखने की हमारी हिचकिचाहट। दाऊद एक चरवाहे के रूप में बड़ा हुआ था। राजा शाऊल से छिपकर भागने के दौरान, उसने व्यावहारिक रूप से नेतृत्व और सैन्य अनुभव हासिल किया। उसे वास्तुकला या इमारतों के डिज़ाइन के बारे में पहले से कोई जानकारी नहीं थी। फिर भी, परमेश्वर के आत्मा ने उसे पूरे मंदिर परिसर का डिज़ाइन दिया, और लेवियों तथा याजकों को आराधना के कार्य में नेतृत्व और व्यवस्था देकर उसे संगठित करने की पूरी योजना भी दी। पवित्र आत्मा ने उसे इस बात की एकदम सटीक जानकारी दी कि उपासना की सेवाओं में इस्तेमाल होने वाली हर चीज़ के लिए कितना सोना और चाँदी चाहिए होगा। पवित्र आत्मा ने उसे मंदिर में किये जाने वाले शिल्पकला के कार्यों के नमूने भी दिए। ये सभी क्षेत्र दाऊद के लिए बिल्कुल अनजान थे, और फिर भी, उसको प्रभु से इन सब की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई।

हम जो जानते हैं, उसमें हम बहुत सहज महसूस करते हैं, परन्तु हमें अनजान क्षेत्रों में जाकर सोच-विचार तथा कार्य करने का तरीका सीखना होगा। ऐसा करने का एक हिस्सा पवित्र आत्मा से प्रेरित विचारों को पाना सीखना है।

इसके अलावा, जब आप परमेश्वर का वचन पढ़ेंगे, तो प्रेरणा

पाने की उम्मीद रखें। ऐसी प्रकाशन मिलने की उम्मीद करें, जो आपको उन समस्याओं के समाधान तक ले जाएगी, जिनके बारे में आपने शायद अन्यथा कभी सोचा भी न होगा। *"तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं"* (भजन संहिता 119:130)।

अपने ज्ञान, समझ और कौशल को बढ़ाएँ

दानिय्येल 1:17
परमेश्‌वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया।

दानिय्येल और उसके दोस्त एक दूसरे देश में बंधुआई में थे। उन्हें उन नौजवानों में से चुना गया था, जिन्हें बेबीलोन के लोगों की भाषा और साहित्य में प्रशिक्षित किया जाना था। परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। जब ये जवान सीखने और ज्ञान, समझ तथा कौशल प्राप्त करने में मेहनत कर रहे थे, तब परमेश्वर ने उन्हें सामर्थ्य दी।

राजा ने दानिय्येल से कहा, *"मैं ने तेरे विषय में सुना है कि ईश्वर की आत्मा तुझ में रहती है; और प्रकाश, प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुझ में पाई जाती है"* (दानिय्येल 5:14)। दानिय्येल की तरह, हमें भी पवित्र आत्मा की सामर्थ को अपने ज्ञान, समझ और कौशल हासिल करने के साथ जोड़ना सीखना होगा। नए अविष्कार, रचनात्मकता और खोज, प्रेरणा और जिज्ञासा का मेल हैं।

नीतिवचन 19:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
अपने आप पर कृपा करो और जितना हो सके सीखो; फिर जो आपने सीखा है उसे याद रखो तो तुम्हारा कल्याण होगा।

अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करें; अपनी स्मरणशक्ति को प्रशिक्षित करें

2 तीमुथियुस 1:7

क्योंकि परमेश्‍वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

परमेश्वर ने हमारे दिमाग को बनाया है। इस्तेमाल करने के लिए उसने हमें हमारा दिमाग दिया है। हमारे दिमाग में कल्पना, तर्क और स्मरणशक्ति जैसी क्षमताएँ होती हैं। परमेश्वर चाहता हैं कि हमारा मन-मस्तिष्क स्वस्थ हो। इसका मतलब है कि हम उन मानसिक क्षमताओं का इस्तेमाल करें, उन्हें प्रशिक्षित करें और उनका विकास करें जो उसने हमें दी हैं। अपनी कल्पना का इस्तेमाल करें। अपनी स्मरणशक्ति को प्रशिक्षित करें। जैसे-जैसे हम इन क्षमताओं को प्रशिक्षित करते हैं, उनका विकास करते हैं तथा उनका इस्तेमाल करते हैं, हम खुद को समस्याओं को सुलझाने, समाधान निकालने और अपने आस-पास के लोगों के लिए कुछ उपयोगी करने के लिए तैयार करते हैं।

मुख्य सिद्धांत

1) परमेश्वर प्रकट करता है, निर्देश देता है, और सिखाता है; इसलिए उससे पूछो।
2) बुद्धि सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है।
3) बुद्धि के आत्मा का स्वागत करें, ताकि वह आपको अभिषिक्त करे।
4) कलात्मक और रचनात्मक कौशलों के लिए एक विशेष अभिषेक होता है।

5) केवल समस्या की पहचान न करें–बल्कि उसका समाधान भी निकालें।

6) किसी अनजान क्षेत्र पर सोच-विचार तथा कार्य करने के लिए आगे बढ़ें।

7) अपने ज्ञान, समझ और कौशल को बढ़ाएँ।

8) अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करें; अपनी स्मरणशक्ति को प्रशिक्षित करें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- हाल ही में, क्या आपको किसी अनजान क्षेत्रों में जाकर सोच-विचार तथा कार्य करने का मौका मिला है? आपने इस अनुभव का सामना कैसे किया?
- क्या आप कुछ ऐसे क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं, जहाँ आपको लगता है कि आपको अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने पर काम करना चाहिए? आप यह कैसे कर सकते हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

8
लोग, प्रक्रियाएँ, प्रदर्शन और पुरस्कार

मानव संसाधन प्रबंधन (हयूमन रिसोर्स मैनेजमेंट) या लोगों का प्रबंधन किसी भी संगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह एक बहुत ही रणनीतिक संगठनात्मक कार्य है। कर्मचारियों को प्रोत्साहित रखना, प्रतिबद्धता, विवादों का समाधान करना, प्रदर्शन का मूल्यांकन करना, कर्मचारियों को पुरस्कृत करना तथा कर्मचारियों को बनाए रखना—ये सभी इस कार्य में शामिल मुख्य क्षेत्र हैं।

मूल रूप से, लोग ही संगठन बनाते हैं। यदि आप अच्छे लोगों को खो देते हैं, तो आप संगठन को ही खो देते हैं। अच्छे लोगों के होने के महत्व पर आप कोई कीमत नहीं लगा सकते।

आज के वैश्विक रुझानों को देखते हुए, एक छोटे बिज़नेस के भी कर्मचारी, सलाहकार और अन्य लोग कई देशों में फैले हो सकते हैं। लोग दुनिया के किसी भी सुदूर क्षेत्र से काम कर सकते हैं। इससे मानव संसाधन प्रबंधन का काम और मुश्किल हो जाता है, क्योंकि इसमें अलग-अलग संस्कृति और नियमों को समझना और उनके हिसाब से काम करना होता है।

इस अध्याय में, हम कार्यक्षेत्र पर लोगों के साथ बर्ताव करने के बारे में पवित्र शास्त्र में बताए गए कुछ बुनियादी सिद्धांतों के बारे में बात करेंगे।

संगठन में योगदान और महत्व के आधार पर उचित वेतन दें

कुलुस्सियों 4:1

हे स्वामियो, अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।

अपने कर्मचारियों को उनके काम, उनके अनुभव और ज्ञान, और आपके संगठन में उनके द्वारा जोड़े गए मूल्य के हिसाब से उचित और न्यायसंगत वेतन दें। बेशक, यह इस बात पर भी निर्भर करेगा कि संगठन कितना वेतन देने में सक्षम है। कभी-कभी, लोग किसी संगठन में कम वेतन पर भी काम करना चुन सकते हैं, क्योंकि उन्हें कुछ अन्य अमूर्त लाभ मिलते हैं—जैसे कि सहायक कार्य-वातावरण, काम में लचीलापन, घर से नज़दीकी, आदि। जब तक यह आपसी समझ है कि जो वेतन दिया जा रहा है वह सही और उचित है, हम वही कर रहे हैं जो पवित्र शास्त्र हमें करने के लिए सिखाता है।

लोगों को संगठन में उनकी असल मेहनत तथा उनके योगदान के आधार पर वेतन मिलना चाहिए, न कि सिर्फ़ उनके पद या कार्यकाल के आधार पर। हालांकि पिछले सालों के कार्यकाल की संख्या मायने रखती है, परन्तु कई स्थितियों में, यह संगठन में मौजूदा योगदान का अच्छा संकेत नहीं है। उनका मौजूदा ज्ञान, कौशल, रचनात्मक क्षमता, समस्याओं को सुलझाने की काबिलियत, नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता भी बहुत ज़रूरी होती है। साथ ही, लोगों द्वारा लाए जानेवाले अमूर्त मूल्य को भी ध्यान में रखें— संगठन के दर्शन, मिशन, संस्कृति और मूल्यों के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता; संगठन के भीतर लोगों को एकजुट रखने की क्षमता; नई चुनौतियों का सामना करने की क्षमता; अनिश्चित परिस्थितियों में लचीलेपन के साथ आगे बढ़ने की क्षमता और ऐसे ही अन्य व्यवहार, जो कुछ संगठनों में बेहद मूल्यवान हो सकते हैं। यदि दो लोग एक जैसे काम कर रहे हैं, लेकिन उनमें से एक अपने योगदान और मूल्यों के मामले में कहीं अधिक देता है,

तो उस व्यक्ति को दूसरे की तुलना में कहीं अधिक वेतन दिया जाना चाहिए। जब तक यह साफ़ समझ है कि यह अंतर क्यों है, और दूसरों के पास भी उसी वेतन स्तर तक पहुँचने का अवसर होता है, तब तक यह व्यवस्था न्यायसंगत और निष्पक्ष रहेगी ।

कभी भी 'अधिकार जताने' वाली मानसिकता को पनपने न दें। जिस पल लोग यह सोचने लगते हैं कि संगठन में बने रहना उनका अधिकार है, और वे अपने मौजूदा प्रदर्शन की परवाह किए बिना अपनी भूमिका, पद और वेतन के स्वाभाविक रूप से हकदार हैं, तो समझ लीजिए कि वे 'अधिकार जताने' वाली सोच के साथ काम कर रहे हैं। इससे प्रदर्शन खराब होता है, आलस बढ़ता है और दूसरों का हौसला टूटता है। संगठन में हर व्यक्ति इसलिए है, क्योंकि वे संगठन के दर्शन, मिशन, संस्कृति तथा मूल्यों के साथ जुड़े हुए हैं, और वे हर दिन इनमें अपना सार्थक योगदान देते हैं।

यह सुनिश्चित करे कि लोगों को वेतन समय पर मिलें

लैव्यव्यवस्था 19:13 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
किसी को न तो लूटना और न ही किसी का फ़ायदा उठाएँ। जिसे आपने काम पर रखा है, उसकी मज़दूरी न रोकें, एक रात के लिए भी नहीं।

व्यवस्थाविवरण 24:14,15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
14 "गरीब और ज़रूरतमंद मज़दूरों को धोखा मत दो, चाहे वे इस्राएली हों या तुम्हारे किसी शहर में रहने वाले परदेशी।
15 हर दिन सूर्यास्त से पहले उन्हें उस दिन की मज़दूरी देना; उन्हें पैसों की ज़रूरत होती है और वे उनके मिलने की उम्मीद करते हैं। यदि तुम उन्हें पैसे नहीं दोगे, तो वे तुम्हारे ख़िलाफ़ प्रभु से दोहाई दे, और तुम पाप के दोषी ठहरोगे।"

आमतौर पर, संगठन अपने कर्मचारियों को मासिक चक्र पर भुगतान करते हैं, और कुछ संगठनों में, हर दो सप्ताह में एक बार वेतन का भुगतान किया जाता है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि

लोगों को समय पर वेतन मिले। व्यक्ति, परिवार, पति-पत्नी तथा बच्चे समय पर आने वाले वेतन पर निर्भर रहते हैं। देरी परिवार के सभी सदस्यों के लिए तकलीफ़देह हो सकती है। पवित्र शास्त्र इस संबंध में किसी भी उल्लंघन को 'पाप' के रूप में प्रस्तुत करता है।

यह सच है कि ऐसे अवसर आ सकते हैं जब किसी संगठन के पास पैसे की कमी हो, और वेतन का भुगतान करने की स्थिति में न हो। यह बात समझ में आती है, लेकिन यह संगठन की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने कर्मचारियों को सूचित रखे, जहाँ तक संभव हो सहायक व्यवस्थाएँ करे, और यह सुनिश्चित करे कि सभी बकाया वेतन का भुगतान जल्द से जल्द कर दिया जाए। यदि संगठन के पास धन उपलब्ध है, फिर भी वह बिना किसी ठोस कारण के अपने कर्मचारी (कर्मचारियों) को समय पर वेतन का भुगतान करने में देरी करता है या उसे रोककर रखता है, तो परमेश्वर की दृष्टि में यह स्वीकार्य नहीं है। इसी प्रकार, विक्रेताओं, सलाहकारों और अन्य सेवा प्रदाताओं को भी समय पर भुगतान करें। *"जिनका भला करना चाहिए, यदि तुझ में शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रुकना"* (नीतिवचन 3:27)।

लोगों का शोषण न करें; उनकी मज़दूरी न रोकें

यिर्मयाह 22:13 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

"उस पर हाय जो महल बनाता है लेकिन लोगों को धमकाता है, जो एक अच्छा घर बनाता है लेकिन दूसरों का जीवन बर्बाद कर देता है, जो अपने श्रमिकों को धोखा देता है और उन्हें उनकी मज़दूरी नहीं देता।

परमेश्वर हमें लोगों का शोषण करने से, कर्मचारियों को उनके हक से वंचित करने से, और लोगों की मज़दूरी रोकने से मना करता है। ऐसा करना निश्चित रूप से तबाही का रास्ता है।

नीतिवचन 24:15,16 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

15 उन दुष्टों जैसे मत बनो जो धर्मी लोगों को लूटने या उनके घर छीनने की

साज़िश रचते हैं।
16 धर्मी चाहे कितनी भी बार गिरें, तौभी उठ खड़ा होता है; परन्तु विपत्ति दुष्टों को बर्बाद कर देती है।

कंगाल और लाचार लोगों का कभी भी शोषण न करें

व्यवस्थाविवरण 24:14
"कोई मज़दूर जो दीन और कंगाल हो, चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे तेरे देश के फाटकों के भीतर रहनेवाले परदेशियों में से हो, उस पर अन्धेर न करना;

धनवान लोगों के बीच एक खतरा यह होता है कि वे अपने लिए काम करने वाले गरीब और जरूरतमंद लोगों पर अत्याचार करने और उनका शोषण करने लगते हैं। गरीब और ज़रूरतमंद लोग बहुत कम मज़दूरी पर काम करते हैं, और कुछ और करने में असमर्थ होते हैं। वे पूरी तरह से उन लोगों पर निर्भर हैं जो उन्हें काम पर रखते हैं। इसलिए, अक्सर ऐसा होता है कि मालिक लोग उनकी बेबसी का फ़ायदा उठाते हैं और उनका शोषण करते हैं। यह ज़ुल्म है। यह परमेश्वर का निर्देश है कि आपको गरीब और ज़रूरतमंद लोगों पर ज़ुल्म नहीं करना चाहिए और न ही उनका शोषण करना चाहिए।

नीतिवचन 22:22,23
22 कंगाल पर इस कारण अन्धेर न करना कि वह कंगाल है, और न दीन जन को कचहरी में पीसना;
23 क्योंकि यहोवा उनका मुक़द्दमा लड़ेगा, और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह हर लेगा।

नीतिवचन 14:31
जो कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है।

नीतिवचन 22:16
जो अपने लाभ के निमित्त कंगाल पर अन्धेर करता है, और जो धनी को भेंट

देता, वे दोनों केवल हानि ही उठाते हैं।

मलाकी 3:5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
सर्वशक्तिमान प्रभु कहता हैं, "मैं न्याय करने के लिए तुम्हारे बीच आऊँगा। मैं जादू-टोना करने वालों, व्यभिचारियों, झूठी गवाही देने वालों, मज़दूर की मज़दूरी हड़पने वालों और विधवाओं, अनाथों व परदेशियों का फ़ायदा उठाने वालों, अर्थात उन सभों के विरुद्ध मैं तुरन्त साक्षी दूँगा जो मेरा सम्मान नहीं करते।"

सही व्यक्ति को नियुक्त करें, उन्हें बनाए रखें; उनकी समीक्षा करें

नीतिवचन 26:10 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जो मालिक किसी भी मूर्ख को काम पर रख लेता है, वह असल में इससे जुड़े सभी लोगों का नुकसान ही करता है।

लोगों को सोच-समझकर काम पर नियुक्त करें, क्योंकि जिन लोगों को आप काम पर रखेंगे, उनका असर संगठन में मौजूद दूसरे लोगों पर भी पड़ेगा। सही लोगों को चुनें। ऐसे लोगों को काम पर रखें जो संगठन के दर्शन, मिशन, संस्कृति तथा मूल्यों के साथ-साथ ज़रूरी ज्ञान और कौशल भी रखते हों। भर्ती की एक मज़बूत प्रक्रिया अपनाएँ, ताकि आप उन लोगों को छाँटकर बाहर कर सकें जो संगठन को फ़ायदा पहुँचाने के बजाय ज़्यादा नुकसान पहुँचा सकते हैं, भले ही वे बहुत कुशल या काबिल हों। सबसे अच्छे लोगों को अपने साथ बनाए रखें। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें संगठन में बनाए रखने के लिए आपको हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए। बेशक, आप किसी को ज़बरदस्ती रोककर नहीं रख सकते, लेकिन आप उन लोगों को बनाए रखने की पूरी कोशिश कर सकते हैं जो संगठन की सफलता के लिए बहुत ज़रूरी हैं। लोगों के काम छोड़कर जाने पर ध्यान दें। जब लोग छोड़कर जाएं, तो इसे यह सीखने का अवसर समझें कि आप चीज़ों को और बेहतर कैसे कर सकते थे। संगठन के किन-किन क्षेत्रों में

सुधार किया जा सकता है, ताकि लोगों को, विशेषतः अच्छे लोगों को, संगठन में बनाए रखने में मदद मिल सके। आमतौर पर, यह एक खुले और ईमानदार एग्जिट इंटरव्यू के ज़रिए किया जाता है।

अपने कर्मचारियों से नियुक्ति तथा लोगों के विकास की प्रक्रियाओं के बारे में लगातार सीखते रहें कि क्या काम करता है और क्या नहीं। उन लोगों को देखिये जो संगठन के भीतर सफल हैं। किन वजहों से वे सफल हुए? उन लोगों को भी ध्यान से देखें जिन्होंने संगठन में आने के बाद उतना अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। किन कारणों से उन्हें रुकावटों का सामना करना पड़ा? क्या संगठन में ऐसी कोई चीज़ें हैं जिन्हें बदला जा सकता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ऐसे लोग भी अच्छा प्रदर्शन कर सकें?

हालांकि प्रदर्शन समीक्षा (परफॉर्मेंस रिव्यु) ठीक हैं, लेकिन सुधार के लिए प्रतिक्रिया लगातार, हमेशा और जब भी मौका या ज़रूरत हो, दिया जाना चाहिए। लोगों को आगे बढ़ने, खुद को बेहतर बनाने और अपनी गलतियों को सुधारने की ज़रूरत होती है—साल में सिर्फ़ एक बार नहीं, बल्कि हर समय। ऐसी संस्कृति बनाइए जहाँ हर व्यक्ति सुधार की जरूरत वाले विषयों पर संबंधित लोगों से बात कर सके। हर व्यक्ति पूरे वर्ष बातों को बेहतर बनाने, काम करने के तरीकों में सुधार लाने और संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम करता है, केवल मूल्यांकन (अप्रेज़ल) के समय ही नहीं।

लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि आपके साथ किया जाए

लूका 6:31,36 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

31 दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें।

36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।

लोगों के साथ काम करने और उन्हें संभालने का एक आसान लेकिन बहुत असरदार सिद्धांत यह है कि हम वही करें जो प्रभु यीशु ने हमें सिखाया है। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें। यदि आप कर्मचारी होते, तो आप अपने साथ कैसा व्यवहार पसंद करते? यदि आपको कोई समस्या होती, तो आप कैसे चाहेंगे कि संगठन आपकी स्थिति पर विचार करे और आपकी मदद करे? दया और करुणा दिखाएँ।

बेशक, यह एक आपसी रिश्ता है। यदि आप किसी कर्मचारी के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, तो आप यह भी उम्मीद करते हैं कि वह कर्मचारी भी संगठन को अपना 100% योगदान देगा। कर्मचारी के लिए यह गलत होगा कि वह अपने प्रति दिखाई गई भलाई और दया की उम्मीद तो करता रहे, परन्तु अच्छे प्रदर्शन, कड़ी मेहनत, लगन और वफ़ादारी के साथ अपनी भूमिका न निभाए। यदि आप कर्मचारियों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, परन्तु वे उत्पादकता और प्रदर्शन के मामले में, जिसकी उनसे उम्मीद की जाती है, संगठन को वह वापस देने में नाकाम रहते हैं तो फिर उचित कार्रवाई की जानी चाहिए।

चेतावनी दें, पर कभी धमकी या गाली न दें

इफिसियों 6:8,9 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
8 स्मरण रखो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही प्रतिफल पाएगा।
9 हे स्वामियो, अपने दासों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करो और उन्हें डराना-धमकाना बंद करो। ये याद रखो कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता।

आखिरकार, परमेश्वर ही हमारे "बॉस" या "मालिक" हैं; हम उसी के लिए काम करते हैं, और हमारे अच्छे कामों के लिए वही हमें इनाम देगा। मालिकों, प्रबंधकों और सुपरवाइज़रों को अपने कर्मचारियों के

साथ अच्छा व्यवहार करने की हिदायत दी गई है, और यह काम वे परमेश्वर के सामने पूरी ईमानदारी, पूरे दिल और खुशी से करें, यह जानते हुए कि ऐसा करने के लिए उन्हें इनाम प्रभु से ही मिलेगा। कर्मचारियों को न तो धमकाएँ और न ही उनके साथ दुर्व्यवहार करें। कार्यक्षेत्र पर, हमें कार्य प्रदर्शन से जुड़ी अपेक्षाओं को स्पष्ट रूप से बताना पड़ता है। साथ ही, जब किसी व्यक्ति का कार्य प्रदर्शन अपेक्षा के अनुसार नहीं होता, तो हमें उसे इस बारे में सावधान करना और संभावित परिणामों के विषय में चेतावनी भी देनी पड़ती है। दूसरी ओर, धमकी एक ऐसा बयान है जिसमें किसी व्यक्ति को, उसके द्वारा किए गए या न किए गए किसी कार्य के बदले में, दर्द, चोट, नुकसान पहुँचाने या कोई अन्य शत्रुतापूर्ण कार्रवाई करने का इरादा ज़ाहिर किया जाता है। (ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी) लोगों को चेतावनी दो, परन्तु उन्हें धमकी या गाली मत दो।

लोगों को बेहतर प्रदर्शन के लिए सक्षम बनाएं

नीतिवचन 30:24-28

24 पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं, जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं:
25 चींटियाँ निर्बल जाति तो हैं, परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं;
26 बिज्जू बली जाति नहीं, तौभी उनकी मान्दें पहाड़ों पर होती हैं;
27 टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तौभी वे सब की सब दल बाँध बाँधकर चलती हैं;
28 और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है, तौभी राजभवनों में रहती है।

सृष्टि में परमेश्वर की रचना से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। चींटियाँ और टिड्डियाँ, दोनों ही हमें सशक्तिकरण, टीम वर्क और उच्च प्रदर्शन के बारे में सिखाते हैं।

नीतिवचन 6:6-8

6 हे आलसी, चींटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो।
7 उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला,
8 तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय

अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

चींटियाँ निरंतर किये जानेवाले टीमवर्क का एक अद्‌त उदाहरण हैं। हजारों श्रमिक चींटियां किसी "मालिक" या "नेता" के निर्देश के बिना एक साथ काम करती हैं। चींटियों को यह बताने के लिए कोई कमांड सेंटर नहीं है कि उन्हें क्या करना है, और फिर भी, काम हो जाते हैं—भोजनवस्तु इकट्ठा करना, टीले बनाना, वगैरह। ये हमें निरंतर बने रहनेवाले टीमवर्क की ताकत और इस तथ्य के बारे में सिखाते हैं कि हर चींटी ज़रूरी काम करने के लिए "खुद को सक्षम महसूस करती है", और चींटियाँ दूरदर्शिता के साथ काम करते हुए, गर्मियों के दौरान ही सर्दियों की तैयारी कर लेती हैं।

टिड्डियां आमतौर पर अकेली रहती हैं। परन्तु, जब वे कुछ खास परिस्थितियों में होते हैं (जैसे, भारी बारिश या सूखा), तो वे एक साथ आ जाते हैं और झुंड बना लेते हैं। टिड्डियों के झुंड में लाखों टिड्डियां हो सकती हैं, और उन्हें रोका नहीं जा सकता। जब वे झुंड में एक साथ चलते हैं, तो कोई अगुआ या नेता नहीं होता। कोई भी टिड्डा ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं होता। वे बस एक झुंड होते हैं। वे एकजुट होते हैं। फिर भी, वे बहुत ही व्यवस्थित तरीके से और ज़बरदस्त लचीलेपन के साथ आगे बढ़ते हैं। उन्हें रोका नहीं जा सकता और वे भारी तबाही मचाते हैं। एक बार फिर, ये हमें एकता, व्यवस्था, निरंतर बने रहनेवाले टीमवर्क तथा उस टीमवर्क के द्वारा हासिल किए जा सकने वाले शानदार नतीजों के बारे में सिखाते हैं।

योएल की पुस्तक में टिड्डियों के झुंड का वर्णन इस तरह किया गया है—*"जैसे ही वे पास आते हैं, सब भयभीत हो जाते हैं; सबके चेहरे का रंग उड़ जाता है। वे शूरवीरों की तरह हमला करते हैं; योद्धाओं की तरह दीवारों पर चढ़ जाते हैं। वे सब अपने अपने मार्ग पर सीधे आगे बढ़ते रहते हैं और न तो अपनी दिशा बदलते हैं और एक दूसरे*

को धक्का नहीं लगाते। वे सुरक्षा घेरे को भेदते हुए आगे बढ़ते हैं, और उन्हें कोई नहीं रोक सकता" (योएल 2:6-8, गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)।

हालांकि नेतृत्व का अपना एक निश्चित स्थान और भूमिका होती है, परन्तु चींटी और टिड्डियाँ, ये दोनों उदाहरण हमें सिखाते हैं कि यदि लोगों को एक टीम के तौर पर मिलकर काम करने के लिए सशक्त बनाया जाए, तो क्या हो सकता है। इसके जो नतीजे सामने आते हैं, वे कई गुना बढ़ जाते हैं। रोक-टोक करनेवाला, थोपने वाला और कंट्रोल करने वाला मैनेजमेंट रखने के बजाय, लोगों को उच्च प्रदर्शन के लिए सक्षम बनाएं। लोगों को आज़ादी के साथ-साथ दिशा-निर्देश भी दें, जो उन्हें और संगठन को सुरक्षित रखें। जब मैनेजमेंट या नेतृत्व की तरफ से होने वाली बेवजह की दखलंदाज़ी खत्म हो जाती है, तो लोग खुद को ज़्यादा सशक्त महसूस करते हैं। उन्हें अपनी बात कहने का और अपने विचारों को रखने का मौका दें। लोगों को खुद से फैसले लेने के लिए सक्षम बनाएं। लोगों को निर्णय लेने के लिए सशक्त करें । लोगों को ज़रूरी कौशलों, प्रशिक्षण, सक्षमीकरण तथा औज़ारों को देकर, जिनकी उन्हें ज़रूरत है, सक्षम बनाएं।

याद रखें, मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है

नीतिवचन 16:21,24

21 जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझवाला कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।

24 मनभावने वचन मधुभरे छत्ते के समान प्राणों को मीठे लगते, और हड्डियों को हरी–भरी करते हैं।

सीखने की प्रक्रिया सबसे अच्छी तरह एक सहायक, सकारात्मक और उत्साहवर्धक वातावरण में होती है। हम किसी को ज़बरदस्ती कुछ सिखा नहीं सकते। संगठनों में लगातार सीखना और कौशल विकास करना बहुत ज़रूरी है। कर्मचारियों को इसके लिए प्रेरित

रखने हेतु, संगठनों को सीखने का एक उत्साहवर्धक और सहायक माहौल देना चाहिए। ऐसा वातावरण तैयार करें जहाँ लोगों को सवाल पूछने, एक-दूसरे के काम की आलोचना करने, मौजूदा स्थिति को चुनौती देने, लीक से हटकर सोचने और अलग-अलग नज़रिए सामने लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए—और यह सब एक सकारात्मक और स्वस्थ तरीके से हो। लगातार सीखते रहने को बढ़ावा दें।

यही बात लोगों के साथ व्यवहार करते समय भी लागू होती है। अगर आप सचमुच चाहते हैं कि वे कोई बात अच्छी तरह समझ लें, तो उनसे विनम्रता, नरमी, सकारात्मकता और उत्साहवर्धक तरीके से बात करें। मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है। मनभावने वचन मधुभरे छत्ते के समान होते है। वे व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं, उनमें नई ऊर्जा भरते हैं, उन्हें तरोताज़ा और प्रेरित करते हैं।

जब लोग गलतियाँ करें, तब भी उनका साथ दें

नीतिवचन 19:11 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
समझदार लोग जानते हैं कि कब चुप रहना है; उनकी महानता माफ़ करने और भूल जाने में है।

हम सभी से गलतियाँ होती हैं। किसी संगठन में काम करने वाले लोगों से भी छोटी-बड़ी गलतियाँ होगी। जब गलतियाँ हों, तो उन पर कैसे प्रतिक्रिया देनी है यह सीखना बहुत ज़रूरी है। एक सहायक और उत्साहवर्धक वातावरण देने का एक हिस्सा यह भी है कि लोगों की गलतियों को बहुत बड़ा मुद्दा न बनाया जाए, बल्कि उन गलतियों को सीखने के मौकों के तौर पर इस्तेमाल किया जाए। लोगों को प्रयोग करने, अलग-अलग विकल्पों को खोजने, तथा "कुछ हटकर" सोचने और कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें; साथ ही, इस पूरी प्रक्रिया में उनका साथ दें। महँगी गलतियों या नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ों को पहले से ही रोकने के लिए दिशा-निर्देश तय करें।

संगठन के भीतर जो लोग किसी मुश्किल का सामना कर रहे हों, उन पर ध्यान दें और उन्हें अपना सहयोग दें। कभी-कभी, उन्हें बस शुरुआत करने के लिए थोड़ी-सी मदद की ज़रूरत होती है; या फिर, उन्हें अपने काम के लिए ज़रूरी अतिरिक्त कौशल (स्किल्स) विकसित करने का सही रास्ता दिखाने की ज़रूरत होती है। यदि लोग सीखने के लिए तैयार हैं और आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, तो उनका साथ दें। परन्तु यदि वे अपने खराब प्रदर्शन को लेकर उदासीन, लापरवाह या बचाव की मुद्रा में हैं, तो आपको उन्हें संगठन से बाहर निकासी का रास्ता दिखाना होगा।

सबके लिए एक ही मापदंड—कोई पक्षपात न करें

नीतिवचन 24:23-25

23 बुद्धिमानों के वचन यह भी हैं। न्याय में पक्षपात करना, किसी रीति भी अच्छा नहीं।

24 जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है, उसको तो हर समाज के लोग शाप देते और जाति जाति के लोग धमकी देते हैं;

25 परन्तु जो लोग दुष्ट को डाँटते हैं उनका भला होता है, और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन पर आता है।

नीतिवचन 28:21

पक्षपात करना अच्छा नहीं; र यह भी अच्छा नहीं कि पुरुष एक टुकड़े रोटी के लिये अपराध करे।

यूहन्ना 7:24

मुँह देखा न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो।

एक स्वस्थ कार्य वातावरण के लिए यह ज़रूरी है कि संगठन अपने सभी कर्मचारियों के साथ निष्पक्षता से और बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करे। ईमानदारी आदि के मानकों के उल्लंघन होने पर की जाने वाली सुधारात्मक कार्रवाई सभी कर्मचारियों के लिए एक समान होनी चाहिए। जब कर्मचारी न्याय और निष्पक्षता को व्यवहार में देखते

हैं, तो उन्हें यह भरोसा मिलता है कि संगठन वास्तव में अपने सभी कर्मचारियों की भलाई की परवाह करता है। इससे संगठन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता बढ़ती है।

कहानी के सभी पक्षों को सुनें

नीतिवचन 18:17

मुक़द्दमे में जो पहले बोलता, वही सच्चा जान पड़ता है, परन्तु बाद में दूसरे पक्षवाला आकर उसे जाँच लेता है।

किसी संगठन में काम करने वाले लोगों के बीच अक्सर मतभेद और टकराव होते रहते हैं। इन मतभेदों और टकरावों को सुलझाने के लिए, हमें दोनों पक्षों की बात को बिना किसी पक्षपात के सुनने का अनुशासन विकसित करना चाहिए। पूरी स्थिति को अच्छी तरह समझें और उसके बाद ही अपना निर्णय लें।

नेतृत्व में अक्सर, हमारे लिए समय बहुत कीमती होता है, और हम अपना समय छोटी-मोटी बातों या लंबी-चौड़ी कहानियाँ सुनने में बर्बाद नहीं करना चाहते। हम तेज़ और निर्णायक बनना चाहते हैं, मामले को जल्दी सुलझाकर आगे बढ़ना चाहते हैं, और अपना समय बेतुकी तकरारों के बजाय ज़्यादा ज़रूरी मामलों पर लगाना चाहते हैं। हालाँकि, इस जल्दबाज़ी में, कभी-कभी अनजाने में ही, हम पूरी बात सुनने और सभी नज़रियों को समझने से चूक जाते हैं। ऐसे में हम कोई गलत फैसला दे सकते हैं और लोगों को ठेस पहुँचा सकते हैं। ऐसी बातों के होने की संभावना को देखते हुए, यह समझदारी होगी कि ऐसे मामलों को सुलझाने का काम उन लोगों को सौंप दिया जाए जो धैर्य से बात सुन सकें और साथ ही, यह सुनिश्चित करते हुए कि कर्मचारी उत्साहित रहें, इन मामलों पर कोई समझदारी भरा फैसला ले सकें।

किसी विवाद को सुलझाने के लिए, सबसे पहले झगड़ालू व्यक्ति को शांत करें

नीतिवचन 26:21 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
किसी झगड़े में झगड़ालू व्यक्ति आग पर मिट्टी का तेल डालने जैसा होता है।

जब आप लोगों के बीच किसी विवाद या गलतफहमी को सुलझाने का काम कर रहे हों, और यदि आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो झगड़ालू, शोर-शराबा करने वाला, उकसाने वाला और परेशानी खड़ी करने वाला हो, तो सबसे अच्छा यही है कि आप उसे एक तरफ ले जाकर उससे अलग से बात करें। बाकी लोगों के साथ काम करते रहें, यह जानते हुए कि उस दूसरे व्यक्ति से भी उचित रूप से बात की जा रही है। एक बार जब कोई समाधान निकल जाए, तो सभी को इसकी जानकारी दें और फिर आगे बढ़ें।

कोमल उत्तर की शक्ति का उपयोग करें

नीतिवचन 15:1
कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।

किसी तनावपूर्ण या गुस्सेवाले पल को शांत करने का एक आसान तरीका यह है कि आप समूह से नरमी और शांति से बात करें। चाहे किसी झगड़े को सुलझाना हो या किसी ऐसी चर्चा को जो बहस में बदल गई हो उसे शांत करना हो, तो तनाव को कम करने के लिए बीच में आएं और नरमी से बात करें।

जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से निपट रहे हों जो गुस्सा हो, गुस्सैल हो, बदतमीज़ हो, या गाली-गलौज कर रहा हो, तो शांत रहें। नरमी से जवाब दें। आखिरकार आप तनाव को कम कर लेंगे और फिर शांति से मामलों पर चर्चा कर पाएंगे।

अपने कार्यक्षेत्र पर कानाफूसी और झगड़े को दूर रखें

नीतिवचन 17:14
झगड़े का आरम्भ बाँध के छेद के समान है, झगड़ा बढ़ने से पहले उसको छोड़ देना उचित है।

नीतिवचन 17:14 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
झगड़े की शुरुआत बांध में हुए रिसाव की तरह होती है, इसलिए इसे फूटने से पहले ही रोक दें।

नीतिवचन 26:20 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जब गपशप खत्म हो जाती है, वहाँ झगड़ा मिट जाता है।

ऐसे काम के वातावरण में जहाँ कानाफूसी, झगड़े और दूसरी ऐसी समस्याएँ हों जो आम तौर पर "ऑफिस की राजनीती" का हिस्सा होती हैं, वहाँ कर्मचारियों का मनोबल और काम के प्रति उनकी लगन तेज़ी से गिर सकती है, जिसका असर कुल मिलाकर काम की उत्पादकता पर पड़ता है। ज़्यादातर लोग ऐसे माहौल से दूर ही रहना पसंद करते हैं, और इसलिए वे कहीं और नौकरी ढूँढ़ना शुरू कर देते हैं। इसलिए, यह जानना बहुत ज़रूरी है कि कर्मचारियों के बीच क्या चल रहा है; अगर गपशप या झगड़े के कोई भी संकेत दिखें, तो तुरंत दखल देना ज़रूरी है।

भले ही संगठन अच्छा काम कर रहा हो, परन्तु ऑफिस की गपशप और झगड़ों से परेशान कर्मचारी फिर भी छोड़कर चले जाएँगे। *"चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम है जो मेलबलि–पशुओं से भरा हो, परन्तु उसमें झगड़े–रगड़े हों"* (नीतिवचन 17:1)।

समस्याएँ पैदा करने वालों को बाहर का रास्ता दिखा दें

नीतिवचन 22:10
ठट्ठा करनेवाले को निकाल दे, तब झगड़ा मिट जाएगा, और वाद–विवाद और

अपमान दोनों टूट जाएँगे।

कमज़ोर प्रदर्शन करने वाले या अंदरूनी समस्याएँ पैदा करने वाले कर्मचारियों को नौकरी से निकालना कभी भी आसान काम नहीं होता। कुछ मामलों में, कोई कर्मचारी बहुत ही शानदार प्रदर्शन कर रहा हो सकता है, लेकिन साथ ही वह हमेशा कोई न कोई परेशानी खड़ी करने वाला भी हो सकता है। जब प्रदर्शन और शांति के बीच किसी एक को चुनने की बात आती है, तो यह फ़ैसला लेना काफ़ी मुश्किल होता है। क्या आपको उस एक व्यक्ति के बेहतरीन प्रदर्शन की ज़रूरत है, या आप टीम में शांति चाहते हैं ताकि बाकी कई लोग भी अच्छे से काम कर सकें? टीम को हमेशा किसी एक व्यक्ति से ज़्यादा अहमियत दी जानी चाहिए।

मुख्य सिद्धांत

1) संगठन में योगदान और महत्व के आधार पर उचित उचित वेतन दें।
2) यह सुनिश्चित करे कि लोगों को वेतन समय पर मिलें।
3) लोगों का शोषण न करें। उनकी मज़दूरी न रोकें।
4) कंगाल और लाचार लोगों का कभी भी शोषण न करें।
5) सही व्यक्ति को नियुक्त करें, उन्हें बनाए रखें; उनकी समीक्षा करें।
6) लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि आपके साथ किया जाए।
7) चेतावनी दें, पर कभी धमकी या गाली न दें ।
8) लोगों को बेहतर प्रदर्शन के लिए सक्षम बनाएं।
9) याद रखें, मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।
10) जब लोग गलतियाँ करें, तब भी उनका साथ दें।

11) सबके लिए एक ही मापदंड—कोई पक्षपात न करें।

12) कहानी के सभी पक्षों को सुनें।

13) किसी विवाद को सुलझाने के लिए, सबसे पहले झगड़ालू व्यक्ति को शांत करें।

14) कोमल उत्तर की शक्ति का उपयोग करें।

15) अपने कार्यक्षेत्र पर कानाफूसी और झगड़े को दूर रखें।

16) समस्याएँ पैदा करने वालों को बाहर का रास्ता दिखा दें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- अपनी टीम, विभाग या संगठन में लोगों को उच्च प्रदर्शन के लिए सक्षम बनाने के लिए आप क्या करने के बारे में सोच सकते हैं?
- अपनी टीम, विभाग या संगठन में सीखने की भावना को बढ़ावा देने के लिए आप क्या करने के बारे में सोच सकते हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

9
कार्यक्षेत्र पर आपसी संबंध

आम तौर पर, लोग अपने काम की जगह पर हर हफ़्ते लगभग 40 से 50 घंटे बिताते हैं, जहाँ वे दूसरे लोगों के साथ और उनके लिए काम करते हैं। इसी वजह से, यह सीखना ज़रूरी हो जाता है कि लोगों के साथ मिलकर कैसे काम किया जाए और आपसी रिश्तों को कैसे संभाला जाए।मनुष्य होने के नाते, हम कई स्तरों पर एक-दूसरे से जुड़ते हैं–बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक। इसलिए, हर व्यक्ति के लिए यह जानना बेहद ज़रूरी है कि लोगों के साथ और उनके लिएकैसे काम किया जाए, झगड़ों को कैसे सुलझाया जाए और आपसी मनमुटाव को कैसे दूर किया जाए–क्योंकि इंसानी मेल-जोल के दौरान ये सभी बातें होना स्वाभाविक है।

कार्यक्षेत्र पर कई अलग-अलग तरह के रिश्तों को संभालने के लिए काफ़ी समझ और कौशल की ज़रूरत होती है। इसमें एक या ज़्यादा मैनेजर (या अधिकारी), सहकर्मी, सीधे रिपोर्ट करने वाले लोग, अंदरूनी और बाहरी ग्राहक, विक्रेता तथा सेवा देने वालों के साथ संबंध बनाये रखना शामिल है। इन रिश्तों की गुणवत्ता किसी व्यक्ति के प्रदर्शन और पेशेवर विकास पर असर डाल सकती है। कार्यक्षेत्र पर रिश्ते मिलकर काम करने की क्षमता पर भी असर डालते हैं और संगठन को भी प्रभावित करते हैं।

यह अध्याय हमें इस मार्ग पर समझदारी के साथ चलने में सहायता हेतु पवित्र शास्त्र के सत्य को प्रदान करता है।

प्रेम बनाए रखें—यह मानवीय संबंधों की बुनियाद हैं

1 कुरिन्थियों 13:4-7 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

4 प्रेम धीरजवन्त और कृपालु है; यह न तो ईर्ष्या करता है, न ही घमंडी या अहंकारी है;

5 प्रेम न तो बदमिज़ाज है, न स्वार्थी और न ही चिड़चिड़ा; प्रेम बुराइयों का हिसाब नहीं रखता;

6 प्रेम कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।

7 प्रेम कभी हार नहीं मानता; और उसका विश्वास, आशा और धैर्य कभी विफल नहीं होते।

कार्यक्षेत्र पर, हम कभी-कभी चीज़ों के मानवीय पहलू को भूल जाते हैं। हम अपने कार्य, बैठकों, निर्धारित समय सीमा, गुणवत्ता, ग्राहक तथा बिज़नेस से जुड़ी अनगिनत चीज़ों पर इतना ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं कि हम इस बात को नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि यह सब हासिल करने के लिए, हमें एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करना होगा। हम चाहे कितनी भी कोशिश करें, फिर भी हम अपने व्यक्तित्व, भावनाओं, व्यक्तिगत जरूरतों और वास्तविक जीवन की चुनौतियों को कार्यक्षेत्र पर अपने व्यवहार और पहचान से आसानी से अलग नहीं कर सकते। इन सब चीज़ों को दरवाज़े पर छोड़कर हम ऑफिस में किसी मशीनी रोबोट की तरह अंदर नहीं आते। कार्यक्षेत्र पर आपके आस-पास बैठे लोग भी लोग ही हैं। हर किसी की अपनी एक कहानी होती है। हर किसी का अपना एक व्यक्तित्व होता है। हर कोई जीवन के कुछ ऐसे अनुभवों से गुज़र रहा होता है जो किसी न किसी तरह से उसे प्रभावित कर रहे होते हैं। हर किसी को यह जानने की ज़रूरत होती है कि उन्हें प्यार किया जाता है और उनकी सराहना की जाती है।

इसलिए, अपने काम में माहिर होने के साथ-साथ, कार्यक्षेत्र पर प्यार से पेश आना न भूलें। परमेश्वर जैसा प्यार, वह प्यार जो परमेश्वर हमारे लिए रखता है, और वह प्यार जिसमें वह चाहता है कि हम चलें, 1 कुरिन्थियों 13 के शास्त्रभाग में बताया गया है। धीरज रखें। कृपालु

बनें। जो सहकर्मी अच्छा काम कर रहा है, उससे ईर्ष्या न करें। अपने ज्ञान, कौशल, पद या सफलता को लेकर घमंडी या अभिमानी न बनें। कार्यस्थल पर बुरा बर्ताव या बदतमीज़ी न करें, बल्कि सबके साथ अच्छाई तथा नरमी से पेश आएं। लोगों की गलतियों या उन बातों का रिकॉर्ड न रखें जिनसे उन्होंने आपको नाराज़ किया हो। माफ करें और भूल जाएँ। गलत कामों या किसी भी तरह की बुराई की तारीफ या समर्थन न करें, बल्कि प्यार से सच को बढ़ावा दें और उसके लिए खड़े हों। अपने सहकर्मियों का साथ कभी न छोड़ें। सहायक बनें रहें। उनके लिए सबसे अच्छी चीज़ों की उम्मीद करते हुए परमेश्वर पर भरोसा रखें। उनसे प्रेम करना कभी बंद न करें। और उनकी सराहना की जाती है।

मत्ती 5:9 (‘द मैसेज अंग्रेजी बाइबल’ से उद्धरित)
आप तब धन्य होते हैं, जब आप लोगों को यह दिखा पाते हैं कि प्रतिस्पर्धा या लड़ाई करने के बजाय, आपस में सहयोग कैसे किया जाए। तभी आपको पता चलता है कि आप वास्तव में कौन हैं, और परमेश्वर के परिवार में आपका क्या स्थान है।

जब आपको किसी को आशीष देने का अवसर मिले, तो ज़रूर दें

नीतिवचन 3:27,28
27 जिनका भला करना चाहिए, यदि तुझ में शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रुकना।
28 यदि तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे दूँगा।

आपके “दयालुता से भरे कार्य” आपके कार्यक्षेत्र पर किसी की ज़िंदगी में रोशनी ला सकते हैं। मददगार बनें । जब भी आपको किसी की मदद करने का मौका मिले, और आप जानते हों कि आप ऐसा कर सकते हो, तो ज़रूर करें। यह कोई बहुत ही साधारण सी बात

हो सकती है-जैसे भोजनालय में किसी को बैठने की जगह देना, और आपने स्वयं खड़े रहना पसंद किया। कभी-कभी, यह बस कुछ मिनटों के लिए किसी की बात ध्यान से सुन लेना भी हो सकता है। अपने सहकर्मियों के लिए भलाई करने के तरीके ढूँढ़ें, भले ही वे बहुत ज़्यादा प्रतिस्पर्धी, असभ्य या मतलबी स्वभाव के क्यों न हों। उन्हें आशीष दें।

लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहें; आपकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) मायने रखती है

मत्ती 7:12 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
व्यवहार के लिए यहाँ एक सीधा-सादा, व्यावहारिक नियम दिया गया है: स्वयं से पूछें कि आप क्या चाहते है की लोग आपके लिए करें, और फिर पहल करके वही काम उनके लिए कीजिए।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस-ई.क्यू.) का मतलब है भावनाओं के विषय में समझदार होना, अपनी भावनाओं के विषय में भी और दूसरों की भावनाओं के विषय में भी। ई.क्यू. में यह जानना शामिल है कि अपनी भावनाओं को कैसे पहचानें और संभालें, तथा दूसरों की भावनाओं पर सही तरीके से कैसे प्रतिक्रिया या जवाब दें। इसमें अपनी भावनाओं को सही ढंग से संभालने, उपयोग में लाने और उन्हें रचनात्मक रूप से समस्या समाधान, नए विचार उत्पन्न करने आदि कार्यों की ओर लगाने के कौशल शामिल हैं। आपका ई.क्यू. कार्यक्षेत्र पर आपके आपसी व्यवहार, आपके काम के प्रदर्शन और आपके नेतृत्व कौशल पर असर डालता है।

ई.क्यू. (भावनात्मक बुद्धिमत्ता) की एक आसान कुंजी यह है कि आप लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील हों।

- "यदि आप उनकी जगह होते, तो आप कैसा महसूस करते?"— इससे आपको इस बात का अंदाज़ा मिल सकता है कि सामने

वाला व्यक्ति उस पल क्या महसूस कर रहा है।

- “यदि आप उस स्थिति में होते, तो आप क्या चाहेंगे कि लोग आपके लिए करें?”— इससे आपको यह अंदाज़ा होगा कि उस क्षण आपको क्या करना चाहिए।
- आप जो भावना महसूस कर रहे हैं, या जो दूसरा व्यक्ति आपको दिखा रहा है, उसे संभालने का सबसे शांतिपूर्ण और रचनात्मक तरीका क्या होगा, इससे आपको यह तय करने में मदद मिलेगी कि आपको आगे क्या करना है।

किसी का हौसला बढ़ाएँ या उसे आनन्दित करें

नीतिवचन 12:25 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
चिंता हमें दबा देती है; परन्तु भली बात से वह आनन्दित होता है।

लोगों को हिम्मत देने वाले शब्दों से आनन्दित करें। जब कोई अच्छा काम करे, तो उसे ज़रूर बताएं। जब कोई किसी काम को पूरा करने के लिए अपनी तरफ़ से ज़्यादा मेहनत करे, तो उसकी तारीफ़ करें। जब कोई व्यक्ति कोई बढ़िया आइडिया दे, तो उसकी सराहना करें। लोगों की तारीफ़ सबके सामने करें। ऐसा पूरी ईमानदारी से करें, न कि सिर्फ़ लोगों की चापलूसी करने के लिए। ऐसा सिर्फ़ उस अधिकारी के लिए न करें जिसे आप सीधे रिपोर्ट करते हैं, बल्कि अपने साथियों और सहकर्मियों के लिए भी करें। किसी को आनन्दित करने के लिए बस एक सकारात्मक शब्द ही काफी है।

शब्दों का यदि सही इस्तेमाल किया जाए, तो उनसे बहुत बड़ा फ़र्क पड़ सकता है।

इफिसियों 4:29 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
हानिकारक शब्दों का इस्तेमाल मत करो, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि आपकी बातें सुनने वालों के लिए

भली साबित हों।

"कृपया," "धन्यवाद," और "क्षमा करें" कहना कभी न भूलें

कुलुस्सियों 4:6 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
आपकी बातचीत अनुग्रह सहित रहें। बातचीत का मकसद दूसरों की खूबियों को सामने लाना होना चाहिए, न कि उन्हें नीचा दिखाना या उन्हें बातचीत से बाहर कर देना।

कभी कभी हमारी मौखिक या लिखित बातचीत इतनी औपचारिक, सीधी, रूखी, असभ्य और केवल काम पर केंद्रित हो जाती है कि हम लोगों को उनके नाम से पुकारना और "कृपया," "माफ कीजिए," "धन्यवाद," और "आपका स्वागत है" जैसी सरल बातें कहना भूल जाते हैं। इसके लिए बस कुछ और शब्द बोलने या टाइप करने होते है, परन्तु इससे संदेश को कैसे पेश किया जाता है और कैसे उसे समझा जाता है, इसमें बहुत फ़र्क पड़ता है। यह भलाई को दर्शाता है। यह ज़ाहिर करता है कि आप कोई अनुरोध कर रहे हैं, आदेश नहीं दे रहे हैं। यह उनके प्रतिसाद के लिए आभार और तारीफ़ प्रगट करता है। गलतियों के लिए माफ़ी मांगना सीखना यह विनम्रता, ईमानदारी और सुधार की जगहों को पहचानने की इच्छा दिखाता है।

हौसला बढ़ाने वाले बनो–उनका भी जो तुम्हें पसंद नहीं करते

1 थिस्सलुनीकियों 5:15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
ध्यान रखें कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे, बल्कि हमेशा एक-दूसरे का और सभी लोगों का भला करने का लक्ष्य रखें।

कार्यक्षेत्र पर किसी सहकर्मी की सहायता करना, उसे प्रेरित करना और उसमें आत्मविश्वास जगाना एक बहुत ही बढ़िया काम है। जहाँ आम तौर पर लोग एक-दूसरे से मुकाबला करने, एक-दूसरे से आगे निकलने और बेहतर प्रदर्शन करने की होड़ में लगे रहते हैं, वहीं जब आप किसी का हौसला बढ़ाने के लिए आगे आते हैं, तो

चीज़ें पूरी तरह से बदल जाता है। साथ ही, उन लोगों का भी हौसला बढ़ाएँ जो आपके प्रति विरोधी रवैया रखते हैं। ऐसा करने से आपके बीच की दूरियाँ मिट जाएँगी और काम के माहौल पर इसका बहुत ही सकारात्मक असर पड़ेगा। ऐसी बातें कहें जिनसे किसी का हौसला बढ़ सकें। “आप बहुत बढ़िया काम कर रहे हैं,” “मुझे पता है कि आप यह कर सकते हैं,” “बहुत बढ़िया काम,” “ऐसे ही करते रहिए!”—बस ये कुछ सामान्य कथन ही किसी को प्रेरित करने के लिए काफी हैं। इसे आज़माकर देखिए!

याद रखें, शत्रुओं को भी बदला जा सकता है

नीतिवचन 16:7

जब किसी का चालचलन यहोवा को भावता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है।

ऐसा हो सकता है कि कार्यक्षेत्र पर कुछ रिश्तों में अनबन हो जाए। ऐसे लोग हो सकते हैं जो शत्रुतापूर्ण रवैय्या रखते हों; शायद वे आपको अपनी पेशेवर तरक्की के लिए खतरा मानते हों, या किसी और वजह से, एक ही टीम में होने के बावजूद भी वे हमेशा आपके विरोधी की भूमिका निभाते हों। ऐसी स्थितियों में सकारात्मक और शांत रहें। जो प्रभु को अच्छा लगे वही करो, और वह उस रिश्ते में आपकी ओर से कार्य करेगा।

सावधान रहें कि कौन आपको प्रभावित कर रहा है

नीतिवचन 12:26

धर्मी अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है, परन्तु दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं।

नीतिवचन 13:20

बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा, परन्तु मूर्खों का साथी नष्ट हो जाएगा।

नीतिवचन 27:17
जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

1 कुरिन्थियों 15:33 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
धोखा न खाएं। "बुरे साथी अच्छे चरित्र को बिगाड़ देते हैं।"

हालांकि कार्यक्षेत्र कई तरह के अच्छे रिश्ते बनाने का मौका देता हैं, लेकिन बदकिस्मती से, यह हमें गलत तरह के प्रभाव के संपर्क में भी लाता है। इसलिए, अपने विवेक का इस्तेमाल करें कि कौन आपको किस तरह से और किस हद तक प्रभावित करता है। जो लोग एक नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, उनसे एक सही पेशेवर दूरी बनाए रखें। जो लोग चुगली और पीठ पीछे बुराई करते हैं वे हमेशा नकारात्मक होते हैं और परेशानी खड़ी करते हैं; ऐसे लोगों से दूर रहना ही सबसे अच्छा है।

उन लोगों के साथ समय बिताएं जो आपको पेशेवर तौर पर चुनौती दे सकें और जिनके साथ आप अच्छी बातचीत कर सकें। जब दो लोहे की ब्लेड एक दूसरे से रगड़ते हैं, तो वे एक दूसरे को ज़्यादा तेज़ और चमकदार बना देते हैं। जो दोस्त हमें हमारी मौजूदा स्थिति में "असहज" महसूस कराते हैं (अच्छे अर्थ में), वे ही हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

कॉर्पोरेट माहौल में मेल-जोल के दौरान अपनी सीमाओं को पहचानें

नीतिवचन 5:18-22 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
18 इसलिए अपनी पत्नी के साथ आनन्दित रहो और उस स्त्री के साथ संतुष्टि पाओ जिससे तुमने शादी की है—
19 जो हरिणी की तरह सुंदर और आकर्षक है। उसकी खूबसूरती तुम्हें संतुष्ट रखे; उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे।
20 हे मेरे पुत्र, तुम किसी दूसरी औरत को अपना प्यार क्यों दोगे? तुम किसी

पराई स्त्री के आकर्षण को क्यों पसंद करोगे?
21 यहोवा तुम्हारे सब काम देखता है। आप जहाँ भी जाते हैं, वे आपको देख रहे होते हैं।
22 दुष्टों के अधर्म एक जाल की तरह होते हैं। वे अपने ही पाप के जाल में फँस जाते हैं।

कई कार्यक्षेत्रों में अच्छे संबंध बनाने के लिए कंपनी से जुड़ी अनौपचारिक सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना भी शामिल होता है। इनमें से कुछ बहुत अच्छी होती हैं, जैसे कि कंपनी के 'फ़ैमिली डे', फ़ैमिली पिकनिक, और दूसरे ऐसे जश्न जिनमें कर्मचारी तथा उनके परिवार शामिल होते हैं। हालाँकि, कुछ ऐसे मौके भी हो सकते हैं जहाँ शराब के साथ बहुत ज़्यादा मौज-मस्ती होती है, और दूसरी ऐसी गतिविधियाँ भी हो सकती है जो नुकसानदायक हों। अपनी सीमाओं को जानें, अपनी प्राथमिकताओं पर कायम रहें, और अपने दैवीय मानकों पर टीके रहें। लोगों को खुश करने के लिए आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। अपने जीवन की हिफ़ाज़त करें। शराब पीने और अय्याशी करने से दूर रहें। इन चीज़ों ने कई लोगों की ज़िंदगी बर्बाद कर दी है। शराब पीने से मना करना या फ़्लर्टिंग (छेड़छाड़) में शामिल न होना आपको घमंडी दिखा सकता है, लेकिन यह असल में आपके असली चरित्र और ताकत की निशानी है। आपके अपने रुख़ के लिए आपकी प्रशंसा हो सकती है, या फिर आपसे नफ़रत भी की जा सकती है। याद रखें, परमेश्वर उनका सम्मान करता है जो उसका सम्मान करते हैं। वह स्वर्ग से आपके जीवन को सम्मान से भर देगा।

नीतिवचन 23:29,30
29 कौन कहता है, हाय?
कौन कहता है, हाय हाय?
कौन झगड़े रगड़े में फँसता है?
कौन बक बक करता है?
किसके अकारण घाव होते हैं?

किसकी आँखें लाल हो जाती हैं?
30 उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं,
और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूँढ़ने को जाते हैं।

अपने अधिकारी का सम्मान करें

नीतिवचन 27:18 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
अगर तुम अपने बगीचे की देखभाल करोगे, तो उसके फलों का आनंद लोगे; अगर आप अपने अधिकारी का सम्मान करोगे, तो आपका भी सम्मान होगा।

किसी का सम्मान करने का अर्थ है, उसके प्रति आदर और लिहाज़ रखना। अपने अधिकारी, मैनेजर या टीम लीडर का सम्मान करें। उन्हें ज़िम्मेदारी सौंपी गई है और एक अहम पद पर बिठाया गया है। हो सकता है कि आपको उन चुनौतियों के बारे में पता न हो जिनका वे सामना करते हैं, या वे किस व्यापक दृष्टिकोण से चीज़ों को देखते हैं, और उनसे किस स्तर की जवाबदेही की उम्मीद की जाती है। उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करें। उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग दें। जिन कामों को वे अच्छी तरह करते हैं, उनके लिए उनकी सराहना करें। अपने बॉस के बारे में गपशप न करें, उनकी पीठ पीछे बुराई न करें, और न ही किसी भी तरह से उनकी छवि खराब करें।

1 तीमुथियुस 6:2 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जो दास मसीही स्वामियों के अधीन हैं, उन्हें अपने स्वामियों का अनादर नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे भी विश्वासी हैं। इसके बजाय, उन्हें उनकी और भी बेहतर सेवा करनी चाहिए, क्योंकि उनके काम से लाभ उठाने वाले लोग वे विश्वासी हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं।

अपने अधिकारी का आदर करो, यहाँ तक कि उसका भी जो कठोर है

1 पतरस 2:18-20
18 हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल

उनके जो भले और नम्र हों पर उनके भी जो कुटिल हों।
19 क्योंकि यदि कोई परमेश्‍वर का विचार करके अन्याय से दु:ख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो यह सुहावना है।
20 क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दु:ख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्‍वर को भाता है।

हाँ, बुरे अधिकारी भी होते हैं! कुछ अधिकारी कठोर, बदतमीज़, बहुत ज़्यादा माँग करने वाले, असंवेदनशील और ऐसी ही दूसरी कई चीज़ें हो सकते हैं, जिनकी वजह से उनके साथ काम करना मुश्किल हो जाता है। परमेश्वर हमें ऐसे अधिकारीयों के साथ भी इज़्ज़त से पेश आने की हिदायत देता हैं, और हम ऐसा परमेश्वर का सम्मान करने के लिए करते हैं। हालाँकि ऐसे अधिकारी के साथ काम करना कभी भी आसान नहीं होता, फिर भी परमेश्वर का अनुग्रह और शक्ति माँगें, ताकि आप अपने अधिकारी के लिए सबसे बेहतरीन कर्मचारी बन सकें। परमेश्वर को आपकी ओर से काम करने दें और उस स्थिति में हस्तक्षेप करने दें।

निर्गमन 3:7-9 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
7 तब प्रभु ने कहा, “मैंने निश्‍चय देखा है कि मिस्र में मेरे लोगों के साथ कितनी बेरहमी से पेश आया जा रहा है; और उनकी जो चिल्‌लाहट परिश्रम करानेवालों के कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है। मैं उनकी सारी तकलीफ़ों के बारे में जानता हूँ,
8 इसलिये अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में, जो समृद्ध और उपजाऊ है और जहाँ अभी कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों रहते हैं।
9 मैंने निश्चित ही अपने लोगों की चिल्लाहट सुनी है, और मैं देख रहा हूँ कि मिस्र के लोग उन पर किस तरह ज़ुल्म कर रहे हैं।

भजन संहिता 103:6 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
यहोवा पीड़ितों के पक्ष में न्याय करता है और उन्हें उनका अधिकार देता है।

कार्यक्षेत्र पर शिष्टाचार तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता विकसित करें

नीतिवचन 23:1-3 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

1 जब तुम किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के साथ भोजन करने बैठो, तो इस बात का ध्यान रखो कि वह कौन है।

2 यदि तुम बहुत अधिक खानेवाले हो, तो खुद पर काबू रखें।

3 उसके परोसे गए स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं का लालच न करना; हो सकता है कि वह आपको धोखा देने की कोशिश कर रहा हो।

कार्यक्षेत्र पर अच्छा शिष्टाचार अपनाना ज़रूरी है। इससे लोगों के लिए आपसे जुड़ना आसान हो जाता है। आपके आस-पास रहना लोगों को अच्छा लगता है। आप खुद को कैसे प्रस्तुत करते हैं और दूसरों से कैसे बातचीत करते हैं, यह काम के माहौल में बहुत मायने रखता है। सीधे खड़े रहना, सीधा बैठना, बॉडी लैंग्वेज, आँखों से संपर्क, ध्यान देना, सही ड्रेस कोड, समय की पाबंदी, चीज़ों को व्यवस्थित रखना और अपनी साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना—ये सभी बातें ज़रूरी हैं। कुछ बुनियादी, बिना कही शिष्टाचार की बातों का पालन करें, जैसे मीटिंग के दौरान अपना मोबाइल फ़ोन साइलेंट मोड पर रखना, बातचीत के बीच में बिना ठीक से माफ़ी मांगे फ़ोन का इस्तेमाल न करना, वगैरह। जब भी किसी से आपका व्यक्तिगत परिचय कराया जाए, तो उनसे हमेशा खड़े होकर मिलें। यदि आपसे कोई गलती हो जाए, तो माफ़ी माँगना सीखें। साथ ही, लोगों की संस्कृति और उनकी सांस्कृतिक पृष्टभूमि पर भी ध्यान दें। जो बात एक संस्कृति में स्वीकार्य हो सकती है, वह दूसरी संस्कृति में शायद अच्छी न लगे। इसका पता लगाने के लिए थोड़ी कोशिश करें। धार्मिक या सांस्कृतिक रूप से अपमानजनक, नस्लवादी या लिंग-भेद वाली टिका-टिपण्णी करने से बचें।

उत्पत्ति 41:14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबलसे उद्धरित)

राजा ने यूसुफ को बुलवा भेजा; और वह झटपट बन्दीगृह से बाहर निकाला

गया। बाल बनवाकर और वस्त्र बदलने के बाद, वह राजा के सामने आया।

जब आप वरिष्ठ नेताओं से मिल रहे हों, तो समझदारी से पेश आएँ। सबसे बेहतर यही होगा कि आप अपनी सही जगह या उससे नीचे की जगह लें। खुद को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की कोशिश न करें।

नीतिवचन 25:6,7 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
6 खुद को सुर्खियों में लाने की कोशिश मत करो; प्रमुख स्थान पाने के लिए यत्न न करो।
7 ओहदा घटने से बेइज़्ज़ती सहने के बजाय, सम्मानजनक पद पर तरक्की पाना बेहतर है।

लूका 14:7-11 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
7 यीशु ने देखा कि कुछ आमन्त्रित लोग कैसे मुख्य–मुख्य जगहें चुन रहे थे, इसलिए उसने उन सभी को यह दृष्टांत सुनाया:
8 "जब कोई तुम्हें शादी की दावत में बुलाए, तो प्रमुख स्थान पर मत बैठना। हो सकता है कि तुमसे ज़्यादा अहम किसी व्यक्ति को आमंत्रित किया गया हो,
9 और जिस मेज़बान ने तुम दोनों को आमंत्रित किया है, उसे आकर तुमसे कहना पड़े, 'उन्हें यह जगह दे दो।' तब तुम्हें शर्मिंदगी होगी और तुम्हें सबसे निचली जगह पर बैठना पड़ेगा।
10 इसके बजाय, जब तुम्हें बुलाया जाए, तो सबसे नीचे वाली जगह पर बैठो, ताकि तुम्हारा मेज़बान तुम्हारे पास आकर कहे, 'मेरे दोस्त, ऊपर आओ, इस बेहतर जगह पर बैठो।' इससे तुम्हें बाकी सभी मेहमानों के सामने सम्मान प्राप्त होगा।
11 क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

जब हालात मुश्किल हों, तो बुद्धिमानी से काम लें

1 शमूएल 18:13-15,30
13 शाऊल ने उसको अपने पास से अलग करके सहस्रपति किया, और वह प्रजा के सामने आया जाया करता था।
14 और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ साथ था।

[15] जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है, तब वह उससे डर गया।
[30] फिर पलिश्तयों के प्रधान निकल आए, और जब जब वे निकल आए तब तब दाऊद ने शाऊल के अन्य सब कर्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इससे उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

राजा शाऊल को दाऊद की उपलब्धियों से जलन होने लगी। इसलिए, उसने दाऊद को युद्ध के ऐसे स्थान पर नियुक्त किया, जहाँ उसे आशा थी कि दाऊद मारा जाएगा। इसके बाद, शाऊल ने दाऊद को अपना दामाद बनाकर फंसाने की कोशिश की, ताकि वह एक बार फिर शत्रुओं का निशाना बन जाए। इन सब हालात में भी, दाऊद ने *"बुद्धिमानी दिखाई"* (1 शमूएल 18:14)। वास्तव में, जब हालात और बिगड़ गए, तो *"दाऊद ने अधिक बुद्धिमानी दिखाई"* (1 शमूएल 18:30)। वाक्यांश *"बहुत बुद्धिमानी दिखाई"* का सीधा सा मतलब है सावधानी से काम करना, विवेकपूर्ण तरीके से काम करना, बुद्धिमानी से काम करना, समृद्ध होना और सफल होना।

इसी तरह, कार्यक्षेत्र पर भी ऐसे लोग हो सकते हैं, कभी-कभी अधिकारी या प्रबंधक, जो आपको मुश्किल में डालने के लिए हर तरह के राजनैतिक और दूसरे हथकंडे अपना हैं। वे आपके साथ नाइंसाफी कर सकते हैं, आपके अच्छे काम को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, और ऐसी दूसरी चीज़ें कर सकते हैं जिनसे आप मुश्किल में आ जाए। ऐसी बातों से ऊपर उठना सीखें। बुद्धिमानी से काम लेकर ऐसी मुश्किलों पर काबू पाएं। कभी-कभी, जब हालात मुश्किल होते हैं, तो हम अक्सर ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया दे बैठते हैं, अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगते हैं, और ऐसी बातें कर जाते हैं जो ठीक नहीं होतीं। यह बुद्धिमानी से काम लेना नहीं है।

याकूब 3:13-18 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
[13] क्या आप चाहते हैं कि लोग आपको बुद्धिमान मानें और आपके ज्ञान की चर्चा हो? तो ऐसा करें: अच्छा चालचलन रखें, समझदारी और विनम्रता से

जीवन जिएं। आप कैसे जीते हैं यह मायने रखता है, न कि आप कैसी बातें करते हैं।

14 बुरी नीयत वाली महत्वाकांक्षा बुद्धिमानी नहीं है। यह दावा करना कि आप बुद्धिमान हैं, बुद्धिमत्ता नहीं है। खुद को बुद्धिमान दिखाने के लिए सच को तोड़-मरोड़कर पेश करना बुद्धिमानी नहीं है।

15 यह बुद्धिमत्ता से बहुत दूर की बात है – यह पशुओं जैसी चालाकी और शैतानी षड़यंत्र जैसा है।

16 जब भी आप दूसरों से बेहतर दिखने या उनसे बेहतर बनने की कोशिश करते हैं, तो चीजें बिखर जाती हैं और हर कोई एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।

17 असली बुद्धि, यानी परमेश्वर की बुद्धि, पवित्र जीवन से शुरू होती है और दूसरों के साथ मिलजुलकर रहने से पहचानी जाती है। यह बुद्धिमानी नम्र और कोमल होती है, मृदुभाव और आशीषों से भरी होती है; यह ऐसी नहीं होती कि एक दिन तो अच्छी हो और दूसरे दिन बुरी, और न ही यह दोहरी चाल चलने वाली होती है।

18 आप एक स्वस्थ और मज़बूत समुदाय तभी बना सकते हैं जो परमेश्वर की नज़र में सही जीवन जिए और जिसके अच्छे नतीजों का आप आनंद ले सकें, जब आप एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने और एक-दूसरे का सम्मान और आदर करने की कड़ी मेहनत करेंगे।

बेकार की बहस से दूर रहें

नीतिवचन 3:30,31 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

30 जब दूसरों ने तुम्हें कभी कोई नुकसान न पहुँचाया हो, तो उनसे बिना वजह बहस मत करो।

31 हिंसक लोगों के विषय ईर्ष्या मत करो और न ही उनके जैसा व्यवहार करने का फ़ैसला करो,

कार्यक्षेत्र पर ग्रुप मीटिंग, चर्चाएँ और मिलकर काम करना ये सभी ज़रूरी हैं। कभी-कभी, एक अच्छी नीयत से शुरू हुई चर्चा भी बेकाबू होकर एक बेकार की बहस में बदल सकती है। जब आप किसी बात को इस दिशा में जाते देखते है, तो थोड़ा संवेदनशील रहें। यदि लोग आक्रामक हो जाएँ, निजी हमले करने लगें, बदले की भावना से पेश आएँ, और चर्चा को आगे न बढ़ने दें, तो आप भी बदले में

वैसा ही न करें, न ही उनकी तरह पेश आएँ और न ही बहस में पड़ें। ऐसी बातचीत या चर्चाओं को समझदारी से रोकने का हुनर सीखें। समझदारी से उस चर्चा को किसी और दिन के लिए टाल दें, या समस्या को किसी दूसरे तरीके से सुलझाने का रास्ता चुनें।

जब कोई सहकर्मी ठीक से काम न करे या नियमों का उल्लंघन करे, तो इस मामले को सावधानी से संभालें

नीतिवचन 30:10 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
अपने साथ काम करने वालों की पीठ पीछे उनकी चुगली न करें; वे आप पर धोखेबाज़ी का आरोप लगा सकते हैं, और तब आप ही दोषी ठहराए जाएँगे!

कार्यक्षेत्र में कई बार ऐसी अजीब स्थितियाँ आती हैं, जब आपको किसी ऐसे सहकर्मी के बारे में रिपोर्ट करना पड़ता है जो लगातार खराब परफ़ॉर्म कर रहा हो, या जिसने कंपनी की नीति, व्यावसायिक आचरण संहिता, अथवा किसी अन्य नियम का उल्लंघन किया हो। जहां तक हो सके, सबसे पहले गलती करने वाले व्यक्ति से सीधे बात करें और बताएं कि यह आपकी कॉर्पोरेट ज़िम्मेदारी है कि आप इस मामले को संबंधित व्यक्ति के पास ले जाएं, चाहे वह अधिकारी हो, एच.आर. हो, या आपकी कंपनी की ज़रूरत के हिसाब से कानूनी विभाग हो। इसके बाद, इस मामले की रिपोर्ट करने की अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिए आगे बढ़ें। हालाँकि यह करना मुश्किल हो सकता है, फिर भी आपको अपने संगठन के प्रति ईमानदार रहना चाहिए।

प्रतिक्रिया (फीडबैक)—प्रतिक्रिया पर ध्यान दें, विशेष ध्यान दें

नीतिवचन 27:21
जैसे चाँदी के लिये कुठाली और सोने के लिये भट्ठी हैं, वैसे ही मनुष्य के लिये उसकी प्रशंसा है।

नीतिवचन 26:16 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
एक आलसी व्यक्ति अपने को उन सात लोगों से ज़्यादा बुद्धिमान समझता है जो अपनी राय के लिए अच्छे कारण दे सकते हैं।

नीतिवचन 25:12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
किसी अनुभवी व्यक्ति द्वारा बात माननेवाले को दी गई चेतावनी, सोने की अंगूठियों या सबसे शुद्ध सोने से बने गहनों से भी अधिक मूल्यवान होती है।

अपने संगठन के भीतर मिलने वाले प्रतिक्रिया (फीडबैक), कार्य प्रदर्शन की समीक्षा (परफॉर्मेंस अप्रेज़ल) और मूल्यांकन के अन्य तरीकों पर ध्यान दें। प्रतिक्रिया को हल्के में न लें। अनुभवी लोगों से मिलने वाली प्रतिक्रिया और सुझाव बहुत कीमती होता है, और आपको उसे इसी नज़र से देखना चाहिए। सुनने, सीखने और बदलाव करने के लिए हमेशा तैयार रहें। अपनी कमियों का बचाव करने की कोशिश न करें, बल्कि सुधार, विकास और कौशल-विकास के क्षेत्रों को पहचानें और उन पर काम करें।

सुधार को हमेशा अच्छे रवैये के साथ स्वीकार करें

नीतिवचन 12:1
जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डाँट से बैर रखता, वह पशु सरीखा है।

नीतिवचन 13:18
जो शिक्षा को सुनी–अनसुनी करता वह निर्धन होता और अपमान पाता है, परन्तु जो डाँट को मानता, उसकी महिमा होती है।

नीतिवचन 29:1 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
अगर हर बार सुधारे जाने पर आप और ज़्यादा हठीले हो जाते हैं, तो एक दिन आप पूरी तरह बर्बाद हो जाएँगे और कभी उबर नहीं पाएँगे।

सुधार को अच्छे रवैये के साथ स्वीकार करें, और खुद में बदलाव लाने तथा सुधार करने के लिए तैयार रहें। जो लोग आपकी ज़िंदगी में

सुधार लाते हैं, उनसे दूर मत भागिए। वे आपके लिए उन कई दोस्तों से ज़्यादा ज़रूरी हैं जो आपकी कमियों को बस बर्दाश्त कर लेते हैं। जो लोग आपको सुधारते हैं, वे असल में आपकी बहुत परवाह करते हैं; वे चाहते हैं कि आप आगे बढ़ें, आपका विकास हो और आप एक बेहतर इंसान बनें। उनके साथ अच्छे संबंध बनाएँ, ताकि वे आपको लगातार सही सुझाव देते रहें।

किसी के लिए ज़मानतदार बनने से पहले सावधान रहें

नीतिवचन 6:1-4

1 हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पड़ोसी का उत्तरदायी हुआ हो, अथवा परदेशी के लिये हाथ पर हाथ मार कर उत्तरदायी हुआ हो,
2 तो तू अपने ही मुँह के वचनों से फँसा, और अपने ही मुँह की बातों से पकड़ा गया।
3 इसलिये हे मेरे पुत्र, एक काम कर अर्थात् तू जो अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है, तो जा, उसको साष्टांग प्रणाम करके मना ले।
4 तू न तो अपनी आँखों में नींद, और न अपनी पलकों में झपकी आने दे;

नीतिवचन 11:15

जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दु:ख उठाता है, परन्तु जो जमानत लेने से घृणा करता वह निडर रहता है।

नीतिवचन 22:26,27

26 जो लोग हाथ पर हाथ मारते, और ऋणियों के उत्तरदायी होते हैं, उन में तू न होना।
27 यदि भर देने के लिये तेरे पास कुछ न हो, तो वह क्यों तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?

जब कार्यक्षेत्र पर रिश्ते बनते हैं, तो कई बार ऐसा हो सकता है कि कोई सहकर्मी आपसे किसी खरीदारी, लोन या किसी दूसरे काम के लिए जमानतदार (गैरेंटर) बनने को कहे। इसे बहुत ध्यान से जाँचें। यदि यह सिर्फ़ एक सन्दर्भ (रेफरेंस) की बात है, जिसमें कोई दूसरी कानूनी या आर्थिक ज़िम्मेदारी नहीं है, और आप उस व्यक्ति को

अच्छी तरह जानते हैं, तो शायद जमानतदार के तौर पर अपना नाम देने में कोई नुकसान नहीं है। हालाँकि, जहाँ आर्थिक और कानूनी पेचीदगियाँ हों, वहाँ जमानतदार के तौर पर अपना नाम देने से पहले सावधान रहें।

ज्योतिषियों, राशिफल, भविष्य बताने वालों और हस्तरेखा पढ़ने वालों से दूर रहें

यिर्मयाह 10:2

"अन्यजातियों की चाल मत सीखो, न उनके समान आकाश के चिह्नों से विस्मित हो, इसलिये कि अन्यजाति लोग उनसे विस्मित होते हैं।

आजकल काम करने वाले प्रोफेशनल्स के बीच यह एक आम चलन बनता जा रहा है कि वे अपने बिज़नेस के फैसलों और पर्सनल करियर में मार्गदर्शन के लिए ज्योतिषियों, राशिफल और दूसरी तांत्रिक विद्याओं की मदद लेते हैं। ऐसी क्रियाओं तथा तरीकों से स्वयं को धीरे से अलग कर लें। आप लोगों से रिश्ता तोड़ना या दोस्ती खत्म करना नहीं चाहते, लेकिन साथ ही आप गलत कामों में हिस्सा लेना, उनका समर्थन करना या उन्हें मंज़ूरी देना भी नहीं चाहते। अपनी बात साफ़-साफ़ कहने में कोई बुराई नहीं है। इसे प्यार से, विनम्रता से करें, घमंड से नहीं। ऐसा खुद को सही साबित करने वाले अंदाज़ से न करें।

व्यवस्थाविवरण 18:10-14 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

10 अपने बेटे या बेटी की आग में बलि चढाने की हिम्मत भी मत करना। भविष्य बताने, जादू-टोना करने, या भूत-प्रेत की साधना करने जैसे काम मत करना,
11 न ही मंत्र-तंत्र करना, या भूत साधनेवाला, या भूतों का जगानेवाला होना।
12 जो लोग ऐसे काम करते हैं, वे परमेश्वर की दृष्टी में घृणित हैं। इन्हीं घृणित कामों की वजह से परमेश्वर, तुम्हारा परमेश्वर, इन जातियों को तुम्हारे सामने से निकाल रहा है।
13 तू अपने परमेश्श्वर यहोवा के सम्मुख निष्ठावान बना रह।
14 जिन जातियों को तुम देश से बाहर निकालने वाले हो, वे ओझाओं और

डायनों के साथ मिलकर काम करती हैं। परन्तु तुम ऐसा मत करना। परमेश्वर, तुम्हारा परमेश्वर, इसकी मनाही करता है।

मुख्य सिद्धांत

1) प्रेम बनाए रखें—यह मानवीय संबंधों की बुनियाद हैं ।
2) जब आपको किसी को आशीष देने का अवसर मिले, तो ज़रूर दें।
3) लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहें; आपकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) मायने रखती है।
4) किसी का हौसला बढ़ाएँ या उसे आनन्दित कीजिये।
5) “कृपया,” “धन्यवाद,” और “क्षमा करें” कहना कभी न भूलें।
6) हौसला बढ़ाने वाले बनो–उनका भी जो तुम्हें पसंद नहीं करते।
7) याद रखें, शत्रुओं को भी बदला जा सकता है।
8) सावधान रहें कि कौन आपको प्रभावित कर रहा है।
9) कॉर्पोरेट माहौल में मेल-जोल के दौरान अपनी सीमाओं को पहचानें।
10) अपने अधिकारी का सम्मान करें।
11) अपने अधिकारी का आदर करो, यहाँ तक कि उसका भी जो कठोर है।
12) कार्यक्षेत्र पर शिष्टाचार तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता विकसित करें।
13) जब हालात मुश्किल हों, तो बुद्धिमानी से काम लें।
14) बेकार की बहस से दूर रहें।
15) जब कोई सहकर्मी ठीक से काम न करे या नियमों का उल्लंघन करे, तो इस मामले को सावधानी से संभालें।

16) प्रतिक्रिया (फीडबैक) — इस पर ध्यान दें, बहुत ध्यान से इस पर गौर करें।

17) सुधार को हमेशा अच्छे रवैये के साथ स्वीकार करें।

18) किसी के लिए ज़मानतदार बनने से पहले सावधान रहें।

19) ज्योतिषियों, राशिफल, भविष्य बताने वालों और हस्तरेखा पढ़ने वालों से दूर रहें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- अगर आपके अधिकारी और साथी गलत रिपोर्टिंग कर रहे हैं और असलियत नहीं बता रहे हैं, तो आप क्या करेंगे?
- जब आपका अधिकारी / मालिक बिना किसी सही वजह के आप पर चिल्लाए, तो आपको कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए?
- यदि आपने बहुत अच्छे नतीजे दिए हैं, लेकिन आपके अधिकारी को इसकी कोई परवाह नहीं लगती या वे इस पर ध्यान ही नहीं देते, तो आपको क्या करना चाहिए? आपके काम के लिए आपको कोई इनाम, तरक्की या तारीफ़ नहीं मिली है।
- आप एक बेहद प्रतिस्पर्धी वातावरण में काम करते हैं। आप अपने सहकर्मियों को नाराज़ किए बिना, अपनी मनचाही तरक्की कैसे पा सकते हैं?
- आपको लगता है कि कार्यक्षेत्र पर अन्याय और भेदभाव है, जहाँ आपके और कुछ अन्य लोगों के साथ गलत व्यवहार किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

10
योजना बनाना तथा क्रियान्वयन करना

"क्रियान्वयन ही कुंजी है"–यह बात मैनेजमेंट के क्षेत्रों में अक्सर सुनने को मिलती है। एक बेहतरीन रणनीति, शानदार विचार, तकनीक और नए अविष्कार ये सब बहुत अच्छे हैं, लेकिन इन्हें अमल में लाए बिना ये बेकार ही रहते हैं। नतीजे देखने के लिए, रणनीतिक और परिचालन पहलों को कार्यरूप देना महत्वपूर्ण है। आखिरकार, सफल क्रियान्वयन किसी एक व्यक्ति या सिर्फ़ कुछ लोगों पर निर्भर नहीं करता है। संगठन में सभी को एक साथ मिलकर काम करने और लक्ष्य को पूरा करने में योगदान देने की ज़रूरत है।

इस अध्याय में, हम योजना बनाने तथा रणनीति का क्रियान्वयन करने पर पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को देखेंगे।

परमेश्वर की सलाह जानें

नीतिवचन 19:21 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से द्धरित)
हम मनुष्य तो तरह-तरह की कल्पनाएँ और योजनाएँ सोचते रहते हैं, लेकिन आखिरकार परमेश्वर की ही मर्जी पूरी होती है।

जब आप योजना बना रहे हों, तो परमेश्वर को भी इसमें शामिल करें। उसे आपके विचारों और चर्चाओं को दिशा देने, तथा तैयार की गई योजनाओं का मार्गदर्शन करने के लिए आमंत्रित करें।

योजना बनाने में सही लोगों को शामिल करें

नीतिवचन 20:18 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
सलाह लेकर अपना मकसद तय करें, और फिर जितनी भी मदद मिल सके, उसका इस्तेमाल करके उसे पूरा करें।

योजना बनाने की प्रक्रिया में मुख्य लोगों को शामिल करें। विशेष रूप से, उन लोगों को शामिल करना ज़रूरी है जो चर्चाओं में योगदान दे सकते हैं और जो योजनाओं को लागू करने के लिए ज़िम्मेदार होंगे।

योजना को साझा करें। ज़रूरी जानकारी प्रसारित करें। अंततः, यह जानकारी इसमें शामिल टीम के सभी सदस्यों तक पहुँचनी चाहिए, ताकि हर किसी को यह स्पष्ट पता हो कि किन लक्ष्यों को पाने की कोशिश की जा रही है, क्या निर्णय लिए गए हैं, उनके व्यक्तिगत कार्य क्या हैं, और उनकी टीम को क्या नतीजे देने हैं। सभी स्तरों पर लोगों के पास वह जानकारी होनी चाहिए जिसकी उन्हें अपने कार्यों के लिए आवश्यकता है, और उन्हें यह समझना चाहिए कि उनके कार्य का सम्पूर्ण लक्ष्य पाने में क्या असर होगा।

आगे की सोचें; "आकस्मिक" बातों की पहले से ही तैयारी करें

नीतिवचन 22:3
चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।

योजना बनाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा पहले से ही एहतियाती कदम उठाना है। योजना को लागू करने में आने वाले संभावित खतरों और चुनौतियों का पहले से ही अंदाज़ा लगाएँ, और विभिन्न आकस्मिक स्थितियों के लिए तैयार रहें। कुछ खास चुनौतियों के सामने आने पर, कार्रवाई की एक रूपरेखा के साथ तैयार रहना काम की गति को बनाए रखने में मदद करेगा; इससे आप पहले से तय किए गए उपायों

को अपना पाएँगे और अनावश्यक देरी से बच पाएँगे।

कुछ समय दूसरों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण होते हैं

नीतिवचन 10:5

जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धि से काम करनेवाला है, परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।

सारी योजना और तैयारी पूरी हो जाने के बाद, अब काम शुरू करने का समय आता है। अब समय है हंसिया उठाकर फसल काटने का। क्रियान्वयन ऐसा ही समय होता है। यही निरंतर सक्रियता का समय है। हालांकि, फसल कटाई की तरह ही, क्रियान्वयन भी अन्य समयों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है। काम पूरा करने के लिए आपके पास एक सीमित अवसर तथा तय समय सीमा होती है। यदि आप उसे चूक जाते हैं, तो आप किसी महत्वपूर्ण बात को खो देने के खतरे में पड़ सकते हैं; इसलिए कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार रहें। टीमों को भी कड़ी मेहनत के लिए तैयार करें। क्रियान्वयन में तीव्रता आवश्यक होती है।

क्रियान्वयन कभी-कभी अव्यवस्थित और रुकावटों से भरा हो सकता है

नीतिवचन 14:4

जहाँ बैल नहीं, वहाँ गौशाला स्वच्छ तो रहती है, परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है।

जब आपके पास बैल होते हैं जो खेतों में काम कर रहे होते हैं, तो नांद अस्तव्यस्त हो सकती है। क्रियान्वयन के समय, दूसरी चीज़ें कम ज़रूरी लगने लगती हैं, क्योंकि अब आपका ध्यान कुछ खास लक्ष्यों पर टिका होता है। बाकी चीज़ें कम ज़रूरी चीज़ों की सूची में जमा होती जाती हैं। दूसरी गैर-ज़रूरी चीज़ों में रूकावट आती है, क्योंकि जो समय आमतौर पर उन चीज़ों पर खर्च होता था, अब वह

एक तय समय-सीमा के भीतर खास लक्ष्यों को पाने में लगाया जाता है। क्रियान्वयन की इस “अस्त-व्यस्त” और रूकावट भरी प्रकृति को स्वीकार करना ज़रूरी है। समय के साथ चीजें ठीक हो जाएंगी।

अपना ध्यान केंद्रित रखें; भटकावों से बचें

नीतिवचन 12:11 (‘द मैसेज अंग्रेजी बाइबल’ से उद्धरित)

जो व्यक्ति अपने काम पर डटा रहता है, उसके पास भोजन रहता है; जबकि निर्बुद्धि लोग निकम्मी और बेतुकी इच्छाओं के पीछे भागते हैं।

एकाग्रता, क्रियान्वयन की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। किसी खास लक्ष्य या लक्ष्यों के समूह पर ध्यान केंद्रित करें। हर नए मनमाने विचार या आकर्षक लगने वाली बात के पीछे भागने की भटकन से बचें। हो सकता है कि दूसरे अच्छे आइडिया भी हों, परन्तु यदि आप उस एक अच्छे विचार को साकार करना चाहते हैं जो आपके पास पहले से है, तो आपको अपने लक्ष्य पर ही ध्यान केंद्रित करना होगा।

सिर्फ़ बातें न करें, कार्य करें! परन्तु उस बात पर कार्य करें जो सच में ज़रूरी है

नीतिवचन 14:23

परिश्रम से सदा लाभ होता है, परन्तु बकवाद करने से केवल घटी होती है।

क्रियान्वयन का अर्थ है ‘कार्य करना’; लेकिन इस कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उन चीज़ों पर लागू किया जाना चाहिए जो लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण हैं।

अपनी टीम को शामिल करें; साथ मिलकर हर कोई ज़्यादा हासिल कर पाता है

सभोपदेशक 4:9-12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

9 एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि वे साथ मिलकर ज़्यादा प्रभावी रूप से काम कर सकते हैं।

[10] यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा। परन्तु यदि कोईv अकेला हो और गिर जाए, तो यह बहुत बुरा होता है, क्योंकि उसकी मदद करने वाला कोई नहीं होता।
[11] यदि ठंड हो, तो दो लोग संग सोएँ तो वे गर्म रहेंगे, परन्तु अकेले आप खुद को कैसे गर्म रखेंगे?
[12] दो लोग मिलकर ऐसे हमले का सामना कर सकते हैं जो अकेले इंसान को हरा देगा। तीन डोरियों से बनी रस्सी को तोड़ना मुश्किल होता है।

किसी भी काम को पूरा करने के लिए, लक्ष्य की दिशा में काम करने वाले हर व्यक्ति से पूरे जुनून और लगन के साथ काम करने की उम्मीद की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति उस लक्ष्य की ज़िम्मेदारी लेता है जिसे पाने की कोशिश की जा रही है। काम मिलकर किया जाता है। काम में हुई प्रगति पर नज़र रखी जाती है और उसे सभी के साथ साझा किया जाता है। लंबित कार्यों, चुनौतियों, देरी और दिशा सुधार से जुड़ी जानकारी सभी के साथ साझा की जाती है। संगठन की सीमाओं के पार जानकारी स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होती है, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, और एक ही स्तर पर भी। क्रियान्वयन के लिए टीम वर्क की ताकत का इस्तेमाल करना बहुत ज़रूरी है।

जवाबदेहीता—मुश्किल समय में भी डटे रहें

नीतिवचन 24:10 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
यदि आप विपत्ति के समय कमज़ोर पड़ जाते हैं, तो आप सचमुच कमज़ोर हैं।

क्रियान्वयन की प्रक्रिया में, सभी स्तरों पर टीम के सभी सदस्यों की लगातार जवाबदेही तय होनी चाहिए। टीमें पूरे हो चुके कार्यों की रिपोर्ट देती हैं। काम में हुई प्रगति की समीक्षा की जाती है। प्रगति को जारी रखने और लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए अगले कदमों की योजना बनाई जाती है। रिपोर्टिंग, समीक्षा और योजना बनाने का यह पूरा चक्र बार-बार दोहराया जाता है, संभवतः हर हफ़्ते। इससे यह सुनिश्चित होता है कि लोग जवाबदेह बने रहें। इससे काम में आने वाली

रुकावटों और दूसरी चुनौतियों को दूर करने में भी मदद मिलती है, और सभी लोग प्रेरित बने रहते हैं। यह खास तौर पर तब फायदेमंद होता है जब हालात मुश्किल हो जाते हैं। आपसी जवाबदेहीता का यह तरीका लोगों को उत्साहित और प्रेरित बनाए रख सकता है, जिससे उन्हें यह विश्वास बना रहता है कि लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

कुछ सीखे हुए सबक, कमाए हुए लाभ से भी अधिक मूल्यवान होते हैं

नीतिवचन 3:13-17

13 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे,
14 क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चाँदी की प्राप्ति से बड़ी, और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है।
15 वह मूंगे से अधिक अनमोल है, और जितनी वस्तुओं की तू लालसा करता है, उनमें से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी।
16 उसके दाहिने हाथ में दीर्घायु, और उसके बाएँ हाथ में धन और महिमा हैं।
17 उसके मार्ग आनन्ददायक हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं।

क्रियान्वयन की प्रक्रिया एक बेहतरीन शिक्षक होती है। इस दौरान आपको कई सबक सीखने को मिलेंगे। हर रणनीति को लागू करने के अनुभव और उससे मिलने वाले सबक अनमोल होते हैं। वे शायद लक्ष्य तक पहुँचने में मिली सफलता से भी ज़्यादा कीमती होते हैं। आप जो भी सबक सीखें, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, उन्हें जरूर नोट कर लें।

सबसे बढ़कर, परमेश्वर को ही सब कुछ नियंत्रित करने दें

नीतिवचन 16:3 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

अपने कामों को परमेश्वर को सौंप दो, इस से तुम्हारी योजनाएँ सिद्ध होंगी।

क्रियान्वयन की प्रक्रिया के दौरान आने वाले उतार-चढ़ावों और

मुश्किल पलों में शांत रहने का एक मुख्य तरीका है कि आप परमेश्वर पर भरोसा करना सीखें। अपनी योजनाओं और उनके क्रियान्वयन को परमेश्वर को सौंप दीजिए। परमेश्वर को ही सब कुछ नियंत्रित करने दें और इस बात के लिए उस पर निर्भर रहें कि वह आपको सफलतापूर्वक इस से पार लगा देगा। वह ऐसा ज़रूर करेगा।

भजन संहिता 37:5
अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।

मुख्य सिद्धांत

1) प्रभु की सलाह जानें।
2) योजना बनाने में सही लोगों को शामिल करें।
3) आगे की सोचें; "आकस्मिक" बातों की पहले से ही तैयारी करें।
4) कुछ समय दूसरों की तुलना में अधिक तीव्र होते हैं।
5) क्रियान्वयन कभी-कभी अस्त-व्यस्त और रुकावटों से भरा हो सकता है।
6) अपना ध्यान केंद्रित रखें। भटकावों से बचें।
7) सिर्फ़ बातें न करें, कार्य करें! परन्तु उस बात पर कार्य करें जो सच में ज़रूरी है।
8) अपनी टीम को शामिल करें; साथ मिलकर हर कोई ज़्यादा हासिल कर पाता है।
9) जवाबदेहीता—मुश्किल समय में भी डटे रहें।
10) कुछ सीखे हुए सबक, कमाए हुए लाभ से भी अधिक मूल्यवान होते हैं।

11) सबसे बढ़कर, परमेश्वर को ही सब कुछ नियंत्रित करने दें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- किसी भी काम का सफल क्रियान्वयन टीम की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करता है। उन तरीकों के बारे में सोचें जिनसे आप टीम के सदस्यों को लंबे समय तक जुड़े रहने और लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- जवाबदेहीता किसी टीम को चुनौतियों से निपटने में कैसे मदद करती है — खास तौर पर तब, जब हालात मुश्किल हो जाते हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

11
लाभप्रदता और कॉर्पोरेट वित्त

मुनाफ़ा कमाने वाली कंपनियाँ इसलिए मौजूद होती हैं ताकि वे आवंटित संसाधनों को ऐसे उत्पादों या सेवाओं में बदल सकें जो उपभोक्ताओं को संतुष्ट करें, जिससे मुनाफ़ा हो और शेयरधारकों की संपत्ति में वृद्धि हो। मुनाफ़ा कमाना बहुत ज़रूरी है; इसके बिना कोई भी व्यवसाय लंबे समय तक टिक नहीं पाएगा। इससे जुड़ा एक और काम है—संगठन की वित्तीय गतिविधियों का प्रबंधन करना।

इसमें सटीक बही-खाते और रिकॉर्ड रखना; संगठन के व्यवसाय, कमाई और वित्तीय स्थिति के बारे में सटीक, पूरी और आसानी से समझ में आने वाली जानकारी देना; वर्तमान परिसंपत्तियों और वर्तमान देनदारियों का प्रबंधन; भंडार पर नियंत्रण रखना, पूंजीगत खरीद करना, निवेश करना और अन्य वित्तीय मामलों को संभालना शामिल है।

किसी भी समय, किसी संगठन के वित्तीय विवरण, नियामक रिपोर्ट और सार्वजनिक रूप से दाखिल किए गए दस्तावेज़ उचित क्रम में होने चाहिए और सभी लागू, स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों तथा वैधानिक आवश्यकताओं का पालन करना चाहिए। संगठन में सभी स्तरों पर कर्मचारियों को लेन-देन या घटनाओं की उचित और समय पर रिपोर्टिंग और/या रिकॉर्डिंग के बारे में निर्देश दिए जाने चाहिए। इसमें कार्य समय-पत्रक (टाइम शीट्स), व्यय रिपोर्ट, खरीद आदेश, चालान आदि जैसी गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं। इन्हें सटीक और पूर्ण तरीके से बनाए रखना महत्वपूर्ण है, और किसी भी धोखाधड़ी

वाली या गलत गतिविधि से उचित तरीके से निपटा जाना चाहिए। इस अध्याय में, हम लाभप्रदता और वित्तीय प्रबंधन से संबंधित पवित्र शास्त्र के कुछ अभिवचनों तथा निर्देशों पर विचार करेंगे।

परमेश्वर हमें लाभ की ओर ले जाता है

यशायाह 48:17

यहोवा जो तेरा छुड़ानेवाला और इस्राएल का पवित्र है, वह यों कहता है: "मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे तेरे लाभ के लिये शिक्षा देता हूँ, और जिस मार्ग से तुझे जाना है उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूँ।

व्यवस्थाविवरण 28:8,11-13 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

[8] "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे कामों पर आशीष देगा और तुम्हारे खलिहानों को अनाज से भर देगा। वह तुम्हें उस देश में आशीष देगा जो वह तुम्हें दे रहा है।

[11] उस देश में जिसका वादा उसने तुम्हारे पूर्वजों से तुम्हें देने के लिए किया था, उसमें यहोवा तुम्हें सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढ़ती देगा।

[12] वह अपने विशाल आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर सही समय पर बारिश भेजेगा और तुम्हारे सारे कामों पर आशीष देगा, ताकि तुम कई देशों को उधार दे सको, परन्तु तुम्हें किसी से उधार न लेना पड़ेगा।

[13] तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देशों के बीच अगुवा बनाएगा, न कि अनुयायी; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ मन लगाकर पालन करोगे, तो तुम हमेशा समृद्ध होगे और कभी असफल नहीं होगे।

परमेश्वर इस दुनिया का रचयिता है, और उसने सभी चीज़ें हमारे फ़ायदे के लिए दी हैं। बाइबल के समय में रहने वाले अपने लोगों से, जो मुख्य रूप से किसान थे, परमेश्वर ने उनकी खेती और पशुधन पर आशीष देने का वादा किया था। इसका परिणाम यह होता कि उनके अनाज और पशुओं में बढ़ोतरी होती, ताकि वे दूसरों को उधार दे सकें और उन्हें स्वयं उधार लेने की आवश्यकता न पड़ती। इसे वर्तमान समय में लागू करें तो, जब हम पूरी लगन से व्यापार करते हैं, तो परमेश्वर हमें आशीष देगा और हमें मुनाफ़े की ओर ले जाएगा।

मुनाफ़ा कमाने का लक्ष्य रखना कोई पाप नहीं है, जब तक कि हम परमेश्वर-केंद्रित रहते हैं। उन्होंने हमें सिखाने और लाभ की ओर ले जाने का वादा किया है।

परमेश्वर हमें धन सम्पत्ति कमाने की शक्ति देता है

व्यवस्थाविवरण 8:18
परन्तु तू अपने परमेश्‌वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्‌त करने की सामर्थ्य इसलिये देता है, कि जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बाँधी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रगट है।

सभोपदेशक 5:19 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
यदि परमेश्वर हमें धन-दौलत और संपत्ति देता हैं और उनका आनंद भी लेने देता हैं, तो हमें धन्यवादित होना चाहिए और अपनी परिश्रम से कमाई चीज़ों का आनंद लेना चाहिए। यह परमेश्‌वर का वरदान है।

धन कमाने की शक्ति भी परमेश्वर का ही एक वरदान है। यह उन लोगों के लिए परमेश्वर की आशीष है जो उसके साथ वाचा में हैं। धन-संपत्ति कमाने की प्रेरणा को न तो नकारा जाना चाहिए और न ही इसे गलत माना जाना चाहिए, क्योंकि धन कमाने की आशीष स्वयं परमेश्वर द्वारा ही दिया गया है। इस संसार में जो कुछ भी है, उन सबका स्वामी परमेश्वर ही है; और हम उससे यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वह हमें इस धन का कुछ हिस्सा अपने अधिकार में लेने में समर्थ बनाएँ, ताकि हम उसकी महिमा के लिए उनका इस्तेमाल कर सकें।

हग्गै 2:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
दुनिया का सारा सोना-चाँदी मेरा है।

भजन संहिता 50:10 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
क्योंकि जंगल के सारे जीव–जन्तु और हज़ारों पहाड़ियों पर चरने वाले पशु भी मेरे हैं।

सफलता परमेश्वर का एक वरदान है

भजन संहिता 35:27
जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं, वे जयजयकार और आनन्द करें, और निरन्तर कहते रहें, यहोवा की बड़ाई हो, जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है!

भजन संहिता 1:1-3 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
1 धन्य है वे जो दुष्टों की सलाह नहीं मानते, जो पापियों के रास्ते पर नहीं चलते या उन लोगों के साथ नहीं बैठते जिन्हें परमेश्वर की कोई परवाह नहीं है।
2 बल्कि, उन्हें यहोवा की व्यवस्था का पालन करने में खुशी मिलती है, और वे दिन-रात उनका अध्ययन करते हैं।
3 वे उस पेड़ की तरह हैं जो बहती नदी के किनारे उगता है, जो अपनी ऋतू में फल देता है, और जिसके पत्ते कभी नहीं मुरझाते। वे जो भी काम करते हैं, उसमें सफल होते हैं।

नीतिवचन 10:22
धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।

सफलता और परमेश्वर पर विश्वास साथ-साथ चल सकते हैं। अब्राहम विश्वास का पिता था। वह शुरू से ही धनवान था और परमेश्वर ने उसे और भी ज़्यादा बढ़ाया (उत्पत्ति 13:2; उत्पत्ति 24:1,35)। सफलता, लाभ और वृद्धि की इच्छा अपवित्र नहीं है, जब वह परमेश्वर को समर्पित हो।

लाभ और उन्नति के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें

उत्पत्ति 26:12,13 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
12 इसहाक ने उस ज़मीन पर फ़सल बोई, और उसी वर्ष जितना उसने बोया था उससे उसे सौ गुना ज़्यादा फ़सल मिली, क्योंकि प्रभु ने उसे आशीष दी थी।
13 और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहाँ तक कि वह अति महान् पुरुष हो गया।

उत्पत्ति 39:2,3 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
2 यूसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था इसलिये वह भाग्यवान् पुरुष हो गया,
3 वह लगातार तरक्की करता गया और बहुत अमीर व्यक्ति बन गया।

चाहे व्यक्तिगत स्तर पर हो या संगठनात्मक स्तर पर, आप सफलता, उन्नति और लाभ के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। प्रार्थना करें। परमेश्वर पर अपने विश्वास को बढ़ाएँ, ताकि वह आपके कार्यों को आशीष दे और उन्हें सफल बनाए। परमेश्वर पर यह विश्वास रखें कि वह आपको निरंतर समृद्ध होने और उन्नति करने में समर्थ बनाएगा।

अपनी सेवाएँ या उत्पाद उचित मूल्य पर बेचें

नीतिवचन 11:26 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जो लोग ज़्यादा कीमत मिलने के इंतज़ार में अनाज जमा करके रखते हैं, उन्हें लोग शाप देते हैं, परन्तु जो उसे बेच देते है, उनको आशीर्वाद दिया जाता है।

उचित लाभ पर अनाज बेचने के बजाय, कुछ लोग ऐसे थे जो अनाज जमा करके रखते थे, ताकि आपूर्ति कम हो जाए, या फिर वे अकाल पड़ने की प्रतीक्षा करते थे, और जब लोग मजबूरी की स्थिति में होते थे, तब वे उसी अनाज को ऊँचे दाम पर बेचते थे।

आमोस 8:4-7 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
4 यह बात सुनो, तुम जो ज़रूरतमंदों को कुचलते हो और देश के गरीबों को नष्ट करने की कोशिश करते हो।
5 तुम जो मन ही मन कहते हो, "हम पवित्र दिनों के खत्म होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं ताकि अपना अनाज बेच सकें। विश्रामदिन कब खत्म होगा, ताकि हम फिर से बेचना शुरू कर सकें? तब हम ज़्यादा दाम वसूल सकेंगे, गलत नाप-तौल का इस्तेमाल कर सकेंगे और तराजू में हेराफेरी करके ग्राहकों को ठग सकेंगे।
6 हम बेकार गेहूँ ऊँचे दाम पर बेच सकेंगे। हम किसी ऐसे गरीब को, जो अपना कर्ज़ नहीं चुका सकता, यहाँ तक कि एक जोड़ी जूतियों की कीमत भी नहीं दे

सकता, ढूँढकर और उसे मोल लेकर अपना गुलाम बना लेंगे।"
7 इस्राएल के परमेश्वर, प्रभु ने शपथ खाई है, "मैं उनके बुरे कामों को कभी नहीं भूलूँगा।"

अपने उत्पाद या सेवा को उचित मूल्य पर देना गलत नहीं है। परन्तु जब लोग आपकी वस्तु या सेवा की आवश्यकता में हों और कमजोर स्थिति में हों, तब उनका लाभ उठाने के उद्देश्य से अपने उत्पाद या सेवा का मूल्य तय करना गलत है।

उत्पत्ति 47:13-26 में, शुरू में यूसुफ ने नकद पैसे लेकर अनाज बेचा। अकाल के समय जब लोग खाने के लिए नकद पैसे नहीं दे पाए, तो यूसुफ ने उन्हें अपने पशु देकर और बाद में, ज़मीन के बदले में भुगतान करने की अनुमति दी। आखिरकार, सारी ज़मीन मिस्र के राजा फिरौन के मालिकाना हक में आ गई। एक बार जब अकाल खत्म हो गया, तो यूसुफ ने लोगों को ज़मीन में बोने के लिए बीज दिए और एक ऐसी व्यवस्था बनाई जिसमें पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा फिरौन को टैक्स के रूप में वापस दिया जाता था। सब कुछ निष्पक्ष तरीके से किया गया, और लोग खुश थे और उनकी अच्छी देखभाल की गई।

उत्पाद या उसकी कीमत के मामले में कुटिलता न करें

व्यवस्थाविवरण 25:16 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
बेईमानी वाले बाट और माप-तौल तथा व्यापारिक लेन-देन में यह सब भ्रष्टाचार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं !

लैव्यव्यवस्था 19:35,36 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
35 "लंबाई, वज़न या मात्रा नापने के लिए गलत पैमानों का इस्तेमाल करके किसी को धोखा न देना।
36 सच्चा तराज़ू, सही वज़न और सही पैमानों का इस्तेमाल करना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया।

नीतिवचन 20:10 (यह भी देखें: नीतिवचन 20:23)
घटते–बढ़ते बटखरे और घटते–बढ़ते नपुए इन दोनों से यहोवा घृणा करता है।

उन दिनों, लोग दो अलग-अलग वज़नों और दो अलग-अलग मापों का इस्तेमाल करके धोखा देते थे-बेचने के लिए वे हल्के वज़न या छोटे माप का इस्तेमाल करते थे, ताकि खरीदार जितने पैसे दे रहा है, उससे कम मात्रा में सामान बेच सकें। फिर खरीदने के लिए वे भारी वज़न या बड़े माप का इस्तेमाल करते थे, ताकि जितने पैसे वे दे रहे हैं, उससे ज़्यादा मात्रा में सामान खरीद सकें। इसके अलावा, लोग अपने ग्राहकों को खराब क्वालिटी का अनाज ज़्यादा कीमत पर बेचकर भी धोखा देते थे।

वर्तमान समय के व्यापारिक लेन-देन में इसे लागू करते हुए, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने ग्राहकों के साथ धोखा न करें और उन्हें उनकी चुकाई गई कीमत के अनुरूप ही गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बेचें। इसी तरह, अपने विक्रेताओं से खरीदते समय, हमें उन्हें सही कीमत से कम दाम देकर धोखा नहीं देना चाहिए।

बेईमानी के तरीकों से धन कमाने से साफ़ इनकार करें

नीतिवचन 11:1 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
परमेश्वर बाज़ार में धोखाधड़ी से घृणा करता है; जब व्यापार सही तरीके से किया जाता है तो उसे अच्छा लगता है।

नीतिवचन 10:2
दुष्टों के रखे हुए धन से लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है।

नीतिवचन 13:11
निर्धन के पास माल नहीं रहता, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है।

नीतिवचन 16:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
बेईमानी से कमाई गई बड़ी आमदनी के बजाय ईमानदारी से कमाया गया थोड़ा-सा धन उत्तम है।

नीतिवचन 16:11 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
परमेश्वर कार्यक्षेत्र में ईमानदारी की परवाह करता है; आपका व्यवसाय उसका ही व्यवसाय है।

नीतिवचन 20:10 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
कीमतों की पर्ची बदलना और खर्चों का हिसाब बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना, ये दो ऐसी बातें हैं जिनसे परमेश्वर घृणा करता है।

नीतिवचन 20:17
चोरी–छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परन्तु बाद में उसका मुँह कंकड़ों से भर जाता है।

मीका 6:10,11 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
10 "क्या तुम मुझसे यह उम्मीद करते हो कि मैं उस बेहिसाब दौलत को नज़रअंदाज़ कर दूँ जो तुमने धोखाधड़ी और जालसाज़ी से जमा की है?
11 क्या तुम्हें लगता है कि मैं गलत सौदे और धूर्त चालें बर्दाश्त करूँगा?

व्यवसायों में बेईमानी करने के अनेक तरीके होते हैं। जैसे, ग्राहकों को भटकाने वाली बिक्री की चालें अपनाना, दबाव डालकर बिक्री करना, ग्राहकों की कमजोरियों का लाभ उठाना, "पहले कुछ और दिखाना और बाद में कुछ और देना" (बेट ऐंड स्विच) जैसी चालें चलना, झूठे दस्तावेज बनाना, तथ्यों को गलत ढंग से प्रस्तुत करना, और ऐसी कई अन्य बातें। बेईमानी से शायद कुछ समय के लिए फ़ायदा हो जाए, लेकिन जब सच्चाई सामने आती है, तो इसके नतीजे बहुत बुरे हो सकते हैं।

याद रखें, परमेश्वर हर जगह, हर पल और हर चीज़ पर नज़र

रखे हुए है।

नीतिवचन 15:3
यहोवा की आँखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं।

रिश्वतखोरी और मनी लॉन्ड्रिंग को "ना" कहें

नीतिवचन 15:27
लालची अपने घराने को दुःख देता है, परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित रहता है।

निर्गमन 23:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत लोगों को सही के प्रति अंधा बना देती है और निर्दोष लोगों का मकसद बर्बाद कर देती है।

व्यवस्थाविवरण 16:18,19 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
18 "हर उस शहर में न्यायी और दूसरे अधिकारी नियुक्त करो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे। ये लोग बिना किसी भेदभाव के लोगों का न्याय करें।
19 वे अपने फैसलों में अन्याय या पक्षपात न करें; और वे रिश्वत न लें, क्योंकि तोहफे बुद्धिमान और ईमानदार लोगों की आँखों को भी अंधा कर देते हैं, और उनसे गलत फैसले करवाते हैं।"

नीतिवचन 17:23
दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिये, अपनी गाँठ से घूस निकालता है।

नीतिवचन 29:4
राजा न्याय से देश को स्थिर करता है, परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको उलट देता है।

सभोपदेशक 7:7 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
आप बुद्धिमान हो सकते हैं, लेकिन अगर आप किसी को धोखा देते हैं, तो आप मूर्ख की तरह काम कर रहे हैं। यदि आप रिश्वत लेते हैं, तो आप अपना चरित्र खराब कर लेते हैं।

व्यापार की दुनिया में रिश्वतखोरी, अवैध कमीशन और काले धन को वैध बनाना बड़ी चुनौतियाँ हैं। रिश्वतखोरी का संबंध अक्सर भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों से जोड़ा जाता है, परन्तु व्यवसायों के बीच भी व्यावसायिक रिश्वतखोरी होती है, जो बाज़ार को प्रभावित करती है। एक सख्त कंपनी नीति बनाए रखना महत्वपूर्ण है, जिसके तहत कर्मचारी कभी भी अपने किसी निजी लाभ के आधार पर व्यावसायिक निर्णय न लें, और न ही विक्रेता या ग्राहक का चुनाव करें। आपके संगठन के साथ व्यापार करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति से कभी भी रिश्वत या अवैध कमीशन की माँग न करें और न ही उसे स्वीकार करें। कभी भी किसी को रिश्वत या अवैध कमीशन देने की पेशकश न करें।

"रिश्वत देना" का मतलब है "पैसे या किसी अन्य प्रलोभन के रूप में उपहार देकर किसी व्यक्ति को बेईमानी से अपने पक्ष में काम करने के लिए मनाना" (ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी)। रिश्वत कोई मूल्यवान वस्तु होती है, प्रायः पैसा, जिसे किसी व्यक्ति के व्यावसायिक निर्णयों को प्रभावित करने के उद्देश्य से दिया जाता है, देने की पेशकश की जाती है, या स्वीकार किया जाता है, ताकि अनुचित व्यावसायिक लाभ प्राप्त किया जा सके। मूल्यवान वस्तु में कोई भी आर्थिक या गैर आर्थिक लाभ शामिल हो सकता है, जैसे कि नकद, उपहार, अत्यधिक मनोरंजन, भोजन, सवेतन छुट्टियाँ, यात्रा खर्च, बढ़ी हुई कमीशन, अनधिकृत छूट, राजनीतिक या धर्मार्थ दान, नौकरी के प्रस्ताव, अन्य व्यावसायिक शिष्टाचार, आदि। यदि ये चीज़ें किसी ऐसे व्यावसायिक फ़ैसले को हासिल करने के बदले में पेश की जाती हैं जिससे प्राप्तकर्ता को कोई अनुचित लाभ या फ़ायदा मिलता है, तो जो पेश किया गया है, वह असल में एक रिश्वत ही है।

हम समझते हैं कि व्यापारिक बातचीत के दौरान दिए या प्राप्त किए गए उपहार या शिष्टाचार, जो सामान्य रूप से अन्य व्यापारिक साझेदारों के साथ समान आधार पर किए जाते हैं और बेईमानी के

उद्देश्य से नहीं होते, रिश्वत नहीं माने जाते। सभी खरीदारों को छूट या रिफंड की पेशकश करने वाला व्यवसाय एक कानूनी छूट है और रिश्वतखोरी नहीं है।

"किकबैक" (अवैध कमीशन) व्यवसाय को पुरस्कार देने या बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार के रूप में पहले से भुगतान की गई या भुगतान की जाने वाली राशि की वापसी है।

"मनी लॉन्ड्रिंग" का मतलब है "काले धन" को साफ़ करने की कोशिश करना। यह लोगों या संगठनों की एक ऐसी कोशिश है, जिसके तहत वे अपने अपराधों (रिश्वत, ज़बरन वसूली, गैर-कानूनी व्यापार वगैरह) से कमाए गए पैसे को छिपाने के लिए, उसे कानूनी तौर पर कमाया गया पैसा दिखाने की कोशिश करते हैं। मनी लॉन्ड्रिंग से बचने के लिए, यह सुनिश्चित करें कि वस्तुओं और सेवाओं के लिए सभी भुगतान कानूनी रूप से, स्वीकृत और लिखित रूप में दर्ज भुगतान तरीकों के द्वारा किए जाएँ।

आप दूसरों द्वारा की जाने वाली जबरन वसूली या शोषण को शायद नियंत्रित न कर पाएँ

नीतिवचन 28:8 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

धोखाधड़ी और जबरन वसूली करके चाहे जितना अमीर बन जाओ, लेकिन आखिर में गरीबों का कोई न कोई दोस्त वह सब उन्हें वापस दिला ही देगा।

संगठन किसी खास दर्शन तथा लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं; व्यापार के मामले में इसका मतलब होता है अपने ग्राहकों के लिए काम के उत्पाद या सेवाएँ देना और साथ ही मुनाफ़ा कमाना। ज़्यादातर संगठन रिश्वतखोरी और भ्रष्ट सरकारों जैसी बुराइयों से लड़ने के लिए नहीं बने होते, परन्तु वे यह समझते हैं कि अपने संगठन के दर्शन तथा उद्देश्य को पूरा करने की प्रक्रिया में उन्हें इन चुनौतियों

का सामना करना होगा और उन पर जीत हासिल करनी होगी। हमें यह समझना होगा कि हमें अपने संगठन के दर्शन तथा उद्देश्य पर ही ध्यान केंद्रित रखना चाहिए, न कि भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने या गलत तरीकों से लड़ने में भटकना चाहिए। हमें अपनी लड़ाइयाँ खुद चुननी चाहिए और उन लड़ाइयों से बचना चाहिए जिनमें हमें शामिल नहीं होना है। अपना बिज़नेस चलाते हुए या अपने संगठन का नेतृत्व करते हुए, हम यहाँ हर भ्रष्ट व्यापारी या सरकारी अधिकारी के गलत बर्ताव को सुधारने के लिए नहीं हैं। हमारा मकसद यह सुनिश्चित करना है कि हम अपने संगठन को चलाने में किसी भी तरह की बेईमानी न करें। हम न तो रिश्वत लेते हैं और न ही देते हैं, न ही कोई कमीशन लेते हैं, और न ही किसी भी तरह के काले धन को वैध बनाने या गलत काम में शामिल होते हैं।

अगर आपके सभी रिकॉर्ड, फाइलिंग और काम-काज पूरी तरह साफ़-सुथरे हैं, और जब आप किसी कानूनी ज़रूरत को पूरा कर रहे होते हैं, तो कोई सरकारी अधिकारी अपना रोज़ का काम करने के लिए आपसे कोई "छोटी-मोटी रकम" (या "टिप") मांगता है—तो यह रिश्वतखोरी नहीं, बल्कि ज़बरन वसूली है। यह सरकारी अधिकारी ज़बरदस्ती वह चीज़ लेने की कोशिश कर रहा है जो उसकी नहीं है, जबकि उसे अपना काम करने के लिए पहले से ही तनख्वाह मिल रही होती है। जो पैसा वह इस तरह से वसूलता है, वह असल में जबरन वसूली का ही पैसा होता है।

लूका 3:12-14 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
12 कुछ महसूल लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उससे पूछा, "हे गुरु, हम क्या करें?"
13 उसने उनसे कहा, "जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना।"
14 कुछ सिपाहियों ने भी उससे यह पूछा, "हम क्या करें?" उसने उनसे कहा, "किसी पर उपद्रव न करना और न झूठा इल्ज़ाम लगाना, और अपने वेतन

पर सन्तोष करना।"

जब आप ऐसी स्थिति का सामना करते हैं जिसमें कोई सरकारी अधिकारी, अपने रोज़मर्रा के काम को पूरा करने या उसमें तेज़ी लाने के लिए आपसे पैसे (रिश्वत) की मांग करता है, तो आपको इस स्थिति को बड़ी समझदारी से संभालना होगा; क्योंकि आखिरकार, आपको अपना काम करवाना ही है। यह ऐसी लड़ाई नहीं है जिसे आप लड़ना चाहेंगे, क्योंकि आपका मुख्य ध्यान आपके व्यवसाय या संगठन के दर्शन और उद्देश्य पर होना चाहिए।

सभोपदेशक 5:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जब आप देखें कि सरकार गरीबों पर ज़ुल्म करती है और उन्हें न्याय और उनके अधिकार नहीं देती, तो हैरान न हों। हर अधिकारी को किसी उच्च अधिकारी द्वारा संरक्षित किया जाता है, और दोनों को उससे भी उच्च अधिकारियों द्वारा संरक्षित किया जाता है।

व्यावसायिक अपराधों में भागीदार न बनें

नीतिवचन 29:24
जो चोर की संगति करता है वह अपने प्राण का बैरी होता है; शपथ खाने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता।

भजन संहिता 50:18,21 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
18 तुम जिस भी चोर को देखते हो, उसके दोस्त बन जाते हो, और व्यभिचारियों के साथ उठते-बैठते हो।
21 तुमने यह सब किया, और मैं चुप रहा, इसलिए तुम्हें लगा कि मैं भी तुम्हारी ही तरह हूँ। लेकिन अब मैं तुम्हें डांटता हूँ और तुम्हारे सामने सारी बात साफ़ कर देता हूँ।

नीतिवचन 6:30,31 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
30 चोर के लिए भूख चोरी करने का बहाना नहीं है;
31 पकड़े जाने पर उसे चोरी का सामान लौटाना ही पड़ता है, भले ही इसके लिए उसे अपना पूरा घर गिरवी रखना पड़े।

आमतौर पर, कानून की अदालत में, कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा किए गए आपराधिक कामों के लिए तब ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है, जब वह उस अपराध में उसका साथी (अकॉम्प्लिस) रहा हो। साथी वह व्यक्ति होता है जो किसी दूसरे व्यक्ति को अपराध करने में मदद करता है, सहायता देता है, या उसे उकसाता है, भले ही वह खुद उस असल आपराधिक काम में सीधे तौर पर शामिल न हो। बिज़नेस सौदों और पैसों के लेन-देन में शामिल होने से पहले बहुत ज़्यादा सावधानी बरतें और अपनी तरफ़ से पूरी जाँच-पड़ताल कर लें। आप अचानक किसी अनपेक्षित स्थिति में फँसना नहीं चाहेंगे। संगठन के सभी कर्मचारियों को सुरक्षा उपायों और कंपनी की मौजूदा नीतियों के बारे में पूरी जानकारी दी जानी चाहिए।

हालाँकि बिज़नेस से जुड़े कई तरह के आपराधिक काम हो सकते हैं, लेकिन हम यहाँ दो मुख्य कामों का ज़िक्र कर रहे हैं:

1) किसी तीसरे पक्ष द्वारा रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार

2) आंतरिक जानकारी के आधार पर व्यापार (इनसाइडर ट्रेडिंग)

किसी तीसरे पक्ष द्वारा रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार

सीधे तौर पर रिश्वत देने या देने की पेशकश करने से बचने के अलावा, किसी बिचौलिए, बिज़नेस पार्टनर, एजेंसी या किसी तीसरी पार्टी को अपनी ओर से परोक्ष रूप से ऐसा करने के लिए शामिल करने से भी बचें। आम तौर पर, ऐसी स्थितियों में, नकद भुगतान, बिना किसी सहायक दस्तावेज़ के भुगतान, किसी अन्य पार्टी के नाम पर भुगतान, शेल कंपनियों और ट्रस्टों को भुगतान आदि की मांग की जाती है। ये बातें किसी प्रकार के अवैध लेन-देन, संभवतः रिश्वत या भुगतान की ओर इशारा करती हैं। सावधान रहें। किसी भी बिज़नेस डील में शामिल होने से पहले पूरी तरह से जांच-पड़ताल कर लें।

आंतरिक जानकारी के आधार पर व्यापार (इनसाइडर ट्रेडिंग)

किसी कंपनी के शेयरों को आंतरिक जानकारी के आधार पर खरीदना या बेचना (जिसे "इनसाइडर ट्रेडिंग" कहा जाता है) कई देशों में एक अपराध है। जिस कंपनी में कर्मचारी काम करते हैं, यदि उनके पास उसी कंपनी के शेयर हैं, तो वे उस कंपनी के शेयरों में व्यापार केवल निर्धारित "ट्रेडिंग विंडो" के दौरान ही कर सकते हैं, या फिर कंपनी से उचित कानूनी अनुमति लेने के बाद ही कर सकते हैं। कंपनी की अंदरूनी जानकारी किसी को भी, जिसमें करीबी परिवार के लोग भी शामिल हैं, यह बताना कि वह व्यक्ति कौन सा स्टॉक खरीदता या बेचता है, उसे "टिपिंग" कहते हैं, और यह भी ज़्यादातर देशों में गैर-कानूनी है।

कर्ज़ चुकाने की हर मुमकिन कोशिश करें

भजन संहिता 37:21
दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं, परन्तु धर्मी अनुग्रह करके दान देता है;

नीतिवचन 22:7
धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।

अपने कामकाज को जारी रखने, विस्तार करने आदि के लिए, संगठन कर्ज़ देने वाली संस्थाओं या अन्य स्रोतों से पैसे उधार ले सकते हैं। अपने कर्ज़दारों को समय पर भुगतान करने की पूरी कोशिश करें।

परमेश्वर पर भरोसा रखें कि वह आपको आशीष की ऐसी स्थिति में पहुँचाएगा जहाँ आप दूसरों को दे सकेंगे और आपको उधार लेने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। *"यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा"* (व्यवस्थाविवरण 28:12)।

करों और वैधानिक देयों का भुगतान करें

रोमियों 13:1-8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

1 हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि कोई भी अधिकार परमेश्वर की अनुमति के बिना नहीं होता, और जो वर्तमान अधिकार हैं, वे भी परमेश्वर ने ही नियुक्त किये हुए हैं।
2 जो कोई मौजूदा अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है; और जो कोई ऐसा करेगा, वह खुद पर दण्ड लाएगा।
3 क्योंकि जो लोग अच्छा काम करते हैं, उन्हें शासकों से डरने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उन्हें डरना चाहिए जो बुरा काम करते हैं। क्या आप चाहते हैं कि आप अधिकारियों से न डरें? तो अच्छा काम करें, और वे आपकी सराहना करेंगे,
4 क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं और आपकी भलाई के लिए काम करते हैं। परन्तु यदि आप बुरा काम करते हैं, तो उनसे डरें, क्योंकि सज़ा देने का उनका अधिकार वास्तविक है। वे परमेश्वर के सेवक हैं और बुरा काम करने वालों को परमेश्वर की ओर से दण्ड देते हैं।
5 इसलिए तुम्हें अधिकारियों की बात माननी चाहिए—सिर्फ़ इसलिए नहीं कि परमेश्वर दण्ड देगा, बल्कि इसलिए भी कि विवेक भी यही गवाही देता है।
6 इसीलिए आप कर भी देते हैं, क्योंकि अधिकारी अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए परमेश्वर के लिए काम कर रहे होते हैं।
7 इसलिये जो कुछ तुम्हारा उन पर बकाया है, उसे चुका दो। उन्हें अपने व्यक्तिगत और संपत्ति कर का भुगतान करो, और उन सभी का सम्मान और आदर करो।
8 आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो। जो कोई ऐसा करता है, उसने व्यवस्था का पालन किया है।

हालांकि, एक व्यक्ति और एक संगठन के तौर पर आपके लिए सभी कानूनी रूप से मान्य छूटों का लाभ उठाना पूरी तरह से सही है, लेकिन बाकी सभी मामलों में हमें नियमों का पालन करना चाहिए। करों और अन्य वैधानिक देयों का भुगतान करने में चूक न करें।

मत्ती 22:17-21 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

17 तो हमें सच-सच बताओ: कैसर को कर देना उचित है कि नहीं?"

[18] यीशु जानता था कि वे कुछ गलत करने की कोशिश कर रहे हैं। उसने कहा, "तुम मेरे साथ ये खेल क्यों खेल रहे हो? तुम मुझे क्यों फंसाने की कोशिश कर रहे हो?
[19] क्या तुम्हारे पास कोई सिक्का है? मुझे दिखाओ।" उन्होंने उसे एक चाँदी का सिक्का दिया।
[20] "यह चाप-यह किसकी तरह दिखती है? और इस पर किसका नाम है?"
[21] उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।" तब उसने उनसे कहा, "जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।"

परमेश्वर आज भी आर्थिक चमत्कार करता हैं; विश्वास करें कि वह ऐसा करेगा

यिर्मयाह 32:27 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
"मैं सब लोगों का परमेश्वर यहोवा हूँ। मेरे लिए कोई भी काम कठिन नहीं है।

परमेश्वर आज भी आर्थिक चमत्कार करता हैं। वह हमारे संगठनों या व्यवसायों की आर्थिक स्थिति में हस्तक्षेप कर सकता हैं, आशीष दे सकता हैं, और हालात को पूरी तरह बदल सकता हैं। विश्वास करें कि वे ऐसा करेगा।

वह परमेश्वर, जिसने अकाल के पूरे समय में तीन लोगों को खिलाने के लिए तेल के एक घड़े और थोड़े से आटे को लगातार बढ़ाया, और जिसने 5000 से ज़्यादा लोगों को खिलाने के लिए पाँच रोटियों और दो मछलियों को बढ़ाया, वही आपके पास मौजूद संसाधनों के साथ भी ऐसा ही कर सकता है (1 राजा 17:13-15; मत्ती 14:15-21)।

जिस परमेश्वर ने एक गरीब विधवा के कर्ज चुकाने के लिए अलौकिक रूप से तेल की आपूर्ति की, वही परमेश्वर कर्ज से मुक्ति दिलाने के लिए आज भी अलौकिक आपूर्ति कर सकता है (2 राजा 4:1-7)।

परमेश्वर अपनी अलौकिक कृपा से बाज़ारों तथा देशों के दरवाज़े

खोल सकता है, और धन को आपकी ओर प्रवाहित कर सकता है (यशायाह 60:5,10; नीतिवचन 13:22)।

वह परमेश्वर, जिसने एक मछली के मुँह में सोने का सिक्का डाला और पतरस को ठीक वही मछली पकड़ने में मदद की, वही आपके लिए भी अलौकिक इंतज़ाम कर सकता है और आपको ऐसे संसाधनों तक पहुँच दिला सकता है जो अन्यथा संभव नहीं होते (मत्ती 17:27)।

जिस परमेश्वर ने पतरस और उसकी टीम को पूरी रात कुछ भी न पकड़ने के बाद भी बहुत बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़वाईं, वही परमेश्वर आर्थिक या बाजार की परिस्थितियों में अलौकिक बदलाव लाकर वृद्धि दे सकता है (लूका 5:1-7)।

मुख्य सिद्धांत

1) परमेश्वर हमें लाभ की ओर ले जाता है।
2) परमेश्वर हमें धन सम्पत्ति कमाने की शक्ति देता है।
3) सफलता परमेश्वर का एक वरदान है।
4) लाभ और उन्नति के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें।
5) अपनी सेवाएँ या उत्पाद उचित मूल्य पर बेचें।
6) उत्पाद या उसकी कीमत के मामले में कुटिलता न करें।
7) बेईमानी के तरीकों से धन कमाने से साफ़ इनकार करें।
8) रिश्वतखोरी और मनी लॉन्ड्रिंग को “ना” कहें।
9) आप दूसरों द्वारा की जाने वाली जबरन वसूली या शोषण को शायद नियंत्रित न कर पाएँ।

10) व्यावसायिक अपराधों में भागीदार न बनें।

11) कर्ज़ चुकाने की हर मुमकिन कोशिश करें।

12) करों और वैधानिक देयों का भुगतान करें ।

13) परमेश्वर आज भी आर्थिक चमत्कार करता हैं; विश्वास करें कि वह ऐसा करेगा!

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- क्या आप व्यक्तिगत तौर पर लाभ के उद्देश्य से और दौलत बनाने की चाहत को लेकर किसी दुविधा में हैं, और सोच रहे हैं कि यह सही है या गलत? आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप लाभ और दौलत बनाने के लिए सही प्रेरणा बनाए रखें हुए है ?
- क्या आपको लगता है कि आपका संगठन आमदनी बढ़ाने के लिए किसी भी तरह के गलत या बेईमानी वाले तरीकों का इस्तेमाल कर रहा है? आप इस बारे में क्या कर सकते हैं?
- रिश्वतखोरी एक आम चुनौती है जिसका सामना ज़्यादातर कारोबारियों को करना पड़ता है, खासकर सरकारी अधिकारियों से बातचीत करते समय। आपका इस बारे में क्या अनुभव रहा है और आपने पहले इस स्थिति से कैसे निपटा है? क्या आपको लगता है कि भविष्य में आप इस समस्या से निपटने के लिए कोई अलग तरीका अपनाएँगे?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

12
रणनीतिक साझेदारियाँ

रणनीतिक साझेदारी एक बेहतरीन तरीका है, जिससे दो संगठन अपनी-अपनी ताकतों का इस्तेमाल करके एक-दूसरे को आगे बढ़ने और अपने लक्ष्यों को पाने में मदद कर सकते हैं। साझेदारियाँ कई तरह के व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए की जा सकती हैं। कुछ उदाहरणों में नए उत्पाद का विकास, तकनीकी विशेषज्ञता का लाभ उठाना, आपूर्तिकर्ता/वितरक, संबद्ध सेवाएँ आदि शामिल हैं।हालांकि रणनीतिक साझेदारियों से दोनों संगठन मज़बूत हो सकते हैं, लेकिन इनमें कई समस्याग्रस्त पहलू भी हो सकते हैं जैसे की मुनाफ़े और खर्चों का बँटवारा, बौद्धिक संपदा का स्वामित्व, टेक्नोलॉजी का हस्तांतरण, कर्मचारियों को अपने यहाँ नौकरी पर रख लेना, और कई अन्य संबंधित मामले। रणनीतिक साझेदारियों में चीज़ों के गलत होने की संभावना को देखते हुए, इन मामलों में सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए; आगे बढ़ने से पहले इन पर अच्छी तरह से विचार किया जाना चाहिए और इन्हें उचित रूप से दस्तावेज़ित किया जाना चाहिए।

इस अध्याय में, हम रणनीतिक साझेदारियों के क्षेत्र से संबंधित पवित्र शास्त्र आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन पर संगठन विचार कर सकते हैं।

बैल और गधा एक साथ हल नहीं जोत सकते

व्यवस्थाविवरण 22:10 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
बैल और गधे को एक साथ जुए में बांधकर खेत न जोतें।

बैल और गधा, दोनों ही खेती-बाड़ी में काम आने वाले जानवर हैं और कुछ खास तरह के कामों में अपनी शारीरिक ताकत दे सकते हैं। हालाँकि, उन्हें खेत जोतने के लिए एक साथ जोड़ना मूर्खता और क्रूरता होगी। इस काम के लिए वे एक-दूसरे के साथ मेल नहीं खाते। इसके अलावा, किया गया काम एकतरफ़ा होगा। बैल ज़्यादा ताकतवर और ताकतवर होने के कारण वज़न उठा लेगा, और गधा सिर्फ़ एक बोझ बन कर रह जाएगा।

इसका सीधा-सा सबक यह है कि किसी भी साझेदारी को सफल बनाने के लिए आपसी तालमेल (कम्पैटिबिलिटी) बहुत ज़रूरी है।

अन्य बातों के अलावा, काम के माहौल, बिज़नेस प्रक्रियाओं, एक-दूसरे की ताकत, उम्मीदों, बिज़नेस और साझेदारी के प्रति समर्पण, मूल्यों, लंबे समय के लक्ष्यों तथा उनके अपने कर्मचारियों के समर्पण के मामले में तालमेल की जाँच करें। साथ ही, बिज़नेस कम्युनिटी में पार्टनर की साख की भी जाँच करें, क्योंकि साझेदारी की वजह से इसका असर आपके संगठन पर भी पड़ेगा। जो पार्टनरशिप एकतरफा होती हैं, वे आमतौर पर सफल नहीं होतीं।

जानें कि आप किसके साथ व्यवहार कर रहे हैं; सभी तथ्य जानने के लिए गहराई से पड़ताल करें

नीतिवचन 27:6

जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वास योग्य हैं परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।

आप आँखें मूंदकर और केवल भरोसे के आधार पर किसी के साथ रणनीतिक साझेदारी नहीं कर सकते। अपनी आँखें खुली रखें। जानें कि आप किसके साथ डील कर रहे हैं। शुरुआती “हनीमून” दौर से आगे बढ़ें और उन असली चीज़ों पर गौर करें जो हर कोई इस

साझेदारी में ला सकता है। चिकनी-चुपड़ी बातों और चापलूसी से दूर रहें। उनके इरादों को ध्यान से देखें। क्या वे सिर्फ़ आपका फ़ायदा उठाने के लिए पार्टनरशिप में हैं, या वे गंभीरता से ऐसा रिश्ता बनाना चाहते हैं जिसमें दोनों साझा लक्ष्यों की दिशा में अर्थपूर्ण रूप से हिस्सा लें सकें?

नीतिवचन 14:15
भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है।

यदि ज़रूरत हो, तो पहले कुछ सामान्य और कम महत्वपूर्ण कामों पर साथ मिलकर काम करके देखिए कि आप दोनों एक-दूसरे के लिए सही हैं या नहीं। यह भी देखें कि सामने वाला व्यक्ति इस साझेदारी के प्रति कितना समर्पित है। ऐसे व्यक्ति के साथ साझेदारी न करें जो केवल साझेदारी से "लेना" चाहता हो, लेकिन उसमें अपना योगदान "देना" न चाहता हो।

"हाँ" कहने से पहले काम करने के तरीके का मूल्यांकन करें

नीतिवचन 1:10-15
10 हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाएँ, तो उनकी बात न मानना।
11 यदि वे कहें, "हमारे संग चल कि हम हत्या करने के लिये घात लगाएँ, हम निर्दोषों की ताक में रहें;
12 हम अधोलोक के समान उनको जीवता, कबर में पड़े हुओं के समान समूचा निगल जाएँ।
13 हम को सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे, हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे;
14 तू हमारा साझी हो जा, हम सभों का एक ही बटुआ हो,"
15 तो हे मेरे पुत्र, तू उनके संग मार्ग में न चलना, वरन् उनकी डगर में पाँव भी न रखना।

आप किसी काम को किस तरह पूरा करते हैं, यह बहुत मायने

रखता है। उद्देश्य साधनों को सही नहीं ठहरा सकता। सिर्फ़ मुनाफ़ा कमा लेना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि हम इसे कैसे पाते हैं, यह भी उतना ही ज़रूरी है। यदि लोग आपको अपने साथ साझेदारी के लिए बुलाते हैं, लेकिन वे अपने काम करने के तरीके में बेईमान हैं या उनके काम करने का तरीका बिल्कुल अलग है, तो ऐसी साझेदारी को मना करने की हिम्मत करें।

विलय तथा अधिग्रहण में संस्कृति और मूल्यों के तालमेल की जाँच करें

मरकुस 3:24,25

24 यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है?
25 और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?

श्रेष्ठगीत 2:15

जो छोटी लोमड़ियाँ दाख की बारियों को बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले, क्योंकि हमारी दाख की बारियों में फूल लगे हैं।"

दो संगठनों का विलय या किसी एक संगठन का दूसरे द्वारा अधिग्रहण, दो परिवारों के एक ही छत के नीचे रहने जैसा है। यह दो घरों को एक कर रहा है। अक्सर, विलय और अधिग्रहण के कुछ रणनीतिक लाभों पर ही ध्यान केंद्रित किया जाता है; कुछ छोटी-मोटी भिन्नताएँ नज़रअंदाज़ हो जाती हैं। ये ही वे "छोटी लोमड़ियाँ" हैं जिन्हें पकड़ने की ज़रूरत है। नहीं तो, ये "छोटी लोमड़ियाँ" बेल को खराब कर सकती हैं और जो अच्छा हो रहा है उसे नष्ट कर सकती हैं। संगठनात्मक कार्य-संस्कृति और संगठनात्मक मूल्य ऐसे प्रमुख तत्व हैं जिन पर अक्सर ऐसे निर्णयों के दौरान ध्यान नहीं दिया जाता। संस्कृति और मूल्यों में तालमेल होना अनिवार्य है, अन्यथा, आप एक "बेमेल" विलय या अधिग्रहण में फँस जाएँगे। बँटे हुए घर टूटने की बहुत संभावना होती है।

सहमति महत्वपूर्ण है; हर बात को लिखित रूप में रखें

आमोस 3:3
यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों; तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?

एक बार जब स्पष्टता आ जाए और तालमेल का पक्का एहसास हो जाए, तो आप बारीकियों पर चर्चा करके और उन पर सहमत होकर एक रणनीतिक साझेदारी के साथ आगे बढ़ने का फ़ैसला कर सकते हैं। साझेदारी कैसे आगे बढ़ेगी, इस बारे में व्यावहारिक मुद्दों पर आपसी समझ और सहमति पर पहुँचें। फिर, साझेदारी शुरू करने से पहले, यह सुनिश्चित कर लें कि सब कुछ किसी कॉन्ट्रैक्ट या कानूनी रूप से बाध्यकारी दस्तावेज़ में लिखित रूप में दर्ज हो। साझेदारी के लिए मानक दस्तावेज़ उपलब्ध हैं, जिनमें उन सभी क्षेत्रों को शामिल किया जाता है जिन पर सहमति बनना और जिन्हें दस्तावेज़ में दर्ज करना ज़रूरी होता है।

व्यावसायिक साझेदारियाँ धीरे-धीरे और मज़बूती से बनाएँ

नीतिवचन 25:17 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
और जब आपको कोई मित्र मिल जाए, तो उसकी मेहमाननवाज़ी का फ़ायदा न उठाएँ; बारम्बार उसके यहाँ जाने लगेंगे तो वह जल्द ही तंग आ जाएगा।

साझेदारी भी शादी की तरह ही होती है, जिसे बनने में समय लगता है। इसमें कुछ मुश्किल दौर, अचानक आने वाली चुनौतियाँ और दूसरी ऐसी बातें आ सकती हैं, जिन्हें साझेदारी को सफल बनाने के लिए सुलझाना ज़रूरी होता है। इस पर लगातार, सावधानी से और धैर्य से काम करें। रणनीतिक साझेदारियाँ सीमाओं की साफ़ समझ के साथ तय की जानी चाहिए, कि क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं, तथा इनमें ढलने की भावना और आपसी समझ होनी चाहिए।

साझेदारी को सफल बनाने के लिए सभी को साथ लाएँ

उत्पत्ति 13:1-7 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

1 अब्राम अपनी पत्नी और अपनी सारी संपत्ति लेकर मिस्र से निकलकर कनान के दक्षिणी हिस्से में गया, और लूत भी उसके साथ गया।

2 अब्राम बहुत धनी था; उसके पास भेड़ें, बकरियाँ और मवेशी थे, साथ ही सोना-चाँदी भी था।

3 फिर वह वहाँ से चला गया और एक जगह से दूसरी जगह जाता हुआ बेतेल की ओर चला गया। वह बेतेल और ऐ के बीच उसी स्थान पर पहुँचा जहाँ उसने पहले डेरा डाला था

4 और एक वेदी बनाई थी। वहाँ उसने यहोवा की आराधना की।

5 लूत के पास भी भेड़-बकरियां और मवेशी थे, साथ ही उसका अपना परिवार और नौकर भी थे।

6 इसलिये उस देश में उन दोनों के लिए पर्याप्त स्थान न था कि वे इकट्ठे रहें, क्योंकि उनके पास बहुत ज़्यादा जानवर थे।

7 अब्राम और लूत की भेड़–बकरी और गाय–बैल के चरवाहों के बीच झगड़े शुरू हो गए। (उस समय कनानी और परिज्जी लोग भी उस देश में रहते थे।)

अब्राम और उसके भतीजे लूत ने एक साथ एक अद्‌त यात्रा शुरू की। शायद दोनों बहुत उत्साहित थे। दोनों अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिए बेताब थे, एक ऐसी जगह जहाँ बहुत उम्मीदें थीं। दोनों ही अपने-अपने तरीके से पहले से ही बहुत मज़बूत और कामयाब थे। फिर भी, जैसे ही उन्होंने यात्रा शुरू की, उनके कर्मचारियों के बीच समस्याएं पैदा हो गईं। उनके कर्मचारी आपस में मिलकर नहीं रह पा रहे थे। वे अब साथ में यात्रा नहीं कर सकते थे।

एक रणनीतिक व्यावसायिक साझेदारी का मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि संगठनों के वरिष्ठ नेता मिलकर कुछ करने पर सहमत हो जाएँ। अगर इसमें शामिल बाकी लोग साथ नहीं आये, तो साझेदारी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए, दो संगठनों के बीच रणनीतिक साझेदारी को सफल बनाने की एक अहम कुंजी यह है कि दोनों पक्षों से जुड़े सभी लोगों के बीच तालमेल बिठाने में मदद की जाए। सभी लोगों का साथ

होना ज़रूरी है।

जब आवश्यक हो, तो छोड़ देना सीखें

उत्पत्ति 13:8,9 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

8 तब अब्राम ने लूत से कहा, "हम लोग भाई–बन्धु हैं, इसलिए तुम्हारे और मेरे चरवाहों के बीच झगड़ा नहीं होना चाहिए।
9 तो चलो अलग हो जाते हैं। ज़मीन का जो भी हिस्सा तुम चाहो, चुन लो। तुम एक तरफ़ चले जाओ, और मैं दूसरी तरफ़ चला जाऊँगा।"

सभी रणनीतिक व्यावसायिक साझेदारियाँ सफल नहीं होतीं। असल में, ज़्यादातर सफल नहीं होतीं। एक महत्वपूर्ण निर्णय यह है कि जब ज़रूरी हो, तब जाने देना चाहिए। अगर चीज़ें ठीक से काम नहीं कर रही हैं, तो अलग हो जाएँ और अपने-अपने रास्ते चल दें। जहाज़ डूबने से पहले ही ऐसा कर लें।

यदि संभव हो, तो विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाएँ

नीतिवचन 25:8-10

8 झगड़ा करने में जल्दी न करना नहीं तो अन्त में जब तेरा पड़ोसी तेरा मुँह काला करे तब तू क्या कर सकेगा?
9 अपने पड़ोसी के साथ वादविवाद एकान्त में करना, और पराये का भेद न खोलना,
10 ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी भी निन्दा करे, और तेरी निन्दा बनी रहे।

जब रणनीतिक साझेदारियों में विवाद उत्पन्न हों, तो मामलों को शांतिपूर्वक सुलझाने का हर संभव प्रयास करें। एक बार मामला सुलझ जाने पर, चुप रहना सीखें और इसमें शामिल दूसरे पक्ष की गलतियों या कमियों को सार्वजनिक न करें।

मत्ती 5:25,26 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

25 "अगर कोई तुम पर मुक़दमा करता है और तुमको अदालत ले जाता है, तो अदालत पहुँचने से पहले ही, जब तक समय है, झटपट मेल मिलाप कर ले। एक बार वहाँ पहुँचने पर, तुमको हाकिम के हवाले कर दिया जाएगा, जो

तुमको पुलिस को सौंप देगा, और आपको जेल में डाल दिया जाएगा।
26 मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक तुम अपने जुर्माने का आखिरी पैसा चुका
नहीं देते, तब तक तुम वहाँ रहोगे।

रोमियों 12:17,18 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
17 यदि किसी ने तुम्हारे साथ बुरा किया है, तो बदले में उसके साथ बुरा मत
करो। वह काम करने की कोशिश करो जिसे सब भला मानते हों।
18 सबके साथ मेल मिलाप से रहने के लिए अपनी तरफ़ से हर मुमकिन
कोशिश करो।

मुख्य सिद्धांत

1) बैल और गधा एक साथ हल नहीं जोत सकते।
2) जानें कि आप किसके साथ व्यवहार कर रहे हैं; सभी तथ्य जानने के लिए गहराई से पड़ताल करें।
3) "हाँ" कहने से पहले काम करने के तरीके का मूल्यांकन करें।
4) विलय तथा अधिग्रहण में संस्कृति और मूल्यों के तालमेल की जाँच करें।
5) सहमति महत्वपूर्ण है; हर बात को लिखित रूप में रखें।
6) व्यावसायिक साझेदारियाँ धीरे-धीरे और मज़बूती से बनाएँ।
7) साझेदारी को सफल बनाने के लिए सभी को साथ लाएँ।
8) जब आवश्यक हो, तो छोड़ देना सीखें।
9) यदि संभव हो, तो विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाएँ।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- उन कुछ चुनौतियों की कल्पना करें जो तब सामने आ सकती हैं, जब काम करने के तरीके, संस्कृति और मूल्यों में भारी अंतर रखने वाले दो संगठन किसी रणनीतिक साझेदारी में शामिल होते हैं।
- ऐसे कौन से संकेत हैं जो यह बताते हैं कि दो संगठनों के बीच की रणनीतिक साझेदारी ठीक से काम नहीं कर रही है और अब अलग होने पर विचार करने का समय आ गया है?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

13
नेतृत्व

नेतृत्व, अन्य बातों के अलावा, एक प्रभाव है। अपने मिशन में सफल होने के लिए संगठनों को आमतौर पर मज़बूत अगुओं की आवश्यकता होती है। नेतृत्व का पद कमाया जा सकता है, सौंपा जा सकता है, या कुछ मामलों में विरासत में भी मिल सकता है; लेकिन उस नेतृत्व से क्या परिणाम निकलता है, यह पूरी तरह से अगुए की इस क्षमता पर निर्भर करता है कि वह लोगों को किसी एक साझा लक्ष्य की ओर कितना प्रभावित कर पाता है।

संगठनात्मक नेतृत्व, नेतृत्व के गुणों और नेतृत्व के व्यवहार पर कई अध्ययन और सिद्धांत उपलब्ध हैं। इस अध्याय में, हम पवित्र शास्त्र में प्रस्तुत नेतृत्व के आवश्यक सिद्धांतों की समीक्षा करेंगे।

यदि आप स्वयं नहीं देख पा रहे है, तो आप लोगों का नेतृत्व इसमें नहीं कर सकेंगे

मत्ती 15:14
उन को जाने दो; वे अंधे मार्गदर्शक हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों ही गड़हे में गिर पड़ेंगे।

न्यायियों 21:25
उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।

अगुवे लोगों को एक साथ आने और एक साझा लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। हर व्यक्ति के दिशाहीन होकर आगे बढ़ने के बजाय, अगुवे एक इच्छित भविष्य का दर्शन और वहाँ

तक पहुँचने का रास्ता दिखाते हैं, और फिर लोगों को उस यात्रा में मदद कर पाते हैं। इसलिए, यह बात साफ़ है कि नेतृत्व के लिए एक दर्शन होना ज़रूरी है। नेतृत्व के लिए भविष्य को देखने और अपेक्षित नतीजों की कल्पना करने की क्षमता होनी चाहिए। बिना दर्शन वाला अगुवा असल में अंधा होता है। अगर कोई अंधा अगुआ दूसरों का नेतृत्व करने की कोशिश करता है, तो इस बात की पूरी संभावना है कि वे कहीं भी नहीं पहुँच पाएँगे।

हृदय का सही दृष्टिकोण बनाए रखें

मत्ती 20:25-28 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

25 इसलिए यीशु ने उन्हें एक साथ बुलाया ताकि मामला सुलझा सकें। उसने कहा, "तुमने देखा है कि कैसे अन्यजातीय शासक अपनी प्रभुता दिखाते हैं, और कैसे थोड़ी सी सत्ता मिलते ही वे घमंडी हो जाते हैं।
26 तुम्हारे साथ ऐसा नहीं होगा। जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहता है, उसे सेवक बनना होगा।
27 जो कोई तुममें प्रधान होना चाहता है, उसे सबका दास बनना होगा।
28 मनुष्य के पुत्र ने भी यही किया है: वह सेवा करने आया, न कि सेवा करवाने - और फिर बहुत से लोगों को छुड़ाने के लिए अपना प्राण देने आया।"

हम किसी भी परिवेश में, फिर वह चाहे कोई व्यवसाय हो या कोई गैर-लाभकारी संगठन हो, दैवीय नेतृत्व के लिए हृदय के तीन मुख्य दृष्टिकोणों पर ज़ोर देना चाहेंगे: सेवाभाव, जुनून और आत्म-संयम।

सेवाभाव

अगुआ का हृदय एक सेवक का होता है। वह उन लोगों की सेवा करता है जिनका वह नेतृत्व करता है। वह संगठन को वहां ले जाने में मदद करता है जहां उसे जाना चाहिए। वह ग्राहकों और संगठन से जुड़े अन्य लोगों की सेवा करता है। सेवाभाव विनम्रता, नम्रता, त्याग और सेवा के ज़रिए व्यक्त होता है। प्रभु यीशु मसीह ने हमारे सामने

सेवाभाव का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया।

फिलिप्पियों 2:3-11 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
3 स्वार्थ या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, बल्कि नम्र बनो और एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।
4 अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करो।
5 तुम में वैसा ही स्वाभाव हो जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था:
6 वह हमेशा से परमेश्वर के स्वरूप में था, फिर भी परमेश्‌वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।
7 इसके बजाय, उसने अपनी मर्ज़ी से अपना सब कुछ छोड़ दिया, और एक सेवक का रूप धारण किया। वह एक मनुष्य की तरह बन गया और मनुष्य के रूप में प्रगट हुआ।
8 वह दीन था और मृत्यु तक—यानी क्रूस पर अपनी मृत्यु तक—आज्ञाकारी रहने का मार्ग अपनाया।
9 इसी वजह से परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।
10 और इसलिए, यीशु के नाम पर स्वर्ग, पृथ्वी और पृथ्वी के निचे के सभी प्राणी अपने घुटनों टेकेंगे,
11 और पिता परमेश्वर की महिमा के लिए, सब खुलकर अंगीकार करेंगे कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं।

याकूब 3:13 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
क्या तुम में कोई बुद्धिमान और समझदार है? आपको इसे अपने अच्छे चालचलन और विनम्रता व बुद्धिमानी से किए गए अच्छे कामों से साबित करना चाहिए।

नीतिवचन 29:23
मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है, परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है।

जूनून

एक अगुवे में संगठन के दर्शन और उसके मकसद को लेकर जूनून होना चाहिए। एक अगुवे का जूनून उसके काम करने के जोश से पता

चलता है। उसका जुनून उसकी कड़ी मेहनत से, मुश्किल समय में भी दर्शन में बने रहने की काबिलियत से, और दर्शन को पूरा करते समय मिलने वाली खुशी, उत्साह और मज़े की भावना से दिखाई देता है। एक अगुवे का जुनून और उत्साह दूसरों में भी फैल जाता है। इससे दूसरों को प्रेरणा मिलती है। यह उन लोगों में नई ऊर्जा भर देता है, जो उसके संपर्क में आते हैं। अगुवे जानते हैं कि इस आग को हर समय कैसे तेज़ और मज़बूत बनाए रखना है। वे खुद को मज़बूत बनाए रखने के लिए परमेश्वर की ताकत, उसकी बुलाहट और उसके द्वारा दी गई शक्ति का इस्तेमाल कर सकते हैं।

रोमियों 12:11,12 ('द मेसेज' से उद्धरित)
11 थककर हिम्मत न हारो; जोश और उत्साह बनाए रखो। स्वामी के चौकस सेवक बनो,
12 आशा में आनन्दित रहो; कठिन समय में हार न मानो; और भी ज़्यादा प्रार्थना करते रहो।

आत्म-संयम

आत्म-संयम, स्वयं पर शासन करने की वह क्षमता है जो आत्म-अनुशासन और आत्म-नियंत्रण के ज़रिए दिखाई देती है। एक अगुवे के पास हर समय कोई ऐसा नहीं होता जो उस पर नज़र रखे और उसे बताए कि उसे क्या करना है। इसलिए, एक अगुवे के लिए यह ज़रूरी है कि वह स्व- शासित हो। वह स्वयं पर, अपने समय पर, अपने काम पर, अपनी आदतों पर, अपनी उत्पादकता पर, लोगों के साथ अपने मेल-जोल पर, संसाधनों के इस्तेमाल पर, और भी बहुत सी चीज़ों पर नज़र रखता है।

सबसे महान मसीही अगुवों में से एक, प्रेरित पौलुस ने अपने बारे में यह कहा था, *"परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ"* (1 कुरिन्थियों 9:27)।

नीतिवचन 17:27
जो सम्भलकर बोलता है, वह ज्ञानी ठहरता है, और जिसकी आत्मा शान्त रहती है, वही समझवाला पुरुष ठहरता है।

नीतिवचन 29:11
मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल देता है, परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर देता है।

याकूब 1:19,20 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
[19] हे मेरे प्रिय मित्रों, यह बात तुम जान लो : हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में और क्रोध में धीमा होना चाहिए।
[20] मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्मी उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकता।

लोगों से व्यवहार का उचित कौशल बनाये रखें

नीतिवचन 20:28 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
प्रेम और सच्चाई से एक अच्छा अगुवा बनता है; मज़बूत नेतृत्व समर्पित ईमानदारी पर टिका होता है।

नीतिवचन 14:28 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
एक अच्छे नेता की पहचान वफादार अनुयायियों द्वारा होती हैं; बिना अनुयायियों के नेतृत्व कुछ भी नहीं है।

नीतिवचन 3:3,4
[3] कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ; वरन् उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।
[4] तो तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

नेतृत्व लोगों के बारे में होता है। चूँकि नेतृत्व में दर्शन, लक्ष्य, योजना, दिशा, ज़िम्मेदारी, फ़ैसले लेना, अच्छा शासन और दूसरी चीज़ें शामिल हैं, इसलिए नेतृत्व लोगों के बारे में ही होता है। यदि लोग पीछे न चलें, तो नेतृत्व हो ही नहीं सकता।

अगुवों को अपने कौशल में एक मज़बूत मानवीय पहलू भी रखना चाहिए। लोगों के प्रति सच्ची दिलचस्पी, दया और देखभाल रखना ज़रूरी है। लोग रोबोट या मशीन नहीं हैं जो सिर्फ़ वही करें जो उन्हें करने को कहा जाए। लोगों की अपनी भावनाएं और ज़रूरतें होती हैं जिन्हें वे अपने साथ कार्यक्षेत्र पर ले जाते हैं।

लोगों के साथ काम करने के लिए संवेदनशीलता चाहिए; उनकी भावनाओं, उनकी चुनौतियाँ और उनके नज़रिए के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। अच्छे अगुए हर व्यक्ति का सम्मान करते हैं, चाहे संगठन में उसका पद या जिम्मेदारी कोई भी हो। अच्छे अगुवे हर व्यक्ति में खासियत देखते हैं और उसकी सराहना करते हैं। अगुवे लोगों को महत्व देते हैं। अगुवे सकारात्मक होते हैं; वे लोगों को प्रेरित करते हैं और उनका मनोबल बढ़ाते हैं। अगुवे लोगों का हौसला बढ़ाते हैं। वे जानते हैं कि लोगों को ज़रूरी हिम्मत देने के लिए सही शब्द कैसे बोलने हैं। अगुवे लोगों को गढ़ते हैं। वे लोगों को बनाते हैं। वे लोगों के विकास और तरक्की के अवसर पैदा करके उन्हें सशक्त बनाते हैं। अगुवे स्वयं में सुरक्षित होते हैं और इसलिए, लोगों को सोचने, फैसला करने और खुद से काम करने की आज़ादी देते हैं। अच्छे अगुवे लोगों को नियंत्रित नहीं करते और न ही उनके साथ कोई हेर-फेर करते हैं। अच्छे अगुवे लोगों के साथ बिना किसी पक्षपात या भेदभाव के निष्पक्ष व्यवहार करते हैं। लोगों की भलाई के लिए अगुवे उन्हें प्यार से सुधारते हैं। अच्छे अगुवे सचमुच अपने लोगों के लिए, उनकी भलाई के लिए, उनके परिवारों के लिए, उनके जीवन के लक्ष्यों के लिए, उनके हितों के लिए, आदि के लिए समर्पित होते हैं। लोगों को उनके बेहतरीन रूप में देखकर अच्छे अगुवे खुश होते हैं।

नीतिवचन 29:2 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
मुझे एक धर्मी शासक (अगुवा) **दिखाओ और मैं तुम्हें आनन्दित प्रजा दिखाऊंगा। मुझे एक दुष्ट शासक दिखाओ और मैं तुम्हें दुखी प्रजा दिखाऊंगा।**

यदि सिर ठीक नहीं है, तो शरीर भी ठीक नहीं होगा

नीतिवचन 29:12 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
जब कोई अगुवा बुरी गपशप की ओर कान लगता है, तो सभी कर्मचारी बुराई से प्रभावित हो जाते हैं।

कुछ मायनों में, नेतृत्व एक प्रकार का 'शीर्ष-पद' है, जो मानव शरीर में 'सिर' की भूमिका और कार्य के समान है। भले ही शरीर एकदम ठीक-ठाक हो, परन्तु यदि सिर में किसी तरह की खराबी आ जाए, तो शरीर का बाकी हिस्सा भी प्रभावित होता है, कभी-कभी तो पूरी तरह से बेकार हो जाता है। यदि अगुवा सही नहीं है—यानी यदि उसकी प्रेरणाएँ, निर्णय या कार्य सही नहीं हैं—तो इसका असर बाकी लोगों पर भी बहुत जल्द दिखाई देने लगता है। कभी कभी अगुआ ईमानदार तो हो सकता है, लेकिन गलत प्रकार के लोगों और गलत विचारों से प्रभावित हो सकता है, और इसका प्रभाव उन सब लोगों पर पड़ सकता है जिनका वह नेतृत्व करता है।

इसलिए एक अगुवे के तौर पर, हमारे अंदर स्वयं को सुरक्षित रखने और खुद पर नज़र रखने की एक मज़बूत भावना होनी चाहिए, ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि हम सही रास्ते पर हैं। अगुवे के तौर पर, हमें अपनी ज़िंदगी में सही तरह के लोगों की ज़रूरत होती है जो हमें सही रास्ते पर बनाए रखें।

नीतिवचन 25:5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
बुरे सलाहकारों को राजा से दूर रखें और उसकी सरकार अपने न्याय के लिए जानी जाएगी।

ईमानदारी दिखाएँ, उस पर ज़ोर दें, उसे सशक्त बनाएँ और उसका जश्न मनाएँ

नीतिवचन 16:12,13 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
12 अच्छे अगुवे हर तरह की दुष्टता से घृणा करते हैं; मजबूत नेतृत्व की नींव

धार्मिकता ही से स्थिर रहती है।
13 अच्छे अगुवे ईमानदारी से बात बोलने की आदत डालते हैं; वे ऐसे सलाहकारों से प्रेम रखते है जो उन्हें सच बताते हैं।

नीतिवचन 18:5
दुष्ट का पक्ष करना, और धर्मी का हक़ मारना, अच्छा नहीं है।

नीतिवचन 28:18 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
ईमानदार रहो और तुम सुरक्षित रहोगे। अगर तुम टेढ़ी चाल चलोगे, तो अचानक गिर पड़ोगे।

ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और दूसरे मुख्य मूल्य नेतृत्व से शुरू होकर पूरे संगठन में फैलते हैं। यदि अगुवा ईमानदार है, स्वयं ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत करता है, इस पर ज़ोर देता है, लोगों को ईमानदार बनने के लिए प्रोत्साहित करता है, और ईमानदारी का सम्मान करता है, तो संगठन के बाकी लोग भी उसका अनुसरण करेंगे।

आज की दुनिया में, ईमानदार होना कभी-कभी जोखिम भरा होता है। जो लोग ईमानदार होते हैं, उन पर दूसरे लोग पलटवार कर सकते हैं। अगुवे उन लोगों की रक्षा करें जो ईमानदार हैं और जो बेईमान लोगों के बदले की भावना का शिकार होने का जोखिम उठा रहे हैं। ईमानदार लोगों की ईमानदारी का जश्न मनाकर और उनकी रक्षा करके उन्हें मज़बूत बनाएं। ईमानदार लोगों को कभी भी अपनी ईमानदारी के लिए कमज़ोर या दण्डित महसूस न होने दें। इसी तरह, एक अगुवे के तौर पर, कुछ लोग आपकी ईमानदारी और सीधे रास्ते पर चलने के कारण आपसे नफ़रत करेंगे। कुछ लोग ऐसे होंगे जो आपके साथ खड़े रहेंगे। इसके बावजूद, ईमानदार बने रहें।

नीतिवचन 17:26 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
किसी बेगुनाह व्यक्ति पर जुर्माना लगाना सही नहीं है; जब अच्छे लोगों को सज़ा मिलती है तो न्याय बिगड़ जाता है।

नीतिवचन 29:10 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
खून के प्यासे लोग ईमानदार व्यक्ति से नफ़रत करते हैं, परन्तु धर्मी लोग ऐसे व्यक्ति की जान बचाएँगे।

आपका रवैया या तो बिगाड़ता है या उत्साह भरता है; लोग आपके रवैये को या तो सहन करते हैं या उसकी सराहना करते हैं

नीतिवचन 16:14,15 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
14 क्रोधी स्वभाव वाला अगुवा लोगों की ज़िंदगी बर्बाद कर देता है; ऐसे व्यक्ति से दूर रहना ही समझदारी है।
15 अच्छे स्वभाव वाला अगुवा लोगों के जीवन में नई जान डाल देता हैं; वह बसंत की वर्षा और धूप की तरह होता हैं।

आपका रवैया तुरंत नज़र आ जाता है। आपका रवैया दूसरों पर असर डालता है, चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं। एक अगुवे के तौर पर, आपका रवैया आपके साथ काम करने वालों को या तो बर्बाद कर देता है या उन्हें उत्साहित करता है। आपका रवैया लोगों को ताज़गी और प्रेरणा देता है, या फिर उनके उत्साह को ठंडा करके पूरी तरह खत्म कर देता है। लोग आपसे जितना हो सके बचने की कोशिश करते हैं, या बस आपके बुरे रवैये को बर्दाश्त कर लेते हैं। यदि आप अगुआ हैं, तो उनके पास अधिक विकल्प नहीं होता। हालाँकि, आपका अच्छा रवैया लोगों को आपकी ओर खींचता है। लोग आपकी तारीफ़ करते हैं और आपके आस-पास रहना पसंद करते हैं। वे आपसे प्रेरणा और हौसला पाने के लिए आपके पास आते हैं। हमेशा सकारात्मक रहें! अपना रवैया हमेशा बेहतरीन बनाए रखें!

वास्तविक रहें, ज़मीन से जुड़े रहे, दिखावा करने से बचें

नीतिवचन 13:7 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
दिखावटी जीवन खोखला जीवन है; जबकि सादा और सरल जीवन ही सार्थक जीवन है।

नीतिवचन 12:9 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
बड़े होने का दिखावा करने और भूखे मरने के बजाय, साधारण बनकर अपनी जीविका के लिए काम करना बेहतर है।

1 पतरस 5:5,6 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
5 और तुम जो जवान हो, अपने अगुवों के अधीन रहो। परन्तु तुम सब के सब, अगुवे और अनुयायी, एक दूसरे के साथ विनम्र रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है। वह दीनों से आनंदित होता है।
6 इसलिए तुम जैसे हो, उसी में संतुष्ट रहो, और दिखावा मत करो। परमेश्वर का बलवंत हाथ तुम पर है; वह योग्य समय पर तुम्हें ऊँचा उठाएगा।

नेतृत्व कोई "शो बिजनेस" नहीं है। एक अगुआ भी एक सामान्य मनुष्य ही होता है, किसी दूसरे ग्रह से आया कोई महामानव नहीं। इसलिए सबसे अच्छा यही है कि आप वास्तविक रहे, ज़मीन से जुड़े हुए रहें और दिखावा करने से बचें। अपने आप को किसी ऊंचे स्थान पर न रखें। लोगों के लिए सुलभ रहें। उनसे आसानी से मिला जा सके, ऐसे बनें। हँसें। रोएँ। सामान्य रहें। आपका असली और सामान्य होना ही लोगों को प्रेरित करेगा। लोगों को यह समझ आ जाएगा कि वे भी वही कर सकते हैं जो आप करते हैं, वे भी वैसे ही बन सकते हैं जैसे आप हैं; और जब उन्हें यह पता चलेगा कि आप भी बस एक आम इंसान हैं, तो वे भी उस राह पर चलना शुरू कर देंगे।

दूसरी ओर, वास्तविक और ज़मीन से जुड़ा होने का मतलब यह नहीं है कि आप अनुशासन, प्रदर्शन, नैतिकता, मानकों और मूल्यों के मामले में समझौता करके सबसे निचले स्तर पर उतर जाएँ। इन सभी क्षेत्रों में ऊँचे मानक बनाए रखें, और फिर भी, एक मनुष्य के तौर पर सामान्य बने रहें। गलत तरह के मेल-जोल से सावधान रहें, जहाँ लोग आपको अब गंभीरता से नहीं लेते। तब आपकी बातों का कोई खास मतलब नहीं रह जाएगा।

आप अपनी टीम को जैसा बनाना चाहते हैं, वैसे स्वयं बनें— उदाहरण बनकर नेतृत्व करें

नहेमायाह 5:14,15,18

14 फिर जब से मैं यहूदा देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष से ले उसके बत्तीसवें वर्ष तक, बारह वर्ष, मैं और मेरे भाईयों ने अधिपति के हक़ का भोजन नहीं खाया।
15 परन्तु पिछले अधिपति जो मुझ से पहले थे, वे प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इसके साथ चालीस शेकेल चाँदी लेते थे, वरन् उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था।
18 जो प्रतिदिन के लिये तैयार किया जाता था वह एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें या बकरियाँ थीं, और मेरे लिये चिड़ियें भी तैयार की जाती थीं; दस दस दिन के बाद भाँति भाँति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; तौभी मैं ने अधिपति के हक़ का भोज नहीं लिया, क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था।

नहेम्याह एक आदर्श अगुवा था। जब वह प्रभारी था, तब समय बहुत कठिन था। लोग अभी भी अपने निर्वासन और विस्थापन के दौर से उबर रहे थे और अपने जीवन को फिर से संवार रहे थे। इस दौरान, नहेम्याह ने स्वेच्छा से 12 वर्षों तक राज्यपाल के तौर पर मिलने वाले अपने विशेषाधिकारों का आनंद लेने और उनका उपयोग करने से खुद को दूर रखा। उसने यह निर्णय व्यक्तिगत रूप से लिया। जब ज़रूरत पड़ी, तो वह लोगों को अपने कम विशेषाधिकार प्राप्त साथी नागरिकों के लाभ के लिए इसी तरह के त्याग करने की चुनौती दे सकता था। और लोगों ने खुशी-खुशी ऐसा किया, क्योंकि उन्होंने नहेम्याह के जीवन का उदाहरण देखा था। आप अपने लोगों को जैसा बनाना चाहते हैं, पहले स्वयं वैसे बनें। उदाहरण बनकर नेतृत्व करें। आपके जीवन का उदाहरण सबसे ज़ोर से बोलता है।

प्रेरित पौलुस ने लोगों को अपने जीवन के उदाहरण का अनुसरण करने की चुनौती दी।

1 कुरिन्थियों 11:1 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
तो फिर तुम भी मेरा अनुकरण करो, जैसे मैं मसीह का अनुकरण करता हूँ।

फिलिप्पियों 4:9 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं हैं, चाहे वे मेरी बातों से हों या मेरे कामों से, उनका पालन किया करो। और परमेश्वर जो हमें शान्ति देता है, तुम्हारे साथ रहेगा।

पहले सारे तथ्य पता करें, फिर कोई कदम उठाएँ

नीतिवचन 13:16
सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं, परन्तु मूर्ख अपनी मूढ़ता फैलाता है।

कभी-कभी, एक अगुवे के तौर पर, हम अपनी "अंतरात्मा की आवाज़" पर निर्भर रहने लगते हैं। हम वही करते हैं जो हमें सही लगता है, या जो हमें सहज रूप से सही लगता है। पहले तथ्य जानना और फिर किसी फैसले पर पहुंचना ज़्यादा बेहतर है। सही जानकारी का इस्तेमाल करें। जहां उपलब्ध हो वहां डेटा का इस्तेमाल करें। जब लोगों से जुड़े किसी मामले पर कार्रवाई कर रहे हों, तो संबंधित लोगों की बात सुनें, और फिर फ़ैसला करें।

नीतिवचन 18:13 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
उत्तर देने से पहले सुनो। अगर तुम ऐसा नहीं करते हैं, तो तुम मूर्खतापूर्ण तथा अपमानजनक व्यवहार कर रहे हो।

सच्ची और खरी प्रतिक्रिया (फीडबैक) दें

नीतिवचन 28:23 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
किसी की गलती सुधारो, और वह बाद में इसे झूठी प्रशंसा से अधिक पसंद करेगा।

यह मानकर न चलें कि लोगों को पता है कि आप उनसे क्या उम्मीद करते हैं। उन्हें बताएं। इसी तरह, अगर कोई काम सही से नहीं

हो रहा है, तो उन्हें बताएं। जिन क्षेत्रों में लोग कम पड़ रहे हैं, उन पर ईमानदारी से प्रतिक्रिया देना आसान नहीं है। कभी-कभी, इस तरह की बातचीत या आमना-सामना शुरू में लोगों को अच्छा नहीं लगता, परन्तु एक अगुवे के तौर पर, यह व्यक्ति के विकास और संगठन की भलाई के लिए आपकी ज़िम्मेदारी का ही एक हिस्सा है। लोगों को आखिरकार यह समझ आ जाएगा कि आपने यह सब उनकी भलाई के लिए ही किया था, और वे आपके दिए गए प्रतिक्रिया की सराहना करेंगे।

सुधार और प्रतिक्रिया सही समय पर दिए जाने चाहिए। जब भी आप नोटिस करें, या उसके तुरंत बाद ही प्रतिक्रिया दें। प्रतिक्रिया देने के लिए पूरे एक साल तक, यानी वार्षिक कार्य प्रदर्शन मूल्यांकन (सालाना परफ़ॉर्मेंस अप्रेज़ल) का इंतज़ार न करें। सही समय पर प्रतिक्रिया देने से लोग खुद को तुरंत सुधार पाते हैं, और इस तरह, वे अपने काम में और भी बेहतर सुधार कर पाते हैं।

जो लोग आपकी बात पर ध्यान नहीं देते, उन पर अपने शब्द बर्बाद न करें

नीतिवचन 25:12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
किसी अनुभवी व्यक्ति द्वारा बात माननेवाले व्यक्ति को दी गई चेतावनी, सोने की अंगूठियों या सबसे शुद्ध सोने से बने गहनों से भी अधिक मूल्यवान होती है।

जो लोग सुनने के लिए तैयार हैं, उनके साथ सुधार, ज्ञान और अनुभव साझा करना मेहनत के योग्य है। इसके विपरीत, यदि लोग सुनने और सीखने को तैयार नहीं हैं, तो अपना समय और मेहनत बर्बाद न करें। इसे उन लोगों के लिए बचाकर रखें जो इसकी कद्र करेंगे। कभी-कभी, यदि लोग दूसरों की सलाह और अनुभव से सीखना नहीं चाहते, तो उन्हें मुश्किल तरीके से ही सीखना पड़ता है।

लालच से बचें; संतोष दिखाएँ, पर आत्म- संतुष्टि नहीं

नीतिवचन 15:27
लालची अपने घराने को दु:ख देता है, परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित रहता है।

नीतिवचन 28:16 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
जिन अगुवों में समझ की कमी होती है, उनमें गाली-गलौज बहुत होती है, परन्तु जो भ्रष्टाचार से नफरत करता है, उसका भविष्य उज्जवल होता है।

लूका 12:15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
और उसने उन सबसे कहा, "चौकस रहो और हर तरह के लोभ से खुद को बचाओ; क्योंकि तुम्हारा असली जीवन उन चीज़ों से नहीं बनता जो तुम्हारे पास हैं, चाहे तुम कितने भी धनवान क्यों न हो।"

एक अगुवे के तौर पर, आप ऐसी स्थिति में होते हैं जहाँ लोग आपको अपना आदर्श मानते हैं। आपके पास ऐसे पैसे, लोग तथा दूसरे संसाधन भी होते हैं, जिन तक ज़्यादातर लोगों की पहुँच नहीं होती। महान अगुवों, सी.ई.ओ. और उनके संगठनों के पतन का एक बड़ा कारण लालच है। जब अगुवा लालच में पड़ जाते हैं, तो वे न केवल खुद को बल्कि उस संगठन को भी बर्बाद कर देते हैं जिसके प्रति वे ज़िम्मेदार होते हैं। लालच के कारण अगुए स्वार्थी हितों और व्यक्तिगत लाभ के लिए निर्णय ले सकते हैं, भ्रष्टाचार में शामिल हो सकते हैं, और अन्य बेईमान व्यवहार अपना सकते हैं। इसलिए, लालच से खुद को बचाकर रखें। संतुष्टि के साथ जीना सीखें।

फिर भी, संतुष्टि के मामले में एक सूक्ष्म बात समझनी आवश्यक है। संतुष्टि हमें लापरवाही में नहीं ले जाना चाहिए, और न ही ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ हम बातों को जैसी वे हैं वैसी ही मानकर संतुष्ट हो जाएँ। अगुवे अपने संगठन के विकास और तरक्की के लिए ज़िम्मेदार होते हैं। विकास और उन्नति के लिए लगातार और निरंतर प्रयास होते रहने चाहिए। और ज़ाहिर है, जैसे-जैसे संगठन

अच्छा करता है और समृद्ध होता है, अगुवों समेत सभी को इसका फ़ायदा मिलता है।

महान नेता, प्रेरित पौलुस ने कहा, *"दरअसल, मुझे निजी तौर पर किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस नहीं होती। अब तक मैंने सीख लिया है कि हालात चाहे जैसे भी हों, उनमें पूरी तरह संतुष्ट रहना चाहिए। मैं कम में भी उतना ही खुश रहता हूँ जितना ज़्यादा में, और ज़्यादा में भी उतना ही जितना कम में। मुझे खुश रहने का तरीका मिल गया है—चाहे पेट भरा हो या खाली, हाथ भरे हों या खाली। मेरे पास जो कुछ भी है, मैं जहाँ भी हूँ, उस परमेश्वर के द्वारा, जिसने मुझे वो बनाया है जो मैं हूँ, हर परिस्थिति का सामना कर सकता हूँ"* (फिलिप्पियों 4:11-13, 'द मैसेज अंग्रेजी बाइबल ' से उद्धरित)।

स्त्रियों और शराब से दूर रहें

नीतिवचन 31:3-5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल)
3 अपनी सारी ऊर्जा सेक्स में और सारा पैसा स्त्रियों पर खर्च न करो; इन बातों ने राजाओं को बर्बाद कर दिया है।
4 सुनो, लमूएल। राजाओं को दाखमधु नहीं पीनी चाहिए और न ही शराब की तलब होनी चाहिए।
5 जब वे पीते हैं, तो वे व्यवस्था को भूल जाते हैं और जरूरतमंद लोगों के अधिकारों को अनदेखा करते हैं।

दो और चीज़ें जिन्होंने बड़े-बड़ेअगुवों को गिरा दिया है, वे हैं स्त्रियाँ और शराब। इनसे सावधान रहें। अगर आप शादीशुदा हैं, तो अपनी पत्नी के प्रति वफ़ादार रहें। दूसरी स्त्रियों से हमेशा एक सही दूरी बनाए रखें। शराब या अल्कोहल के बजाय, आराम करने और ज़िंदगी का मज़ा लेने के दूसरे तरीके ढूँढ़ें। जब आप ऐसे अन्य अगुओं के साथ सामाजिक मेलजोल में हों जो शराब पीते हैं, तो "सामाजिक रूप से शराब पीने" के दबाव में न आएँ। कोई ऐसा पेय चुनें जिसमें शराब न हो। नशे की राह पर चलना आमतौर पर पहले घूंट से शुरू

होता है। इसलिए, "सामाजिक रूप से शराब पीने" (सोशल ड्रिंकिंग) से दूर रहें।

परमेश्वर के नियंत्रण और मार्गदर्शन में रहें

नीतिवचन 21:1 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
अच्छा नेतृत्व उस पानी की एक धारा की तरह है जो परमेश्वर के नियंत्रण में है; वह उसे अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी दिशा में मोड़ सकता है।

अंततः, एक अगुवे के तौर पर, परमेश्वर के नियंत्रण और मार्गदर्शन में रहना सीखें। आप अपने संगठन के लिए, और जिन लोगों का आप नेतृत्व करते हैं तथा जिनकी सेवा करते हैं, उनके लिए परमेश्वर की आशीष का एक माध्यम हैं। प्रतिदिन स्वयं को उसके प्रति अधीन और समर्पित रखें। आप यहाँ पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हैं। उसके प्रति खुले रहें। उसके उद्देश्यों को आपके माध्यम से पूरा होने दें, ताकि आपके आस-पास की दुनिया को आशीष मिल सके।

मुख्य सिद्धांत

1) यदि आप स्वयं नहीं देख पा रहे है, तो आप लोगों का नेतृत्व इसमें नहीं कर सकेंगे।
2) अपने मन का सही रवैया बनाए रखें।
3) लोगों से व्यवहार का उचित कौशल बनाये रखें ।
4) यदि सिर ठीक नहीं है, तो शरीर भी ठीक नहीं होगा।
5) ईमानदारी दिखाएँ, उस पर ज़ोर दें, उसे सशक्त बनाएँ और उसका जश्न मनाएँ।
6) आपका रवैया या तो बिगाड़ता है या उत्साह भरता है; लोग आपके रवैया को या तो सहन करते हैं या उसकी सराहना करते हैं।

7) वास्तविक रहें, ज़मीन से जुड़े रहे, दिखावा करने से बचें।

8) आप अपनी टीम को जैसा बनाना चाहते हैं, वैसे स्वयं बनें — उदाहरण बनकर नेतृत्व करें।

9) पहले सारे तथ्य (फैक्ट्स) पता करें, फिर कोई कदम उठाएँ।

10) सच्ची और खरी प्रतिक्रिया (फीडबैक) दें।

11) जो लोग आपकी बात पर ध्यान नहीं देते, उन पर अपने शब्द बर्बाद न करें।

12) लालच से बचें; संतोष दिखाएँ, पर आत्म- संतुष्टि नहीं।

13) स्त्रियों और शराब से दूर रहें।

14) परमेश्वर के नियंत्रण और मार्गदर्शन में रहें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- उन कुछ नेताओं का मूल्यांकन करें जिनके साथ आपने व्यक्तिगत रूप से काम किया है। उनके आंतरिक दृष्टिकोण और लोगों के साथ घुलने-मिलने के हुनर में आपने जो देखा — अच्छा और बुरा, उससे आप क्या सबक सीख सकते हैं?
- क्या अगुवों को ऊंचे स्थान पर रखने की ज़रूरत है, या उन्हें "वास्तविक और ज़मीन से जुड़ा" होना चाहिए? इन दोनों ही दृष्टिकोणों के क्या फ़ायदे और नुकसान हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

14
मार्केटिंग, ब्रांड निर्माण और बिक्री

आज के प्रतिस्पर्धी वैश्विक माहौल में टिके रहने और आगे बढ़ने के लिए, ग्राहक जोड़ना और उन्हें बनाए रखना बेहद ज़रूरी हो जाता है। इस प्रक्रिया में ग्राहकों की ज़रूरतों को समझना, जागरूकता पैदा करना, एक ब्रांड बनाना और बिक्री करना शामिल है। आम तौर पर, इसमें मार्केटिंग और प्रचार से जुड़ी गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जैसे कि कीमत तय करना, बिक्री को बढ़ावा देना, विज्ञापन, बिक्री और जनसंपर्क (पी.आर.) आदि।

रणनीतिक मार्केटिंग, मार्केटिंग अनुसंधान और मार्केटिंग संचार संगठनों के लिए काम के मुख्य क्षेत्र हैं। इनके द्वारा संगठन बाजारों को समझते हैं, अपनी सेवाओं और उत्पादों को प्रस्तुत करते हैं, और लाभ बढ़ाते हैं। जहाँ एक ओर कई पारंपरिक माध्यम मौजूद हैं, वहीं सोशल मीडिया ने ग्राहकों को जानकारी देने, उनसे बातचीत करने, उन्हें समझने तथा उनसे जुड़ने के नए रास्ते खोल दिए हैं।

इस अध्याय में, हम पवित्र शास्त्र के उन प्रमुख सिद्धांतों पर विचार करेंगे, जिन्हें मार्केटिंग, ब्रांड-निर्माण और बिक्री के इस क्षेत्र में लागू किया जा सकता है।

मार्केटिंग संचार—अपने उत्पाद या सेवाओं की सही-सही जानकारी दें

नीतिवचन 12:19 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
झूठ की उम्र कम होती है, परन्तु सच्चाई सदा बानी रहती है।

मार्केटिंग संचार (कम्युनिकेशन्स) में, झूठ बहुत ही संवेदी रूप ले सकता है। तथ्यों को थोड़ा-बहुत गलत तरीके से पेश करना, थोड़ा-बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताना या अनावश्यक रूप से बड़ा दिखाना, नतीजों पर काफ़ी असर डाल सकता है। यह ज़रूरी है कि आप अपने उत्पाद या सेवाओं के बारे में सही-सही जानकारी दें। हालांकि रचनात्मकता ज़रूरी है, लेकिन इसे कभी भी बेईमानी से या गैर-कानूनी तरीके से न करें। अपनी कंपनी के प्रोडक्ट या सेवाओं से जुड़े सभी सेल्स और मार्केटिंग संचार में हमेशा सच बोलें। पूछे जाने पर, सभी बयानों को साबित भी किये जाने चाहिए।

अपना ब्रांड बनाएँ—एक अच्छा नाम और प्रतिष्ठा कमाएँ; पैसा अपने आप आएगा

नीतिवचन 22:1 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
अगर तुमको अच्छी प्रतिष्ठा और बड़ी दौलत में से किसी एक को चुनना हो, तो अच्छी प्रतिष्ठा को चुनो।

अपने संगठन, उसकी सेवाओं और उत्पादों के लिए एक अच्छा नाम और अच्छी प्रतिष्ठा बनाने पर ध्यान दें। इसके बाद धन-संपत्ति अपने आप आपके पास आएगी। शुरुआत में आपको ऐसे कठिन निर्णय लेने पड़ सकते हैं, जहाँ आप तत्काल लाभ को टालकर अपने ब्रांड की रक्षा करने और उसे विकसित करने को प्राथमिकता देते है। एक ऐसा ब्रांड बनाने में समय लग सकता है जो लोगों के मन में आपके संगठन के मूल्यों, जैसे—गुणवत्ता, उत्कृष्टता, ईमानदारी, रचनात्मकता आदि को दर्शाता हो; लेकिन इस पर पूरी सावधानी से काम करें। सही समय पर आपको इसका लाभ अवश्य मिलेगा।

अपने ब्रांड को सुरक्षित रखें—थोड़ी सी मूर्खता अच्छी प्रतिष्ठा को नष्ट कर सकती है

सभोपदेशक 10:1 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
मरी हुई मक्खियाँ सुगंध की पूरी बोतल को बदबूदार बना सकती हैं, और

थोड़ी सी मूर्खता सबसे बड़ी समझदारी को भी ख़त्म कर सकती है।

एक अच्छा नाम और प्रतिष्ठा बनाने में बहुत समय लगता है, परन्तु सिर्फ़ एक गलती सब कुछ तबाह कर सकती है और बहुत बदनामी ला सकती है। अपने ब्रांड को ध्यान से सुरक्षित रखें। अब तक जो कुछ बनाया गया है, उसकी रक्षा करने में टीम के हर सदस्य की भूमिका होती है। विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए जाँच और पुनः जाँच की उचित व्यवस्था रखें।

अपने इरादे की रक्षा करें। बात चाहे कितनी भी अच्छी तरह प्रस्तुत की गई हो, बुरा इरादा बदनामी लाएगा

नीतिवचन 24:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
यदि तुम हमेशा बुराई की योजना बनाते हो, तो तुम्हारी पहचान एक उपद्रवी के तौर पर बन जाएगी।

आपकी मार्केटिंग और विज्ञापन की गतिविधियों में, यदि लोगों को धोखा देने और ठगने का इरादा है, तो भले ही अच्छे प्रस्तुतीकरण की आड़ में उसे छिपाया गया हो, तो भी उसका पर्दाफ़ाश हो ही जाएगा, और आपके संगठन की प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी।

इब्रानियों 4:13 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल उद्धरित)
परमेश्वर से कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता; पूरी सृष्टि में सब कुछ उसकी आँखों के सामने खुला और ज़ाहिर है। और उसी के सामने हमें अपने कामों का हिसाब देना होगा।

विज्ञापन–यौन रूप से उत्तेजक, भड़काऊ और अश्लील तरह के विज्ञापनों से बचें

फिलिप्पियों 4:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
इसलिये हे मित्रों, अपना मन को उन बातों से भरो जो भली हैं और प्रशंसा के योग्य हैं: जो सत्य, आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी और प्रशंसा के योग्य हैं।

लोगों का मन कूड़े का ढेर नहीं है। आज के विज्ञापन की दुनिया में, जहाँ यौन रूप से स्पष्ट या यहाँ तक कि यौन रूप से उत्तेजक विज्ञापनों पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, ऐसे प्रचारों में शामिल न होने का चुनाव करना एक चुनौती है। फिर भी, अपना पक्ष लें।साफ़-सुथरे विज्ञापनों को मंज़ूरी देने का चुनाव करें ।

1 थिस्सलोनिकियों 5:22 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
और सब प्रकार की बुराई से दूर रहो।

दिखावट मायने रखती है। कोई क्या देखता है, यह मायने रखता है। कोई व्यक्ति जिस चीज़ को देखता है, वह उसके मन में बस जाती है, और बाद में किसी समय, उसे पाप और बंधन की ओर ले जा सकती है। बेशक, विज्ञापन एजेंसी या रचनात्मक कलाकार वहाँ मौजूद नहीं होगा कि वह उन हजारों लोगों को देख सके जिनके दिमाग पर अश्लील और भड़काऊ विज्ञापनों का असर पड़ता है, लेकिन याद रखें कि लोग जो देखते हैं, उसका उन पर असर ज़रूर पड़ता है।

मत्ती 5:27-29 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
27 "तुमने सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।'
28 परन्तु अब मैं तुमसे कहता हूँ: जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले और उसपर काबू करना चाहता है, वह अपने मन में उसके साथ व्यभिचार करने का दोषी है।
29 इसलिए यदि तुम्हारी दाहिनी आँख तुम्हें पाप करने के लिए उकसाती है, तो उसे निकालकर फेंक दो! तुम्हारे लिए अपने शरीर का एक हिस्सा खो देना, तुम्हारे पूरे शरीर को नरक में फेंक दिए जाने से कहीं बेहतर है।

अपने विज्ञापनों में रचनात्मक बनें, लेकिन संसार के तर पर न चलें। संसार के तरीकों के अनुरूप न बनें। अपने दैवीय विश्वास पर डटे रहने की हिम्मत बनाए रखें।

रोमियों 12:2 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
इस संसार के सदृश न बनो; बल्कि परमेश्वर को तुम्हारे मन को पूरी तरह

बदलकर तुम्हें भीतर से बदलने दो। तब तुम परमेश्वर की इच्छा जान पाओगे कि क्या भला है, उसे क्या भाता है, और क्या उत्तम है।

आपकी 'यूनिक सेलिंग प्रपोज़िशन' (यू.एस.पी.) यानी आपकी खासियत साफ-साफ ज़ाहिर होनी चाहिए

नीतिवचन 25:11 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
अच्छी तरह से व्यक्त किया गया विचार चांदी में जड़े सोने के डिज़ाइन जैसा होता है।

एक ऐसे बाज़ार में जहाँ आपके जैसे कई दूसरे प्रतिस्पर्धी उत्पाद या सेवाएँ पहले से मौजूद हो सकती हैं, आपको सबसे अलग दिखने के लिए ज़ोरदार मुकाबला करना होगा। आपको अपने प्रॉडक्ट या सेवा को दूसरों से अलग दिखाना होगा और अपने ग्राहकों को उसके खास फ़ायदे बताने होंगे।

आपकी 'यूनिक सेलिंग प्रपोज़िशन' (यू.एस.पी.) या आपकी मुख्य खासियतें साफ़ तौर पर बताई जानी चाहिए। यहीं पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने तथा अपनी बात असरदार तरीके से पहुँचाने के लिए रचनात्मकता काम आती है।

अपने ग्राहकों से साफ़-साफ़ बात करने पर ध्यान दें, न कि अपने प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलने पर।

यह मायने नहीं रखता कि आप कितना बोलते हैं, बल्कि यह मायने रखता है कि आप क्या बोलते हैं

नीतिवचन 15:23
सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है, और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है!

सही समय पर कहा गया सही शब्द बहुत बड़ा फ़र्क ला सकता है। बिक्री करते समय यह याद रखें कि मुख्य बात यह नहीं है कि आप

कितना बोलते हैं, बल्कि यह है कि आप सुनना सीखें और फिर सही समय पर सही बात प्रस्तुत करें। यही निर्णायक बात साबित हो सकती है और सौदा आपके पक्ष में करा सकती है। इसलिए, सुनें। सुनते रहें। अपने ग्राहक को समझें, और फिर वही बात कहें जो सचमुच मायने रखती हो। इसी से बहुत सारा फ़र्क पड़ेगा।

बिक्री में अति न करें; ध्यान रखें कि आप क्या कह रहे हैं—यह आपकी जान भी बचा सकता है

नीतिवचन 13:3 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
सोच-समझकर बोले गए शब्द एक संभली हुई ज़िंदगी बनाते हैं; वहीं लापरवाही से की गई बातें विनाश कर सकती हैं।

नीतिवचन 10:19
जहाँ बहुत बातें होती हैं, वहाँ अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुँह को बन्द रखता वह बुद्धि से काम करता है।

नीतिवचन 15:28
धर्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूँ, परन्तु दुष्टों के मुँह से बुरी बातें उबल आती हैं।

बिक्री करते समय अक्सर यह आसान होता है कि हम ज़रूरत से ज़्यादा वादे कर बैठें। हम ग्राहक से "पूरी दुनिया" का वादा करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि उन्हें लगे कि हमारे पास उनके हर सवाल का जवाब है और उन्हें कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है। बिक्री करने की प्रक्रिया में, कई बार जोश में आकर ऐसी बातें या वादे कर देना बहुत आसान होता है, जिन पर बाद में हमें पछताना पड़ता है। कभी-कभी यही बात सब कुछ बर्बाद कर सकती है। बिना सोचे-समझे कही गई बातें सब कुछ बर्बाद कर सकती हैं। इसलिए, अपने शब्दों पर ध्यान दें। सोच-समझकर बोलें।

अति बिक्री करने के लालच से बचें।

सेल्स कॉल पर जाने से पहले करने के लिए यहाँ एक अच्छी प्रार्थना दी गई है।

भजन संहिता 141:3 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
हे परमेश्वर, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंठों के द्वार की रखवाली कर।

झूठ बोलकर आप ज़्यादा समय तक बच नहीं सकते

नीतिवचन 12:19
सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल ही भर का होता है।

नीतिवचन 21:6
जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जाने वाला कुहरा है, उसके ढूँढ़नेवाले मृत्यु ही को ढूँढ़ते हैं।

1 पतरस 3:10,11 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
10 जैसा कि धर्मग्रंथ में लिखा है, "यदि तुम जीवन का आनंद लेना चाहते हो और अच्छे दिन देखना चाहते हैं, तो आपको बुरा बोलने से बचना होगा और झूठ बोलना छोड़ना होगा।
11 तुमको बुराई का साथ छोड़ना होगा और भलाई करनी होगी; तुमको पूरे दिल से मेल मिलाप बनाए रखने की कोशिश करनी होगी।"

याद रखें, आप ज़्यादा समय तक झूठ बोलकर बच नहीं सकते। अपने ग्राहकों को सामान बेचते समय, हमेशा सच बोलें। यदि आपके उत्पाद या सेवा में कोई सीमाएँ हैं, तो बेहतर यही है कि आप उन्हें पहले ही स्पष्ट कर दें, बजाय इसके कि बाद में आपको अपनी कही हुई बातों से मुकरना पड़े।

चिकनी चुपड़ी बातें और चापलूसी करना छोड़ दें; उनके झांसे में मत आना

नीतिवचन 26:23-28 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
23 कपटपूर्ण बातें, जो आपके असली विचारों को छिपाती हैं, सस्ती मिट्टी के बर्तन पर लगी चमकदार परत जैसी होती हैं।

24 पाखंडी व्यक्ति चापलूसी भरी बातों के पीछे अपनी नफ़रत छिपाता है।
25 उसकी बातें सुनने में भले ही मीठी लगें, पर उस पर भरोसा न करें, क्योंकि उसका मन नफ़रत से भरा होता है।
26 वह अपनी नफ़रत छिपाने की कोशिश कर सकता है, तौभी हर कोई उसके बुरे कामों को देख लेगा।
27 जो लोग दूसरों के लिए जाल बिछाते हैं, वे स्वयं ही उसमें फंस जाते हैं। जो लोग भूस्खलन की शुरुआत करते हैं, वे स्वयं कुचले जाते हैं।
28 किसी को झूठ बोलकर चोट पहुँचाने के लिए आपको उससे नफ़रत करनी होगी। कपटपूर्ण बातें विनाश के सिवा कुछ नहीं लातीं।

नीतिवचन 29:5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
यदि तुम अपने मित्रों की चापलूसी करते हो, तो तुम अपने लिए ही जाल बिछाते हो।

अक्सर ग्राहकों से मिलते समय, आप उन्हें अच्छा महसूस कराना चाहते हैं। इस कोशिश में, आप उनकी चापलूसी करने, उनके अहम को बढ़ाने और ऐसी ही दूसरी बातों के लिए सारी सही बातें कह देते हैं। याद रखें, चापलूसी एक जाल है जिसमें आप खुद ही फँस जाएँगे। झूठी बातें बर्बादी लाती हैं। ऐसी चीज़ों से दूर रहें।

चापलूसी-न करें और न ही इसे स्वीकार करें।

आपकी बातें आपके काम से साबित होनी चाहिए

नीतिवचन 12:14 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
भले शब्द संतुष्टि देते हैं; अच्छे से किए गए काम का अपना इनाम होता है।

मार्केटिंग और बिक्री में, जो भी बातें कही जाती हैं और जो वादे किए जाते हैं, उन सभी को साबित किया जाना चाहिए। अच्छी बातें कहने के साथ अच्छा काम भी होना चाहिए। अगर आप किसी चीज़ को पूरा नहीं कर सकते, तो उसका वादा भी न करें। अगर यह कुछ ऐसा है जिसे आप करने की कोशिश करेंगे, तो इसे साफ़ कर दें और अपना सर्वोत्तम दें।

एक मुफ्त उपहार ध्यान आकर्षित करता है; इसका उपयोग करें

नीतिवचन 18:16 (‘द मैसेज अंग्रेजी बाइबल’ से उद्धरित)
उपहार ध्यान खींचता है; यह प्रतिष्ठित लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है।

हर किसी को उपहार, छूट या कोई ऐसी चीज़ पसंद आती है जो मुफ़्त हो और जिससे उदारता झलकती हो। मुफ़्त उपहार की शक्ति का उपयोग करें। यह लोगों तक पहुँचने का एक ज़रिया भी है और साथ ही लोगों के सामने अपने ब्रांड को रखने का एक तरीका भी है।

यदि भेड़े बुद्धिमान और निष्कपट बनी रहें, तो भेड़ियों के बीच भी वे फल-फूल सकती हैं

मत्ती 10:16
“देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ, इसलिये साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो।”

जब यीशु ने अपने 12 शिष्यों को सुसमाचार सुनाने और उसका प्रचार करने के लिए भेजा, तो यह एक बहुत ही जोखिम भरा काम था। यह ऐसा था, मानो भेड़ों को भेड़ियों के बीच भेजा जा रहा हो। उसने अपने शिष्यों को चेतावनी तो दी, लेकिन साथ ही उन्हें यह भी सिखाया कि इस जोखिम का सामना कैसे करना है। उसने उन्हें निर्देश दिया कि वे बुद्धिमान और निष्कपट बनें। बुद्धिमान होने का अर्थ है— विवेकशील, समझदार और व्यावहारिक रूप से ज्ञानवान होना। “निष्कपट” शब्द का शाब्दिक अर्थ है—”अमिश्रित, जिसमें कोई बाहरी मिलावट न हो; पवित्र, छल-कपट से रहित; सच्चा; जिसकी दृष्टि एकाग्र और सरल हो; जो बुराई को पहचान सके और केवल उसी चीज़ को चुने जिससे परमेश्वर की महिमा होती हो” (वाइन्स डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट)।

बुद्धिमान बने रहें, निष्कपट बने रहें, और आप इस कठोर संसार में न केवल जीवित रह पाएँगे, बल्कि फल-फूल भी सकेंगे।

मोल-भाव—धीरज और कोमलता से काम लेते हुए किसी समझौते तक पहुँचने की कोशिश करें

नीतिवचन 25:15 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
धीरज धरे रहने से उदासीनता दूर हो जाती है; और कोमल वचन से कठिन गढ़ भी टूट जाते हैं।

बिक्री को पूरा करने में मोल-भाव भी शामिल है। हालांकि इस प्रक्रिया के कई पहलू हैं, फिर भी निष्पक्ष रहते हुए और अपने ग्राहक के साथ-साथ अपने संगठन के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हुए, धैर्यपूर्वक प्रयास जारी रखें और किसी आपसी सहमति तक पहुँचने की दिशा में आगे बढ़ें। शांत रहें। पूरी प्रक्रिया के दौरान दयालु, विनम्र और सौम्य बने रहें; भले ही आपके सामने रखी गई माँगें कभी-कभी अनुचित, या यहाँ तक कि हास्यास्पद भी क्यों न लगें।

अलौकिक रूप से दरवाज़े खोले जा सकते हैं और पहाड़ समतल किए जा सकते हैं

यशायाह 45:2 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
"मैं स्वयं तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करूँगा, पहाड़ों और टीलों को समतल कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाज़े तोड़ डालूँगा और उनके लोहे के बेड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दूँगा।"

हालांकि बाज़ार के हालात और ग्राहकों की पसंद तेज़ी से बदल सकती है, और प्रतिस्पर्धी उत्पाद व सेवाएँ बाज़ार में छा सकती हैं, फिर भी आप अपनी ओर से परमेश्वर के अलौकिक हस्तक्षेप पर भरोसा कर सकते हैं-जो आपके लिए मार्ग तैयार करेगा, पहाड़ों को समतल करेगा और अवसरों के ऐसे द्वार खोलेगा जिनकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी। विश्वास रखें कि परमेश्वर आपके लिए ऐसा

ही करेगा। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि बाज़ार आपके लिए खुलेंगे। उन असाधारण अवसरों की ओर उसके साथ आगे बढ़ें, जो उसने विशेष रूप से आपके लिए तैयार किए हैं।

मुख्य सिद्धांत

1) मार्केटिंग संचार—अपने उत्पाद या सेवाओं की सही-सही जानकारी दें ।
2) अपना ब्रांड बनाएँ—एक अच्छा नाम और प्रतिष्ठा कमाएँ; पैसा अपने आप आएगा।
3) अपने ब्रांड को सुरक्षित रखें—थोड़ी सी मूर्खता अच्छी प्रतिष्ठा को नष्ट कर सकती है।
4) अपने इरादे की रक्षा करें। बात चाहे कितनी भी अच्छी तरह प्रस्तुत की गई हो, बुरा इरादा बदनामी लाएगा।
5) विज्ञापन—यौन रूप से उत्तेजक, भड़काऊ और अश्लील तरह के विज्ञापनों से बचें।
6) आपकी 'यूनिक सेलिंग प्रपोज़िशन' (यू.एस.पी.) यानी आपकी खासियत साफ-साफ ज़ाहिर होनी चाहिए।
7) यह मायने नहीं रखता कि आप कितना बोलते हैं, बल्कि यह मायने रखता है कि आप क्या बोलते हैं।
8) बिक्री में अति न करें; ध्यान रखें कि आप क्या कह रहे हैं — यह आपकी जान भी बचा सकता है।
9) झूठ बोलकर आप ज़्यादा समय तक बच नहीं सकते।
10) चिकनी चुपड़ी बातें और चापलूसी करना छोड़ दें; उनके झांसे में मत आना।
11) आपकी बातें आपके काम से साबित होनी चाहिए।

12) एक मुफ्त उपहार ध्यान आकर्षित करता है; इसका उपयोग करें
13) यदि भेड़े बुद्धिमान और निष्कपट बनी रहें, तो भेड़ियों के बीच भी वे फल-फूल सकती हैं।
14) मोल-भाव — धीरज और कोमलता से काम लेते हुए किसी समझौते तक पहुँचने की कोशिश करें।
15) अलौकिक रूप से दरवाज़े खोले जा सकते हैं और पहाड़ समतल किए जा सकते हैं।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- अगर आप किसी विज्ञापन बनानेवाली कंपनी के लिए काम कर रहे होते और आपकी टीम के सदस्य या मैनेजर चाहते हैं कि आप एक ऐसा विज्ञापन बनाएं जिसमें यौन रूप से उत्तेजक, और भड़काऊ कंटेंट हो, तो आप उस परिस्थिति को कैसे संभालेंगे?
- *"यदि भेड़े बुद्धिमान और निष्कपट बनी रहें, तो भेड़ियों के बीच भी वे फल-फूल सकती हैं"*—क्या आप ऐसे परिदृश्यों के बारे में सोच सकते हैं जहाँ आप इस सच्चाई को लागू कर सकें?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

15
ग्राहक संबंध

अगर किसी संगठन को व्यवसाय में बने रहना है, तो ग्राहक संबंध प्रबंधन और ग्राहक सेवा बहुत महत्वपूर्ण हैं। आप अपने ग्राहकों के सबसे अच्छे साथी हैं। ग्राहक पाना सिक्के का एक पहलू है। ग्राहकों को बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। लगभग हमेशा, ग्राहक खरीदारी का निर्णय लेते समय उत्पाद या कीमत के अलावा सेवा के स्तरों को भी ध्यान में रखते हैं।

हालाँकि ग्राहक संबंधों पर लागू होने वाले कुछ सिद्धांत पिछले अध्याय के सिद्धांतों से मिलते-जुलते हैं, फिर भी हम पवित्रशास्त्र से कुछ अतिरिक्त सिद्धांतों पर भी बात करेंगे जो संगठनात्मक गतिविधियों के इस क्षेत्र पर लागू होते हैं। हालाँकि इनमें से अधिकांश बातें इस तरह कही गई हैं मानो वे किसी एक व्यक्ति से कही जा रही हों, लेकिन ग्राहकों से बातचीत करने वाले हर व्यक्ति को इन सिद्धांतों को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना ज़रूरी है ।

तुरंत जवाब दें; देर न करें

नीतिवचन 3:27,28

27 जिनका भला करना चाहिए, यदि तुझ में शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रुकना।

28 यदि तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे दूँगा।

ग्राहक बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण होते है, और उन्हें जवाब देना दूसरी गतिविधियों से ज़्यादा ज़रूरी होना चाहिए। अगर आप किसी ग्राहक को खो देते हैं, तो आप न सिर्फ़ उसका बिज़नेस खोते हैं, बल्कि

उन लोगों को भी खो देते हैं जिन्हें वह आपकी संस्था द्वारा दी गई खराब सेवा के बारे में बताकर प्रभावित कर सकता है। एक नाराज़ ग्राहक एक नकारात्मक विज्ञापन बन जाता है और बहुत सारी अच्छी चीज़ों को खराब कर सकता है जिन्हें बनने में बहुत समय लगा है।

अपने संगठन का सही प्रतिनिधित्व करें

नीतिवचन 25:13

जैसे कटनी के समय बर्फ की ठण्ड से, वैसे ही विश्‍वासयोग्य दूत से भी, भेजनेवालों का जी ठण्डा होता है।

जब ग्राहक किसी कर्मचारी को फ़ोन करते हैं या उससे बातचीत करते हैं, तो उनके मन में यह बात नहीं होती कि वे सिर्फ़ किसी ग्राहक सेवा प्रतिनिधि या किसी एक व्यक्ति से बात कर रहे हैं। उनके मन में यह होता है कि वे सीधे संगठन से ही बात कर रहे हैं। वे कर्मचारी से ठीक वैसी ही बातचीत की उम्मीद करते हैं, जैसी छवि संगठन के प्रचार-प्रसार और उसके घोषित संस्कृति और मूल्यों के ज़रिए उनके मन में बनी हुई है। हालाँकि, अगर कोई कर्मचारी इस उम्मीद पर खरा नहीं उतर पाता, तो संगठन के बारे में ग्राहक की सोच बदल जाती है। एक “वफ़ादार संदेशवाहक” बनें जो संगठन की संस्कृति, मूल्यों, दर्शन तथा मिशन को बनाए रखते हुए संगठन का सही ढंग से प्रतिनिधित्व करता है।

झूठे वादे न करें

नीतिवचन 25:14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

जो लोग ऐसी चीज़ों का वादा करते हैं जिन्हें वे कभी पूरा नहीं करते, वे उन बादलों और पवन की तरह होते हैं जो बारिश नहीं लाते।

जब किसी ग्राहक से किसी सेवा या जवाब का वादा किया जाता है, तो उसे ज़रूर पूरा किया जाना चाहिए। यदि आप इसे कभी पूरा नहीं करना चाहते हैं, तो शुरू में ही वादा न करें। यह सच है कि

कभी-कभी ऐसे हालात बन जाते हैं जो आपके नियंत्रण से बाहर होते हैं और आप अपना वादा पूरा नहीं कर पाते। ऐसे में, ग्राहक को हो रहे घटनाक्रमों और देरी के बारे में जानकारी देते रहना ज़रूरी है।

नीतिवचन 12:22 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
यहोवा झूठ बोलने वालों से घृणा करता हैं, परन्तु जो लोग अपनी बात पर कायम रहते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है।

किसी संकट से निपटने के लिए अपने सबसे काबिल व्यक्ति को भेजें

नीतिवचन 25:19 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
विपत्ति के समय में किसी अविश्वसनीय व्यक्ति पर निर्भर रहना, ढीले दांत से चबाने या टूटे हुए पैर से चलने की कोशिश करने जैसा है।

ग्राहक के साथ कार्य करते समय संकट की स्थितियाँ निर्माण हो सकती हैं। यही वह समय है जब मामले को सुलझाने के लिए अपने सबसे काबिल व्यक्ति को भेजा जाना चाहिए। किसी ऐसे व्यक्ति को भेजना जो समस्या का समाधान नहीं कर सकता या जो चीज़ों को हल करने की पूरी कोशिश नहीं करेगा, उस स्थिति को और बिगाड़ने का पक्का तरीका है। अपने ग्राहक को हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ दें। ऐसा करने का आपको कभी पछतावा नहीं होगा।

ग्राहक की अनुचित मांगों के बावजूद भी शांत रहें

नीतिवचन 20:14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
ग्राहक हमेशा शिकायत करता है कि कीमत बहुत ज़्यादा है, परन्तु फिर वह जाकर डींगें मारता है कि उसे कितना सस्ता सौदा मिला।

ग्राहकों के साथ बातचीत में, एक अलिखित नियम है: “ग्राहक ही राजा है”। ग्राहक को अपनी बात कहने का अधिकार है और वह जो चाहे कह सकता है। ऐसी स्थितियाँ आ सकती हैं जहाँ ग्राहक

जबरदस्त मोल-भाव करे, अनुचित माँगें रखे, और ऐसी चीज़ों पर अड़ जाए जिनका कभी वादा या इरादा भी नहीं किया गया था। ऐसे हालात में गुस्सा आसानी से भड़क सकता है। ऐसे में ज़रूरी बात है कि शांत रहें। सुनें। ग्राहक को बोलने दें। जब वे अपनी बात कह चुकें, तो आप अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें, या फिर अपने से ऊपर के अधिकारियों के पास जाएँ और देखें कि ग्राहक की सेवा सबसे अच्छे तरीके से कैसे की जा सकती है। कभी भी झगड़े या जुबानी बहस में न पड़ें। एक बार जो बात मुँह से निकल गई, उसे आप कभी वापस नहीं ले सकते।

नीतिवचन 15:18 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
क्रोधी पुरुष झगड़े की शुरुआत करता है; शांत और संयमित स्वभाव शांति बनाए रखता है।

यदि आप अपना वादा पूरा करने में नाकाम रहे हैं, तो इसे मान लें, माफ़ी माँगें, और ग़लती को न छिपाएँ

नीतिवचन 28:13
जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।

अपनी गलती या वादा पूरा करने में अपनी नाकामी को मानने में कोई बुराई नहीं है। इसे मान लें। माफ़ी माँगें और हालात को सुधारने पर काम करें। बात को छिपाना ज़्यादा देर तक नहीं चल सकता। बातों को सबके सामने रखना और अपने ग्राहक के साथ मिलकर सबसे अच्छा हल निकालना कहीं ज़्यादा राहत देने वाला होता है।

मुख्य सिद्धांत

1) तुरंत जवाब दें। देर न करें।

2) अपने संगठन का सही प्रतिनिधित्व करें।

3) झूठे वादे न करें।

4) किसी संकट से निपटने के लिए अपने सबसे काबिल व्यक्ति को भेजें।

5) ग्राहक की अनुचित मांगों के बावजूद भी शांत रहें।

6) यदि आप अपना वादा पूरा करने में नाकाम रहे हैं, तो इसे मान लें, माफ़ी माँगें, और ग़लती को न छिपाएँ।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- ऐसी स्थिति के बारे में सोचें जहाँ ग्राहक ने अनुचित माँगें की हों। उस स्थिति की वजह क्या थी? आपने उसे कैसे संभाला? उसका क्या नतीजा निकला? उस अनुभव से आपने क्या सीखा?
- क्या कभी ऐसी कोई स्थिति आई, जब आपको किसी ग्राहक के सामने अपनी किसी असफलता या गलती को स्वीकार करना पड़ा हो? आपने उस स्थिति को सुधारने के लिए क्या कदम उठाए? उसका क्या परिणाम निकला? उस अनुभव से आपने क्या सबक सीखा?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

16
चुनौतियाँ और मुश्किल दौर

हर दिन, कार्यक्षेत्र बदल रहा है—कभी बेहतर के लिए और कभी-कभी ये बदलाव चुनौतियाँ लाते हैं। बाज़ार में कड़ी प्रतिस्पर्धा का मतलब है कि छँटनी, कर्मचारियों को निकालना, पुनर्गठन, वेतन वृद्धि पर रोक, आय में कमी तथा कई और दूसरी चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं। मुश्किलों में भी मज़बूत बने रहना, चुनौतियों का सामना करके आगे बढ़ना ये ऐसे कौशल हैं जिन्हें हमें विकसित करने की ज़रूरत है।

इस अध्याय में, हम उन पवित्र शास्त्र आधारित सिद्धांतों पर चर्चा करेंगे जिनका उपयोग हम कार्यक्षेत्र पर आने वाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करते समय कर सकते हैं।

पहाड़ों पर विजय प्राप्त की जा सकती है

मत्ती 17:20

यीशु ने उनसे कहा, "अपने विश्‍वास की घटी के कारण, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्‍वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, 'यहाँ से सरककर वहाँ चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये असम्भव न होगी।

रास्ते में पहाड़ ज़रूर आएंगे। हर किसी को कभी-न-कभी इनका सामना करना ही पड़ता है। ये पहाड़ आपकी निजी ज़िंदगी में किसी निजी संकट के रूप में, आपकी पेशेवर ज़िंदगी में, या कार्यक्षेत्र पर किसी प्रॉडक्ट के लॉन्च में नाकामी, किसी प्रोजेक्ट के बिगड़ जाने, तथा दूसरी स्थितियों के रूप में सामने आ सकते हैं; परन्तु ये पहाड़ ऐसे नहीं हैं जिन पर विजय प्राप्त न की जा सके। पहाड़ों पर विजय प्राप्त

की जा सकती है। परमेश्वर पर विश्वास रखें। ज़िंदगी की हर स्थिति और हर दौर में, परमेश्वर की भलाई पर अपना भरोसा बनाए रखें।

सकारात्मक रवैया बनाए रखें; धन्यवादित रहें

1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
16 चाहे कुछ भी हो, सदा आनन्दित रहो;
17 निरंतर प्रार्थना करो;
18 चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर का धन्यवाद करो। परमेश्वर की यही इच्छा है कि आप जो मसीह यीशु में हैं, इसी तरह जिएं।

हर स्थिति में, खुश रहें। चाहे कुछ भी हो, धन्यवादित रहें। परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए कोई न कोई विषय खोजें। अपने 'जीवन' के लिए, उसे धन्यवाद दें।

नीतिवचन 15:13
मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है, परन्तु मन के दु:ख से आत्मा निराश होती है।

नीतिवचन 17:22 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
आनंदित रहने से आप स्वस्थ रहते हैं। हर समय उदास रहना धीमी मौत की तरह है।

जब आपको लगे कि आपने सब कुछ खो दिया है और आप कैद में हैं, तो ऊपर देखें। उनका गुणगान करें जो अब भी राजा हैं। बेड़ियाँ टूट सकती हैं और कैदखाने के द्वार खुल सकते हैं। कुछ भी असंभव नहीं है।

प्रेरितों के काम 16:24-26 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
24 यह आदेश मिलने पर, दरोगा ने उन्हें जेल की सबसे अंदर वाली कोठरी में डाल दिया और उनके पैरों को लकड़ी के भारी गुटकों के बीच कस दिया।
25 आधी रात के आस-पास पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और दूसरे कैदी उन्हें सुन रहे थे।

[26] एकाएक बड़ा भूकम्प आया, जिससे बन्दीगृह की नींव तक हिल गई। तुरंत सारे दरवाज़े खुल गए, और सभी कैदियों की बेड़ियाँ खुल गईं।

अपना आत्मविश्वास न खोएँ

भजन संहिता 40:1-3 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
[1] मैंने धैर्यपूर्वक यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा की; तब उसने मेरी दोहाई सुनी।
[2] उसने मुझे एक खतरनाक गड्ढे से, जानलेवा दलदल की कीच से बाहर निकाला। उसने मुझे सुरक्षित रूप से एक चट्टान पर खड़ा किया और मुझे दृढ़ किया है।
[3] उसने मुझे एक नया गीत गाना सिखाया, हमारे परमेश्वर की स्तुति का गीत। इसे देखने वाले बहुत से लोग इससे सीख प्राप्त करेंगे और यहोवा पर भरोसा करेंगे।

जब आप खुद को किसी ऐसी जगह पर पाएँ जिसकी उम्मीद न हो, तो प्रभु की ओर देखें। उसका इंतज़ार करें। वह आपकी मदद के लिए ज़रूर आएगा। भले ही आप गिर जाएँ, परमेश्वर आपको उठा सकता हैं (भजन संहिता 37:23,24; नीतिवचन 24:16)। परमेश्वर आपको गड्ढे से बाहर निकाल सकता हैं (खासकर जब पेशेवर जीवन में उथल-पुथल हो)। किसी भी नकारात्मक चीज़, जैसे डर, चिंता या निराशा को अपने मन में जगह न दें। अपना आत्मविश्वास न खोएँ। प्रभु में दृढ़ बने रहें। प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ, इस उम्मीद में कि तुम्हें बाहर निकालने के लिए वह क्या कर सकता है।

भजन संहिता 42:11 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
मैं इतना उदास क्यों हूँ?
मैं इतना परेशान क्यों हूँ?
मैं परमेश्वर पर भरोसा रखूँगा, और एक बार फिर उसकी स्तुति करूँगा, वो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है।

अपनी सशक्त कार्यक्षमता का लाभ उठाएँ

यहोशू 23:10

तुम में से एक मनुष्य हज़ार मनुष्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है।

मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो, आमतौर पर एक व्यक्ति 1000 लोगों से बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकता; परन्तु जब परमेश्वर उसी एक व्यक्ति को शक्ति प्रदान करता हैं, तो यह समीकरण बिल्कुल अलग नज़र आता है। कार्यक्षेत्र पर ऐसी परिस्थितियाँ भी आ सकती हैं, जब आपको अकेले ही काम करना पड़े और बहुत बड़े परिणाम देने पड़ें। हो सकता है कि संगठन को अपने कर्मचारियों की संख्या कम करनी पड़ी हो, और इसलिए 10 लोगों का काम अब आपके कंधों पर आ गया हो। यह एक ऐसी चुनौती है जो कोई असामान्य बात नहीं है। यह बेहद तनावपूर्ण और चुनौतीपूर्ण होती है। ऐसी परिस्थितियों में काम करना कभी भी आसान नहीं होता। फिर भी, अपनी सशक्त कार्य-कुशलता का पूरा लाभ उठाएँ। परमेश्वर ने उस समय अपने लोगों से जो वादा किया था, वह आज हमारे संदर्भ में भी पूरा हो सकता है। जब प्रभु आपको शक्ति प्रदान करता है, तो परिस्थितियाँ आपके पक्ष में हो जाती हैं। तो, काम पर लग जाएँ और काम को पूरा करें। जब सब कुछ ठीक-ठाक हो जाए, तो आप पीछे मुड़कर देख सकते हैं और इस बात का उत्सव मना सकते हैं कि प्रभु ने आपके द्वारा और आपके संगठन के लिए क्या-कुछ किया है।

परमेश्वर ही आपका मालिक है; बुरे अधिकारियों और अन्याय करने वाले मालिकों की चिंता न करें

इफिसियों 6:5-8

5 हे दासों (कर्मचारियों), जो लोग इस संसार में तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते और काँपते हुए, जैसे मसीह की वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो।

6 मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो, पर

मसीह के दासों के समान मन से परमेश्‍वर की इच्छा पर चलो,
7 और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु की जानकर सच्चे हृदय से करो।
8 क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा।

हमें यह सिखाया गया है कि हम अपना काम प्रभु के लिए करें, और जब हम ऐसा करें, तो प्रभु से ही प्रतिफल की आशा रखें। जब हम अपना काम पूरी ईमानदारी और लगन से करते हैं, तो हम प्रभु से प्रतिफल की उम्मीद कर सकते हैं, भले ही हमारे बॉस या मालिक हमारी मेहनत को नज़रअंदाज़ कर दें। इसलिए, अपने अधिकारी के बारे में शिकायत करने या चिंता करने से दूर रहें। अपना ध्यान प्रभु पर केंद्रित करें और उसके हस्तक्षेप की प्रतीक्षा करें। परमेश्वर ने याकूब के लिए भी ऐसा ही किया था, जबकि उसके मालिक ने उसके साथ धोखा किया था और दस बार उसकी मज़दूरी बदल दी थी। परमेश्वर ने याकूब को उसकी कल्पना से भी कहीं अधिक आशीष दी।

उत्पत्ति 31:4-7 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
4 इसलिए याकूब ने राहेल और लियाह को संदेश भेजा कि वे उस मैदान में आकर उससे मिलें जहाँ उसकी भेड़-बकरियाँ थी।
5 उसने उनसे कहा, “मैंने देखा है कि तुम्हारे पिता का मेरे प्रति व्यवहार अब वैसा अनुकूल नहीं रहा जैसा पहले हुआ करता था; पर मेरे पिता का परमेश्‍वर मेरे संग हैं।
6 तुम दोनों जानती हो कि मैंने तुम्हारे पिता के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम किया है।
7 फिर भी उन्होंने मुझ से छल किया और मेरी मज़दूरी को दस बार बदल दिया। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें मेरी हानि करने नहीं दिया।”

जब आपको नीचा दिखाया जाए, तो वापस से उठ खड़े हों

नीतिवचन 29:26
हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं, परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा ही करता है।

दुर्भाग्य से, कार्यक्षेत्र पर, बुरे अधिकारी और अन्याय करने वाले मैनेजर ऐसी हरकतें कर सकते हैं जिनसे लोगों को दुख पहुँचता है। वे अपने पद का गलत इस्तेमाल करके चीज़ों में हेर-फेर कर सकते हैं, आपको आपकी मौजूदा भूमिका और पद से हटा सकते हैं, या आपको आपके साथियों या ऊपरी मैनेजमेंट की नज़र में गलत दिखा सकते हैं। कुछ संगठनों में ऐसी बातें सचमुच होती हैं। हालाँकि अपने बॉस या मैनेजर की कृपा पाना अच्छी बात है, लेकिन यह याद रखें कि न्याय तो प्रभु की ओर से ही मिलता है। इसलिए, ऐसी स्थितियों में अपने बचाव के लिए उसी की ओर देखें। पलटकर जवाब न दें। बदला लेने की कोशिश न करें। अपने बॉस या मैनेजर के बारे में इधर-उधर बुरा-भला न कहें। अपनी नज़रें प्रभु पर टिकाए रखें और अपनी मदद के लिए उसी की ओर देखें। परमेश्वर की सहायता से, आप विश्वास, लगन और बेहतरीन नतीजों के साथ फिर से मज़बूती से वापसी कर सकते हैं।

भजन संहिता 103:6
यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।

मीका 7:7,8
7 परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूँगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूँगा; मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।
8 हे मेरी बैरिन, मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि ज्योंही मैं गिरूँगा त्योंही उठूँगा; और ज्योंही मैं अन्धकार में पड़ूँगा त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा।

गपशप और संगठनात्मक राजनीति के स्तर तक नीचे न गिरें

रोमियों 12:17,18,21 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
17 यदि किसी ने तुम्हारे साथ बुराई की है, तो बदले में उससे बुराई न करो। कोशिश करो कि जो बातें सब लोगों की दृष्टि में भली हैं, उसे करो।
18 सबके साथ मेल मिलाप से रहने के लिए अपनी तरफ से हर मुमकिन कोशिश करो।

[21] बुराई तुम्हे हारने न दो; बल्कि बुराई को भलाई से जीत लो।

कुछ संगठनों में, काम का माहौल काफी प्रतिकूल हो सकता है। काम की जगह पर होने वाली गपशप और संगठन की राजनीति, वहाँ काम करना बहुत मुश्किल बना देती है। यदि आप खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं, तो जब तक आप उस संगठन में काम करते हैं, गपशप और राजनीति से दूर रहें। ऐसी बातों में हिस्सा लेने से मना कर दें। भले ही दूसरे आपके बारे में गपशप करें और आपके साथ गलत करें, आप इन सब से दूर ही रहें। अच्छा काम करके बुराई पर जीत हासिल करें।

झूठे आरोपों के ख़िलाफ़ परमेश्वर ही आपकी ढाल हैं

यशायाह 54:17 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
"परन्तु कोई भी हथियार तुम्हें हानि नहीं पहुँचा पाएगा; तुम पर आरोप लगाने वालों को तुम जवाब दे सकोगे। मैं अपने दासों की रक्षा करूँगा और उन्हें जीत दिलाऊँगा।"

कार्यक्षेत्र पर एक और चुनौती जो सामने आ सकती है, वह है उन गलतियों के बारे में झूठे आरोप, जो असल में आपने किये ही नहीं हैं। ऐसी बातें भावनात्मक रूप से परेशान करने वाली और कठिन हो सकती हैं, परन्तु परमेश्वर पर भरोसा रखें; क्योंकि उसने वादा किया है कि तुम्हारे विरुद्ध कोई भी हथियार सफल नहीं होगा और वह ही आपका बचाव बनेगा। उनके लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन पर दया करें, और उनके दिलों और मनों को बदल दें, और वे अपने पापों से दूर हो जाए। परमेश्वर अपने अनुग्रह से आपको एक ढाल की तरह घेरे रहता हैं।

भजन संहिता 3:3 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
परन्तु हे यहोवा, तू हमेशा खतरों से मेरी ढाल बने रहता हैं; तू मुझे जीत दिलाता हैं और मेरा साहस लौटाता हैं।

2 इतिहास 16:9
देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए।

मत्ती 5:44,45 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
44 परन्तु अब मैं तुमसे कहता हूँ: अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और जो तुम्हें सताते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो,
45 ताकि तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान बन सको। क्योंकि वह बुरे और भले, दोनों तरह के लोगों पर अपना सूर्य उदय करता है, तथा भलाई करनेवाले और बुराई करनेवाले दोनों को बारिश देता है।

भाइयों के बीच व्यावसायिक विवादों को सुलझाना

मत्ती 8:15-17 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
15 "यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे खिलाफ पाप करता है, तो उसके पास जाओ और उसे उसकी गलती बताओ। लेकिन यह अकेले में, आपस में करो। यदि वह तुम्हारी बात सुनता है, तो तुमने अपने भाई को वापस पा लिया है।
16 परन्तु यदि वह तुम्हारी बात नहीं सुनता है, तो अपने साथ एक या दो और लोगों को ले जाओ, ताकि 'हर आरोप दो या उससे ज़्यादा गवाहों की गवाही से निश्चित हो सके,' जैसा कि पवित्र शास्त्र में बताया गया है।
17 और यदि वह उनकी बात भी नहीं मानता, तो चर्च को पूरी बात बताओ। अंत में, यदि वह चर्च की बात नहीं भी सुनता है, तो उसके साथ ऐसा बर्ताव करो जैसे वह कोई अन्यजाति और महसूल लेने वाला हो।

कभी-कभी, एक साथ बिज़नेस करने वाले विश्वासियों के बीच विवाद हो जाते हैं। जैसा कि पवित्र शास्त्र में निर्देश दिया गया है, ऐसे मामलों को स्थानीय कलीसिया के आत्मिक रूप से परिपक्व अगुवों की सहायता से सुलझाना सबसे अच्छा होता है। यदि आप कलीसिया के अगुवों की मदद से कोई शांतिपूर्ण समाधान नहीं निकाल पाते हैं, और यदि कोई अन्य विकल्प शेष नहीं बचता है, तो कानूनी कार्यवाही ही एकमात्र उपलब्ध विकल्प हो सकती है।

1 कुरिन्थियों 6:1-8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

[1] यदि तुम में से किसी का किसी दूसरे मसीही के साथ झगड़ा हो, तो तुम में इतना हियाव कैसे हुआ कि तुम मामला सुलझाने परमेश्वर के लोगों के पास जाने के बजाय गैर-मसीही न्यायियों के पास चले गए?
[2] क्या आप नहीं जानते कि परमेश्वर के लोग जगत का न्याय करेंगे? तो फिर, यदि तुम्हे जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का न्याय करने के काबिल नहीं हो?
[3] क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो फिर इस जीवन की बातों का न्याय भी कर सकते है!
[4] अगर ऐसे मामले सामने आते हैं, तो क्या तुम उन्हें ऐसे लोगों के पास सुलझाने के लिए ले जाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं?
[5] तुम्हे शर्म आनी चाहिए! ज़रूर तुम्हारी मंडली में कोई एक बुद्धिमान व्यक्ति होगा जो झगड़े को साथी मसीहियों के बीच सुलझा सके।
[6] इसके बजाय, एक मसीही दूसरे के खिलाफ़ अदालत जाता है और अविश्वासियों को केस का फैसला करने देता है!
[7] यह बात कि तुम्हारे आपस में कानूनी झगड़े हैं, दिखाती है कि तुम पूरी तरह नाकाम रहे हैं। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम्हारे साथ अन्याय हो? क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम्हे लूटा जाए?
[8] इसके बजाय, तुम स्वयं एक-दूसरे के साथ अन्याय करते हैं और एक-दूसरे को लूटते हैं, यहाँ तक कि दूसरे विश्वासियों को भी!

पुरुष-प्रधानता या पूर्वाग्रह को खुद पर हावी न होने दें; आप जो हैं, वही बने रहें

गलातियों 3:28

अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

यह बात बेशक महिलाओं के लिए है। कुछ स्थितियों में, काम की जगह पर पुरुष-प्रधानता (मेल शौविनिज़्म) बहुत ज़्यादा महसूस हो सकती है। महिलाओं को शायद दबे-छिपे तरीके से कमतर समझा जा सकता है या उन्हें अहम नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए नज़रअंदाज़ कर दिया जा सकता है। परमेश्वर ने हमें दिखाया है कि वह हम सभी

को एक समान रूप से देखता है। सिर्फ़ इसलिए कि आप एक महिला हैं, आप परमेश्वर के राज्य में कम मूल्यवान नहीं हैं।

कभी-कभी, यह नस्लीय, सांस्कृतिक, सामाजिक या दूसरे तरह के भेदभाव हो सकते हैं जो काम के माहौल में व्याप्त हो सकते हैं।

अगर आपको इस तरह के बर्ताव का सामना करना पड़ रहा है, तो इसे सहजता से लें। अपनी जगह पर डटी रहें और संगठन के लिए आप जो अहमियत रखती हैं, उसे लगातार साबित करती रहें। जहाँ मुमकिन हो, इस मुद्दे पर सही अगुवों से बात करें। अगर हालात नहीं बदलते, तो आगे बढ़ जाएँ। आपके पास करने के लिए और भी ज़्यादा ज़रूरी काम हैं।

पुरुषों की ओर से होने वाली यौन-संबंधी अनुचित पहल और अनुरोधों को "नहीं" कहें

नीतिवचन 5:21-23

21 क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है।

22 दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फँसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बँधा रहेगा।

23 वह शिक्षा प्राप्त किए बिना मर जाएगा, और अपनी ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा।

यह फिर से एक ऐसी चुनौती है जिसका सामना महिलाओं को कार्यक्षेत्र पर करना पड़ता है। सहकर्मी, अधिकारी या वरिष्ठ लोग मौका मिलते ही यौन संबंध बनाने की कोशिश कर सकते हैं। कभी-कभी, अधिकारी इशारों-इशारों में यौन संबंधों के बदले इनाम देने का संकेत भी दे सकते हैं। "नहीं" कहें और अपनी सुरक्षा करें। दबाव के आगे न झुकें। ज़रूरी सावधानी बरतें। एक समझदारी भरा कदम यह है कि आप शालीन और उचित कपड़े पहनें, ताकि कार्यक्षेत्र पर आप पर

बेवजह किसी का ध्यान न जाए।

बहकानेवाली स्त्रियों से दूर रहो; आग से न खेलों

नीतिवचन 5:3-6

3 क्योंकि पराई स्त्री के ओठों से मधु टपकता है, और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं;
4 परन्तु इसका परिणाम नागदौना सा कड़वा और दोधारी तलवार सा पैना होता है।
5 उसके पाँव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं, और उसके पग अधोलोक तक पहुँचते हैं।
6 इसलिये उसे जीवन का समथर पथ नहीं मिल पाता; उसके चालचलन में चंचलता है, परन्तु उसे वह आप नहीं जानती।

दूसरी तरफ, कुछ ऐसी औरतें भी हो सकती हैं जिन्हें पुरुषों को लुभाने की आदत होती है, और वे उन्हें यौन संबंध बनाने का प्रस्ताव देती हैं, कभी-कभी तो कार्यक्षेत्र पर किसी इनाम या फ़ायदे की उम्मीद में। मज़बूत बने रहें और उनसे दूर रहें।

नीतिवचन 6:26-29 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

26 एक आदमी एक रोटी की कीमत पर वेश्या को रख सकता है, परन्तु व्यभिचार में उसका सब कुछ खो जायेगा।
27 क्या ऐसा हो सकता है कि तुम अपनी छाती पर आग रख लो, और तुम्हारे कपड़े न जलें?
28 क्या ऐसा हो सकता है की तुम अपने पैर जलाए बिना जलते हुए कोयलों पर चलो?
29 किसी दूसरे आदमी की पत्नी के साथ सोना भी उतना ही खतरनाक है। जो कोई ऐसा करेगा, उसे भुगतना पड़ेगा।

यदि आपके विश्वास के कारण आपका उपहास किया जाए, तो यह जानते हुए दृढ़ बने रहें कि आप धन्य हैं

1 पतरस 4:14-16

14 फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्‍वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है।

15 तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए।
16 पर यदि मसीही होने के कारण दुःख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।

जहां कुछ जगहों पर, कार्यक्षेत्रों पर ईसाइयों को बहुत सम्मान दिया जाता है, वहीं दूसरी जगहों पर, कार्यक्षेत्रों पर ईसाई धर्म को मानने वालों के प्रति विरोध बढ़ता हुआ दिखता है। कभी-कभी कार्यक्षेत्र पर आप पर जुबानी और दूसरे छोटे-मोटे हमले हो सकते हैं, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि आप ईसाई हैं। पवित्र शास्त्र हमें यह समझने का निर्देश देता है कि हम धन्य हैं, हमें समर्थ देने के लिए परमेश्वर का आत्मा हम पर है, और हमें लज्जित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। समझदारी से अपना जीवन जीना जारी रखें, और अपने विश्वास से जुड़े मामलों पर लोगों को बेवजह भड़काने वाला कोई भी काम न करें। अपना असाधारण कार्य करना जारी रखें, और अपने काम को ही अपनी पहचान बनने दें।

कुलुस्सियों 4:5 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
जो लोग विश्वास नहीं करते, उनके साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो तथा हर अवसर का अच्छा इस्तेमाल करो।

1 पतरस 2:15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम अपने भले कामों से मूर्ख लोगों की अज्ञानता की बातों को बंद कर दो ।

मत्ती 5:10-12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
10 "धन्य हैं वे जो सताए जाते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं; स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है!
11 "धन्य हो तुम जब लोग तुम्हारा अपमान करते हैं, तुम्हें सताते हैं और तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बुरी और झूठी बातें कहते हैं, क्योंकि तुम मेरे अनुयायी हो।
12 तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा इनाम

रखा है। इसी तरह उन भविष्यद्वक्ताओं को भी सताया गया था जो तुमसे पहले हुए थे।

भाई-भतीजावाद का बुद्धिमानी भरा जवाब

नीतिवचन 17:2

बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा, और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा।

एक और तरह का अन्याय जिसका सामना आपको कार्यक्षेत्र पर करना पड़ सकता है, वह है भाई-भतीजावाद; जहाँ अधिकारियों के परिवार वालों को पद मिल जाते हैं, भले ही वे उन भूमिकाओं को संभालने के काबिल न हों, जबकि दूसरों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। बुद्धिमानी से जवाब दें। आपकी बुद्धिमानी पर लोगों का ध्यान जाएगा और आपको उन चीज़ों तक पहुँच मिलेगी जो शायद परिवार के सदस्यों के लिए रखी जाती हैं।

नौकरी से निकाले जाने की सूचना (पिंक स्लिप) और सम्मानजनक निकास

रोमियों 8:28 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्‌वर से प्रेम रखते हैं, और जिन्हें उसने अपने उद्देश्य के अनुसार बुलाया है, सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।

किसी संगठन के साथ आपका समय कभी न कभी समाप्त हो ही जाएगा। कभी-कभी ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपका नियोक्ता आपको आगे बढ़ने के लिए कहता है। और कभी-कभी, आप स्वयं ही विभिन्न कारणों से ऐसा करने का निर्णय लेते हैं। हमेशा कोशिश करें कि आपका उस संगठन में से निकास अच्छे संबंधों के साथ, एक मैत्रीपूर्ण और सम्मानजनक तरीके से हो। इसके अलावा, कोई भी कदम उठाने से पहले अपने अगले कदम की प्लानिंग और तैयारी करने की कोशिश करें। इसका मतलब यह हो सकता है कि अपनी

मौजूदा नौकरी छोड़ने से पहले ही आपके पास अगली नौकरी “हाथ में” हो। हर परिस्थिति में, स्वयं को परमेश्वर और उसके उद्देश्य के प्रति समर्पित रखें; यह जानते हुए कि जब आप ऐसा करते हैं, तो वह सबकुछ आपकी भलाई के लिए करता है।

मुख्य सिद्धांत

1) पहाड़ों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।
2) सकारात्मक रवैया बनाए रखें। धन्यवादित रहें।
3) अपना आत्मविश्वास न खोएं।
4) अपनी सशक्त कार्यक्षमता का लाभ उठाएँ।
5) परमेश्वर ही आपका मालिक है; बुरे अधिकारियों और अन्याय करने वाले मालिकों की चिंता न करें।
6) जब आपको नीचा दिखाया जाए, तो वापस से उठ खड़े हों।
7) गपशप और संगठनात्मक राजनीति के स्तर तक नीचे न गिरें।
8) झूठे आरोपों के ख़िलाफ़ परमेश्वर ही आपकी ढाल हैं।
9) भाइयों के बीच व्यावसायिक विवादों को सुलझाना।
10) पुरुष-प्रधानता या पूर्वाग्रह को खुद पर हावी न होने दें; आप जो हैं, वही बने रहें।
11) पुरुषों की ओर से होने वाली यौन-संबंधी अनुचित पहल और अनुरोधों को “नहीं” कहें।
12) बहकानेवाली औरतों से दूर रहो; आग से न खेलें।
13) यदि आपके विश्वास के कारण आपकी निन्दा की जाती है, तो भी मज़बूती से डटे रहें, यह जानते हुए कि आप परमेश्वर के आशीष से धन्य हैं।

14) भाई-भतीजावाद का बुद्धिमानी भरा जवाब।

15) नौकरी से निकाले जाने की सूचना (पिंक स्लिप) और सम्मानजनक निकास।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- किसी बुरे अधिकारी या अन्याय करने वाले मालिक के लिए काम करना एक बहुत ही मुश्किल अनुभव हो सकता है। क्या कभी आप भी ऐसी किसी स्थिति में रहे हैं? आपने इसे कैसे संभाला? उस अनुभव से आपने क्या सबक सीखा?
- कार्यक्षेत्र पर होनेवाली गपशप तथा राजनीती किसी कर्मचारी पर कैसे असर डालती है? कार्यक्षेत्र पर इन चीज़ों से दूर रहने के कुछ तरीके क्या हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

17
भण्डारीपन

पेशेवर जीवन में सफलता के साथ-साथ संसाधनों और सृजित धन के उचित उपयोग के लिए व्यक्तिगत और संगठनात्मक जिम्मेदारी भी आती है। परमेश्वर के प्रति, हमारे समुदायों के प्रति और जरूरतमंदों के प्रति जिम्मेदारी होती है। हम इसे भण्डारीपन कहते हैं, जो अनिवार्य रूप से, किसी चीज़ की उचित देखभाल करना है जिसे कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने, बुद्धिमानी से उपयोग करने, गुणा करने और आने वाली पीढ़ियों को सौंपने की ज़िम्मेदारी हम पर सौंपी गई है।

इस अध्याय में, हम भण्डारीपन से संबंधित पवित्र शास्त्र आधारित प्रमुख सिद्धांतों पर प्रकाश डालेंगे।

अपनी निजी संपत्ति के द्वारा परमेश्वर का आदर करें

नीतिवचन 3:9,10

9 अपनी संपत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना;
10 इस प्रकार तेरे खत्ते भरे पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा।

1 इतिहास 29:11-14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

11 हे यहोवा! तू महान और सामर्थी, महिमामय, शोभायमान और भव्य हैं। स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ तेरी है, और तू राजा हैं, सभों के ऊपर सर्वोच्च शासक हैं।
12 सारी दौलत और संपत्ति तेरी ओर से मिलती है; तू अपने पराक्रम और सामर्थ्य से सब पर प्रभुता करता हैं; और किसी को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।

13 अब हे हमारे परमेश्वर! हम तेरा धन्यवाद करते हैं, और तेरे महिमामय नाम की स्तुति करते हैं।
14 "फिर भी, मैं और मेरे लोग वास्तव में तुझे कुछ भी नहीं दे सकते, क्योंकि सब कुछ तेरी ही देन है, और हमने तो बस वही तुझे दिया है जो पहले से ही तेरा है।"

पवित्र शास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि हमें इस समझ के साथ जीना चाहिए कि अंततः हर चीज़ का मालिक परमेश्वर ही है। हमारे पास जो धन-दौलत और संपत्ति है, वह सब उसी की है। इसलिए, यद्यपि हम इसका कुछ हिस्सा अपने लिए इस्तेमाल करते हैं, हमें उसे वापस भी देना चाहिए। यह उसका सम्मान करने और सभी चीज़ों पर उसके स्वामित्व को पहचानने का हमारा तरीका है। उसे वापस देने का भाव तब व्यक्त होता है, जब हम उसके राज्य और कलीसिया के कार्यों के लिए अपना 'दशमांश' (हमारी निजी आय का दसवाँ हिस्सा) देते हैं; और जब हम दूसरों को-विशेषकर गरीबों को, ज़रूरतमंदों को, या लोगों को आशीष देने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए, कुछ देते हैं।

अपनी निजी कमाई में से हमेशा दशमांश दें

मलाकी 3:10-12 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
10 अपने दशमांश का पूरा भाग मन्दिर में लाओ, ताकि वहाँ बहुत भोजनवस्तु हो। मुझे परखो और तुम देखोगे कि मैं स्वर्ग के झरोखे खोलकर तुम पर सब प्रकार की भली वस्तुएँ बहुतायत से उंडेलूँगा।
11 मैं कीड़ों को तुम्हारी फसल नष्ट नहीं करने दूँगा, और तुम्हारी दाखलताएँ अंगूरों से भरी रहेंगी।
12 तब सभी राष्ट्रों के लोग तुम्हें धन्य कहेंगे, क्योंकि तुम्हारा देश रहने के लिए एक मनोहर जगह होगी।

पुराने और नए नियम दोनों में, परमेश्वर के लोगों के रूप में हमें यह निर्देश दिया गया है (मत्ती 23:23; इब्रानियों 7:8 भी देखें) कि हम अपनी कमाई का दसवाँ भाग परमेश्वर के भवन में

दें। इस संदर्भ में, इसका अर्थ है कि हम अपनी आय का दसवाँ भाग उस स्थानीय कलीसिया में दें, जिसका हम हिस्सा हैं। यदि आपको मासिक वेतन मिलता है, तो हर महीने अपनी कुल कमाई (किसी भी कटौती से पहले का वेतन) का 10% परमेश्वर के राज्य के कार्य के लिए अपनी स्थानीय कलीसिया को दें। यह प्रभु पर अपनी निर्भरता व्यक्त करने, यह स्वीकार करने कि हमारे पास जो कुछ भी है वह हमें उसी से प्राप्त होता है, तथा पृथ्वी पर उसके राज्य के कार्य में निवेश करने का हमारा तरीका है। दशमांश के अलावा, हमें भेंट देने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है । यह भेंट कलीसिया की विशेष आवश्यकताओं के लिए, दूसरों की सहायता के लिए, या गरीबों और जरूरतमंदों की मदद के लिए दी जा सकती है।

उदार बनें—ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए दें

नीतिवचन 11:24,25 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
24 उदार लोगों का दायरा बढ़ता ही जाता है; कंजूस लोगों का दायरा घटता ही जाता है।
25 जो दूसरों को आशीष देता है, उसे भरपूर आशीष मिलती है; जो दूसरों की मदद करता है, उसकी मदद की जाती है।

1 तीमुथियुस 6:7-10,17-19 (द मैसेज अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
7 हम दुनिया में क्या लाए? कुछ नहीं! हम दुनिया से क्या ले जा सकते हैं? कुछ नहीं!
8 तो फिर, यदि हमारे पास भोजन और कपड़े हैं, तो यह हमारे लिए पर्याप्त होना चाहिए।
9 पर जो धनि होना चाहते हैं, वे परीक्षा में पड़ जाते हैं और कई व्यर्थ और नुकसानदायक लालसाओं के जाल में फंस जाते हैं, जो उन्हें बर्बादी और विनाश की ओर ले जाती हैं।
10 क्योंकि पैसे का लालच हर तरह की बुराई की जड़ है। कुछ लोग इसे पाने के इतने इच्छुक रहे हैं कि वे विश्वास से भटक गए हैं और उन्होंने नाना प्रकार के दुखों से अपना दिल तोड़ लिया है।

[17] जो लोग इस सांसारिक बातों में धनवान हैं, उन्हें आदेश दें कि वे अभिमानी न हो, और अपनी उम्मीद धन जैसी अनिश्चित वस्तु पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर रखें, जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है।
[18] उन्हें आदेश दें कि वे भलाई करें, भले कामों में धनी बनें, उदार बनें और दूसरों के साथ साझा करने के लिए तैयार रहें।
[19] इस तरह वे अपने लिए एक ऐसा धन जमा करेंगे जो भविष्य के लिए एक मज़बूत नींव होगा। और तब वे उस जीवन को पा सकेंगे जो सच्चा जीवन है।

हम काम करते हैं और पैसे कमाते हैं, लेकिन पैसा ही सब कुछ नहीं है। पैसा हमें नियंत्रित नहीं करता, बल्कि हम उसे नियंत्रित करते हैं और उसका इस्तेमाल करते हैं। हम पैसे पर भरोसा नहीं करते, बल्कि उस परमेश्वर पर भरोसा करते हैं जो हमें पैसा कमाने की ताकत देता है। परमेश्वर ने हमें उदार बनना, दूसरों के साथ चीज़ें बाँटना तथा ज़रूरतमंदों की मदद करना सिखाया है।

गलातियों 6:10 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
इसलिए, जब भी हमें अवसर मिले, हमें सभी का भला करना चाहिए, और विशेष करके उन लोगों का जो विश्वास के नाते हमारे परिवार का हिस्सा हैं।

गरीबों, विधवाओं और अनाथों को दान दें

याकूब 1:27 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
परमेश्वर पिता की दृष्टी में शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है: अनाथों और विधवाओं की उनके क्लेश के समय देखभाल करना और अपने आप को संसार की बुराइयों से बचाकर रखना।

नीतिवचन 22:9
दया करनेवाले पर आशीष फलती है, क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है।

नीतिवचन 28:27
जो निर्धन को दान देता है उसे घटी नहीं होती, परन्तु जो उससे दृष्टि फेर लेता है वह शाप पर शाप पाता है।

मत्ती 6:2-4 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

2 "इसलिए जब तुम किसी ज़रूरतमंद को कुछ दो, तो उसका दिखावा मत करो, जैसा कि पाखंडी लोग आराधनालयों और गलियों में करते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि उन्हें उनका प्रतिफल मिल चुका है।

3 परन्तु जब तुम किसी ज़रूरतमंद की मदद करो, तो उसे इस तरह करो कि तुम्हारे सबसे करीबी दोस्त को भी इसके बारे में पता न चले।
4 तब यह एक गुप्त बात रहेगी। और तुम्हारा पिता, जो गुप्त में किए गए तुम्हारे कामों को देखता हैं, तुम्हें प्रतिफल देगा।"

परमेश्वर ने हमें निर्देश दिया है कि हम अपने पैसे का इस्तेमाल गरीब और ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने में करें। जितना हो सके, गरीबों, अनाथों और विधवाओं की मदद करें। याद रखें, सिर्फ पैसा ही काफी नहीं है। उन्हें प्यार, देखभाल, तथा आत्मिक एवं भावनात्मक सहारे की भी ज़रूरत होती है। इस दिशा में भी अपना योगदान दें। और जब आप दें, तो चुपचाप दें। इसे सच्चे दिल से करें।

कॉर्पोरेट दशमांश और दान

संगठनों और व्यवसायों के मालिक अपने शुद्ध लाभ (शुद्ध कमाई या शुद्ध आय) का 10% या उससे अधिक हिस्सा अलग रखने पर सहमत हो सकते हैं।इस राशि का उपयोग कलीसिया में दशमांश देने, जरूरतमंदों की सहायता करने, गरीबों, अनाथों और विधवाओं की मदद करने, तथा ऐसे अन्य कार्यों को सहयोग देने के लिए किया जा सकता है जिनके प्रति मालिक या संगठन विशेष रूप से समर्पित हों।

गरीबी को दूर करना, अन्याय के विरुद्ध खड़े होना, तथा अन्य उद्देश्य

नीतिवचन 19:17

जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।

नीतिवचन 13:23
निर्बल लोगों को खेती बारी से बहुत भोजन–वस्तु मिलती है, परन्तु ऐसे लोग भी हैं जो अन्याय के कारण मिट जाते हैं।

नीतिवचन 31:8,9
8 गूँगे के लिये अपना मुँह खोल, और सब अनाथों का न्याय उचित रीति से किया कर।
9 अपना मुँह खोल और धर्म से न्याय कर, और दीन दरिद्रों का न्याय कर।

गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करने के अलावा, हमें लोगों को गरीबी और दूसरी सामाजिक बुराइयों से, जो उन्हें नीचे रखती हैं, बाहर निकालने में भी सक्रीय रूप से मदद करनी चाहिए। कुछ मामलों में, लोग अपने साथ हुए अन्याय से परेशान हो जाते हैं और अपने ऊपर अत्याचार करने वालों के खिलाफ आवाज़ नहीं उठा पाते। बाल मजदूरी, बंधुआ मजदूरी, बच्चों की तस्करी, वेश्यावृत्ति, तथा दूसरे गैर-कानूनी तरीके जिनसे जुल्म करने वाले लोग मजबूर लोगों का इस्तेमाल करके पैसे कमाते हैं, जैसी सामाजिक बुराइयों से लड़ने और उन्हें रोकने की ज़रूरत है। दुनिया के कुछ हिस्सों में लोगों को महामारी तथा दूसरी प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में मदद की ज़रूरत होती है। कुछ समुदायों को बुनियादी स्वास्थ्य और साफ-सफाई, बुनियादी ढांचे, शिक्षा और छोटे-मोटे कारोबार के विकास के लिए मदद की ज़रूरत होती है। हमारी दुनिया में ज़रूरत के और भी कई क्षेत्र हैं। एक व्यक्ति और एक संगठन के तौर पर, हम अपनी आर्थिक मदद देकर, अपना समय, विशेषज्ञता, कौशल और प्रभाव स्वेच्छा से देकर, उन लोगों की ज़िंदगी में बदलाव लाने में सार्थक रूप से शामिल हो सकते हैं जिन्हें मदद की ज़रूरत है।

हम सभी सृष्टि की देखभाल के लिए ज़िम्मेदार हैं

भजन संहिता 115:16
स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।

पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि यह पृथ्वी हमें इसलिए सौंपी गई है, ताकि हम इसका उपयोग भी करें और इसका सही ढंग से प्रबंधन भी करें। आदम की ज़िम्मेदारी बाग की खेती करना और बाग की रखवाली करना दोनों थी। परमेश्वर और लोगों से प्रेम करने, सुसमाचार का प्रचार करने और उसके राज्य का विस्तार करने, अपने इन मुख्य लक्ष्यों से भटके बिना, हमें पृथ्वी के संसाधनों की सुरक्षा, संरक्षण, बचाव और उन्हें बढ़ाने के काम में सार्थक रूप से जुटना चाहिए।

मुख्य सिद्धांत

1) अपनी निजी संपत्ति के द्वारा परमेश्वर का आदर करें।
2) अपनी निजी कमाई में से हमेशा दशमांश दें।
3) उदार बनें—ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए दें।
4) गरीबों, विधवाओं और अनाथों को दान दें।
5) कॉर्पोरेट दशमांश और दान।
6) गरीबी को दूर करना, अन्याय के विरुद्ध खड़े होना, तथा अन्य उद्देश्य।
7) हम सभी सृष्टि की देखभाल के लिए ज़िम्मेदार हैं।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- एक व्यक्ति के तौर पर, अपने मौजूदा दशमांश (टाईथिंग), उदारता और सामाजिक ज़िम्मेदारी के स्तर की समीक्षा करें। क्या ऐसे कुछ

क्षेत्र हैं जिनमें आप सुधार कर सकते हैं और थोड़ा और बेहतर कर सकते हैं?

- ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे संगठन अपने कर्मचारियों के बीच उदारता और सामाजिक ज़िम्मेदारी की संस्कृति विकसित कर सकते हैं? क्या आप अपने संगठन में इसकी शुरुआत कर सकते हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

भाग तीनः

कार्यक्षेत्र और आप

18
करियर में प्रगति

एक पेशेवर के तौर पर, आप पेशेवर रूप से आगे बढ़ना चाहेंगे (और आपको ऐसा करना भी चाहिए)। आज की दुनिया में, पेशेवर विकास न केवल कॉर्पोरेट सीढ़ी पर ऊपर की ओर होता है, बल्कि यह तब भी होता है जब आप नई भूमिकाओं, नौकरियों और कामों में कदम रखते हैं। करियर में तरक्की ज़ाहिर तौर पर आपके करियर के विकास पर निर्भर करती है—यानी आप अनुग्रह, वरदानों तथा कौशलों में लगातार निखार लाते रहें, और अपने ज्ञान, अनुभव और विशेषज्ञता को बढ़ाते रहें। "करियर लैटिस" (करियर के अलग-अलग पड़ावों) से गुज़रना इसलिए ज़रूरी है, क्योंकि यह आपके करियर के विकास में सहायता करता है। सही समय पर और सही तरीके से, करियर के अलग-अलग पड़ावों और बदलावों से कैसे गुज़रना है—इसकी जानकारी होना असली कुंजी है।

इस अध्याय में, हम करियर में तरक्की तथा करियर के विभिन्न चरणों में आगे बढ़ने से जुड़ी उन पवित्र शास्त्र आधारित अंतर्दृष्टियों पर चर्चा करेंगे, जिनके माध्यम से आप उस **'व्यक्ति'** के रूप में विकसित होते हैं, उस **'जगह'** तक पहुँचते हैं, और उस **'उद्देश्य'** को पूरा करते हैं जो परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए निर्धारित किया है।

आप अपने काम के प्रतिफल का आनंद ले सकते हैं

भजन संहिता 128:1-4 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

1 धन्य हैं वे जो यहोवा की आज्ञा मानते हैं, और उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं।

[2] तुम्हारा काम तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करेगा; तुम खुशहाल और समृद्ध होगे।
[3] तुम्हारी पत्नी तुम्हारे घर में फलवन्त दाखलता के समान होगी, और तुम्हारे बच्चे तुम्हारी मेज़ के चारों ओर जैतून के छोटे पौधों के समान होंगे।
[4] जो पुरुष यहोवा की आज्ञा मानता है उसे निश्चित रूप से ऐसी ही आशीष मिलेगी।

पवित्र शास्त्र में दिए गए वायदों में से एक यह है कि आप अपने काम के फलों का आनंद ले सकते हैं। परमेश्वर आपको आशीष देगा ताकि आपका काम आपकी ज़रूरतों को पूरा कर सके और आप खुशहाल व समृद्ध बन सकें। परमेश्वर के वचन पर विश्वास करें और अपनी ज़िंदगी में इस वायदें को पूरा होते देखने के लिए उसी की ओर देखें। ऐसा होने के लिए, एक पेशेवर के तौर पर, इसका मतलब है कि आपको अपने कौशल, ज्ञान और विशेषज्ञता (करियर विकास) को निखारने की ज़रूरत है, ताकि आप पेशेवर रूप से आगे बढ़ सकें (करियर में तरक्की)। करियर में तरक्की एक रोमांचक यात्रा है जिसे आप पेशेवर तौर पर परमेश्वर के साथ मिलकर तय कर रहे हैं।

तरक्की प्रभु की ओर से आती है

भजन संहिता 75:6,7
[6] क्योंकि बढ़ती न तो पूर्व से न पश्चिम से, और न जंगल की ओर से आती है;
[7] परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।

1 पतरस 5:6 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

तरक्की और विकास का रास्ता परमेश्वर ही बनाता हैं, इसलिए उसी की ओर देखें। परमेश्वर के सामने नम्रता से चलते रहें, और अपने जीवन के लिए उसके उद्देश्य को पूरा करते रहें। अपनी काबिलियत को सीखकर और निखारकर, पेशेवर तौर पर आगे बढ़ने में अपना

योगदान देते रहें। वह यह सुनिश्चित करेगा कि आपको तरक्की ज़रूर मिले।

उत्कृष्टता का प्रतिफल मिलेगा

नीतिवचन 22:29

यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो काम–काज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।

उत्कृष्टता—बेहतरीन काम करने से आपको तरक्की मिलेगी और आप अगुवों की नज़र में आएँगे। इसलिए, आप जो भी काम करते हैं, उसमें बेहतरीन बनें। अपने काम में उत्कृष्टता पाने की कोशिश करें। औसत से संतुष्ट न हों। याद रखें उत्कृष्टता कोई "एक बार की" चीज़ नहीं है। आपके काम में उत्कृष्टता लगातार दिखाई देनी चाहिए।

बुद्धि दरवाज़े खोलती है

नीतिवचन 12:8

मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है।

हालाँकि ज्ञान और कौशल ज़रूरी हैं, लेकिन अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल करके समस्याओं को सुलझाने, समाधान खोजने, भविष्य की कल्पना करने और काम करने का तरीका तय करने के लिए बुद्धि की ज़रूरत होती है। इस तरह की समझ आपको सम्मान दिलाएगी और आपके लिए नए दरवाज़े खोलेगी। इसलिए, परमेश्वर से इस क्षमता के लिए प्रार्थना करें। साथ ही, इस पर काम भी करें। इस क्षमता को विकसित करें- सिर्फ़ ज्ञान, समझ और कौशल हासिल करना ही नहीं, बल्कि इन सबको एक साथ मिलाकर समस्याओं को सुलझाना, कुछ नया बनाना, भविष्य की कल्पना करना और कुछ नया आविष्कार करना।

नीतिवचन 4:8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
ज्ञान से प्रेम करो, और वह तुम्हें महान बनाएगी। उससे लिपट जाओ, तब वह तेरी महिमा करेगी।

शुद्ध मन और मनोहर वचन आपको लोगों की नज़र में लाएँगे

नीतिवचन 22:11
जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है, और जिसके वचन मनोहर होते हैं, राजा उसका मित्र होता है।

पेशेवर तौर पर खुद को बेहतर बनाने के साथ-साथ, यह भी समझें कि ईमानदारी, नम्रता और सही रवैये जैसे ज़रूरी गुण आपको लोगों की नज़र में लाएँगे और आपको ऊँचे ओहदे वाले लोगों और जगहों तक पहुँच दिलाएँगे। पवित्र आत्मा के फल के अनुसार चलने की उपेक्षा न करें।

तुम्हें जितना अधिक दिया गया है, उतना ही अधिक तुम्हें देना होता है

लूका 12:48 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
'परन्तु जो दास यह नहीं जानता कि उसका मालिक क्या चाहता है, और फिर भी ऐसा कुछ करता है जिसके लिए उसे कोड़े मारे जाने चाहिए, उसे थोड़े कोड़े मारे जाने की सज़ा मिलेगी। जिसे बहुत कुछ दिया गया है, उससे बहुत कुछ की उम्मीद की जाती है; और जिसे उससे भी कहीं ज़्यादा दिया गया है, उससे और भी ज़्यादा की उम्मीद की जाती है।'

यदि आप किसी संगठन में कोई बड़ी भूमिका, पद और ज़िम्मेदारी पाना चाहते हैं, तो यह समझ लें कि बदले में आपसे भी बहुत ज़्यादा उम्मीदें रखी जाएँगी। इसलिए, असली सवाल यह है कि क्या आप इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी संभालने के लिए तैयार हैं? क्या आपमें किसी ऊँचे पद और भूमिका की ज़िम्मेदारी निभाने की काबिलियत है? क्या आपके पास ज़रूरी कौशल और क्षमताएँ हैं? क्या आप इन कौशलों

और क्षमताओं को विकसित करने पर काम कर रहे हैं? अगर नहीं, तो करियर में आगे बढ़ने की आपकी कोई भी इच्छा महज़ एक कोरी कल्पना ही है। अगर आप उस अगले स्तर तक पहुँचने के लिए अपनी क्षमता और व्यक्तिगत योग्यताओं को बढ़ाने के लिए ज़रूरी मेहनत करने को तैयार नहीं हैं, तो आप सचमुच वहाँ तक नहीं पहुँच पाएँगे; या अगर पहुँच भी गए, तो शायद आप उन उम्मीदों पर खरे नहीं उतर पाएँगे जो आपसे की जाती हैं। इसलिए, अगले स्तर तक पहुँचने के लिए अपना पूरा योगदान दें। तैयारी करें। सीखें। बढ़े। तैयार हो जाएँ।

आप जितना ऊपर जाते हैं, दांव उतने ही ऊंचे होते जाते हैं

पेशेवर तौर पर ऊंचे पदों और भूमिकाओं तक पहुंचना इस बात का भी संकेत है कि अब दांव और भी ऊंचे हो गए हैं। इसमें जोखिम ज़्यादा होता है, चुनौतियां बड़ी होती हैं, और आपके फैसलों का असर भी कहीं ज़्यादा होता है। आपकी ज़िम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। इसकी कीमत भी आपको ज़्यादा चुकानी पड़ती है। आपको जिस दबाव का सामना करना पड़ता है, वह भी कहीं ज़्यादा तीव्र होता है। इसलिए, आपको यह भी जांचना होगा कि क्या आप इसके लिए मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक रूप से तैयार हैं। अतः, अपनी पेशेवर क्षमताओं को निखारने के साथ-साथ, खुद को मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से भी तैयार करें।

बेरोज़गारी के दौर से गुज़रते समय सब्र रखें

भजन संहिता 37:23-25

23 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;
24 चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।
25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े माँगते देखा है।

ज़्यादातर लोगों के लिए बेरोज़गारी का दौर सच में बहुत मुश्किल

होता है, जब तक कि वे अपनी मर्ज़ी से काम से ब्रेक न ले रहे हों। अगर बेरोज़गारी का यह दौर लंबा खिंच जाता है, तो इससे कई तरह की नकारात्मक भावनाएँ, डिप्रेशन, अकेलापन और निराशा पैदा हो सकती है। आप जिस भी वजह से बेरोज़गार हुए हों, प्रभु पर अपना भरोसा बनाए रखें। वे काम करते रहें जिनके बारे में आप जानते हैं कि आपको उन्हें करना चाहिए, जैसे नौकरी खोजना, अपने कौशल को बढ़ाना इत्यादि। प्रभु के सामने "ठहरे" रहे, परन्तु याद रखें कि "प्रभु के सामने ठहरे रहने" का मतलब यह नहीं है कि आप हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और कुछ भी न करें। ठहरने का मतलब निष्क्रियता नहीं है। ठहरे रहने का मतलब है कि आप सब्र रखते हैं और उम्मीद के साथ परमेश्वर के समय का इंतज़ार करते हैं, और साथ ही वह करते हैं जो आप जानते हैं कि वह इस समय में आपसे करवाना चाहता है। "ठहरे रहने का समय" जीवन के अगले पड़ाव के लिए खुद को तैयार करने का एक बेहतरीन समय होता है, जिसमें आप जल्द ही कदम रखने वाले हैं।

यशायाह 64:4
क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे।

परमेश्वर आपकी सहायता के लिए आएगा और आपको सही मौकों तक ले जाने के लिए दरवाज़े खोलेगा। इसका मतलब हो सकता है किसी अप्रत्याशित स्रोत से नौकरी का अवसर मिलना, काम के किसी नए क्षेत्र में नौकरी पाना, या फिर स्वरोज़गार की ओर बढ़ना जहाँ आप कोई नया व्यवसाय शुरू करते हैं। बेरोज़गारी के इस दौर में परमेश्वर आपको जिस भी मार्ग से ले जाएं, उनका अनुसरण करें।

परमेश्वर पुनःस्थापना का परमेश्वर हैं। बेरोज़गारी के इस दौर में

जो कुछ भी खो गया है, उसे पुनःस्थापित करने में वह सक्षम भी हैं और इच्छुक भी। उस पर विश्वास करें कि वह ऐसा करेगा। उम्मीद करें कि वह आपके लिए ऐसा करेगा।

अय्यूब 42:10
जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया, और जितना अय्यूब के पास पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया।

अपनी नई नौकरी में कदम रखते समय आगे की ओर देखें

फिलिप्पियों 3:13,14
13 हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ,
14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

फिलिप्पियों 1:6
मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा **करेगा।**

हालाँकि ऊपर बताए गए इन दोनों वचनों में से कोई भी सीधे तौर पर कार्यक्षेत्र का ज़िक्र नहीं करता, फिर भी वे हमारी आत्मिक समझ का एक अहम हिस्सा हमारे सामने रखते हैं, जब हम जीवन के तमाम अनुभवों से गुज़रते हुए परमेश्वर के साथ अपनी यात्रा तय करते हैं। हमें अतीत को पीछे छोड़कर, भविष्य में आने वाली चीज़ों की ओर आगे बढ़ना सीखना होगा। इसका मतलब यह है कि भले ही हम अतीत की सभी बेहतरीन चीज़ों के लिए शुक्रगुज़ार हैं, परन्तु हम अतीत में नहीं जी सकते। न ही हम अतीत को हमें कैद करने और हमारे आने वाले भविष्य को छीनने की इजाज़त दे सकते हैं। हमें आगे बढ़ने के लिए पूरी कोशिश करनी होगी और भविष्य में जो कुछ हमारे सामने है, उसे

पाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगानी होगी। भविष्य में जो कुछ हमारे सामने है, उसे पाने के लिए हमें जानबूझकर पूरी लगन और तीव्रता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। और हम यह सब इस विश्वास के साथ करते हैं कि परमेश्वर, जिसने हमारे भीतर एक अच्छा काम आरम्भ किया है, वह उस काम को पूरा भी करेगा।

इस समझ को अपने पेशेवर जीवन में लागू करने का मतलब है कि हम अपने साथ वह ज्ञान, अनुभव, सीख, कौशल और अन्य अच्छी चीज़ें लेकर चलते हैं, जिन्हें हमने पिछले कई सालों में विकसित किया है। हम यह भी तय करते हैं कि हम अतीत के बुरे अनुभवों या असफलताओं को खुद पर हावी नहीं होने देंगे। साथ ही, हम अपनी नई नौकरी में, जिसमें हम कदम रख रहे हैं, पूरी लगन और इरादे के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की हर संभव कोशिश करते हैं। और हम यह सब इस विश्वास के साथ करते हैं कि हमारे इस नए प्रयास में परमेश्वर हमारे साथ हैं।

नौकरी से उद्यमिता की ओर बढ़ते समय हियाव बांधे

यहोशू 1:9

क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।"

उद्यमिता रोमांचक होती है! कोई संगठन, व्यवसाय या किसी अन्य प्रकार का उद्यम शुरू करना, भविष्य की कल्पना करना, वहाँ तक पहुँचने का सबसे अच्छा मार्ग तय करना, लोगों और अन्य संसाधनों को एक साथ लाना, यह पूरा सफर सचमुच रोमांचक होता है। यह उत्साह बढ़ाने वाला है लेकिन रास्ते में बहुत सारे खतरे भी हैं।इस बदलाव से गुजरने के लिए कोई एकमात्र रास्ता नहीं है। कुछ लोग खुद को तैयार करने में काफी समय लगाते हैं और फिर कदम उठाते हैं। दूसरे लोग अपने सामने एक मौका देखते हैं और लगभग

रातों-रात कदम उठा लेते हैं। बेशक, अगर हालात इजाज़त दें, तो कर्मचारी से उद्यमी बनने से पहले पूरी तैयारी करना सबसे अच्छा होगा। आखिरकार, यह विश्वास और साहस का कदम है। जब आप यह कदम उठाएँ, तो समझदारी से उठाएँ। यह प्रभु पर भरोसा करके करें, यह जानते हुए कि तुम जहाँ भी जाओगे, वह तुम्हारे साथ रहेगा। मज़बूत बनें। हिम्मत रखें। विश्वास के साथ आगे बढ़ें।

("किंगडम एंटरप्रेन्योरशिप" के बारे में अगले चैप्टर में और जानकारी दी जाएगी।)

मुख्य सिद्धांत

1) आप अपने काम के प्रतिफल का आनंद ले सकते हैं।
2) तरक्की प्रभु की ओर से आती है।
3) उत्कृष्टता का प्रतिफल मिलेगा।
4) बुद्धि दरवाज़े खोलती है।
5) शुद्ध मन और मनोहर वचन आपको लोगों की नज़र में लाएँगे।
6) तुम्हें जितना अधिक दिया गया है, उतना ही अधिक तुम्हें देना होता है।
7) आप जितना ऊपर जाते हैं, दांव उतने ही ऊंचे होते जाते हैं।
8) बेरोज़गारी के दौर से गुज़रते समय सब्र रखें।
9) अपनी नई नौकरी में कदम रखते समय आगे की ओर देखें।
10) नौकरी से उद्यमिता की ओर बढ़ते समय हियाव बांधे।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जिनमें आप अपनी मौजूदा भूमिका में बेहतरीन प्रदर्शन कर सकते हैं? आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि आप लगातार ऐसा करते रहें?
- आपके पेशेवर करियर के अगले चरण के लिए संभावित विकल्प क्या हो सकते हैं? यदि इनमें से कोई भी अवसर सामने आता है, तो आप उसमें कदम रखने के लिए खुद को कैसे तैयार करेंगे?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

19
काम और निजी जीवन का संतुलन

निजी और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाना एक गंभीर चुनौती है, जिसका सामना लगभग सभी कामकाजी पेशेवरों को करना पड़ता है। हममें से ज़्यादातर लोगों के जीवन में, काम और निजी जीवन के बीच सही संतुलन न होना ही कई समस्याओं और टकरावों का मुख्य कारण बन जाता है। लेकिन सही समझ और कौशल के साथ, हम "काम और निजी जीवन" नामक इस कभी-कभी तूफानी यात्रा को सफलतापूर्वक पार कर सकते हैं।

डिजिटल दुनिया में काम और निजी ज़िंदगी के बीच तालमेल बिठाना लगातार मुश्किल होता जा रहा है। यह वास्तविकता कि हम दुनिया भर में इतने अच्छे से जुड़े हुए हैं, इसके कई फायदे और नुकसान भी हैं। इसका एक असर उस चीज़ पर पड़ता है जिसे आम तौर पर "काम और निजी जीवन का संतुलन" (वर्क लाइफ बैलेंस) कहा जाता है। हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम अधिक घंटों तक और सप्ताह में अधिक दिनों तक काम करें। बहुत अधिक ओवरटाइम, और यह अनकही अपेक्षा कि कार्यालय से निकलने के बाद भी, यहाँ तक कि सप्ताहांत और छुट्टियों में भी हम काम से जुड़े रहें, धीरे धीरे हमारे जीवन पर बुरा प्रभाव डालने लगती है।

कंपनियाँ अच्छी पगार, पदोन्नति, काम करने का शानदार माहौल, काम में लचीलापन और दूसरे फ़ायदों से इसकी भरपाई करने की कोशिश करती हैं, लेकिन सवाल यह है कि इन सबका किसी व्यक्ति की निजी ज़िंदगी और परिवार पर क्या असर पड़ता है!

काम और निजी जीवन में असंतुलन के कुछ नतीजे क्या हो सकते हैं?

आपको क्या लगता है कि इनमें से किसका सामना आप अभी कर रहे हैं?

☐ हमेशा तनाव में रहना (तनावग्रस्त, चिड़चिड़ापन)	☐ परिवार के लिए समय न होना	☐ क्षणिक आनंद पाने के लिए भागना (शराब, नशीले पदार्थ आदि)
☐ भावनात्मक विकार	☐ वैवाहिक / पारिवारिक संघर्ष	....
☐ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं	☐ असंतोष की भावना	....

काम और निजी जीवन के बीच बेहतर तालमेल बिठाने के लिए लोग कई विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। इनमें से कुछ विकल्पों में नौकरी या करियर बदलना, उन्नति और तरक्की के मौकों को छोड़ देना, काम के घंटे कम करना और कम वेतन स्वीकार करना शामिल है; या फिर शादीशुदा जोड़ों के मामले में, पति-पत्नी में से कोई एक परिवार की देखभाल के लिए काम छोड़ देने का फ़ैसला कर सकता है।

त्वरित जाँच 1: काम और निजी जीवन संतुलन का प्रतिशत संकेतक

औसतन, पिछले छह महीनों में, 1 से 5 के पैमाने का उपयोग करते हुए, बताएँ कि आपके पास इनमें से प्रत्येक गतिविधि के लिए कितना समय था।

1 = बिल्कुल समय नहीं, 2 = मुश्किल से ही कोई समय, 3 = बस पर्याप्त समय, 4 = काफ़ी समय, 5 = बहुत सारा समय

1) आराम करने का समय	
2) परिवार के साथ समय बिताने का समय	
3) मनोरंजन / फुर्सत का समय	
4) अन्य रुचियों / शौक को पूरा करने का समय	
5) सोचने और योजना बनाने का समय	
6) नियमित व्यायाम करने का समय	
7) नए कौशल सीखने का समय	
8) दोस्तों / समुदाय के साथ मेल-जोल बढ़ाने का समय	
9) चिंतन करने और आध्यात्मिक मामलों में लीन होने का समय	
10) छुट्टियों का समय (काम से दूर रहने का समय)	
कुल	
x 2 =	%

ज़्यादा प्रतिशत को इस बात का संकेत माना जा सकता है कि आप काम और निजी जीवन के बीच बेहतर संतुलन बनाने के करीब पहुँच रहे हैं।

काम और निजी जीवन के बीच संतुलन का असल मतलब उस स्थिति तक पहुँचना है, जहाँ आप (और आपका परिवार) अपने जीवन जीने के तरीके से (या साथ मिलकर अपने जीवन से) खुश हों।

त्वरित जाँच 2: काम और निजी जीवन में असंतुलन के संभावित कारण

हमें अपने पारिवारिक, पेशेवर, निजी और आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन बनाना इतना मुश्किल क्यों लगता है?

आइए, उन संभावित कारणों की पहचान करने के लिए एक त्वरित जाँच करें।

0 = लागू नहीं, 1 = कभी-कभी, 3 = अक्सर, 5 = हमेशा

अ	1) मैं मुझे सौंपे गए कामों को पूरा करने के लिए समय का सही प्रबंधन नहीं कर पाता।	
	2) अपना काम करने के तरीके में बहुत कुशल नहीं हूँ ।	
	3) सोशल मीडिया और दूसरी गतिविधियों से ध्यान भटकता है ।	
	4) जो काम कर रहा हूँ, उसके लिए उत्साहित नहीं रहता; प्रेरणा की कमी ।	
	5) समझ नहीं आता कि हर दिन मेरा समय कैसे बीत जाता है ।	
	कुल स्कोर (भाग अ)	

ब	1) बहुत ज़्यादा काम और काम पूरा करने की कड़ी समय-सीमा, जिसके कारण लंबे समय तक काम करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।	
	2) मेरी टीम के अन्य सदस्यों के खराब प्रदर्शन की भरपाई करनी पड़ती है।	
	3) काम के सिलसिले में बहुत ज़्यादा यात्रा करनी पड़ती है।	
	4) कार्यक्षेत्र पर आपसी टकराव / राजनीति के कारण व्यक्तिगत उत्पादकता में कमी।	
	5) काम को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए पर्याप्त उपकरणों का अभाव।	
	कुल स्कोर (भाग ब)	
क	1) मैं बहुत अधिक काम करता हूँ (वर्कहॉलिक); यदि मैं हर समय काम नहीं कर रहा होता, तो मुझे अधूरापन महसूस होता है।	
	2) मैं महत्वाकांक्षी हूँ और जल्दी तरक्की पाने के लिए बहुत ज़्यादा काम करता हूँ।	
	3) मैं ज़्यादा पैसे कमाने के लिए बहुत ज़्यादा काम करता हूँ।	
	4) स्वेच्छा से ज़रूरत से ज़्यादा काम अपने ऊपर ले लेता हूँ।	
	5) परिवार के साथ समय बिताने, आराम करने, मनोरंजन और सुकून को कोई खास अहमियत नहीं देता।	
	कुल स्कोर (भाग क)	

ड	1) रोज़ाना आने-जाने में बहुत ज़्यादा समय खर्च होता है ।	
	2) पति / पत्नी अलग-अलग शेड्यूल / काम के समय पर काम करते हैं ।	
	3) दूसरी अतिरिक्त गतिविधियों में बहुत ज़्यादा शामिल होने से समय कम पड़ जाता है ।	
	4) परिवार से ज़्यादा मदद मिले बिना घर पर भी काम का बोझ उठाना पड़ता है ।	
	5) परिवार या दूर के रिश्तेदारों की खास ज़रूरतें।	
	कुल स्कोर (भाग ड)	

त्वरित जांच 2 से, भाग अ, ब, क, और ड के लिए अपना स्कोर खाली लाइन में डालें (ज़्यादा से ज़्यादा स्कोर 25 है)।

अ	ब	क	ड
व्यक्तिगत कौशल	**कार्यक्षेत्र से संबंधित**	**व्यक्तिगत जीवनशैली**	**अन्य कारक**
भाग-अ	**भाग-ब**	**भाग-क**	**भाग-ड**
उन क्षेत्रों की पहचान करता है जिन पर आपका नियंत्रण है और जिन पर आप व्यक्तिगत रूप से काम कर सकते हैं। ये ऐसे व्यक्तिगत कौशल और अनुशासन हैं जिन्हें आप अपनी व्यक्तिगत उत्पादकता और कार्य-कुशलता को बेहतर बनाने में मदद के लिए विकसित कर सकते हैं।	उन क्षेत्रों की पहचान करता है जो कार्यक्षेत्र से संबंधित हैं। इनमें से कुछ क्षेत्रों को सुलझाने के लिए आपको अपने मैनेजर या HR से बात करने की आवश्यकता हो सकती है। साथ ही, उन चीज़ों में फ़र्क करें जो कम समय के लिए होती हैं और जो हमेशा बनी रहती हैं।	उन क्षेत्रों की पहचान करता है जिन पर आपका नियंत्रण है, और जिनमें उचित काम और निजी जीवन संतुलन (वर्क लाइफ बैलेंस) स्थापित करने के लिए आपको अपनी जीवनशैली, विकल्पों तथा गतिविधियों में कुछ बदलाव करने की आवश्यकता हो सकती है। इनमें से कुछ बदलाव आपको अपने जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर करने पड़ सकते हैं।	उन क्षेत्रों की पहचान करता है, जिन पर आपको अपने जीवनसाथी और/या परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर ध्यान देने की आवश्यकता है।

किसी कर्मचारी के काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाने में आने वाली मुश्किलों के लिए किसे ज़िम्मेदार ठहराया जाना चाहिए? क्या यह वह संगठन है जो कर्मचारी से बेहिसाब माँगें करता है? या फिर वह कर्मचारी है जो परिवार, निजी समय, सेहत और भी बहुत कुछ की कुर्बानी देकर उन माँगों को मान लेता है?

शायद इसका जवाब कहीं बीच में ही है, लेकिन ज़्यादातर कर्मचारी की तरफ़ ही है। संगठन अपने कर्मचारियों की मदद के लिए बस एक हद तक ही कुछ कर सकते हैं। बाकी ज़िम्मेदारी आपकी है–यानी कर्मचारी की–कि आप तय करें कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है।

हालांकि संगठन, अगुवे और मैनेजर काम और निजी जीवन संतुलन के महत्व को समझते हैं, फिर भी कंपनी के लक्ष्यों को ही प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए, मूल रूप से, एक व्यक्ति के तौर पर आपको यह समझना होगा कि भले ही संगठन कुछ हद तक आपके प्रति मददगार और सहायक हो सकता है, लेकिन आपको अपने मनचाहे लचीलेपन और व्यवस्थाओं का अधिकार खुद ही अर्जित करना होगा, ताकि आपका निजी जीवन भी बेहतर बन सके। आपको व्यक्तिगत रूप से ऐसी रणनीतियाँ और कौशल विकसित करने होंगे, जिनसे आप कार्यक्षेत्र पर प्रभावी बने रहें और अपनी कार्य-क्षमता से समझौता किए बिना निजी जीवन में भी संतुलन बनाए रख सकें। इसके बाद, आपको अपने अधिकारी, मैनेजर या संगठन के साथ काम और निजी जीवन से जुड़ी व्यवस्थाओं पर बातचीत करनी होगी।

व्यावहारिक सुझाव

यहाँ पवित्र शास्त्र पर आधारित कुछ व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं, जो कार्यक्षेत्र के दबावों और माँगों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया को सही दिशा देने में सहायक होंगे। व्यक्तिगत रूप से, आपको अपने

लिए और अपने परिवार के लिए काम और निजी जीवन के बीच ऐसा संतुलन बनाना होगा, जो आपके लिए सबसे अधिक उपयुक्त हो।

उपासना, काम और विश्राम का तालमेल बनाए रखें

निर्गमन 20:8-10 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

8 सब्त के दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।
9 छः दिन परिश्रम करो और अपने सभी काम-काज पूरे करो।
10 परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर के लिए सब्त है। उस दिन कोई काम रो—न तुम, न तुम्हारा बेटा, न तुम्हारी बेटी, न तुम्हारा दास, न तुम्हारी दासी, न तुम्हारे पशु, और न ही तुम्हारे शहर में आया कोई परदेशी मेहमान।

परमेश्वर ने उपासना, काम और विश्राम का आदेश दिया है। हमें उपासना, काम और विश्राम का एक रोज़ाना और हफ़्तेवार तालमेल बनाए रखने की ज़रूरत है। हर दिन हम उपासना, काम और विश्राम के लिए पर्याप्त समय निकालते हैं। हमें "उपासना, काम और विश्राम" का साप्ताहिक क्रम भी बनाए रखना चाहिए—सात दिनों में से एक दिन विश्राम और उपासना के लिए अलग रखना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होता है कि हम आलस या अत्यधिक काम करने जैसी अतियों से बचते हैं।

कुछ दिन, और कभी-कभी कुछ सप्ताह ऐसे भी होंगे, जब विभिन्न परिस्थितियों के कारण यह क्रम बाधित हो सकता है। शायद यात्रा के कारण, प्रोजेक्ट की कड़ी समय-सीमाओं के कारण, या अन्य घटनाओं और गतिविधियों के कारण, जिनमें हमारे समय की आवश्यकता होती है। हालाँकि, जब यह समय बीत जाता है, तो हम उपासना, काम और विश्राम के अपने दैनिक और साप्ताहिक क्रम पर वापस लौट आते हैं।

जो चीजें महत्वपूर्ण है, उसके प्रति समर्पित रहें

मरकुस 12:29-31 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

29 यीशु ने कहा, "सबसे ज़रूरी बात यह है, 'हे इस्राएल सुन! प्रभु हमारा

परमेश्‍वर एक ही प्रभु है,
30 इसलिए अपने पूरे जोश, प्रार्थना, समझ और ताकत के साथ परमेश्वर से प्रेम रखो।'
31 और दूसरी बात यह है: 'दूसरों से वैसे ही प्यार करो जैसे तुम अपने आप से करते हो।' इनके बराबर कोई और आज्ञा नहीं है।"

काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए, हमें उन चीज़ों के प्रति समर्पित रहना चाहिए जो महत्वपूर्ण हैं।

जानें कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है

यह कुछ ऐसा है जिसे आपको खुद तय करना होगा। कुछ अमूर्त चीज़ें—जैसे कि परमेश्वर के साथ आपका निजी रिश्ता, आपका परिवार, और सार्थक संबंध—आपके लिए पैसे, पेशेवर सफलता और दूसरी तारीफ़ों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हो सकती हैं। आप उस चुनौती को स्वीकार करना चुन सकते हैं जो प्रभु यीशु ने हमारे सामने रखी थी: *"इसलिये पहले तुम परमेश्‍वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी"* (मत्ती 6:33)।

सही कीमत को समझें और एक मूल्य-पैमाना रखें

हमें चीज़ों की सही कीमत को समझना चाहिए। कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जो अनमोल होती हैं, जिन्हें पैसे से नहीं खरीदा जा सकता। पैसा ज़रूरी है और एक अच्छा साधन भी है, लेकिन पैसा एक खुशहाल घर नहीं खरीद सकता। पैसा सार्थक रिश्ते नहीं खरीद सकता। पैसे से परमेश्वर के साथ गहरा और करीबी रिश्ता नहीं बनाया जा सकता।पैसा शांति और सुकून नहीं दे सकता।

लूका 12:15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
और उसने उन सभी से कहा, "चौकस रहो और हर प्रकार के लालच से अपने आप को बचाए रखो; क्योंकि तुम्हारा असली जीवन उन चीज़ों से नहीं बनता जो तुम्हारे पास हैं, चाहे तुम कितने भी धनवान क्यों न हो।"

दो बहनों, मरियम और मार्था की एक कहानी है, जिनसे एक दिन यीशु मिलने गया था। आगे जो हुआ, वह इस प्रकार है...

लूका 10:38-42 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
38 जब वे आगे बढ़ रहे थे, तो यीशु एक गाँव में गया। मार्था नाम की एक स्त्री ने उसका स्वागत किया और उसे अपने घर में उतारा।
39 मरियम नामक उसकी एक बहन थी, जो प्रभु के चरणों बैठी थी और उसकी हर बात ध्यान से सुन रही थी।
40 परन्तु मार्था को रसोई में जो कुछ भी करना पड़ रहा था, उससे उसका ध्यान भटक रहा था। बाद में, वह बीच में आकर उन्हें टोकते हुए बोली, "हे प्रभु,क्या तुझे कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे रसोई में मुझे अकेली ही छोड़ दिया है? उससे कहो कि वह मेरी मदद करे।"
41 प्रभु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, प्यारी मार्था, तुम बहुत ज़्यादा चिंता कर रही हो और बिना किसी बात के घबरा रही हो।
42 सिर्फ़ एक ही चीज़ ज़रूरी है, और मरियम ने उसे ही चुना है – यह सबसे उत्तम भाग है, और यह उससे छीना नहीं जाएगा।

हालांकि शानदार खाना बनाना अच्छा है, परन्तु मरियम ने यीशु के साथ रहने और उसकी बातें सुनने के इस कीमती पल को ज़्यादा अहमियत दी।

आप परमेश्वर के साथ अपने निजी रिश्ते, अपने परिवार, अपनी सेहत, अपने बच्चों, अपने काम, परमेश्वर की सेवा करने, इत्यादि को कितनी अहमियत देंगे? एक अहमियत का पैमाना तय करें, ताकि आप अपने मन में यह साफ़ तौर पर जान सकें कि आपके लिए असल में कौन सी चीज़ें ज़्यादा अहमियत रखती हैं। मिसाल के तौर पर, पवित्र शास्त्र में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने तीन मुख्य संस्थाएँ बनाई हैं — परिवार, कलीसिया और सरकार। परिवार की संस्था सबसे बुनियादी है। परिवार पर ध्यान दें। परिवार को काम से ज़्यादा अहमियत दें।

एक बार जब आपके पास 'वैल्यू स्केल' (मूल्य पैमाना) आ जाता है, तो आप चीज़ों में फ़र्क कर पाएँगे, उन्हें सही समय पर कर पाएँगे,

उनमें बदलाव कर पाएँगे और उन्हें एक-दूसरे के अनुरूप ढाल पाएँगे। इस बात में फ़र्क करें कि क्या ज़रूरी है (जिसका मूल्य ज़्यादा है) और क्या गौण है (जिसे किसी और समय किया जा सकता है)। सही समय का मतलब है—पहले ज़रूरी काम करना, और उसके बाद गौण काम करना। जब भी ज़रूरत हो, अपने समयसारणी में इस तरह बदलाव करें कि कम महत्वपूर्ण कामों के बजाय ज़्यादा महत्वपूर्ण कामों को प्राथमिकता मिल सके। अपने पेशेवर तौर-तरीकों और रोज़मर्रा की ज़िंदगी को उन चीज़ों के अनुरूप ढालें जिन्हें आप महत्व देते हैं।

ज़रूरी चीज़ों को ज़रूरी रखें

परमेश्वर का आदर करना तथा पैसे, सफलता और पेशे से ज़्यादा परिवार को प्राथमिकता देना ज़रूरी है। काम का तनाव, खिंचाव और दबाव हमेशा रहेगा, जो हमें उन चीज़ों पर ध्यान देने से भटकाएगा जिनका मूल्य ज़्यादा है। यहीं पर हमें मुश्किल फ़ैसले लेने होंगे और ज़रूरी चीज़ों को ज़रूरी बनाए रखना होता है।

समझौता करने से मना करें। जो लोग आपसे सहमत नहीं हैं, वे भी अंततः आपके दैवीय विश्वासों के लिए आपका सम्मान करेंगे।

"नहीं" कहने से न डरें।

"हमेशा जुड़े रहने" की एक सीमा तय करें। ऐसे समय निकालें जब आप अपना स्मार्टफ़ोन बंद कर दें, ईमेल देखना छोड़ दें, सोशल मीडिया और दूसरी डिजिटल चीज़ों से दूरी बना लें।

पारिवारिक समय

अपने जीवनसाथी और बच्चों के लिए नियमित रूप से समय निकालें। इन पलों का आनंद लें। उन सरल लेकिन असरदार चीज़ों के लिए समय निकालें, जो आपके बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

असल में, परिवार के साथ बिताए गए पल ही सबसे ज़्यादा मायने रखते हैं—न कि सिर्फ़ कॉर्पोरेट सीढ़ी पर अगले पायदान तक पहुँचना।

कुछ सरल चीज़ें जो आप कर सकते हैं...

- अपने जीवनसाथी और बच्चों के प्रति अपना प्यार और स्नेह व्यक्त करें।
- सिर्फ़ अनुशासन के लिए ही नहीं, बल्कि मौज-मस्ती के लिए भी भरपूर समय निकालें।
- जब आपके जीवनसाथी और बच्चों को आपकी ज़रूरत हो, तो उनके साथ रहें।
- साथ मिलकर खाना खाएँ और खाने के समय आपस में सार्थक बातचीत करें।
- अपने बच्चों की पढ़ाई और गतिविधियों में शामिल हों।
- नियमित रूप से परिवार के साथ छुट्टियों पर जाने के लिए समय निकालें।
- एक परिवार के तौर पर नियमित रूप से साथ मिलकर प्रार्थना करें।
- परिवार के साथ मिलकर चर्च में जाएं और सेवा करें।

हिसाब किताब समय पर निपटाएँ: जाँच और संतुलन बनाए रखें

मरकुस 6:30-32 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

30 प्रेरित लौटकर यीशु से मिले, और उसे सब कुछ बताया जो उन्होंने किया और सिखाया।

31 इतने सारे लोग आ-जा रहे थे कि यीशु और उसके चेलों के पास खाने का भी समय नहीं था। इसलिए उसने उनसे कहा, "आओ हम किसी ऐसी जगह चलें जहाँ हम एकान्त रह सके और तुम थोड़ी देर आराम कर सको।"

32 इसलिए वे नाव पर चढ़कर, एक सुनसान जगह पर चले गए।

ऐसे लंबे दिन और हफ़्ते हमेशा आते हैं। ऐसे समय भी आएंगे जब आप काम के सिलसिले में यात्रा के कारण लंबे समय तक घर से दूर रहेंगे। ऐसी चीज़ें जो ज़रूरी कामों से आपका समय छीन लेती हैं, वे होंगी ही; लेकिन आपको इन पर ध्यान (हिसाब) देना चाहिए और लगातार भाग-दौड़ के बीच पर्याप्त आराम लेकर संतुलन बनाए रखना चाहिए। अगर आपके पिछले दो हफ़्ते बहुत ज़्यादा व्यस्त रहे हैं, तो आपको अगले हफ़्ते चीज़ों को सामान्य से थोड़ा धीमा करके, परिवार के साथ ज़्यादा समय बिताकर, और उन दूसरी चीज़ों पर ध्यान देकर संतुलन बनाने की कोशिश करनी चाहिए जिन्हें आप महत्व देते हैं।

अपने संसाधनों की रक्षा करें—समय, ऊर्जा और धन

इफिसियों 5:15-17 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
15 इसलिए सावधान रहो कि तुम कैसे जीते हो। निर्बुद्धियों के समान नहीं, बल्कि बुद्धिमानों की तरह जियो।
16 जो अवसर तुम्हारे पास हैं, उसका पूरा इस्तेमाल करो, क्योंकि ये बुरे दिन हैं।
17 इस कारण निर्बुद्धि न हो, बल्कि यह जानने की कोशिश करो कि प्रभु तुमसे क्या करवाना चाहता हैं।

अपने संसाधनों की रक्षा करें और उन्हें व्यर्थ न जाने दें। उन चीज़ों से बचें जो आपका समय, ऊर्जा और पैसा बर्बाद करती हैं। अपनी ऊर्जा को बचाकर रखें और उसे उन कामों में लगाएँ जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

प्रभु यीशु के बारे में सोचें।वे एक महान शिक्षक थे, फिर भी उन्होंने उन लोगों के साथ व्यर्थ के वाद विवाद में पड़ना उचित नहीं समझा, जो वास्तव में सीखना नहीं चाहते थे, बल्कि केवल बहस करना चाहते थे। उन्होंने उन लोगों के लिए चमत्कार नहीं किए जो उन्हें चुनौती देकर उनसे स्वयं को साबित करवाना चाहते थे, बल्कि उन लोगों के

लिए किए जो उन पर विश्वास करके सहायता माँगने आए थे। अपने मुकदमे के दौरान, उन्होंने परिस्थितियों को वैसे ही घटने दिया और अपना समय ऐसे बचाव में व्यर्थ नहीं किया, जिसके बारे में वे जानते थे कि वह पूरी तरह निरर्थक होगा।

जिन चीज़ों से "ऊर्जा व्यर्थ" हो सकती है, वे इस प्रकार हैं:

- अपने काम से काम न रखना—उन चीज़ों में शामिल होना जो दूसरे लोगों को करनी चाहिए।
- स्थितियों पर ज़्यादा प्रतिक्रिया देना—अपनी भावनात्मक ऊर्जा को बेवजह खर्च करना। शांत रहें।
- ध्यान भटकाने वाली चीज़ें—सोशल मीडिया अपडेट, बस ब्राउज़ करना, चैटिंग करना, या टेक्स्टिंग करना।
- अपने संसाधनों को बेकार चीज़ों में लगाना—ऐसी चीज़ें जिनसे असल में कोई फ़ायदा नहीं होता।

  उदाहरण: काम की जगह पर गपशप करने या किसी सहकर्मी की गपशप सुनने में समय बिताना; ऐसे काम करना जिनके लिए आप किसी और को थोड़ी सी रकम देकर उन्हें अपने लिए करवा सकते हैं, जबकि आप उसी समय का इस्तेमाल किसी ज़्यादा ज़रूरी काम के लिए कर सकते हैं।

- अपनी ज़िंदगी को बेवजह की गतिविधियों से या ऐसी गतिविधियों से भर लेना जिन्हें आसानी से किसी और को सौंपा जा सकता है।

1 थिस्सलोनिकियों 4:11 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
शांत रहो; अपने काम से काम रखो; अपना काम करो। तुमने यह सब हमसे पहले भी सुना है, लेकिन याद दिलाने से कभी नुकसान नहीं होता।

नीतिवचन 26:17 (‘द मैसेज अंग्रेजी बाइबल’ से उद्धरित)
ब आप किसी ऐसे झगड़े में दखल देते हैं जिससे आपका कोई लेना-देना नहीं है, तो आप मानो किसी पागल कुत्ते को उसके कान से पकड़ रहे होते हैं।

अपना ध्यान केंद्रित रखें। अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के केंद्र में रहें। ऐसे काम अपने हाथ में न लें जो परमेश्वर नहीं चाहता कि आप करें। इससे आपका दिन बेवजह की चीज़ों से भर जाता है और आपके संसाधन खर्च होते हैं।

अपनी कार्यक्षमता, उत्पादकता और समय बचाने के हुनर को बढ़ाएं

सभोपदेशक 9:16a,18
16 **तब मैं ने कहा ... पराक्रम** से **बुद्धि उत्तम है।**
18 **लड़ाई के हथियारों** से **बुद्धि उत्तम है।**

ऐसे तरीके खोजें जिनसे आप अपने काम में ज़्यादा उत्पादक बन सकें। समय बचाने, अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने और अपने उत्पादकता को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाने के तरीके ढूँढ़ें।

- अपनी व्यक्तिगत कार्यक्षमता बढ़ाएँ ताकि आप वही काम, उसी गुणवत्ता के साथ, कम समय में पूरा कर सकें। इसके लिए आपको अपनी उत्पादकता कौशल विकसित करने, अपने काम के प्रवाह को व्यवस्थित करने, अपनी कार्य प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, अपने समय प्रबंधन को बेहतर बनाने, या काम करने की बेहतर आदतें अपनाने की आवश्यकता हो सकती है।
- अपनी उत्पादकता और कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता करने वाली टेक्नोलॉजी और साधनों का उपयोग करें। सहयोग सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करें, अपने ईमेल, कामों की सूची (टू-डू लिस्ट) वगैरह को व्यवस्थित करें।
- बेहतर कार्यक्षमता के लिए चीजों को व्यवस्थित करें। अपनी

डिजिटल सामग्री को इस प्रकार व्यवस्थित रखने का एक नियमित तरीका अपनाएँ कि जरूरत पड़ने पर उसे जल्दी से खोजा जा सके। छोटी छोटी बातें, जैसे फाइलों के नाम की शुरुआत में वर्ष, महीना और तारीख जोड़ना और फिर अर्थपूर्ण नाम देना, फाइलों को वर्ष के अनुसार अलग अलग फोल्डरों में रखना, या समान विषय की फाइलों को एक ही फोल्डर में रखना, आपकी कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता कर सकती हैं। बेहतर कार्यक्षमता के लिए अनावश्यक चीजों को हटाएँ। अपने कंप्यूटर के डेस्कटॉप पर सभी महत्वपूर्ण फाइलें रखना कुछ समय तक ही चल सकता है। थोड़े समय बाद आपका डेस्कटॉप अव्यवस्थित हो जाएगा। हर चीज के लिए एक निश्चित स्थान, अर्थात् फोल्डर रखें, और हर चीज को उसके सही स्थान पर रखें।

- काम को दूसरों को सौंपना सीखें, भले ही आपका मन उसे स्वयं करने का हो। इसे छोड़ो और किसी और को करने दो। इसे उन्हें आगे बढ़ने का मौका देने के तौर पर देखें। वही करें जो आप सबसे अच्छा करते हैं।
- अपने कामों के लिए छोटी समय-सीमा तय करें। पार्किंसन का नियम यह कहता है कि “काम उतना ही फैलता है, जितना उसे पूरा करने के लिए समय उपलब्ध होता है” (सिरिल नॉर्थकोट पार्किंसन, द इकोनॉमिस्ट, 1955)। इसलिए, उतना ही समय दें जितना आपको लगता है कि सच में ज़रूरी है, या उससे भी कम समय दें।
- जो कंटेंट आपने पहले बनाया है, उसे दोबारा इस्तेमाल करें। उसे शुरू से बनाने के बजाय, ज़रूरत के हिसाब से अपडेट करें और बदलें।
- आने-जाने का समय बचाएँ। घर से काम करें या काम पर आने-जाने के लिए ऐसे समय चुनें जब ज़्यादा भीड़ न हो।
- याद रखें, छोटे-छोटे बदलाव बड़े नतीजे ला सकते हैं।

स्वयं को तरोताज़ा करें

यशायाह 40:28-31 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

28 क्या तुम कुछ नहीं जानते? क्या तुम सुन नहीं रहे हो? परमेश्वर आता-जाता नहीं हैं। परमेश्वर हमेशा बने रहता हैं। वह उन सभी चीज़ों का बनाने वाले हैं जिन्हें तुम देख या सोच सकते हो। वह थकता नहीं हैं, और न ही सांस लेने के लिए उसे रुकना पड़ता है। और वह सब कुछ जानता हैं—अंदर और बाहर से।
29 वह थके हुए लोगों में नई ऊर्जा भरता हैं और हिम्मत हारने वालों को नया बल देता हैं।
30 क्योंकि जवान लोग भी थककर श्रमित हो जाते हैं; अपनी जवानी में ठोकर खाकर गिर जाते हैं।
31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते है। वे उकाबों की तरह अपने पंख फैलाकर ऊँची उड़ान भरते हैं; वे दौड़ते हैं और थकते नहीं, वे चलते हैं और पीछे नहीं छूटते।

हमारी शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक ऊर्जा को हमेशा तरोताज़ा रखना ज़रूरी है। पता लगाएँ कि आपको खुद को ताज़ा रखने में क्या मदद करता है। कसरत, आराम, उपासना, संगीत और दूसरी ऐसी चीज़ें जिन्हें आप आसानी से रोज़ाना कर सकते हैं, आपको तरोताज़ा रखने में मदद करती हैं।

अपनी बाकी दुनिया को संतुलन में रखने के लिए, परमेश्वर के साथ "समय बिताना" बहुत ज़रूरी है। यही वह केंद्र है—वह मूल आधार है—जो हर चीज़ को एक साथ थामे रखता है। प्रार्थना करने, परमेश्वर की बात सुनने, उसके वचन को पढ़ने, खुद को जाँचने, सोचने-विचारने और यह देखने के लिए समय निकालें कि क्या आपकी दुनिया संतुलन और व्यवस्था में है।

यशायाह 30:15 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
तुम्हारी वीरता मुझ पर पूरी तरह निर्भर रहने से आएगी।

शैतानी रुकावटों और देरी को रोकें

यूहन्ना 10:10 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)
चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, घात करने और नष्ट करने आता है। मैं इसलिए आया

हूँ ताकि उन्हें वास्तविक और अनंत जीवन मिल सके, ऐसा भरपूर और बेहतर जीवन जिसकी उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा होगा।

हमारा इरादा यह नहीं है कि हम हर ट्रैफ़िक जाम, बिजली गुल होने, कॉपियर मशीन की खराबी, कंप्यूटर क्रैश वगैरह के पीछे शैतान का हाथ देखने लगें और ज़रूरत से ज़्यादा आत्मिक बन जाएँ। लेकिन हम इतना अवश्य जानते हैं कि उसकी एक चाल "चोरी करना" है– अर्थात् वह हमारे संसाधनों, जैसे समय, पैसा और ऊर्जा, को हमसे छीन लेना चाहता है। वह ऐसा भ्रम पैदा कर सकता है जिससे काम में रुकावट आती है और देरी होती है। कोई छोटा सा काम जिसमें आम तौर पर 10 मिनट लगते हैं, अचानक 60 मिनट ले लेता है! शत्रु हालात और लोगों के ज़रिए भी हमारा ध्यान भटका सकता है और रुकावटें डाल सकता है। इसलिए, सावधान रहें! अगर आपको लगे कि कोई शैतानी ताकत है, तो प्रार्थना करें, डांटें, अधिकार लें और उस काम को रोक दें, और फिर आगे बढ़ें। कई बार ऐसा भी होगा जब आपको हिम्मत से खड़े होकर उठने वाले तूफ़ानों से कहना होगा कि वे थम जाएँ, क्योंकि आप अपनी मंज़िल तक पहुँचना चाहते हैं।

पूर्वनियोजन करें

सभोपदेशक 3:1

हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।

जब आप योजना बनाते हैं, तो आप पूर्वनियोजन कर लेते हैं कि आप अपने संसाधनों का निवेश कब, कहाँ और कैसे करेंगे। इससे आपको यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि कोई अनावश्यक बर्बादी न हो। अपने कैलेंडर या समयसारणी में समय के स्लॉट (खंड) निर्धारित करें। जो काम आपको करने हैं, उनके लिए समय निकालें। बाकी काम, जो आपके निर्धारित कार्यक्रम के आस-पास आते हैं, उन्हें बाद में करें।

- एक 'दैनिक योजना' बनाएँ–उन महत्वपूर्ण कामों के लिए समय अलग से निकालें जो आपको नियमित रूप से या रोज़ करने हैं।
- एक 'साप्ताहिक योजना' बनाएं–उस सप्ताह के लिए नियुक्तियां/कार्य।
- एक 'मासिक योजना' बनाएँ–इसमें वे ज़रूरी और बार-बार होने वाले काम शामिल करें जो उस महीने में पूरे करने हैं।
- एक 'वार्षिक योजना' बनाएँ–इसमें वे काम शामिल करें जो आप पूरे साल के दौरान करेंगे।

उदाहरण: पारिवारिक छुट्टियाँ, जन्मदिन, सालगिरह, ज़रूरी कॉन्फ्रेंस, यात्राएँ, वगैरह।

हालांकि योजना बनाना और उसे सख्ती से निभाना ज़रूरी है, फिर भी हमें परमेश्वर के हस्तक्षेप के लिए भी तैयार रहना चाहिए, जब परमेश्वर बीच में आकर हमारी बनाई हुई योजना को बदल देते हैं। जब तक आपके समयसारणी में हुआ बदलाव सही और किसी ज़रूरी काम के लिए हो, तब तक आप उस बदलाव के साथ आगे बढ़ें। उस बदलाव को स्वीकार करें और जो भी करने की ज़रूरत हो, उसके हिसाब से खुद को ढाल लें।

व्यवसाय में परिवार-अनुकूल दृष्टिकोण अपनाएँ

अय्यूब 31:13-15 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

13 "क्या मैंने कभी अपने कर्मचारी के साथ अन्याय किया है जब उन्होंने मेरे पास शिकायत की हो?

14 तो फिर, जब परमेश्वर उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूँगा? जब परमेश्वर मेरी किताबें देखेगा, तो मैं क्या उत्तर दे सकता हूँ?

15 जिस परमेश्वर ने मुझे बनाया, क्या वही उसका भी बनानेवाला नहीं? क्या हम सब एक ही चीज़ से नहीं बने हैं, और परमेश्वर के सामने बराबर नहीं हैं?

यह छोटा सा नोट बिज़नेस मालिकों और मैनेजरों के लिए है। हालाँकि, बिज़नेस मालिकों और मैनेजरों के लिए अपने कर्मचारियों और स्टाफ़ को बेहतर 'वर्क-लाइफ़ बैलेंस' (काम और निजी जीवन में संतुलन) बनाने में मदद करने की कुछ सीमाएँ हो सकती हैं, फिर भी एक 'परिवार-अनुकूल' दृष्टिकोण अपनाना संगठन और उन लोगों, जिनके साथ हम काम करते हैं, दोनों के लिए फ़ायदेमंद होता है।

बिज़नेस मालिक और मैनेजर जान-बूझकर ऐसे मौक़े तलाश सकते हैं, जिनसे वे अपने कर्मचारियों को उनकी निजी और पारिवारिक ज़िंदगी को बेहतर बनाने में मदद कर सकें। अक्सर, ये कुछ आसान से बदलाव होते हैं, जिन्हें हम अपने कार्यक्षेत्र की नीतियों में करके मनचाहे नतीजे पा सकते हैं।

- जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ "घर से काम" करने के विकल्प दें। इससे वे ज़्यादा तनाव-मुक्त और काम में ज़्यादा कुशल बन पाते हैं।
- आवश्यकता पड़ने पर काम के समय में लचीलापन दें।
- ऐसी यात्रा नीति बनाएँ जो यह सुनिश्चित करे कि लोग लंबे समय तक घर से दूर न रहें और जहाँ तक संभव हो, विशेषकर सप्ताहांत पर, अपने परिवार के पास लौट सकें।
- मैटरनिटी लीव (मातृत्व अवकाश) देना, जिससे माताओं को अपने नवजात शिशु के साथ घर पर रहने के लिए काफ़ी समय मिल सके।
- विशेष दिनों पर जीवनसाथी और बच्चों के लिए ओपन हाउस और कंपनी विजिट। यहाँ तक कि बच्चों को ऑफ़िस में तय जगहों पर समय बिताने का विकल्प भी देना।
- कंपनी द्वारा प्रायोजित पारिवारिक कार्यक्रम, यादगार तोहफ़े और परिवार के अनुकूल अन्य उपहार, जो परिवार और कार्यक्षेत्र के बीच एक सेतु का काम करते हैं।

- परिवार और रिश्तेदारों को नौकरी पर रखना। हालाँकि, परिवार के सदस्यों के एक साथ काम करने में कुछ ख़ास तौर के जोखिम होते हैं, लेकिन अगर इसे सही तरीके से मैनेज किया जाए, तो इससे संगठन और परिवारों, दोनों को फ़ायदा हो सकता है। कुछ ज़रूरी सावधानियाँ बरतें, जैसे कि परिवार के सदस्य एक-दूसरे को रिपोर्ट न करें। अगर अहम पदों पर परिवार के सदस्य हैं, तो छुट्टियों और अवकाश के लिए कुछ नियम तय करें, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे सभी एक साथ छुट्टी पर न हों।

मुख्य सिद्धांत

1) उपासना, काम और विश्राम का तालमेल बनाए रखें ।
2) जो चीजें महत्वपूर्ण है, उसके प्रति समर्पित रहें ।
3) हिसाब किताब समय पर निपटाएँ: जाँच और संतुलन बनाए रखें।
4) अपने संसाधनों की रक्षा करें—समय, ऊर्जा और धन ।
5) अपनी कार्यक्षमता, उत्पादकता और समय बचाने के हुनर को बढ़ाएं ।
6) स्वयं को तरोताज़ा करें ।
7) शैतानी रुकावटों और देरी को रोकें ।
8) पूर्वनियोजन करें ।
9) व्यवसाय में परिवार-अनुकूल दृष्टिकोण अपनाएँ ।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- ऐसे कौन से मुख्य कारक हैं जो आपको काम और निजी जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाए रखने से रोक रहे हैं?
- उन क्षेत्रों को सुलझाने में तथा एक ज़्यादा स्वस्थ व खुशहाल काम और निजी जीवन संतुलन की ओर बढ़ने के लिए आप कौन-से व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

20
बचत, निवेश, सेवानिवृत्ति और उसके बाद

जीवन अलग अलग दौरों में जीया जाता है। और जिस तरह सूरज का उगना तय है, उसी तरह उसका ढलना भी निश्चित है। एक दिन हम भी जीवन के 'सांझ' वाले पड़ाव में प्रवेश करेंगे। इसलिए, यह उचित है कि हम उन चीज़ों के लिए तैयार रहें जो हम जानते हैं कि अगर हम लंबे समय तक जिएं तो हम पर आएंगी।

हम समझते हैं कि यह अध्याय थोड़ी बहस और चर्चा को जन्म दे सकता है, क्योंकि इसमें दो ऐसे पहलू हैं जिनके बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है। एक तरफ, हमें सिखाया जाता है कि हम विश्वास रखें, अपने भविष्य के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें और अपनी खुद की समझ पर निर्भर न रहें (नीतिवचन 3:5)। दूसरी तरफ, हमें ज़िम्मेदारी से जीने, अच्छे भण्डारी बनने और हमें सौंपी गई चीज़ों की ज़िम्मेदारी लेने के लिए कहा गया है, इन सबके लिए हमें योजना भी बनाना होगा। इसलिए, आत्मिक सोच रखने और साथ ही दुनियावी समझ होने के बीच हमेशा एक तनाव बना रहता है। हमारा मानना है कि सही संतुलन यह है कि हम हमेशा परमेश्वर पर अपना भरोसा और निर्भरता बनाए रखें, और साथ ही अपने भविष्य की चिंता किए बिना, योजना बनाने और तैयारी करने में अपना पूरा योगदान दें। जैसा कि हम देखेंगे, जब पवित्र शास्त्र को पूरी तरह से देखा जाता है, तो यह सच्चाई हमारे सामने आती है।

बचत करें—भविष्य की तैयारी के लिए

नीतिवचन 6:6-8 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

6 हे आलसी मूर्ख, एक चींटी को देखो। ध्यान से उसका निरिक्षण करो; उसे तुम्हें एक-दो बातें सिखाने दो।
7 किसी को उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं पड़ती कि उसे क्या करना है।
8 पुरे धूपकाल वह अपना आहार संचय करती है; कटनी के समय वह अपनी भोजनवस्तु बटोरती है।

उत्पत्ति 41:34-36 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

34 तुम दूसरे अधिकारियों को भी नियुक्त करना, और अच्छी पैदावार वाले सात वर्षों के दौरान फसल का पांचवां हिस्सा लेना।
35 उन्हें आने वाले अच्छे वर्षों में सब प्रकार के भोजनवस्तु इकट्ठा करने का आदेश देना, और उन्हें नगरों में अनाज जमा करने और उसकी रखवाली करने का अधिकार देना।
36 यह भोजनवस्तु मिस्र में आने वाले सात वर्षों के अकाल के दौरान देश के लिए एक आरक्षित आपूर्ति होगा। इस तरह लोग भूखे नहीं मरेंगे।"

यूसुफ उस जगह पर परमेश्वर का चुना हुआ व्यक्ति था। वह पवित्र आत्मा के अभिषेक में होकर काम कर रहा था। परमेश्वर ने यूसुफ को जो बुद्धि दी, उसने न केवल यह दिखाया कि आगे भविष्य में क्या होने वाला है, बल्कि यह योजना भी बताई कि हर साल 20% अनाज बचाया जाए और उसे जमा करके रखा जाए, ताकि जब अकाल का समय आए, तो अनाज की पर्याप्त आपूर्ति हो। फिर नीतिवचन 6 में, परमेश्वर हमें चींटी से सीखने का निर्देश देते हैं — न केवल उसकी कड़ी मेहनत से, बल्कि उसकी दूरदर्शिता से भी। वह ऐसे समय का अंदाज़ा लगाती है जब वह अनाज इकट्ठा नहीं कर पाएगी और इसलिए, जब भी हो सके, आगे के समय के लिए जमा कर लेती है।

पवित्र शास्त्र में पैसे और धन-संपत्ति के बारे में दिए गए अन्य सभी निर्देशों का पालन करते हुए, हम यह समझते हैं कि अभी से

आर्थिक रूप से बचत करना सही और महत्वपूर्ण है, ताकि हम उन आने वाले वर्षों के लिए तैयार रह सकें, जब हम उस तरह से काम और कमाई नहीं कर पाएँगे जैसा हम अभी कर रहे हैं।

निवेश करें—जो आपके पास है, उसे कई गुना बढ़ाएँ

लूका 19:23 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
तो फिर, तुमने मेरे पैसे बैंक में क्यों नहीं रखे? तब मेरे लौटने पर मुझे वे पैसे ब्याज के साथ वापस मिल जाते।

हम न केवल पैसे बचाते हैं, बल्कि जो पैसे हम बचा पाते हैं, उन्हें निवेश भी करते हैं ताकि वह पैसे बढ़ते रहें। प्रभु यीशु ने हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ सिखाने के लिए लूका 19 में एक दृष्टांत दिया। उसने एक धनी मनुष्य की कहानी सुनाई जो राजा बनने जा रहा था और जाने से पहले उसने अपने कुछ सेवकों को एक-एक सोने की मुद्रा दिया। वह नहीं चाहता था कि वे सिर्फ पैसे को अपने पास रखें, बल्कि उसका निर्देश था कि *"मेरे लौट आने तक लेन–देन करना"* (लूका 19:13)। उन्हें इस पैसे को बढ़ाना था। वे इसे कैसे बढ़ाएँगे, यह तय करना उन्हीं के ऊपर था। यह स्पष्ट नहीं है कि उन दोनों ने धन को बढ़ाने के लिए क्या किया, लेकिन उनमें से एक ने अपनी आरंभिक एक सोने की मुद्रा से दस सोने की मुद्राएँ बना लीं, और दूसरे ने पाँच सोने की मुद्राएँ बना लीं। राजा ने उनकी प्रशंसा की और उन्हें अपने कुछ नगरों का अधिकारी बना दिया। लेकिन उसका एक सेवक ऐसा भी था, जिसने उस सोने की मुद्रा को केवल अपने पास संभालकर रखा और उसे वैसा ही वापस ले आया। उसे राजा के क्रोध का सामना करना पड़ा, क्योंकि राजा ने कहा कि कम से कम उस सेवक को वह मुद्रा बैंक में जमा कर देनी चाहिए थी, ताकि उस पर कुछ ब्याज मिल जाता। यहाँ बात यह है कि परमेश्वर के राज्य में, परमेश्वर चाहता है कि उसने जो कुछ दिया है उसका हम उपयोग करें तथा हमें सौंपे गए संसाधनों को बढ़ाएँ—चाहे वह पैसा हो या

कोई और संसाधन।

तो, क्योंकि इसमें पैसे भी शामिल हैं, इसलिए हमारे लिए यह सही है कि हम अपने पास मौजूद आर्थिक संसाधनों को बढ़ाने के बारे में सोचें। हर कोई इसे कैसे करता है, यह अलग-अलग हो सकता है। इन संसाधनों को बढ़ाने के लिए आप किस तरह का निवेश करते हैं, यह आपका अपना फ़ैसला है, परन्तु परमेश्वर निश्चित यह चाहता हैं कि आपको जो कुछ भी सौंपा गया है, आप उसे बढ़ाएँ।

ज़िम्मेदारी से जीवन जीने के लिए आर्थिक योजना बनाएँ

जैसे हम जीवन के अन्य क्षेत्रों के लिए योजना बनाते हैं, वैसे ही हमें आगे की सोच रखकर आर्थिक योजना भी बनानी चाहिए। हमें बच्चों की देखभाल के लिए, परिवार के सदस्यों की ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद के लिए, और बुढ़ापे में अपनी ज़रूरतों के लिए आर्थिक योजना बनानी चाहिए। ये ज़िम्मेदारियाँ हमें पवित्र शास्त्र में दी गई हैं, जिन पर हम बाद में विचार करेंगे।

मत्ती 6:19-21 के प्रकाश में, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी बचत और निवेश का उद्देश्य उस चीज़ का समझदारी से उपयोग करना हो, जो परमेश्वर ने हमें सौंपी है। हमें धन-दौलत जमा करने को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य नहीं बनाना चाहिए। हमारा मन हमेशा परमेश्वर की बातों पर लगा रहना चाहिए।

मत्ती 6:24-34 के प्रकाश में, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने भविष्य को लेकर चिंता और बेचैनी में न पड़ें। हमारे आज और हमारे आने वाले कल के लिए हमारी निर्भरता हमेशा परमेश्वर पर ही होनी चाहिए। हम सबसे पहले उसके राज्य की खोज को प्राथमिकता देते हैं, और हम जानते हैं कि वह हमारा विश्वासयोग्य पिता है, जो जीवन की सभी ज़रूरतों का ध्यान रखता है।

लूका 12:15-21 के प्रकाश में, हम यह समझते हैं कि हमारा असली मूल्य हमारे पास मौजूद धन-दौलत में नहीं, बल्कि इस बात में है कि परमेश्वर की नज़र में हम कौन हैं। हमें परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में हमेशा समृद्ध रहना चाहिए। हमें जो भी भरपूरी मिलती है, उसे हमें अपने ऊपर बेहिसाब खर्च नहीं करना चाहिए, बल्कि उसका उपयोग परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए करना चाहिए।

1 तीमुथियुस 6:7-19 के प्रकाश में, हमें पैसे के लोभ से खुद को बचाना चाहिए और धन-दौलत पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह आसानी से खत्म हो सकती है। हमें जो कुछ भरपूरी से मिला है, उसमें हमें उदार होना चाहिए और दूसरों को आशीष देना चाहिए।

इसलिए, हमारी वित्तीय योजना बनाने का, जिसमें बचत और निवेश शामिल हैं, उद्देश्य यह है कि हम उन संसाधनों के अच्छे भण्डारी बनें जो हमें सौंपे गए हैं; अपनी परमेश्वर-प्रदत्त जिम्मेदारियों को पूरा करें; दूसरे लोगों को आशीष दें; और परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों की सेवा करें।

माता-पिता को अपने बच्चों की ज़रूरतें पूरी करनी चाहिए

2 कुरिन्थियों 12:14 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

यह तीसरी बार है जब मैं तुमसे मिलने आने को तैयार हूँ-और मैं तुमसे कोई मांग नहीं करूँगा। मैं तुम्हारी सम्पत्ति नहीं बल्कि तुम ही को चाहता हूँ। आखिर, बच्चों को अपने माता-पिता की ज़रूरतों को पूरा नहीं करना चाहिए, बल्कि माता-पिता को अपने बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए।

हममें से जो माता-पिता हैं, उनके लिए परमेश्वर की दी हुई ज़िम्मेदारी का एक हिस्सा यह है कि हम अपने बच्चों का ध्यान रखें और उनकी ज़रूरतों को पूरा करें। इसमें उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरतों का ध्यान रखना और उन्हें अच्छी शिक्षा देना शामिल है, ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

बच्चों को विधवाओं और परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करनी चाहिए

1 तीमुथियुस 5:4,8 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

4 परन्तु यदि किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हैं, तो उन्हें पहले अपने परिवार के प्रति अपने धार्मिक कर्तव्य पूरे करना सीखना चाहिए और इस तरह अपने माता-पिता और दादा-दादी / नाना नानी को उनका हक्क देना सीखना चाहिए, क्योंकि यही परमेश्वर को भाता है।

8 पर यदि कोई अपने रिश्तेदारों, विशेषकर अपने परिवार के सदस्यों का ख्याल नहीं रखता, तो उसने विश्वास को नकार दिया है और वह अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।

परमेश्वर द्वारा दी गई हमारी ज़िम्मेदारी का एक और पहलू यह है कि जब भी ज़रूरत हो, हम विधवाओं के साथ-साथ अपने माता-पिता और दादा दादी / नाना नानी की भी देखभाल करें।

आप अपने पीछे क्या छोड़कर जाएँगे, इसकी योजना बनाएँ

नीतिवचन 13:22

भला मनुष्य अपने नाती–पोतों के लिये सम्पत्ति छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिये रखी जाती है।

वित्तीय योजना बनाने का एक हिस्सा यह भी होगा कि आप अपनी विरासत अपने बच्चों और नाती-पोतों को कैसे देना चाहेंगे। ज़ाहिर है, इसे एक लिखित वसीयत में दर्ज किया जाना चाहिए, या फिर परिवार के ऐसे उपयुक्त सदस्यों या अधिकृत लोगों के हाथों में सौंपा जाना चाहिए जो इसका सही ढंग से प्रबंधन कर सकें।

सेवानिवृत्त हों और फिर से सक्रिय हों; अपने जीवन के उन सुनहरे वर्षों को सार्थक बनाएँ

भजन संहिता 92:12-15 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)

12 धर्मी लोग खजूर के पेड़ों की तरह फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार के

समान बढ़ते रहेंगे।
13 वे यहोवा के भवन में लगाए गए पेड़ों की तरह हैं, जो हमारे परमेश्वर के मंदिर में फूले फलेंगे।
14 वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे, और हमेशा हरे-भरे और मज़बूत रहते हैं।
15 इस से यह प्रगट हो कि यहोवा सच्चा है; और मेरे रक्षक में कुछ भी कुटिलता नहीं।

जैसे-जैसे लोग सेवानिवृत्ति और बुढ़ापे की ओर बढ़ते हैं, ज़्यादातर लोग यह सोचने लगते हैं कि यह ज़िंदगी का एक अनुत्पादक दौर होगा। इसके विपरीत, पवित्र शास्त्र बताता हैं कि आप बुढ़ापे में भी फल दे सकते हैं और हरे-भरे व मज़बूत बने रह सकते हैं। हाँ, व्यावहारिक तौर पर आप सेवानिवृत्त तो हो जाते हैं, लेकिन आप अब भी पूरी तरह से सक्रीय रह सकते हैं। आप अब भी ऐसे काम कर सकते हैं जो उपयोगी और सार्थक हों, और साथ ही आप अब भी उत्पादक और फलदायी बने रह सकते हैं। जीवन के इस दौर के लिए योजना बनाएँ। ढलती उम्र के वर्षों का सदुपयोग करने के कई तरीके हैं — उन संगठनों में स्वयंसेवा करें जो ऐसे काम कर रहे हैं जिनके प्रति आप में जुनून है, समुदाय की सेवा करें, युवाओं को पढ़ाएँ, और अपना ज्ञान उनके साथ साझा करें, आदि।

भजन संहिता 71:5-7,17,18 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
5 हे प्रभु परमेश्वर, मैंने तुझ पर भरोसा रखा है; बचपन से ही मैंने तुझ पर विश्वास किया है।
6 मैंने जीवन भर तुझ पर भरोसा किया है; जन्म के दिन से ही तूने मेरी रक्षा की है। इसलिये मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूँगा।
7 मेरा जीवन बहुतों के लिए एक उदाहरण रहा है, क्योंकि तू मेरा दृढ़ शरणस्थान हैं।
17 तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है, और मैं अब भी तेरे आश्चर्यकर्मों का प्रचार करता हूँ।
18 इसलिये, अब जब मैं बूढ़ा हो गया, और मेरे बाल पक गए, तब हे परमेश्वर, तू मुझे छोड़ न देना!
जब मैं आनेवाली सभी पीढ़ियों को तेरे बाहुबल और पराक्रम के बारे में बताऊँ,

तब तू मेरे साथ रहना।

परमेश्वर–जो था, जो है, और जो सदैव रहेगा

मलाकी 3:6
"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं .."

ठहरकर, परमेश्वर की भलाई पर विचार करना हमेशा ही अच्छा होता है। वही परमेश्वर, जिसने इतने वर्षों तक हमारा मार्गदर्शन किया है। उसने हमारी पेशेवर यात्राओं में हमारा साथ दिया—जो कि हममें से कई लोगों के जीवन का सबसे बड़ा हिस्सा रही हैं। वह हर समय हमारे साथ था। और यही विश्वसनीय, कभी न बदलने वाला परमेश्वर आज भी हमारे साथ है। वह अंत तक हमारा साथ निभाएगा।

यशायाह 46:4
तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा। मैं ने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूँगा; मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता भी रहूँगा।

मुख्य सिद्धांत

1) बचत करें – भविष्य की तैयारी के लिए।
2) निवेश करें – जो आपके पास है, उसे कई गुना बढ़ाने के लिए।
3) ज़िम्मेदारी से जीवन जीने के लिए आर्थिक योजना बनाएँ।
4) माता-पिता को अपने बच्चों की ज़रूरतें पूरी करनी चाहिए।
5) बच्चों को विधवाओं और परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करनी चाहिए।
6) आप अपने पीछे क्या छोड़कर जाएँगे, इसकी योजना बनाएँ।
7) सेवानिवृत्त हों और फिर से सक्रिय हों; अपने जीवन के उन सुनहरे वर्षों को सार्थक बनाएँ।

8) परमेश्वर – जो था, जो है, और जो सदैव रहेगा।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- यदि आप हर महीने पैसे की बचत नहीं कर रहे हैं, तो एक योजना बनाएं कि आप यह कैसे शुरू कर सकते हैं और उस पर काम करें ।
- अपने बैंक या वित्तीय संस्थान की मदद से और किसी भरोसेमंद वित्तीय सलाहकार की सलाह लेकर, आप अपने बचाए हुए पैसों से कौन-कौन से निवेश कर सकते हैं, इसकी जानकारी हासिल करें ।

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

भाग चार:

परमेश्वर का राज्य और आप

21
उद्यमिता

एक उद्यमी (एंटरप्रेन्योर) बनने का फ़ैसला लेना रोमांचक होता है, लेकिन इसमें काफ़ी जोखिम भी होता है । आप एक ऐसे विचार को आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी और पहल कर रहे हैं, जिसके बारे में आपको लगता है कि उसमें कुछ अहमियत है ।
यह विचार कोई उत्पाद, सेवा या कोई ऐसा मकसद हो सकता है जिससे किसी समुदाय या ग्राहकों को फ़ायदा पहुँचे, चाहे वे स्थानीय हों या वैश्विक ।
आप इस विचार को लेकर इतने आश्वस्त होते हैं कि आप इसे आगे बढ़ाने और हकीकत में बदलने के लिए योजना बनाने, आयोजन करने और संसाधनों का इस्तेमाल करने को भी तैयार रहते हैं । और हाँ, इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, आप ज़्यादातर यही उम्मीद करते हैं कि आप मुनाफ़ा कमा पाएँगे, या कम-से-कम, जब तक आप अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर लेते और ग्राहकों या लक्षित समुदाय तक फ़ायदा नहीं पहुँचा देते, तब तक आप आर्थिक रूप से अपना गुज़ारा कर पाएँगे।

हालांकि उद्यमिता को आम तौर पर व्यापार और धन-सृजन के संदर्भ में समझा जाता रहा है, और भले ही आज भी इसका मुख्य उपयोग इसी अर्थ में होता हो, फिर भी उद्यमिता के दायरे को बढ़ाया जा सकता है ताकि इसमें हर तरह की उद्यमी पहल शामिल हो सके—जैसे कि सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और परिवर्तनकारी पहलें। ज़रूरी नहीं कि इन अन्य उद्यमी पहलों का

परिणाम किसी उत्पाद या सेवा के रूप में ही सामने आए; बल्कि ये किसी ऐसे उद्देश्य की पूर्ति भी हो सकती हैं, जिसका स्थानीय समुदाय पर या फिर वैश्विक स्तर पर एक बड़े जनसमूह पर गहरा प्रभाव पड़ता हो।

इस अध्याय में, हम व्यापारिक उद्यमिता के संदर्भ में पवित्र शास्त्र से प्राप्त कुछ प्रमुख अंतर्दृष्टियों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

आरंभ करने से पहले अच्छी तैयारी करें

लूका 14:28-30 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
28 यदि तुम में से कोई मीनार बनाने की योजना बना रहा है, तो वह पहले बैठकर हिसाब लगाता है कि उसमें कितना खर्च आएगा, ताकि यह देख सके कि क्या उसके पास काम पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसे हैं।
29 यदि वह ऐसा नहीं करता, तो नींव रखने के बाद वह मीनार पूरी नहीं कर पाएगा; और जो लोग यह देखेंगे, वे उसका मज़ाक उड़ाएँगे।
30 वे कहेंगे, 'इसने बनाना तो शुरू किया, पर काम पूरा नहीं कर सका!'

उद्यमी बेहतरीन विचारों को बड़ी कंपनियों में बदलते हैं, लेकिन इसके लिए यह ज़रूरी है कि उद्यमी के पास नए बिज़नेस के मौकों को विकसित करने और उन पर काम करने के लिए ज़रूरी कौशल हों, चाहे वह अकेले काम कर रहा हो या किसी पार्टनर के साथ मिलकर उस विचार को आगे बढ़ा रहा हो।

अपने बिज़नेस को आरंभ करने से पहले पूरी तैयारी करें। मोटे तौर पर कहें तो, आपको अपने विचार, बिज़नेस मॉडल और बिज़नेस प्लान के बारे में पूरी तरह से स्पष्ट होना चाहिए। इन तीनों ही क्षेत्रों में बहुत ज़्यादा मेहनत और तैयारी की ज़रूरत होती है। इन मामलों में पूरी लगन से काम करें और इन पर मेहनत करें।

परमेश्वर के तरीके से व्यापार करने का दृढ़ संकल्प लें; अपने बिज़नेस को बढ़ाने के लिए बाइबिल के सिद्धांतों को लागू करें

अपनी तैयारी के हिस्से के तौर पर, आपको कई रणनीतिक फैसले लेने होंगे जिन्हें आपको प्रार्थना के साथ लेना होगा।

इनमें से कुछ फ़ैसले ये हैं:

- क्या आप यह काम अकेले करना चाहते हैं या किसी पार्टनर के साथ?
- आपके सह-संस्थापक कौन होंगे?
- क्या आप चाहते हैं कि संगठन आपके चलाने के लिए आरामदायक, आकार में छोटा रहे, या आप चाहते हैं कि यह बड़ा और विशाल बने?
- क्या आप नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं या आप स्वामित्व और नियंत्रण छोड़ना चाहते हैं?
- क्या आप इसे खुद पैसे भरेंगे या आप वेंचर कैपिटल या एंजेल फ़ंडिंग या कैपिटल के दूसरे सोर्स ढूंढेंगे?
- निकास (एग्ज़िट) के बारे में, क्या आप किसी समय इसे बेचकर एग्जिट करना चाहते हैं या फिर आप कंपनी को चलाना चाहते हैं और इसे किसी ऐसे व्यक्ति को देना चाहते हैं जिस पर आप भरोसा करते हैं?

इन सभी फ़ैसलों में, परमेश्वर के तरीके से व्यापार करने का पक्का इरादा करें। उसके वचन के सिद्धांतों का पालन करें, और आप वहाँ पहुँच जाएँगे जहाँ आप पहुँचना चाहते हैं।

उद्यमी मानसिकता, प्रेरणा, व्यवहार और उद्यमिता प्रक्रिया के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। हालाँकि इन बातों को समझना अच्छा

है, परन्तु अपने व्यापार को विकसित करने के लिए बाइबल के सिद्धांतों को लागू करने का पक्का फ़ैसला करें। इस पुस्तक में, हमने इनमें से कई सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं, जो उन अनेक क्षेत्रों से संबंधित हैं जिनकी आपको अपने व्यापार को विकसित करते समय ज़रूरत पड़ेगी। अपनी उद्यमिता की यात्रा के दौरान इन "शाश्वत सिद्धांतों" का पालन करने का पक्का इरादा करें। परमेश्वर के राज्य की प्राथमिकताओं पर अपना ध्यान केंद्रित करें। इन पर बने रहें।

अंत में, इस यात्रा को पूरा करने में मदद के लिए परमेश्वर के आत्मा तथा उसकी सामर्थ पर भरोसा रखें। छोटी शुरुआत से, यानी छोटी-छोटी बातों के दिनों से शर्मिंदा न हों। जिस प्रभु ने आपको नींव रखने में सहायता की है, वही आपको शिखर-पत्थर रखने, यानी जिस काम को आपने शुरू किया है, उसे अंतिम रूप देने के लिए भी सामर्थ देगा।

जकर्याह 4:6-10अ
6 तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, "जरुब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।
7 हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के सामने तू मैदान हो जाएगा; और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए आएगा, उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह!"
8 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,
9 "जरुब्बाबेल ने अपने हाथों से इस भवन की नींव डाली है, और वही अपने हाथों से उसको तैयार भी करेगा। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।
10 क्योंकि किसने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है?

जल्दी मिलने वाली सफलता से अपना ध्यान न भटकने दें; आपको एक लंबी यात्रा तय करनी है

नीतिवचन 20:21 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
आपको जितनी आसानी से धन मिलेगा, वह आपके लिए उतना ही कम लाभदायक होगा।

यदि आपको जल्दी सफलता मिल जाती है, तो यह बहुत अच्छी बात है; परन्तु इसे अपने उस लक्ष्य से आपका ध्यान न भटकाने दें, जिसे पाने का आपने संकल्प किया है। अपने दर्शन और मिशन पर पूरी तरह से केंद्रित रहें, और अपने मूल्यों पर दृढ़ता से बने रहें।

भजन संहिता 62:10 ('द मैसेज' अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
और अगर अचानक से धन संपत्ति बढ़ जाए, तौभी उसे बहुत ज़्यादा अहमियत न देना।

मुनाफ़े के लिए जल्दबाज़ी न करें

नीतिवचन 28:22
लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है, और नहीं जानता कि वह घटी में पड़ेगा।

सिर्फ़ जल्दी मुनाफ़ा कमाने के लिए शॉर्टकट न अपनाएँ। सफलता पाने के लिए अपने मूल्यों और सिद्धांतों से समझौता न करें। मज़बूती से निर्माण करें, भले ही इसमें थोड़ा समय क्यों न लगे।

पहले अपने खेत तैयार करें, फिर अपना खलिहान बनाएँ

नीतिवचन 24:27 ('द मैसेज' अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
पहले अपने खेत बोओ; फिर अपना खलिहान बनाओ।

यदि आप खेत बोए बिना अपना खलिहान बनाते हैं, तो वह फसल आने तक लंबे समय तक खाली रहेगा, और यदि आपने अपना खलिहान बना लिया है परन्तु अपने खेतों में बोने के लिए कुछ नहीं है, तो सब बर्बाद हो जाएगा! इसलिए, जो ज़रूरी है उस पर ध्यान दें, भले ही वह मेहनत वाला काम ही क्यों न हो। यह काम करना ही होगा। खेतों में बुवाई हो जाने के बाद ही खलिहान बनाया जा सकता है।

उन चीज़ों पर पैनी नज़र रखें जिनसे आपकी “रोज़ी-रोटी“ चलती है

नीतिवचन 27:23-27 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
23 अपनी भेड़–बकरियों की जितनी भली–भाँति हो सके, देखभाल करो,
24 क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती। यहाँ तक कि देश भी हमेशा नहीं बने रहते।
25 तुम सूखी घास काटते हो और फिर पहाड़ियों पर हरियाली काटते हो, जबकि अगली फसल उग रही होती है।
26 तुम अपनी भेड़ों की ऊन से कपड़े बना सकते हो और कुछ बकरियाँ बेचकर मिली रकम से ज़मीन खरीद सकते हो।
27 बाकी बकरियां तुम्हें और तुम्हारे परिवार के लिए, और तुम्हारी दासियों के लिए भी दूध प्रदान करेंगी।

जैसे-जैसे आपका बिज़नेस बनने लगे, आपके रास्ते में आने वाली बहुत सारी गैर-ज़रूरी या कम महत्वपूर्ण चीज़ों से अपना ध्यान न भटकने दें। उद्यमियों के लिए कई ऐसी चीज़ें होती हैं जो भटकाव का कारण बनती हैं। हर उस नए मौके के पीछे भागना जिसमें कुछ उम्मीद नज़र आती हो, एक बड़ा भटकाव हो सकता है। मेल-जोल बढ़ाने, कार्यक्रमों और सभाओं में शामिल होने में समय और ऊर्जा खर्च करना जिनसे आपके बिज़नेस को असल में कोई खास फ़ायदा नहीं होता एक और तरह का भटकाव है। आप जो कर रहे हैं, उसके मूल में बने रहें। सबसे पहले उन चीज़ों का विशेष ध्यान रखें जिनसे आपकी “रोज़ी-रोटी” चलती है। अपने मुख्य बिज़नेस पर पैनी नज़र रखें।

सफलता के साथ आने वाले घमंड से दूर रहें

नीतिवचन 16:18
विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है।

जैसे-जैसे आपका व्यवसाय बढ़ता और फलता-फूलता है, घमंड को अपने अंदर घर न करने दें। घमंड खतरनाक और विनाशकारी

होता है। नम्रता के साथ चलते रहें और परमेश्वर के वचन के सिद्धांतों के अनुसार काम करें। हमेशा उस प्रभु को स्मरण करें, जिसने आपको आशीष दी है।

यिर्मयाह 5:24
वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्‌वर यहोवा तो बरसात के आरम्भ और अन्त दोनों समयों का जल समय पर बरसाता है, और कटनी के नियत सप्‌ताहों को हमारे लिये रखता है, इसलिये हम उसका भय मानें।

आपकी निजी आमदनी और लाभ—इन्हें सही रखें

नीतिवचन 30:7-9
7 मैं ने तुझ से दो वर माँगे हैं, इसलिये मेरे मरने से पहले उन्हें मुझे देने से मुँह न मोड़,
8 अर्थात् व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख; मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर।
9 ऐसा न हो कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूँ कि यहोवा कौन है? या अपना भाग खोकर चोरी करूँ, और अपने परमेश्‌वर का नाम अनुचित रीति से लूँ।

जैसे-जैसे मुनाफ़ा बढ़ता है और बहुत सारा पैसा आता है, अपनी कड़ी मेहनत का फल पाना बिल्कुल ठीक है, लेकिन इसमें हद से ज़्यादा न करें। अपनी सफलता में पूरी तरह से डूब न जाएँ। लालच और अपने ऊपर बेहिसाब खर्च करने से बचें। खुद को अच्छा वेतन दें, और अपनी इंडस्ट्री में जो सही माना जाता है उसके हिसाब से और अपने संगठन के लिए आप जो काम कर रहे हैं, उसके अनुपात में खुद को पर्याप्त फ़ायदे दें। हद से ज़्यादा करने से बचें। दूसरों को कुछ साबित करने के लिए आपको "मौज-मस्ती का जीवन" जीने की ज़रूरत नहीं है। आप पैसे का बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं, बजाय इसके कि आप सारा पैसा खुद पर खर्च कर दें। परमेश्वर ने आपको उसके संसाधनों का भण्डारी बनाया है, ताकि वह आपके ज़रिए अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकें।

नीतिवचन 25:16
क्या तू ने मधु पाया? तो जितना तेरे लिये ठीक हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दे।

दूसरों को सशक्त बनाकर अपने पास जो है उसे कई गुना बढ़ाएँ

मत्ती 13:31,32 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल से उद्धरित)
31 यीशु ने उन्हें एक और दृष्टांत सुनाया: "स्वर्ग का राज्य ऐसा है। एक मनुष्य राई के दाने लेता है और उसे अपने खेत में बोता है।
32 यह सभी बीजों में सबसे छोटा होता है, पर जब यह बढ़ता है, तो सभी पौधों में सबसे बड़ा हो जाता है। यह एक ऐसा पेड़ बन जाता है, कि पक्षी आकर इसकी डालियों पर अपना घोंसला बना सकें।"

परमेश्वर के राज्य का एक पहलू यह है कि इसकी शुरुआत छोटी होती है, लेकिन यह हमेशा बढ़कर कुछ ऐसा विशाल रूप ले लेता है, जो शुरुआत में संभव लगने वाली चीज़ों से कहीं ज़्यादा बड़ा और भव्य उद्देश्य पूरा करता है। जब परमेश्वर आपके व्यवसाय को समृद्ध और विकसित करता हैं, तो वे ऐसा किसी ऐसे उद्देश्य के लिए करता हैं, जो आपकी कल्पना से कहीं ज़्यादा बड़ा और भव्य होता है। इस बड़े उद्देश्य को पूरा करने का एक तरीका यह है कि आप अपने पास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग उन लोगों को सशक्त बनाने के लिए करें, जिनके पास अवसर और सुविधाएँ कम हैं, और इस प्रकार उन संसाधनों के प्रभाव को कई गुना बढ़ाएँ।

आप दूसरों को कई तरीकों से सशक्त बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षा के द्वारा। आप स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई का खर्च उठाकर उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

आप दूसरों को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करके सशक्त बना सकते हैं। इसके लिए आप सूक्ष्म उद्यमों के विकास में वित्तीय सहायता दे सकते हैं और उन्हें अपने ही परिवेश में छोटे व्यवसाय शुरू करने

में मदद कर सकते हैं, ताकि उन्हें आजीविका का एक स्थायी साधन मिल सके। ज़रा कल्पना कीजिए कि यदि आप किसी ग्रामीण क्षेत्र में स्थित स्थानीय चर्च समुदाय के संदर्भ में ऐसा करते हैं, तो क्या होगा। उस समुदाय के लोग न केवल अपनी देखभाल स्वयं कर पाएँगे, बल्कि अपने स्थानीय चर्च और पास्टर की भी देखभाल कर सकेंगे; और बदले में, पास्टर उन्हें आत्मिक रूप से सेवा प्रदान कर सकेंगे।

महिला उद्यमी, भली पत्नी, माता और गृहणी

नीतिवचन 31:10-31

10 भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूँगों से भी बहुत अधिक है।
11 उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास है, और उसे लाभ की घटी नहीं होती।
12 वह अपने जीवन के सारे दिनों में उस से बुरा नहीं, वरन् भला ही व्यवहार करती है।
13 वह ऊन और सन ढूँढ़ ढूँढ़कर, अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है।
14 वह व्यापार के जहाजों के समान, अपनी भोजनवस्तुएँ दूर से मँगवाती है।
15 वह रात ही को उठ बैठती है, और अपने घराने को भोजन खिलाती है, और अपनी दासियों को अलग अलग काम देती है।
16 वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है; और अपने परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है।
17 वह अपनी कटि को बल के फेंटे से कसती है, और अपनी बाँहों को दृढ़ बनाती है।
18 वह परख लेती है कि मेरा व्यापार लाभदायक है। रात को उसका दिया नहीं बुझता।
19 वह अटेरन में हाथ लगाती है, और चरखा पकड़ती है।
20 वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती है, और दरिद्र को संभालने के लिए हाथ बढ़ाती है।
21 वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती, क्योंकि उसके घर के सब लोग लाल कपड़े पहिनते हैं।
22 वह तकिये बना लेती है; उसके वस्त्र सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग के होते हैं।
23 जब उसका पति सभा में देश के पुरनियों के संग बैठता है, तब उसका

सम्मान होता है।
[24] वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती है; और व्यापारी को कमरबन्द देती है।
[25] वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती है, और आनेवाले काल पर हँसती है।
[26] वह बुद्धि की बात बोलती है, और उसके वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं।
[27] वह अपने घराने के चालचलन को ध्यान से देखती है, और अपनी रोटी बिना परिश्रम नहीं खाती।
[28] उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं; उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है :
[29] "बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभों में श्रेष्ठ है।"
[30] शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।
[31] उसके हाथों के परिश्रम का फल उसे दो, और उसके कार्यों से सभा में उसकी प्रशंसा होगी।

पवित्र शास्त्र का यह अंश एक ऐसी महिला उद्यमी का वर्णन करता है, जो एक भली पत्नी, माता और गृहिणी भी है। यह महिलाओं के लिए एक सशक्त प्रेरणा है कि वे बाजार के क्षेत्र में (मार्किट प्लेस) सक्रिय रहते हुए भी अपने घर और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निभा सकती हैं।

मुख्य सिद्धांत

1) आरंभ करने से पहले अच्छी तैयारी करें।
2) परमेश्वर के तरीके से व्यापार करने का दृढ़ संकल्प लें; अपने बिज़नेस को बढ़ाने के लिए बाइबिल के सिद्धांतों को लागू करें।
3) जल्दी मिलने वाली सफलता से अपना ध्यान न भटकने दें; आपको एक लंबी यात्रा तय करनी है।
4) मुनाफ़े के लिए जल्दबाज़ी न करें।

5) पहले अपने खेत तैयार करें, फिर अपना खलिहान बनाएँ।

6) उन चीज़ों पर पैनी नज़र रखें जिनसे आपकी "रोज़ी-रोटी" चलती है।

7) सफलता के साथ आने वाले घमंड से दूर रहें।

8) आपकी निजी आमदनी और लाभ—इन्हें सही रखें।

9) दूसरों को सशक्त बनाकर अपने पास जो है उसे कई गुना बढ़ाएँ।

10) महिला उद्यमी, भली पत्नी, माता और गृहणी।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- अपनी व्यक्तिगत उद्यमी वाली सोच, प्रेरणा और व्यवहार को बताने के लिए आप किन खास सिद्धांतों का इस्तेमाल करेंगे?
- जो बताया गया है, उसके अलावा, आप दूसरों को कैसे मज़बूत बना सकते हैं ताकि एक बिज़नेस उद्यमी के तौर पर आपको मिलने वाली सफलता कई गुना बढ़ जाए?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

22
कार्यक्षेत्र का रूपांतरण

यदि कार्यक्षेत्र में रूपांतरण आ जाए तो क्या होगा? यदि काम सही ढंग से किए जाने लगें तो क्या होगा? यदि व्यवसाय अपना काम खराई के साथ करें तो क्या होगा? यदि कार्यस्थल ऐसा स्थान बन जाए जहाँ लोग आनंद से जाना चाहें तो क्या होगा? यदि बदलाव सचमुच आ जाए तो क्या होगा?

हममें से हर कोई अपने प्रभाव क्षेत्र में बदलाव ला सकता है। भले ही आप पूरी दुनिया को न बदल पाएं, लेकिन आप अपनी दुनिया में—अपने प्रभाव क्षेत्र में, और उन लोगों के जीवन में जिनसे आप मिलते-जुलते हैं, बदलाव लाना शुरू कर सकते हैं।

इस अंतिम अध्याय में, हम आपके सामने एक सीधा-सा आह्वान पेश करते हैं, कि आप अपने कार्यक्षेत्र के रूपांतरण का माध्यम बनें।

एक सांस्कृतिक बदलाव की शुरुआत करें

मत्ती 5:13-16

13 "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा?
फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।
14 तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता
15 और लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है।
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों को नमक और ज्योति बनने का आदेश दिया। नमक घुल-मिल जाता है, और ज्योति भीतर तक पहुँचती है। दोनों ही अपने आस-पास के वातावरण पर प्रभाव और असर डालते हैं। नमक स्वाद लाता है। ज्योति अंधकार को दूर करती है। दोनों ही अपने प्रभाव-क्षेत्र में एक बदलाव लाते हैं। हालाँकि, यदि नमक डिब्बे के भीतर ही पड़ा रहे, तो उसका कोई लाभ नहीं। इसी प्रकार, यदि ज्योति को छिपाकर रखा जाए और उसे दृश्यमान या उपलब्ध न कराया जाए, तो वह भी किसी उपयोग की नहीं रहती।

आप नमक और ज्योति हैं। आपको अपनी दुनिया में प्रभाव डालने और असर पैदा करने का काम सौंपा गया है। आप अपनी दुनिया के तरीकों और नमूनों के हिसाब से खुद को आसानी से ढालकर बदलाव नहीं ला सकते। आप "जो है" उसे चुनौती देकर बदलाव लाते हैं, ताकि "जो नहीं है" उसे लाया जा सके। आप एक सांस्कृतिक बदलाव की शुरुआत करके बदलाव लाते हैं—यह सोच में बदलाव है, जो बातों को जैसी वे हैं वैसी ही स्वीकार कर लेने की मानसिकता को बदलता है। ऐसा आप इस पुस्तक में बताए गए "शाश्वत सिद्धांतों" पर चलकर करते हैं। आप मसीह के चरित्र में चलकर ऐसा करते हैं। ऐसा करना कार्यक्षेत्र पर चीज़ों के काम करने के तरीके के विपरीत लग सकता है, परन्तु आपको यही काम सौंपा गया है–**नमक और ज्योति बनना**। अपने कार्यक्षेत्र में एक सांस्कृतिक बदलाव की शुरुआत करें।

एक रचनात्मक बदलाव लाएँ

मत्ती 13:33
उसने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया: "स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते–होते वह सब खमीरा हो गया।"

खमीर की थोड़ी सी मात्रा ही पूरे गुंथे हुए आटे पर, जिसमें उसे मिलाया जाता है, असर डालने के लिए काफी होती है । आप भी उसी

थोड़े से खमीर की तरह हैं। आपके द्वारा प्रकट होने वाला 'परमेश्वर का राज्य' इतना शक्तिशाली है कि वह पूरे आटे पर, यानी आपके प्रभाव-क्षेत्र पर, असर डाल सकता है। इसलिए, परमेश्वर के राज्य की सामर्थ को अपने द्वारा से प्रकट होने दें।

इन "शाश्वत सिद्धांतों" को अपनाकर अपने कार्यक्षेत्र पर एक सकारात्मक बदलाव लाएँ।

ऐसे माहौल में जहाँ बेईमानी और भ्रष्टाचार का बोलबाला हो, वहाँ आगे बढ़ें और अपनी ईमानदारी का परिचय दें; साथ ही, दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करें।

ऐसे माहौल में जहाँ शत्रुता और कलह व्याप्त हो, वहाँ आगे बढ़ें और प्रेम व दयालुता का प्रदर्शन करें; साथ ही, दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करें।

अन्याय और दुर्व्यवहार के माहौल में, आगे बढ़ें और न्याय व भलाई का उदाहरण पेश करें; और दूसरों को भी ऐसा ही करने की चुनौती दें।

लालच और स्वार्थी तथा स्वयं की बढ़ाई करनेवाले माहौल में, आगे बढ़ें और मिल-बाँटने व उदारता का उदाहरण पेश करें; और दूसरों को भी ऐसा ही करने की चुनौती दें।

एक रचनात्मक बदलाव लाने का साहस करें! हाँ, आप यह कर सकते हैं!

एक परिवर्तनकारी अगुवा बनें

यूहन्ना 10:11-14 ('द मैसेज अंग्रेजी बाइबल' से उद्धरित)

11 "अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों को खुद से ज़्यादा अहमियत देता है और ज़रूरत पड़ने पर उनके लिए अपनी जान भी दे देता है।

12 किराए का चरवाहा असली चरवाहा नहीं होता। उसके लिए भेड़ों की कोई अहमियत नहीं होती। जब वह भेड़िये को आते देखता है, तो भाग जाता है, और भेड़ों को भेड़िये के हाथों बर्बाद और तितर-बितर होने के लिए छोड़ देता है।
13 वह केवल पैसे के लिए इसमें है। उसे भेड़ों की कोई परवाह नहीं होती।
14 "अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं।

दो प्रकार के चरवाहे होते हैं। एक, अच्छा चरवाहा, जिसने भेड़ों को खुद से आगे रखा। उसने तो भेड़ों के लिए अपनी जान भी दे दी। वहीं, किराए पर लिया गया चरवाहा सिर्फ़ अपने फ़ायदे के बारे में सोचता है। जिन भेड़ों की देखभाल की ज़िम्मेदारी उस पर थी, उनकी परवाह करने के बजाय, वह उन्हें छोड़कर अपनी देखभाल करने में लग जाता है।

वर्तमान में भी दो प्रकार के अगुवे होते हैं। अच्छे अगुवे जो अपने लोगों की परवाह करते हैं और उनकी सेवा करते हैं। दूसरे वे अगुए, जो नेतृत्व में केवल अपने स्वार्थ के लिए होते हैं।

एक परिवर्तनकारी अगुवा बदलाव लाने का लक्ष्य रखता है। वह ऐसी चीज़ों को अस्तित्व में लाने की कोशिश करता है जो अभी मौजूद नहीं हैं। वह एक सकारात्मक बदलाव लाता है। वह अपने कर्मचारियों के जीवन को बदलने की कोशिश करता है, ताकि उनका जीवन आज की तुलना में कहीं ज़्यादा बेहतर हो सके। वह अपने संगठन को बदलने की कोशिश करता है, ताकि संगठन आज जहाँ है, उससे कहीं ज़्यादा मज़बूत और बेहतर बन सके।वह ऐसी वस्तुएँ या सेवाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास करता है, जो ग्राहकों या उन लोगों के जीवन में मूल्य जोड़ती हैं जिन्हें संगठन सेवा देता है, और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाती हैं। वह अपने संगठन में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके समुदायों के जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश

करता है, और वह यह काम निस्वार्थ भाव से करता है। आज ऐसे अगुवे बहुत ज़्यादा नहीं हैं। क्या आप भी ऐसा बनने की हिम्मत करेंगे?

कार्यक्षेत्र में परमेश्वर के राज्य को प्रदर्शित करें

प्रेरितों के काम 17:16,17

16 जब पौलुस एथेंस में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया।

17 अतः वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से, और चौक में जो लोग उससे मिलते थे उनसे हर दिन वाद–विवाद किया करता था।

आखिर में, कार्यक्षेत्र का रूपांतरण तब हो सकता है जब हम यह दिखाते हैं कि परमेश्वर को आज भी कार्यक्षेत्र में दिलचस्पी है और वह इसमें शामिल हैं। हमने जो ज्ञान, विज्ञान, टेक्नोलॉजी और सारी बौद्धिक क्षमता प्राप्त की है, उसने कार्यक्षेत्र को परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य से अलग कर दिया है, जबकि परमेश्वर ही सब बातों का स्रोत और स्वामी है। परमेश्वर हमारे साथ केवल कलीसिया की आराधना में ही नहीं, बल्कि कार्यस्थल पर भी उपस्थित हैं। इसलिए हमें कार्यक्षेत्र पर ही लोगों को परमेश्वर के प्रेम, भलाई और सामर्थ्य के बारे में बताना चाहिए और उन्हें उसका अनुभव कराने का प्रयास करना चाहिए। हमने कई ऐसी अलौकिक बातों का ज़िक्र किया है जो परमेश्वर कार्यक्षेत्र में करना चाहता हैं। उसने ये काम अतीत में भी किए हैं और भविष्य में भी करेगा। वह ऐसे लोगों को ढूंढ रहा है जिनके ज़रिए वह कार्यक्षेत्र में काम कर सके। क्या आप कार्यक्षेत्र में परमेश्वर के राज्य को दिखाने के लिए हिम्मत दिखाएंगे? हाँ, आप कर सकते हैं! प्रार्थना करें, अपने आत्मिक अधिकार का इस्तेमाल करें, चंगाई और छुटकारे की सेवा करें, पवित्र आत्मा के वरदानों के उँडेले जाने की उम्मीद रखें, और भविष्यवक्ताई अंतर्दृष्टि, बुद्धि और प्रकाशन के लिए प्रार्थना करें। ये सब कार्यक्षेत्र पर ही करें।

मुख्य सिद्धांत

1) एक सांस्कृतिक बदलाव की शुरुआत करें।

2) एक रचनात्मक बदलाव लाएँ।

3) एक परिवर्तनकारी अगुवा बनें।

4) कार्यक्षेत्र में परमेश्वर के राज्य को प्रदर्शित करें।

चिंतन

1) इस अध्याय में बताए गए सिद्धांतों के आधार पर, निम्नलिखित बातों पर चिंतन (या चर्चा) करें:

- अपने मौजूदा कार्यक्षेत्र में आप किन तरीकों से एक सांस्कृतिक बदलाव और रचनात्मक परिवर्तन ला सकते हैं?
- क्या आपको ऐसे अवसर मिले हैं जब आप कार्यक्षेत्र पर परमेश्वर का राज्य दिखाने के लिए कदम उठा सकते थे? यदि आपको रुकावट महसूस हुई, तो आपको किस चीज़ ने रोका? आप इन रुकावटों को कैसे दूर कर सकते हैं?

कृति के ठोस कदम / निजी डायरी

1) इस अध्याय की सामग्री के आधार पर, अपने जीवन में लागू करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को लिखें।

ऑनलाइन हमसे जुड़ें
(JOIN US ONLINE)

अंग्रेजी
(ENGLISH)

https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
https://instagram.com/allpeopleschurchbangalore
https://facebook.com/apcwo

https://youtube.com/apcbiblecollege
https://instagram.com/apcbiblecollege

https://youtube.com/APCMusicindia

https://www.youtube.com/@apc-free-christian-books

https://youtube.com/@chrysalislifecounseling

https://instagram.com/ChrysalisLifeCounseling

हिंदी
(HINDI)

https://youtube.com/APCHindi
https://www.instagram.com/apc_bangalore_hindi

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों* **6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा " **(रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के बारे में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word–The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The End Times
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work–Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

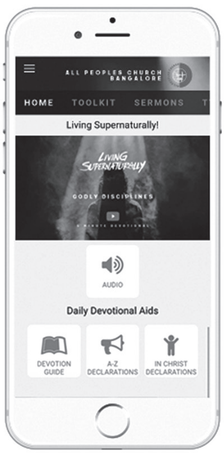

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

हमारे आस-पास की दुनिया लगातार बदल रही है। दुनिया के बाज़ारों में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं और अर्थव्यवस्थाएं ऊपर-नीचे होती रहती हैं। संगठनों को लगातार सुधार करने और बदलते हालात के हिसाब से खुद को ढालने की ज़रूरत होती है। प्रबंधन, संगठनात्मक विकास, उद्यमिता, नेतृत्व, कर्मचारी प्रेरणा और कार्यस्थल से संबंधित कई क्षेत्रों के बारे में अवधारणाएं, सिद्धांत तथा विचार लगातार विकसित हो रहे हैं। यह वाकई ज़रूरी है क्योंकि व्यावसायिक क्षेत्रों में बदलाव होते रहते है। लगातार होनेवाले इस बदलाव के बीच, कुछ चीजें ऐसी हैं जो स्थिर रहती हैं। कुछ सिद्धांत ऐसे होते हैं जो समय, स्थान, लोगों तथा संस्कृति से परे होते हैं। हम इन्हें "कालातीत सिद्धांत" कहते हैं। कब, कहाँ, क्या और क्यों के रूपों के बावजूद वे सत्य बने रहते हैं।

यह कोई प्रबंधन की पुस्तक नहीं, बल्कि "कालातीत सिद्धांतों" की पुस्तक है।

कार्यक्षेत्र पर हमें कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे- बिक्री की भ्रष्ट प्रक्रियाएं, लेखांकन में अनियमितताएँ, स्वार्थी और अनैतिक अधिकारीगण, संदिग्ध विज्ञापन पद्धतियाँ, कर्मचारियों की सेवाओं की समाप्तियाँ, परिवार के लिए समय निकालने की चुनौतियाँ, कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने के संघर्ष, तथा ऐसी ही अनेक अन्य परिस्थितियाँ।

समूचे संगठनों और व्यवसायों में परिवर्तन आ सकता है, जब वहाँ के लोग इन "कालातीत सिद्धांतों" को अपनाएँगे तथा उन पर अमल करेंगे।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org